AVADHUTA LEELA (HINDI)

अवधूत लीला

(भगवान श्री श्री श्री वेंकय्या स्वामी की जीवन कहानी)

नित्यपरायण ग्रंथ

संग्रह

श्री पी. सुब्बरामय्या

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी

अवधूत लीला

भगवान श्री श्री श्री वेंकय्या स्वामी की जीवन कहानी
नित्यपरायण ग्रंथ

तेलुगु मूल

श्री पेसल सुब्बरामय्या

हिन्दी अनुवाद

डॉ. अइनापुरपु रामलिंगेश्वर राव

अंतरिक्ष विभाग, इसरो, शार केंद्र, श्रीहरिकोटा

प्रकाशक

श्री साई मास्टर सेवाट्रस्ट

गोलगामूडि (पोस्ट)
सर्वेपल्लि
नेल्लूर जिला, आंध्रप्रदेश, पिन – 524 321

प्रथम आवृत्ति : 24 अगस्त 2024

मूल्य : ₹60/-

प्रकाशक:

श्री साई मास्टर सेवाट्रस्ट
गोलगामूडि (पोस्ट)
सर्वेपल्लि
नेल्लूर जिला, आंध्रप्रदेश, पिन – 524 321
Please visit www.saimastersevatrust.org

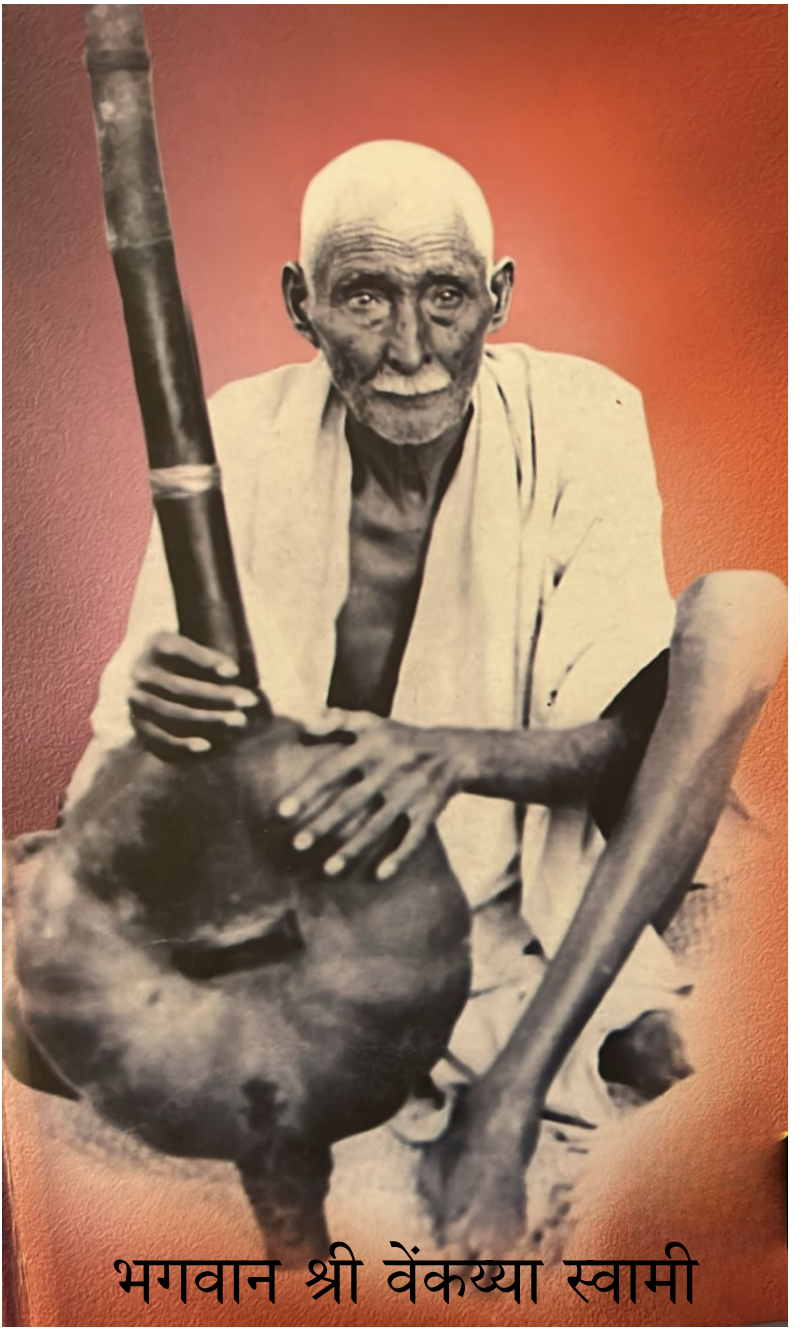

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी

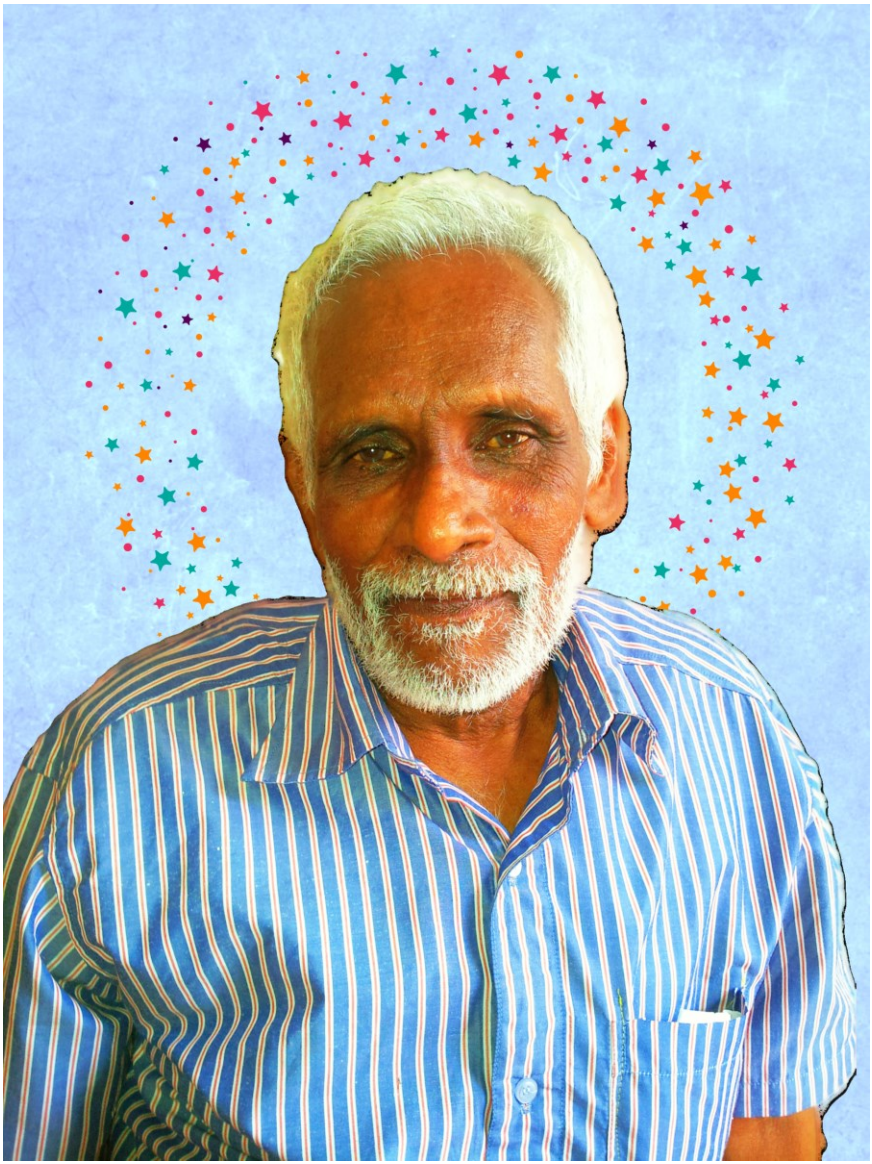

श्री पेसल सुब्बरामय्या

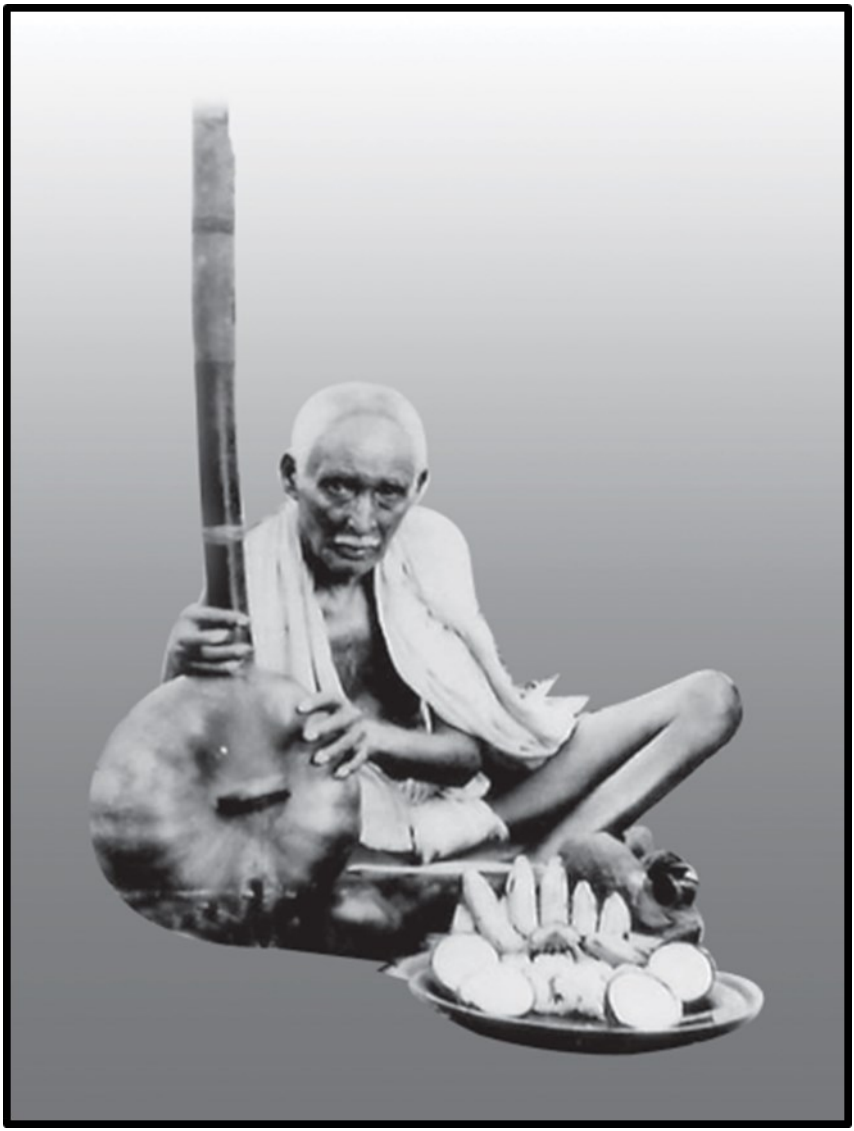

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी

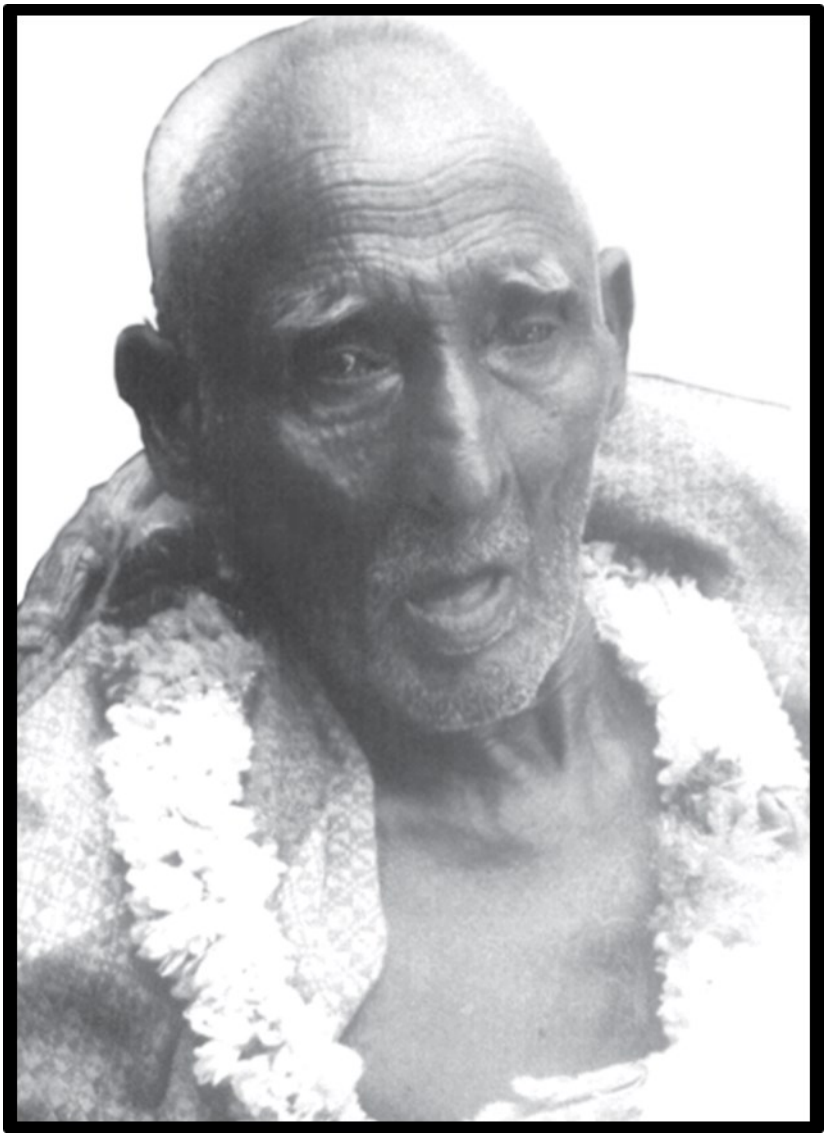

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी

श्रीमती तुलासव्वा स्वामी जी की सेविकाएँ

चुंडु नागय्यागरु वुराफ रोशिरेड्डी जी

माताजी वक्कम्म जी

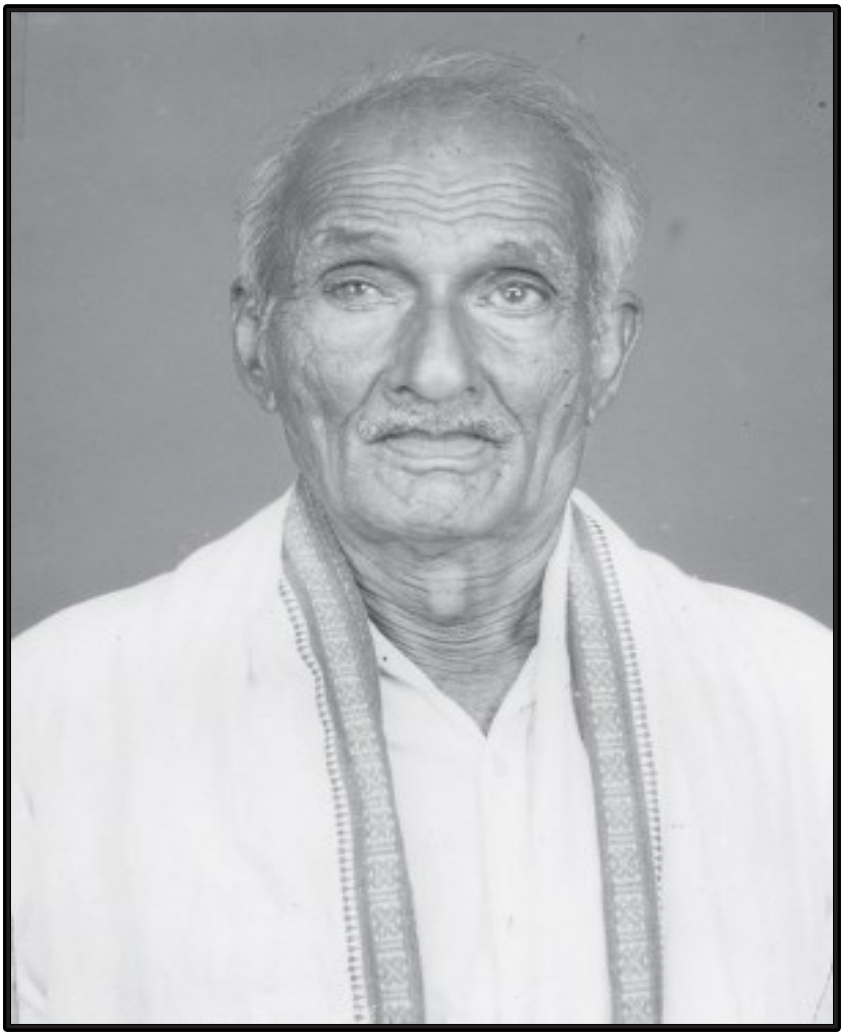

भक्त शिखामणि श्री अक्किमवेंकटरामिरेड्डी जी

श्री नल्लापुरेड्डी आदिनारायण रेड्डी जी

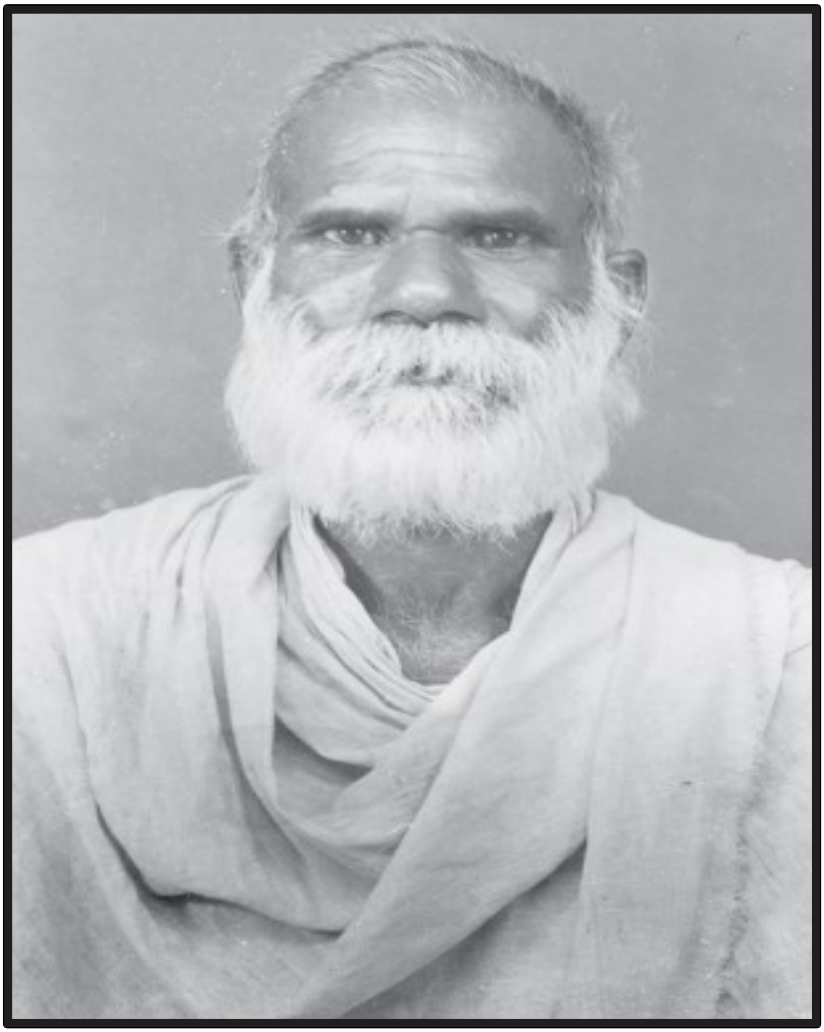

कोमारगिरी रामनय्या जी

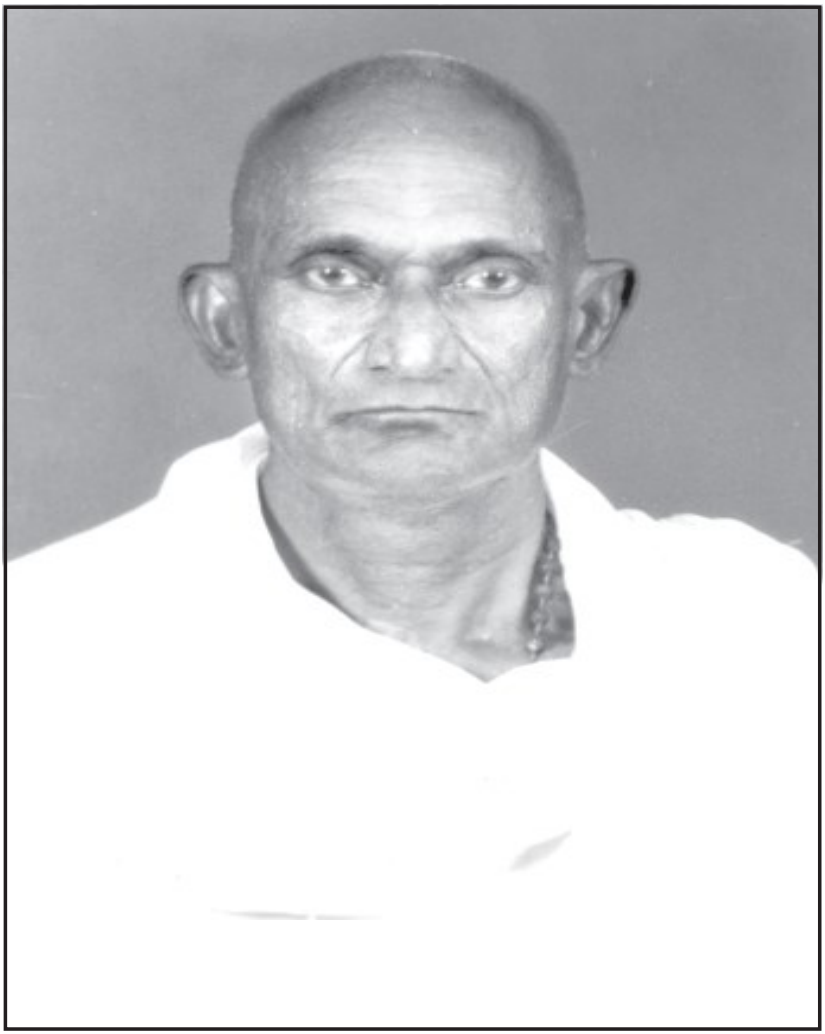

बरिगेला नागय्या जी

श्रीमती गुत्ता नरसम्मा जी

श्री स्वामी द्वारा प्रयुक्त वस्तुएँ
गाड़ी, पादुका, डोली, दूध के कटोरे

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी

अवधूत लीला

परम पूज्य आचार्य श्री एक्किराल भारद्वाज जी..... 23
प्रस्तावन..... 24
धन्यवाद ज्ञापन 24
ग्रंथ पारायण पद्धति..... 25
श्री स्वामीजी की आराधना करने की विधि..... 26
दीक्षा लेने वालों के लिए आवश्यक सूचनाएँ..... 27
गुरु दर्शन..... 28
1. श्री वेंकय्या स्वामी जी का जीवन 30
2. अनिकेतुडु 36
3. अवधूत लीलाएँ 49
4. सर्वज्ञ मूर्ति 53
5. सर्वसमर्थ इंसान.....71
6. भूत नियंत..... 80
7. आपद्बांधव..... 89
8. अमृतवाक्..... 95
9. दया सागर.....104
10. पतितपावन..... 112
11. अवधूत वैद्य 117
12. सज्जन वंदिता 123
13. दक्षिणा.....126
14. साधु दूषण 130
15. भिक्षा..... 131
16. जन्म जन्म के अनुबंद 133
17. दिव्यानुभव.....136
18. जिस चिंता में डूबे रहते है उसीमें वे ढ़केले जाते है।.....144
19. श्री स्वामी जी का अभय.....148

20. धर्माचरण..... 152
21. श्री स्वामी जी का दिव्य बोध।..... 156
22. श्री स्वामी जी की सूक्तियाँ 175
23. मानने वालों को संपत्ति, न मानने वालों को... 177
24. स्वामी जी की अभेध स्थिति.....181
25. महासमाधि 188
26. साधना..... 196
27. श्री स्वामी जी के अतिप्रीति पात्र काम सभी करके मुक्ति पाइए।.....203
28. मेरा स्वानुभव (लेखक) 205
29. महासमाधि के बाद की लीलाएँ..... 210

श्री स्वामी अष्टोत्तर सत नामावळी

1. ॐ सर्वसमर्थ सद्गुरु श्री स्वामी नाथाय नमः (9 बार)
2. ॐ गुरुदेव दत्तात्रेय स्वामी नाथाय नमः (9 बार)
3. ॐ विश्वप्रणाय स्वामी नाथायनामः (9 बार)
4. ॐ पंचभूतात्मा स्वरूपाय नमः
5. ॐ प्राणलिंग स्वरूपाय नमः
6. ॐ विश्वलिंगाय नमः
7. ॐ चिदम्बराय नमः
8. ॐ बहिरन्तरव्यपिने नमः
9. ॐ देहस्थ पृथ्वी व्यापस्तेजो वायुराकस स्वरूपाय नमः
10. ॐ चिद्रूपाय नमः
11. ॐ चैतन्य लिंगाय नमः
12. ॐ सर्वव्यापिने नमः
13. ॐ दिगम्बराय नमः
14. ॐ केवलाय नमः
15. ॐ विश्वसक्षिने नमः
16. ॐ सर्वजीव स्वरूपाय नमः
17. ॐ नमरूपप्रियाय नमः
18. ॐ सर्वनामरूपिणे नमः
19. ॐ विश्वरूपाय नमः
20. ॐ विरूपाय नमः
21. ॐ विरुपाक्षाय नमः
22. ॐ निर्गुणाय नमः
23. ॐ निचलाय नमः
24. ॐ चंचलाय नमः
25. ॐ अरिष्ड्वर्ग विनाशकाय नमः
26. ॐ दृश्याय नमः
27. ॐ दृग्रूपाय नमः
28. ॐ हृदयाय नमः
29. ॐ सर्वलोकतम्राय नमः
30. ॐ सर्वलोक साक्षिने नमः
31. ॐ सर्वदेवतास्वरूपिणे नमः
32. ॐ आकाशगमनाय नमः
33. ॐ गमनगमनब्रियाय नमः
34. ॐ सर्वत्र स्थिताय नमः
35. ॐ सन्मात्राय नमः
36. ॐ सर्वाधाराय नमः
37. ॐ नाथ नाथयानमः
38. ॐ योगाय नमः
39. ॐ योगीश्वराय नमः
40. ॐ योग योगाय नमः
41. ॐ योग गमय नमः
42. ॐ सर्वयोग स्वरूपाय नमः
43. ॐ सर्वयोगी स्वरूपाय नमः
44. ॐ सिद्धिदाय नमः
45. ॐ सिद्धाय नमः
46. ॐ सिद्धयोगिने नमः
47. ॐ सर्व सिद्धसेविताय नमः
48. ॐ सर्वसिद्धिसेविथाय नमः
49. ॐ विघ्न राजाय नमः
50. ॐ विघ्न हन्त्रे नमः
51. ॐ विचित्र वेषाय नमः
52. ॐ चित्तचञ्चल्य विनाशकाय नमः
53. ॐ भेद वर्जिताय नमः
54. ॐ कृपा निधाये नमः
55. ॐ करुणा मूर्तये नमः
56. ॐ समं दर्शने नमः

57. ॐ आत्म दर्शने नमः
58. ॐ परमात्मा स्वरूपाय नमः
59. ॐ वर्षरूपक यज्ञकृते नमः
60. ॐ सकल वर्षधात्रे नमः
61. ॐ सद्धर्म संकारकायनमः
62. ॐ सदाचार विग्रहाय नमः
63. ॐ आचार वर्जिताय नमः
64. ॐ रोगनिवारिणे नमः।
65. ॐ सर्वशास्त्र स्वरूपाय नमः
66. ॐ सर्वाचार संसेविताय नमः
67. ॐ वेद वेद्याय नमः
68. ॐ वेदात्मने नमः
69. ॐ वेदकार्ते नमः
70. ॐ वेदसंरक्षकाय नमः
71. ॐ यज्ञाय नमः
72. ॐ यज्ञ पुरुषाय नमः
73. ॐ यज्ञभोकते नमः
74. ॐ का स्वामी नमः है
75. ॐ ज्ञानयज्ञयः
76. ॐ ध्यानयज्ञाय नमः
77. ॐ बोधयज्ञाय नमः
78. ॐ भक्तियज्ञाय नमः
79. ॐ सृथियाज्ञाय नमः
80. ॐ चिदाग्नि कुंडाय नमः
81. ॐ विभूतये नमः
82. ॐ लीलाकल्पितः ब्रह्माण्डमण्डलाय नमः
83. ॐ संकल्पिता सर्वलोकाय नमः
84. ॐ अधाराय नमः
85. ॐ निराहाराय नमः
86. ॐ तीर्थपादाय नमः
87. ॐ तीर्थपालकाय नमः
88. ॐ त्रिकालज्ञानाय नमः
89. ॐ कालब्रियाय नमः
90. ॐ द्रीक दृश्यभेद विवर्जिताय नमः
91. ॐ प्रणववाय नमः
92. ॐ शब्द रूपिणे परब्रह्मणे नमः
93. ॐ टेंपलाय नमः
94. ॐ सर्व धर्म संसेविताय नमः
95. ॐ सर्वधर्म संस्थााय नमः
96. ॐ धर्म स्वरूपाय नमः
97. ॐ अवधूताय नमः
98. ॐ लीला मानुष विग्रहाय नमः
99. ॐ लीलाविलासाय नमः
100. ॐ स्मृति मात्र प्रसन्नाय नमः
101. ॐ गोलागामुडी आश्रम वसिने नमः
102. ॐ भक्त भारभृताय नमः
103. ॐ विश्व प्रेणाधाकारिणे नमः
104. ॐ सर्व प्रेरणाधाकारिणे नमः
105. ॐ सर्व समरताय नमः
106. ॐ सच्चिदानन्द स्वरूपाय नमः
107. ॐ गुरुभक्ति प्रदात्रे नमः
108. ॐ आत्म ज्ञान प्रदात्रे नमः

परम पूज्य आचार्य श्री एक्किराल भारद्वाज जी

(30-10-1938 - 12-04-1989)

परम पूज्य आचार्य श्री एक्किराल भारद्वाज जी ने सलाह दी कि श्री स्वामी जी तब हमारे बीच में जीवित रहने के समय में ही उनकी जीवनी प्रकाशित करें। यदि उतनी ताकत न रहे तो श्री स्वामी जी की दिव्य लीलाओं का करपत्र बनाके नेल्लूर के हर एक घर में उनको पहुँचाने केलिए प्रोत्साहित भी किया। लेकिन स्वामी जी सेवकों उस कार्य को पूरा नहीं कर सके।

इसलिए, विद्यानगर साईं मंदिर के उद्घाटन की स्मारिका में, श्री स्वामी की तस्वीर और उनकी दिव्य लीलाओं को पहली बार कागज पर प्रकाशित किया गया था और यह श्रेय पुण्यमूर्ति ही थे जिन्होंने दुनिया को श्री स्वामी के बारे में बताया था। कई लोगों ने कहा कि ऐसे काम करने से श्री स्वामी का कोपभाजन बनना पड़ता है. इस पर परम पूज्य आचार्य श्री एक्किराल भारद्वाज जी ने कहा, "इतने लोगों का भला होगा तो मैं खुद चार जन्म पीचे जाकर वापस आऊंगा. मुझे कोई चिंता नहीं है." मैंने श्री स्वामी के जीवन के बारे में सामग्री एकत्र की जो हमारे बीच थे और श्री स्वामी की पहली जीवनी प्रकाशित की और इस दुनिया के लिए वंदनीय बन गये।

प्रस्तावन

गरीबों के उत्थान के लिए, भक्तों की रक्षा के लिए, मुमुक्खों को रास्ता दिखाने के लिए, परमात्मा हमारे बीच सद्गुरु बन जाते हैं। ऐसे सद्गुरुओं में शास्त्रों में निर्धारित सर्वव्यापी, सर्वज्ञता और सर्वज्ञता पूर्ण रूप से प्रकट होती है। श्री वेंकय्या स्वामी गोलागमुडी में अवधूत हैं।

संपादक गण

धन्यवाद ज्ञापन

इस जगन्नाटक में मेरे लिए भी एक पात्र की सृष्टि करके, पवित्र जीवन की ओर प्रेरित करने वाले मेरे परमात्मा को, उनका प्रतिरूप गुरुदेव आचार्य श्री एक्किराला भारद्वाज मास्टर जी को मैं तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मेरे प्रति मेरे पिता से भी ज्यादा प्रेम दिखाकर मुझे स्वामी जी के सन्निधि में भेजकर उनके जीवनी से सबंधित विषयों को संगृहित करके, प्रथम ग्रंथ के रूप में प्रकाशित करने में सहायता देने वाले श्री भारद्वाज मास्टर जी के करकमलों में मैं अपने को समर्पित कर रहा हूँ।

इस प्रकार की मेरी सेवा को स्वीकार करने के लिए श्री साइनाथजी को, श्री वेंकय्या स्वामी जी को मै अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

परम पूज्य मेरी माँ श्रीमती शेषम्मा जी को, मेरे भाई श्री रमनय्या जी को कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस ग्रथ को हिन्दी में अनुवादित करके उत्तर भारत के भक्तों तक इस ग्रंथ को पहुँचाने में मदद करने के लिए, डॉ. अइनापुरपु रामलिंगेश्वर राव (अंतरिक्ष विभाग, ईसरो, श्रीहरिकोटा) जी का मैं तहेदिल से अभिनंदन करता हूँ।

इस ग्रंथ के प्रचारण में भाग लेने वाले मदन कुमार, SHAR को, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहायता देने वाले सभी महानुभावों को मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

श्री पेसल सुब्बरामय्या

ग्रंथ पारायण पद्धति

इस सद् ग्रंथ को सही पद्धति में पारायण करने से श्री स्वामी जी की कृपा प्राप्त होगी और आपको अनेक अनुभव प्राप्त होंगे। यह श्री दत्तात्रेय सांप्रदाय है।

सभी को समय मिलने पर सप्ताह पारायण करने केलिए आवश्यक रूप में इस ग्रंथ को बनाया गया है। अमावास्या के दिन स्वामी जी की पूजा करके शुक्ल पाढ्यमी से पारायण शुरू करके पूर्णिमा तक 15 दिनों में पूरा कर सकते हैं। हर रोज कितना पढ़ना है... इस विषय के बारे में व्यक्तिगत रूप से निर्णय ले सकते हैं। मौका मिलने पर पारायण के समय श्री स्वामी जी के या श्री दत्तात्रेय स्वामी जी के या उनके पूर्ण अवतार श्री साइनाथ जी के चित्र को धूप दीप नैवेद्य लगाकर पारायण के अंत में 108 पर्याय अक्षितों, तुलसी दलों और फूलों से पूजा करके आरती कर सकते है। नहीं तो पारायण गुरुवार को शुरू करके, बाद में के और दो गुरूवारों के बाद में पूरा कर सकते हैं। आखरी रोज स्वामी जी को नारियल, फूल समर्पित करना है। स्वामीजी के नाम पर एक दो विकलांगों को भोजन का इंतजाम करके अपने आर्थिक स्थिति के अनुसार दान - दक्षिणा देना चाहिए। चाहे तो स्वामी जी के नाम पर भोजन जिनको खिलाना चाहते हैं उनको घर बुलाकर खिला सकते हैं। चाहे तो अन्नदान का खर्च पूर्णाश्रम में भी जमा कर सकते हैं।

स्त्रियोँ को बहिष्टु के समय इस ग्रंथ का पारायण मना है। भक्तों के लिए हृदय में कोई बाधा न होने पर, सूतक या मैले होने पर भी पारायण कर सकते हैं।

यदि समय मिले तो इस ग्रंथ का एक ही सप्ताह में पारायण कर सकते हैं। पारायण 1,3,5 जैसे नंबर में करना चाहिए।

हर साल श्री स्वामी जी के आराधनोत्सव जो मनाते हैं उसमें भाग लेने से, सेवा करने से, स्वामी का दर्शन करने से सबको अत्यंत आनंद मिलेगा और अनेक लाभ पाने की संभावना है।

पारायण बहुत बार करने के बाद में इस ग्रंथ में उल्लेखित महान् पुरुषों के जीवनियों का पारायण भी करने से जीवन में सुख और संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

श्री स्वामीजी की आराधना करने की विधि

स्वामी जी की आराधना करने वालों को इन नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

1. स्वामीजी की जीवनी का पारायण करना आवश्यक है।
2. खाना बनाने के बाद में कुछ भात, सब्जी, एक पत्ते या कागज पर रखकर घर के बाहर रखकर सकल जीव स्वरूप स्वामी भगवान वेंकय्या को समर्पित करके उस खाने को सभी जीव राशियों के लिए छोड़ देना चाहिए।
3. श्री स्वामी जी के अग्निकुंड में नारियल का फल, लकड़ी, सांब्राणी, नवधान्य समर्पित करना है। क्योंकि स्वामी जी जीवन भर अन्न और पानी के अलावा अग्निकुंड को ही अधिक पसंद करते थे।
4. घर में स्वामी जी के चित्र को रखकर रोज पूजा करना चाहिए।
5. स्त्री के घर से दूर रहने पर ऊपर के काम दूसरों से करवाना चाहिए।
6. स्वामिजी के अग्निकुंड और समाधी के लिए 108 प्रदक्षिणाएँ करनी चाहिए।
7. स्वामी जी के सन्निधि में भौतिक व्यवहारों पर बातचीत नहीं करना चाहिए। नामस्मरण, प्रदक्षिणा और सद् ग्रंध पठन में अपना समय बिताना चाहिए।

अपने सेवक व अन्य लोगों की आलोचना करने पर या नाराजगी दिखाने पर, दुर्गुणों का शिकार होने पर उनकी सेवा लेने से स्वामी जी इनकार करते है।

किसी को किसी की आलोचना करने पर उसको सुनना भी दोष ही है। एक बार एक सेवक ऐसे दुर्विमर्शों को सुनकर स्वामी जी से मिलने आया था। वह सेवक स्वामी को पीने के लिए कुछ देने के लिए आगे आया। तब स्वामी जी ने उसे इनकार किया और बोले तेरे हाथ से मैं कुछ लेने के लिए तैयार नहीं हूँ। चेले जाओ।

संसार में सबसे मूल्यवान चीज मन ही है। उसे दुर्गुणों से दूर रखकर स्वच्छ और साफ रखना चाहिए। स्वामी जी के स्मरण में ही उसका उपयोग करना चाहिए। तब ही स्वामी जी हमारी सेवाओं को स्वीकारते हैं और हमसे प्रसन्न होते हैं। नहीं तो हमारी सभी सेवाएँ निरर्थक बन जाती हैं।

अपनी अग्निकुंड को दिखाते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि कोटि लिंगों की पूजा हो रही हैं यहाँ। हमें नियमों का पालन करते हुए ध्यान से, पवित्र मन से यहाँ व्यवहार करना चाहिए। तभी उसका फल हमें मिलता है।

8. गोलगामूडि में एक माँ का बेटा कहीं खो गया। तब उस माँ ने स्वामी से विनती की कि मेरे पारायण का फल कहाँ चला गया? बिना भोजन खाए खो गए मेरे बेटे को इस प्रकार दण्ड देना कहाँ तक उचित है? तुरंत वहाँ अग्नि कुंड में अखंड दीप का दर्शन उसे मिला। वह बेहोश हो गयी। शाम को उसका बेटा घर वापस आ गया। स्वामीजी ने संदेश दिया कि अग्निकुंड, अखंड दीप के रूपों में मैं यहीं रहता हूँ। आपके द्वारा समर्पित नैवेद्य मैं हमेशा स्वीकारता हूँ।

दीक्षा लेने वालों के लिए आवश्यक सूचनाएँ

01. मुँह नहीं खोलना है, बंद रखना है। - यही उपदेश स्वामीजी सदा देते थे। दीक्षा के समय में मुख्यतः सदा मौन में रहना चाहिए। आवश्यकता के अनुसार अन्न या पानी लेते समय को छोड़कर, अन्य समयों में सुनना, बोलना, सोचना बंद रखना है। पूरा समय स्वामी जी के चिंतन में बिताना चाहिए। स्वामी जी के चिंतन में रहने के लिए उनकी लीलाओं का पारायण बहुत काम आता है।
02. दिन में सोना नहीं चाहिए। इसके लिए मितआहार लेना चाहिए। अधिक निद्रा भी हानि कारक है।
03. झूठ बोलना, अनावश्यक किसी से लडाई – झगडा करना नहीं चाहिए।
04. नाम जप करते हुए नवधान्य, लकड़ी, नारियल का फल, घी, सांबरानी, चावल आदि अग्नि कुंड में डालना चाहिए। स्वामी जी की कृपा मिलने पर भी हमारे दुष्कर्म हमें उन तक पहुँचने नहीं देते हैं। हमें नाम जप के द्वारा इस दुष्कर्म को पिघालना चाहिए। भगवन्नामस्मरण के बारे में हमारे बुजर्गों ने बताया कि भगवन्नामस्मरण से कुंतल से होने वाले बडे घाव के स्थान पर सूई से होनेवाले छोटी सी लकीर जैसा घाव होगा। यह तो सत्य है। अनेक लोग अपने अनुभव के द्वारा इस सत्य को जान लिए थे। इसलिए हम सबको एक भी क्षण बिना व्यर्थ किए भगवान का नाम जप करना चाहिए।
05. हर रोज कम से कम 108 प्रदक्षिणाएँ करना चाहिए।
06. इन सबसे मुख्य विषय है कि अनपढ़ लोग स्वामी जी की जीवनी को सुन कर स्वामीजी की कृपा प्राप्त कर सकते है।
07. स्वामी के भक्तों को पूर्ण विश्वास और सहन शक्ति के साथ जीना है।

गुरु दर्शन

मैं हमेशा श्री भारद्वाज मास्टर जी का दर्शन करता रहता। लेकिन उनके कहने के अनुसार श्री वेंकय्या स्वामी जी का दर्शन मैं नहीं कर पाता था। मास्टर का मेरे प्रति जो प्रेम है उसके अनुसार वे बार – बार मुझे एक साल तक स्वामी के दर्शन के लिए अनुरोध करते रहे। मैं उनकी बात नहीं मानता था। उन्होंने ऊबकर एक बार बता दिया कि जब तक श्री वेंकय्या स्वामी जी का दर्शन नहीं करोगे तब तक मेरे पास मत आना। उनकी बात सुनकर मेरा मुँह ढीला पड़ गया। मेरी मानसिक स्थिति को समझकर उन्होंने बताया कि श्री वेंकय्या स्वामी इस धरती पर अवतरित भगवान है। चाहे तो तुम उनकी परीक्षा ले सकते हो। किस प्रकार स्वामीजी की परीक्षा करना है वह पद्धति भी उन्होंने बताया। उन्होंने मुझे दो संकल्प लेने के लिए कहा। पहला संकल्प है, किसी के हाथ का खाना नहीं खाने वाले स्वामी जी को मेरे हाथ से खाना खिलाना है और दूसरा संकल्प है, किसी को अपने शरीर को नहीं छूने देने वाले स्वामी जी को मेरे हाथ से उनके शरीर पर तेल मालिश करने का मौका मिलना है। मेरे दोस्त श्री टि. वी शेषगिरि राव के साथ मैं जाकर स्वामी जी के सन्निधि में बैठा था। नए लोगों को स्वामी जी के शरीर को छूने से रोकने के लिए वहाँ बैठे हुए रोशरेड्डी जी और गुरवय्या जी कुछ देर के लिए बाहर गए थे। उस समय स्वामी जी ने अपने हाथ मेरी ओर बढ़ाए और पूछने लगे कि खाने के लिए क्या कुछ दे सकते हो? हम अपने साथ ले गए गुड़ और चना स्वामी को देने के लिए तैयार हुए, इतने में रोशरेड्डी और गुरवय्या जी ने वहाँ आकर हमें रोकने का प्रयत्न किया। लेकिन स्वामीजी ने स्वयं हमारे हाथ से गुड और चना लेकर खाए थे। बाद हमें उनके पैरों को ही नहीं पूरे शरीर को तेल का मालिश करने का मौका मिला। बहुत आश्चर्य की बात है कि स्वामी जी का स्नान भी हमें करवाने का मौका मिला। इस घटना के बाद स्वामी जी के प्रति मेरा प्रेम और विश्वास बढ़ता रहा।

भगवान साई सकल साधु स्वरूपी है। इसलिए गुरुपूर्णिमा के दिन श्री साई नाम यज्ञ करने के लिए तैयारियाँ शुरू की। उस कार्यक्रम में स्वामी जी को ले आने के लिए हमने संकल्प कर ली।

बहुत बार निमंत्रण देने पर भी स्वामी जी कभी भी हमारे निमंत्रण को स्वीकार नहीं किए थे। लेकिन इस बार श्री स्वामी जी हमारी विनती को स्वीकार कर मेरे घर आए थे और श्री शेषगिरि राव जी के गृह में नाम यज्ञ में भी भाग लेकर अपना आशीर्वाद दिए थे।

एक बार मैं श्री साई लीलाओं का पारायण कर रहा था। उस समय श्री स्वामी जी ने मेरे सपने में आकर आज्ञा दी कि बिना तेल के दीप जलाओ। सुबह मैंने स्वामी जी से पूछा तो वे मौन रहे। बाद मुझे पता चला कि जब मैं तेल से बने खाद्य पदार्थों को खाता हूँ तब मुझे दमा बीमारी आ जाती थी। इस बीमारी को रोकने केलिए ही स्वामी जी ने वह संदेश मुझे दिए थे।

1980 में जब मैं कुछ दिनों तक श्री स्वामी जी की सेवा करने के लिए तैयार हुआ तो स्वामी जी ने कहा कि तुम अपना खाना आप ही पकाकर खाते रहो। मैंने पूछा ऐसा क्यों कह रहे है? तब उन्होंने कहा कि आप ब्राह्मण है, दूसरों से बना खाना आप नहीं खा सकते। बाद उनकी बात सच निकली और मुझे मालूम हुआ कि मैं अपने घर के सिवा और कहीं भी खाना नहीं खाता हूँ क्योंकि बाहर का खाना खाने से मेरा स्वास्थ्य खराब हो जाता है। तब से मैंने अपने घर में ही खाना बनाकर खाने की आदत को अपनाया था। यह नियम का पालन करने से मैं स्वस्थ रहने लगा।

1983 में एक दोस्त ने मेरी इस आदत को तोड दिया। मेरे स्वास्थ्य फिर बिगड़ गया। खांसी, ठण्ड, दमा आदि फिर से शुरू हो गए। एक महीने तक होमियो, आयुर्वेद और अंग्रेजी दवाओं को खाया। डॉक्टर की सलाह से इलाज के लिए मद्रास जाने के लिए भी तैयार हो गया। मद्रास जाने के पहले श्री स्वामी जी की समाधी का दर्शन करके तीन रात वहीं सोने के लिए कलिचेडू से बस को पकडकर जाने लगा। आश्चर्य की बात, बस से वहाँ पहुँचने के पहले ही मेरी सभी बाधाएँ एक एक करके गायब होने लगीं। स्वामी जी की समाधी का दर्शन करके वहीं तीन दिन सोकर जब मैं अपने घर वापस आया, फिर से मेरी बाधाएँ शुरू हो गई। पूजारी नागय्या जी की सलाह के अनुसार दिन में मेरी नौकरी और शाम को स्वामीजी का दर्शन रोज करना शुरू किया। मेरी सभी समस्याएँ मिटने लगी। उसके बाद हर रोज लगभग 60 किलोमीटर दूर नौकरी करके वापस गोलगामूडि पहुँचता था। 1989 में नवंबर में स्वामी जी के निर्देशानुसार मैं अपनी नौकरी को इस्तेफा देकर गोलगामूडि में रहने लगा। इस घटना से मुझे समझ में आया कि **बाधा भी अनुग्रह का चिह्न है।**

श्री स्वामी जी के सन्निधि में बहुत समय बैठने के कारण मेरा दमा पूरी तरह ठीक होने लगा। हर दिन स्वामी जी का नाम जप करते हुए श्री स्वामी जी को चार इडली लाकर कृतज्ञता के साथ प्यार से खिलाता था तो वे खुशी से खाते थे। एक दिन मेरे पास केवल दस पैसे ही थे। मुझे संदेह हुआ कि मेरे पास के दस पैसे से एक इडली खरीद कर ले आऊँ या चार इडली ले आकर बाद में पैसे का इंतजाम कर दूँ। इस सोच - विचार में स्वामी जी का नाम जप नहीं कर पाया। इडली लाने के बाद स्वामीजी उस इडली को नहीं छुए थे।

बाद उसके एक दिन स्वामी जी के सभी सदस्यों को घर में ही इडली बना कर ले आने का निर्णय लिया। रात भर नाम जप करके इडली बनाकर सुबह सबके लिए ले आने के पहले ही स्वामी जी बाहर दूकान से इडली मँगवाकर खा लिए थे। विषय को जानकर मैं चिंता से बैठा रहा। नरसा रेड्डी जी की पत्नी मेरी चिंता का कारण समझ कर चार इडली को थाली में रखकर स्वामी जी के पास आई। स्वामी जी उन चार इडलियों को प्यार से खा लिए थे। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। पहले इड़ली को नहीं छूना, दूसरे संदर्भ में इड़ली खा लेने का कारण केवल नाम जप ही है। इस अनुभव से मैं सबसे कह सकता हूँ कि सभी लोगों को श्री स्वामीजी का प्रिय बनने केलिए उनका नाम जप करना अनिवार्य है। तभी हम अपनी समस्याओं से बाहर आ सकते हैं।

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 01

श्री वेंकय्या स्वामी जी का जीवन

भगवान का रूप, नाम, गुण रहित है। ऐसे भगवान को व्यक्त करने का साधन है प्रेम। प्रेम कार्य के द्वारा ही व्यक्त होता है। नित्य, निरंतर, निस्वार्थ प्रेम से भरा हृदय ही भगवान का रूप है। उस प्रेमामृत से भरे हृदय वाले ही भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी है।

नेल्लूरु जिला के तलुपूरु में चेर्लोपल्लि एक छोटा सा गाँव है। अनावृष्टि से उस गाँव में घास उगना भी मुश्किल होता था। सभी लोग अकाल से पीडित थे। उस समय स्वामी जी वहाँ पहुँचे थे। सभी लोग खुशी से रामालय के पास इकट्टा हुए थे। उनके आगे एक वृद्ध एक ताड के पेड के पत्ते पर बैठा हुआ था। उसके सामने अग्नि कुंड जल रहा था। तेल के मटके समान चमकता हुआ दुबला – पतला शरीर वाले उस वृद्ध के शरीर पर एक छोटे से कपडे के सिवा और कुछ नहीं था। साफ गाल, बिना दाँतों का मुँह, चंचल आँख से युक्त वह वृद्ध अपने आपमें बातचित करते हुए वहाँ के अग्नि कुंड में लकडियाँ डालते हुए बैठा हुआ था। निडारंबर और बुद्धू जैसा बैठा हुआ वही वृद्ध स्वामी जी है कहने पर कोई मानने केलिए तैयार नहीं है। गाँव के लोग उस वृद्ध से कुछ कहना चाहते थे। उनके व्यवहार को देखकर कोई कुछ नहीं बोल सका। इतने में उस वृद्ध की दृष्टि वहाँ फेंके हुए कागज और झूठे पत्तों पर पडी। कुछ देर तक उनकी ओर देखकर अकस्मात जोर से आवाज दी, अय्या। क्या हुआ स्वामी जी को? ... कहते हुए दो व्यक्ति उनके पास आ पहुँचे। हमें उस सूखे हुए तालाब में जाना है, चलो। स्वामी जी ने आज्ञा दी। उनको मालूम नहीं हुआ कि स्वामी जी तालाब की ओर क्यों जाना चाहते है? स्वामी जी को तालाब की ओर डोली में बिठाकर ले गए। वह तालाब सूखा हुआ था। एक जगह रूक कर उन्होंने कहा, देखो यहाँ अग्नि है। कुछ ही क्षणों में सेवकों ने वहाँ अग्निकुंड को बना दिया। वहीं कुछ समय ठहरने के बाद स्वामी जी को उस गाँव में ले गए। आश्चर्य की बात कुछ ही क्षणों में आकाश मेघों से भर गया और वहाँ भयंकर बारिश शुरू हुई। देखते – देखते गाँव के पूरे तालाब जल से भर गए थे। केवल संकल्प से ही पंचभूतों को आज्ञा देकर समाज में कल्याणकारी कार्य करने में सक्षम उस स्वामी की प्रशंसा उस गाँव के ही नहीं अन्य प्रांतों के लोगों ने भी करना शुरु किया। प्रकृति माता उनकी करुणा भरी विनती को स्वीकार कर पुलकित होकर खुशी से नाचने लगी। करुणामूर्ति स्वामी तो

इन सबसे परे हैं। वे बिना कोई प्रतिक्रिया दिए अपने सेवकों के साथ उस गाँव को छोड़कर आगे चले गए।

कालचक्र के साथ बहुत समय बीत गया था। जिस प्रकार तलपूरु गाँव को छोड़कर चले गए उसी प्रकार उस निराडंबर और मोहिनी मूर्ति श्री स्वामीजी 1982 अगस्त 24 को अपना भौतिक शरीर को छोड़ दिए थे। पूरा नेल्लुरू जिला इस विषाद वार्ता से शोक समुद्र में डूब गया था। पंचभूतों को नियंत्रित करने वाले स्वामी के दूर हो जाने से प्रकृति माता के आग्रह से हमारी रक्षा करने वाला कौन होगा?... यही शंका सभी के मन में बैठ गयी थी।

1982 में गोपारम् गाँव वर्षाभाव से तडप रहा था। पशु चारा और पानी के लिए बहुत वंचित हो गए थे। इस समय पालकोंडा सुब्बारेड्डी बस में जाते वक्त उस गाँव की स्थिति देखकर स्वामी जी से प्रार्थना की कि हे स्वामी!, आप जब जिंदा थे तब हमारी बाधाओं को सुनकर हमारी सहायता करते थे। लेकिन आप अब हमारे बीच में नहीं है। लोग अकाल से तडप रहे हैं। हम अपनी समस्याओं को किनके सामने रख सकते हैं? कौन हमारी सहायता करेगा? तब सुब्बारेड्डी जी को एक संदेश आया कि तुम अपनी विनती सबके लिए व्यक्त कर रहे हो। इसमें समाज कल्याण की भावना है। तीन ही दिनों में पानी बरसेगा। आश्चर्य की बात तीन ही दिनों के अंदर बहुत बारिश आई और पूरे वर्ष के लिए आवश्यक पानी तालाबों में भर गया। गाँव के लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। फसल भी अच्छी निकली।

इस प्रकार स्वामी भौतिक रूप में हमारे बीच में नहीं रहने पर भी वे सर्वांतर्यामी के रूप में, स्मृतिमात्र संपन्नवाले के रूप में, भक्त रक्षक के रूप में रहकर जब तक सूर्य, चंद्र इस दुनिया में रहेंगे तब तक रहकर सबकी सेवा करने का अभय हस्त हम सबको उन्होंने दिए थे। वादा अनुसार वे अपनी लीलाओं के द्वारा अपनी महिमा हर समय दिखाते रहते थे।

जीव नदी पवित्र गंगा जिस प्रकार अपने जन्म स्थान से शुरू होकर अंतिम नहर तक बहती है उसी प्रकार यह महान व्यक्ति, करुणामयी और दयासागर अपने जीवन के पहले चरणों में लोगों के बीच एक पागल व्यक्ति के रूप में देखे जाते थे। पागल वेंकय्या कहकर लोग उनको पुकारते थे।

पागल वेंकय्या

नेल्लूरु जिला के नागुलवेल्लटूरु गाँव की गलियों के रास्तों पर, निकटतम जंगलों में धोबी का योग, नाई का योग डुबडुक, डुबडुक कहते हुए दौड़नेवाले युवक के रूप में ही स्वामी सबको अपनी ओर आकर्षित करते थे। पागल वेंकय्या के नाम से सब उनको याद करते थे। लेकिन किसीको मालूम नहीं था कि यह पागल व्यक्ति ही समाज रूपी पागलखाने में व्याप्त पागलपन का इलाज करने वाला डॉक्टर बनकर

सबका उध्दार करेगा। जो लोग उनको पागल वेंकय्या के नाम से पुकारकर अवहेलना करते थे वे ही बाद में भगवान का अवदूत श्री वेंकय्या स्वामी मानकर उनकी प्रशंसा करते हुए सेवा करने के लिए उनके पीछे पड़ने लगे। किनका है पागलपन? सत्य और सूर्य के समान प्रकाशवान स्वामी को नहीं पहचान सकना हमारा पागलपन है। यदि इनमें से सभी पागल ही होते तो किनका पागलपन श्रेष्ठ है?...इस विषय का विश्लेषण करके समाधन पाना ही हमारा पागलपन दूर करने का एक मात्र मार्ग है।

भगवान श्री वेकय्यास्वामी जी के पिताजी का नाम श्री सोंपल्लि पेंचलय्या था। माता का नाम श्रीमती पिच्चम्मा। उनका जन्मस्थान आत्मकूरु के नागुलवेल्लटूरु था। उनकी जन्म तिथि उपलब्ध नहीं थी। 1927 में बहुत बडा तूफान आया था उस समय उनकी उम्र केवल 30 साल थी।

वेंकय्या बचपन में अन्य बच्चों की तरह ही रहते थे। कुछ दिन श्री सिद्धिराजु रामय्या जी के यहाँ पढ़ने रात में जाते थे। उनकी पढ़ाई अक्षरमाला से आगे बढ़ नहीं सकी। खेल – कूद में भी अन्य बच्चों की तरह ही खेलते और मजा उडाते थे।

श्री कोमरीगिरी रामणय्या जी के अनुसार पाँच साल की उम्र में ही स्वामी एकांत प्रिय थे। जब बच्चे खेलने केलिए बुलाते थे, वे कहते थे कि मैं डाकु हुँ। मुझे पुलिस पकड लेगी। आप जाओ मैं यहीं रहूँगा।... कहकर मित्रों से दूर रहकर एकांत में बैठकर ध्यान में मग्न हो जाते थे।

फल तोड़ने केलिए सभी बच्चे जंगल में जाते तो स्वामी जी किसी से मिले बिना पेडों के पीछे छिपे रहते थे। कोई उन्हें ले जाने के लिए आने पर ऊपर की बातें ही कहकर वहीं एकांत में रह जाते थे।

17, 18 उम्र में जंगल की लकड़ी काट कर गाडी पर लादकर नेल्लूर ले जाकर वहाँ बेचकर वापस आते थे। पत्तों से टोकरी बनाकर बेचते थे। खेतों में खेतीबाडी भी करते थे। कोई भी काम बहुत ध्यानपूर्वक करते थे। अपने काम के द्वारा सबको अपनी ओर आकर्षित करते थे। सबकी प्रशंसा भी पाते थे। कुली का काम भी करते थे। उनके माता पिता भी उनको बहुत आदरपर्वक देखते थे। अन्य कुलियों की तरह दिए हुए अनाज को थैली में बाँधकर अपने सिर पर रखकर लाने से मना करते थे। उनके भाई या बहिन एक टोकरी में भरकर ले आते थे।

श्री स्वामी जी के बाल्यकाल के बारे में स्वामी जी की बहिन श्रीमती मंगम्मा जी ने इस प्रकार बताई थी कि स्वामी जी बचपन में अपने सिर के केशों को बाँधकर रखते थे। कुरता और धोती पहनते थे। खेत के काम बहुत निपुणता से करते थे। खेत को बहुत ध्यान लगाकर जोतते थे।

स्वामी जी जब छोटे थे, उस समय एक बार हमारे घर आए थे। उन्होंने हमारे घर के आंगन में नीम, इमली और सहजन (ड्रमस्टिक) पेड़ लगाए थे बाद ये सब बड़े बड़े पेड़ बन गए थे।

स्वामी जी बचपन से ही वे बहुत अकलमंद और सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। मैं स्वामी से छेटी थी फिर भी वे एकवचन से मुझे कभी भी नहीं बुलाते थे। भोजन खिलाओ मंगम्माजी..प्यार से मुझसे भोजन मांगते थे। उनके दोस्त उन्हें वेंकय्या , वेंकय्या कहकर बुलाते थे। मेरे भी वेंकय्या नाम से बुलाने पर वे कहते थे कि सभी दोस्त मुझे वेंकय्या कह रहे थे, तुम मुझे भाई कहकर पुकारो, तुम्हें मेरे नाम से पुकारना मुझे अच्छा नहीं लगता है। उनके साथी आकर उनसे मार्गदर्शन पाते थे। मैदान में जाकर गोबर इकट्टा करने में वे ही सबके नेता बनते थे।

सोलह वर्ष की उम्र में जौ के खेतों को काटते समय सबको अपनी ओर आकर्षित करते थे। जौ के फसल को बहुत सावधनी से काट कर खेत में इकट्टा करते थे। दो मजदूरों का काम खुद ही कर डालते थे। छोटा से काम को भी बहुत श्रद्धा से करते थे। सफलता पूर्वक पूरा करके दिखाते थे।

दूर के दक्षिण देश के राजपद्मापुरम के वर से मेरा विवाह करना चाहते थे। लेकिन स्वामी इनकार कर दिए थे। उस समय कोई भी उन्हें पागल नहीं समझते थे। उन्होंने बताया कि तीन भाइयों के बीच एक ही बहिन हो तुम। इसे उतना दूर के वर से शादी करने की क्या जरूरत है। उन्होंने माँ से लड़कर मेरे विवाह को रोकने के लिए कोशिश की। लेकिन माँ ने मेरा विवाह राजपद्मापुरम के वर से ही करवाया था। इसलिए स्वामी जी शादी को भी नहीं आए थे। वहीं खेतों में फसल के पास ही सो गए।

श्री स्वामी जी बचपन में कभी भी झूठ नहीं बोलते थे। बोलना भी पसंद नहीं करते थे। उस समय स्वामी जी दस साल के थे। एक दिन स्वामी जी के घर एक भिखारी आया था। माँ ने बताया कि घर में अनाज नहीं है जाओ। तब स्वामी जी ने उस भिखारी से कहा कि आधे घंटे के बाद आओ। तब दाने निकाल कर रखेंगे। तुम ले जा सकते हो। किसी भी समय कोई जानवर घास या खाने केलिए तडपते तो वे अपने सिर पर से घास खाने के लिए उनके सामने रखकर खाली हाथ घर वापस आते थे। घर में पूछने पर वे मौन रहते थे।

श्री स्वामी जी को बीस साल की उम्र में बहुत ज्वर आया था। उन दिनों में गाँवों में कोई डॉक्टर या अस्पाताल नहीं होते थे। दो दिन तक उपवास रहते थे तो ज्वर ठीक होता था। स्वामी जी को उपवास रहकर एक हफ्ता बीत गया। भाइयों के द्वारा लाए गए मूँगफली के दाना खाकर वहीं खेतों में पलंग पर सो जाते थे। एक दिन स्वामी जी ने अपने माता – पिता से पूछा कि हमारे घर को नीलाम कर रहे है

आप कहाँ रहेंगे? तब उन्होंने बताया कि हमें किसीको पैसे चुकाने की जरूरत नहीं हैं तो कौन हमारे घर को नीलाम कर देंगे? उन्होंने समझा कि ज्वर के कारण स्वामी ऐसा बोल रहे थे। इसलिए उन्होंने सिर पर नींबू का रस लगाकर उनका अभ्यंगस्नान कराया। स्वामी जी केवल आ ऊ का समाधान ही देते थे। अनेक भूतवैध्यों को और नाडी डॉक्टरों को बुलाकर इलाज करवाया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। धोबी का योग और नाई का योग कहते हुए गाँव में इधर – उधर दौड़ते थे। दो तीन दिन घर भी नहीं आते थे। माँ और पिता उनके लिए खाना बनाकर अपने मजदूरों से उनके लिए भेजते थे। स्वामी जी एकांत प्रदेश में जाकर जोर से आवाज देते थे। खाना की पोटली दिखाते तो उसके पीछे वे घर वापस आते थे। बाद में खाना खाकर फिर भाग जाते थे। कुछ दिन स्वामी जी को घर में रस्सी से बाँधकर रखे थे। स्वामी जी बिना खाना खाए, पानी पीए बैठे रहते थे। उनके माता पिता उन्हें फिर छोड़ देते थे तो खेतों में या आँगनों में स्वतंत्रता से घूमते थे। वहीं कोई खाना देते तो उसे खा लेते थे। गाँव वालों ने समझा कि इस प्रकार हर घर में दिया हुआ खाना खाकर वे कुलभ्रष्ट हो गए थे। उन्होंने दण्ड के रूप में उनकी जीभ को जला दिया। कुछ लोग मानते थे ऐसा दण्ड नहीं दिया गया था। लेकिन उनके सभी कपडे जंगल में भटकते रहने के कारण फटे- पुराने दिखाई देते थे। घर में नए कपडे रहने पर भी बहुत कम समय ही उनको पहनते थे। कोई यौवन स्त्री रास्ते में मिलने पर बाघ को देखकर दौडने वाली गाय की तरह भाग जाते थे।

उस पागल दशा में सभी उनको पागल वेंकय्या नाम से पुकारते थे। धोबी का योग किसका है पूछने पर बताते थे कि उनके चाचा जी का। राजपद्मापुरम में रहने वाली अपनी बहिन के घर बहुत बार जाते थे वहीं बहुत बार भोजन भी खाते थे। वहाँ दौडने वाले स्वामी जी से एक बार वहाँ के कुछ नटकट बच्चों ने पूछा कि वेकन्ना हमें एक कहानी सुनाओ हम तुझे संकटी खाना खिलाएँगे। तब स्वामी जी ने बताया कि संकटी खिलाओ, खाना खिलाने से आँखे खराब हो जाती हैं। उसे सुनकर लोग समझने लगे कि स्वामी पागल नहीं है। वे किसी को नहीं मारते है, नहीं डाँटते है, सम्मान के बिना व्यवहार नहीं करते हैं। जो देने के लिए तैयार है उनके सामने ही हाथ पसारकर खाना माँगते हैं। केवल एक ही विशेषता है कि वे बिना आराम लिए घंटों तक इधर – उधर घूमते रहते हैं।

उन दिनों में मंगम्मा जी के बेटे को ज्वर आया था। बेटे को देखती हुई मंगम्मा रो रही थी। स्वामी जी वहाँ आकर बोले कि मंगम्मा क्यों रो रही हो? बेटा ठीक हो जाएगा। डरो मत। कहते हुए बेटे के मुँह को अपने हाथ से पोंछे थे। चौथा दिन बेटा स्वस्थ हो गया। मंगम्मा को मालूम नहीं था कि उनका वह भाई वेकन्ना स्वामी बननेवाले थे और सबके द्वारा पूजनीय बनकर सभी के आराध्य बनेंगे। नहीं तो मैं अपने भाई वेंकय्या को बहुत अच्छी तरह संभालती और मेरी सारी संपत्ति उनके लिए खर्च कर

लेती। मैंने उनको केवल अपने भाई के रूप में ही देखा था। मंगम्मा यही बात सोचकर अनेक बार पश्छाताप व्यक्त करती थी। स्वामी जी कुँए के ऊपर के पेड की डाली पर अपने पैरों को लटकाते हुए उल्टा झूलते थे। कुछ समय कुँए में गिर जाते थे फिर और एक बार वहीं लटकते थे। साई भगवान भी स्वामी जी की तरह ये सभी लीलाएँ करते थे। साई ग्रंथ में ये सभी उल्लेखित हैं।

स्वामी जी के भाई चिनपनायुडु स्वयं स्वामी जी के बारे में बताते थे कि गाडी में बैठते समय स्वामी जी अपने पैरों को गाडी पर रखकर सिर नीचे लटका देते थे। देखनेवाले को बहुत डर लगता था। अनेक बार स्वामी जी को ऐसे ल़टकते हुए गाडी से जाते हुए मैंने स्वयं देखा था। बाकी सभी लोग गाडी में सीधा बैठते थे।

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 02

अनिकेतुडु

घोबी का योग, नाई का योग चिल्लाते हुए दौडने वाले सोंपल्लि पिच्चि वेंकय्या बीस साल की उम्र में घर छोड़कर भागकर कही चले गए थे। बहुत दिनों तक उनके माता पिता को उनका पता भी नहीं चला। उस काल में किस साधु का अनुग्रह उनको प्राप्त हुआ था। कहाँ कहाँ उन्होंने तपस्या किया था? किस तरह जीवन बिताए थे? .. आदि विषयों के बारे में अनेक लोग विभिन्न रूपों में बताते थे। मोपूरु दशय्या से स्वामी जी ने बताया था कि जंगलों में भटकते समय मुझे सादय्या जी मिले थे। मुझे आँख बंद करने को कहे थे। तुरंत मैं पेंचल कोना के बिलम् में सादय्या के साथ रहा था। आँख खोलकर देखे तो वहाँ पूरा प्रांत ऋषियों के संघ से भरा हुआ था। वहाँ कुछ दिन ठहरने के बाद में फिर एक बार आँख बंद करने को सादय्या आज्ञा दिए थे। मैं आँख बंद करके फिर खोलने से मद्रास के हाइकोर्ट के सामने खडा हुआ था।

घर छोड़कर चले जाने के बाद में जब वे वापस आ गए थे तब से श्री वेंकय्या स्वामी के नाम से सबके प्रिय बन गए थे। बहुत लोगों के बहुत बार पूछने पर भी वे अपने घर वापस नहीं गए थे। वे अपने गाँव में भी अपने पैर नहीं रखते थे। जब भी निकट गाँव जाने पर भी गाँव के आसपास के खेतों या बाहर के खाली मैदानों में घूमकर चले जाते थे।

घुटनों के ऊपर फटा हुआ धोती, फटी कमीज, हाथ में एक मटकी और एक लकडी के साथ एकांत प्रदेशों में भटकते थे। यौवन स्त्रियों से दूर जाते थे। जलती लकडी को हाथ में सदा रखते थे। कपिल मोकु लकडियों को बाँधकर अपने सिर पर रखकर अपने साथ ले जाते थे। कुछ दिन पेन्ना नदी के आस - पास और कुछ दिन निकट के जंगलों में भटकते रहते थे।

उसके बाद चलमानायुडु की सेवाओं में रहकर पेन्ना बद्वेलु के गिरि के शिखर पर एक झोंपडी बनाकर उसमें दीप जलाकर तंबूरा बजाते हुए रहते थे। चलमनायुडु समीप वाले गाँवों को जाकर भिक्षा माँगकर भोजन लाते थे। वहाँ के अनेक लोग उनके द्वारा अपने पशु और मनुष्यों की बीमारियों से मुक्ति पाते थे। भक्तों के प्रश्नों के समाधान भी देते थे। उन प्रश्नों के समाधान सबको आकर्षित करते थे। किस प्रकार

का विवाह संबंद अच्छा है पूछने पर स्वामी जी एक - एक देखे हुए संबंधो के लिए एक एक पत्थर सामने रखने को कहते थे। तंबूरा बजाकर बताते थे कि पूर्व दिशा से दूसरा या पश्चिम दिशा से तीसरा संबंद सबसे अच्छा है। साधारणतः स्वामी जी के द्वारा बताया गया उत्तर सही निकलता था। नहीं निकलने पर लोग समझते थे कि उनकी बात को वे सही समझ नहीं सके।

बद्वेलु छोड़ने के बाद स्वामी जी बहुत समय तक कोटितीर्थ के पास के मंदिर में ठहरे थे। वहाँ स्वामी जी तंबूरा बजाते हुए नारायण आदिनारायण का नाम जप करते रहते थे। तंबूरा के तंतियाँ टूट जाने पर भी लकडियों की सहायता से तंबूरा बजाकर नाम जप करते थे। जप तन्मयता से बाहर आते थे तब टूटी हुई तंतियों को फिर सही कर देते थे। चलमनायुडु और अन्य सेवक उनके लिए भिक्षा ले आते थे।

उसके बाद कुछ समय एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे। भगवान साई की तरह घुटनों के नीचे तक लटकनेवाला बहुत लंबा कुरता पहनते थे। उस कुरते पर स्याही के हाथ और उँगलियों के निशाने या मुद्र होते थे। कुछ कुरते पर राम राम नाम लिखे रहते थे। अपने हाथ से स्याही के मुद्रा कागजों पर बनाकर भक्तों को देते थे। नेल्लूरु के अनेक गाँवों में घूमते हुए कागजों पर निशाने बनाकर भक्तों को प्रदान करते थे। चलमनायुडू जी. पोलिरेड्डी जी व अन्य सेवक स्वामी जी के साथ चलते थे। कागज पर अंगूठी के निशानों के साथ – साथ अग्नि कुंड का प्रबंद न भी करते थे। रोज बहुत कागज और स्याही का इस्तेमाल करते थे। स्वामी के भक्त जो स्वामी की कृपा से अपनी बीमारियों और समस्याओं से मुक्ति पाए थे वे स्वामी के लिए कागज या स्याही का खर्च देते थे।

बाद में स्वामी जी अपना अधिक समय अग्निकुंड जलाकर रात और दिन उसमें लकडी डालते हुए, अर्थ रहित बातें करते हुए समय बिताते थे। हर दिन दो या तीन गाडी भर की लकडी अग्निकुंड में डाल कर जलाते थे। चाहे बारिस हो या गरमी के दिन हो अग्निकुंड के निकट ही बैठते थे। वेंकय्या स्वामी सुबह दस बजे से सूर्य की किरणों से बचने के लिए एक लकडी धरती में दबाकर उस पर एक ताड का पत्ता लटकाते थे। ताड के पत्ते से कुछ समय तक ही उनको छाया मिलती थी बाद में पुनः सूरज की किरणों का ताप उनको लगता था। स्वामी जी अग्नि पैदा करने के काम में मग्न होते समय अपनी आराम का परवाह नही करते थे। दो या तीन दिन और कई रातों तक अग्नि के सामने बैठे रहते थे। वहीं एक जूट की थैली पर सोते हुए योगनिद्रा में डूब जाते थे। इस दशा में शरीर पर केवल छोटा सा कपडा ही रहता था। शरीर पर कोई कमीज या कोई बनियन भी नहीं रहती थी। पैरों पर जूते वे कभी नहीं पहनते थे।

स्वामी जी बाद नेल्लूर जिला के गोलगामूडि पहुँचकर लगभग आठ साल एक ही जगह अग्निकुंड जालाए थे। रोज लगभग पाँच या छे गाडियों भर लकडी जलाते थे। आठ साल तक जहाँ स्वामी जी अग्निकुंड जलाए थे वहीं आज स्वामी जी की समाधी बनी हुई है।

रमनय्या नाम का एक भक्त गाडी में अग्निकुंड के लिए लकडी ले आकर स्वामी जी को देते थे। मोपूरु दसय्या, वेंकटय्या आदि भक्त स्वामी जी के लिए लकडियाँ काटकर ले आते थे। कुछ समय स्वामी जी भी उनके साथ जंगल में जाते थे। जंगल में जब वे लकडी काटते, स्वामी जी एकांत में रहते थे। एक जाती के पेडों की लकडी ही वे अग्निकुंड केलिए जंगल में काटते थे। इस कार्य के कारण जंगल में अनेक पेडों को काटा गया। स्वामी जी बताते थे कि इस पेड रहित जंगल का प्रदेश उर्वर बन जाएगा। यहाँ भविष्य में खेती करेंगे। गोमाता के पाद मात्र स्थल भी नहीं उपलब्ध होगा। आज देखे तो स्वामी जी की बातें सच निकली।

स्वामी जी मन के अनुसार जहाँ चाहे वहाँ घूमते थे। इस प्रकार गाँव – गाँव घूमते रहने से उनके पैरों में दर्द होने लगा। इलाज करवाने केलिए वे सहमत नहीं हुए। उन्होंने बताया कि पूर्व काल में मैंने एक गाय को मारा था। उसका फल मैं अब भोग रहा हूँ। इस प्रकार भोगने से मेरे कर्म का दोष पूरा होगा। मैं दवा लेना नहीं चाहता हूँ।

श्री स्वामी जी पैरों में दर्द के कारण एक जगह रहते थे। एक दिन अपने सेवक रोशरेड्डी जी से स्वामी जी ने अपने को एक ताड के पत्ते पर बिठाकर ले जाने को कहा। कोशरेड्डी ने ऐसे ही किया। सेवकों को मालूम था कि स्वामी जी को ताड पत्ते पर बिठाकर ले जाने से उनको पीडा होगी। इसलिए उन्होंने स्वामी के लिए चार चक्रवाली एक गाडी बनवाई थी। उसी पर बिठा कर स्वामी जहाँ चाहते, वहाँ खीचते हुए उनको ले जाते थे। कुछ समय रास्ता साफ न होने से बहुत थक जाते थे। इसलिए सेवक उनको डोली में बिठाकर ले जाते थे। इस प्रकार स्वामी जी की समाधी के दो साल पहले तक नेल्लूरु, पोदलकूरु, चिट्टिपालेम, पेन्नबद्वेलु, कुल्लूरु, राजुपालेम, शोमशिला, कोटितीर्थम्, इसुकुर्ती, मुदिगेडु, डेगपूडी, तलुपूरु, कलिचेडु, नवकोटि सिद्धलय्य कोना, चेर्लोपल्लि, तिरुपति, कंचि, संगम्, पेनवर्ती , मैपाडु, इंदुकूरिपेटा, गोलगामूडि आदि प्रांतों में घूमते थे। स्वामी जी कभी भी गृहस्तुओं का आश्रय नहीं लिया। देवालयों, पुराने मकान, पाठशालाओं, नीम के पेडों के पास वे रुकते थे। निष्कपट, भक्ति के साथ उनका आह्वान करने पर वे उनके घर जाते थे। घर के बाहर ही रहते थे। अंदर नहीं जाते थे।

बारिश आते वक्त भी घर के कार्निस के नीचे सोते थे। बहुत विनती करने पर भी घर के अंदर नहीं आते थे। यदि घर में प्रवेश करके स्वामी जी धुनी लगाए तो वह घर सुसंपन्न बन जाता था।

गाँव – गाँव भटकते समय यदि स्वामी जी को भूख लगे तो भगवान के द्वारा दिखाए गए घर में जाकर जो वे देते थे उसे खाकर चले जाते थे। यदि घर जाकर खाना माँगने पर भी नहीं देते तो वे उनको बताते थे कि आपके घर के उस जगह आप खाना पकाकर रखे थे, उस जगह दूध, दही थे। इस प्रकार देखे बिना ही वे सब कुछ बता देते थे। इसलिए लोग समझते थे कि वेंक्य्या पागल नहीं हैं, वह एक असाधारण व्यक्ति है। इसलिए ही जो वेकय्या पूछते थे उसे बिना संकोच के वे उन्हें दे देते थे। प्रतिफल में बहुत वापस पाते थे।

स्वामीजी कभी भी जूते नहीं पहनते थे। जंगल में घूमते थे। कोई कंटक पैर में घुस जाने पर उनको निकालने केलिए आवश्यक सभी सामग्री अपने पास रखते थे। कुछ समय दो या तीन सेंटीमीटर कंटक भी उनके पाँवों से सेवकों ने निकाले थे। उनकी स्थिति देखकर सभी आश्यर्य में पड जाते थे।

अग्निकुंड के बहुत निकट ही वे सोते थे। साधारण व्यक्ति का उतना निकट अग्निकुंड के पास सोना असंभव होता था। गरमी का ताप और धुआँ से हम नहीं रह सकते हैं। लेकिन स्वामी जी वहीं रहकर अपना समय बिताते थे।

गाँवों के किसान अपने खेत में एक छोटा सा गड्ढा बनाकर पेन्ना नदी के पानी को उस गड्ढे में नालियों के द्वारा भर कर उस पानी को अपने खेतों की सिंचाई के लिए इस्तेमाल करते थे। स्वामी जी वहाँ जाकर आधा पानी पेन्ना नदी को और आधा पानी खेत के लिए छोड़ते थे। खेतों के लिए बुहुत पानी मिलता था।

एक बार स्वामी जी गाँव में पागल जैसा घूम रहे थे। उस समय वहाँ डाकुओं के पकडने के लिए पुलिस आई थी। उन्होंने समझा कि स्वामी जी ही डाकू है। उनको पकडकर जैल में रखे थे। स्वामी जी दो दिन तक बिना बोले वहीं जेल में बैठे हुए थे। इनके व्यवहार को देखकर, उनके बारे में सुनकर पुलिस ने उनको छोड़ दिया। वहाँ से राजपद्मापुरम अपनी बहिन के धर जाकर अपनी जेल कहानी सुनाकर रोने लगे। स्वामी जी को रोते देखकर बहिन मंगम्मा भी रोने लगी थी। लोगों को पता नहीं चला वे दोनों क्यों रो रहे थे। बाद पता चलने पर उन्होंने बताया कि पुलिस को पकडकर मारेंगे, तुम रोओ मत। कहने पर छोटे बच्चे के समान रोना बंद कर दिए थे।

इधर – उधर घूमकर शाम को बहिन मंगम्मा के धर खाने के लिए स्वामी जी जाते थे। यदि कोई स्वामी जी से व्यर्थ बातें करते हुए घर बैठकर खा रहे है ऐसा कहने पर स्वामी जी तुरंत चले जाते थे। घर में खाना परोसकर दरवाजा बंद करके रखे तो चुपचाप स्वामी जी आकर दरवाजा खोलकर खाना खाकर चले जाते थे। यदि खाते

समय उनके पास कोई खडे रहे तो, चले जाओ। मैं अपने आप खाता हूँ। .. कहकर डाँटते थे।

शाम तक खेतों में या जंगल में घूमकर वापस घर आते वक्त वहाँ उपलब्ध मूँगफलियोँ को इकट्ठा करके एक पोटली में बाँधकर उनकी बहिन को देते थे और उनसे दिया हुआ खाना खाते थे। कभी भी किसी से मुफ्त में खाना लेकर नहीं खाते थे।

घर से निकलने के बाद फिर अपने गाँव नगुल वेल्लटूरु वापस नहीं आए थे। एक बार उस गाँव के निकटतम गाँव पहुँचे थे। उनका भाई ने जाकर उनको बुलाया था। जौवर खेत में फसल काटते समय वे भी खेत में जाकर धोबी का योग, नाई का योग कहते हुए फसल काटना शुरू किए थे। चार दिन का काम दो ही दिनों में पूरा हो गया था।

स्वामी जब बहुत मशहूर हो गए थे तब उनकी माँ जी उनके लिए कुछ स्वादिष्ठ पदार्थ बना कर ले गयी। उनको देने पर पहले वहाँ सभी को बाँटने को कहा। फिर उनमें से बहुत कुछ ही वे खाए थे। एक दिन स्वामी जी ने मंगम्मा जी के घर भोजन खाया था। वापस उन्होंने बताया कि मंगम्मा ने भोजन में विष मिलाकर खिलाया है। मेरे पूरे शरीर में दर्द, जलन, सूई से चुभने जैसा अनुभव कर रहा हूँ। मुझे खाना खिलाइए। तब वहाँ के गाँव वालों ने बताया कि अब रात हो गयी है। अब खाना कहाँ से आएगा? कल सुबह खाना पकाकर खिलाएँगे। तब स्वामी जी ने बताया कि मुझे खाना नहीं तो दो सेर दाना दे दो। उनसे दाना लेकर वहाँ की चींटियों को दाना खिलाए थे। उनका उद्धेश्य था कि चींटियों की भूख मिट जाए तो उनकी भूख भी मिट जाएगा।

बद्वेलु गाँव के पास अंकालम्मा नामक एक स्थान है। वहाँ पेन्ना नदी बीस फुट चौडी बहती है। स्वामी जी स्वयं वहाँ के रेत इकट्ठा करके उस नदी के पानी के प्रवाह को रोकने के लिए एक रेत की सीढ़ी बनाने के लिए कोशिश करते थे। जयरामराजु, वेकय्या भी रेत को इकट्ठा करने में मदद करते थे। पानी के प्रवाह को रोकने के बाद उस पानी को और एक नाली बनाकर प्रवाह के विरुद्द दिशा में बहाते थे। कुछ दूर नाली में पानी बहकर फिर नदी में मिल जाता था। नदी से मिलने के स्थान पर लकडी जलाते थे। किसी को उसके निकट नहीं आने देते थे।

वहाँ के पानी को घडे में लेकर जलते लकडी के दोनों तरफ डालते थे। सेवक पूछते थे कि स्वामी जी ऐसे क्यों कर रहे है? इस पानी का मूल्य आपको मालूम है। क्यों पानी को बरबाद में कर रहे है? तब स्वामी जी बताते थे कि पेददम्मवारु(बडी देवता) गाँव के हैजा जैसी बीमारियों को कम कर रही हैं न। उनको प्रसन्न करने के लिए मैं ऐसा काम कर रहा हूँ।

कुछ समय सेवकों के हाथ में पैसा भी नहीं रहता था। अभी तिरवल्लूर जाना है। चलिए। नेल्लूरु जोन्नवाडा, कंचि आदि देवालयों को जाना है। अचानक स्वामी जी ने सेवकों से कहा। स्वामी हमारे पास पैसे नहीं है। सेवक के कहने पर वे बताते थे कि पैसे अपने आप आ जाएँगे। चलो चलो। आश्चर्य की बात, यात्रा के लिए आवश्यक पैसे कोई न कोई भक्त आकर देकर चले जाते थे।

एक रोज मध्याह्न के समय तलपूरु में भक्त गण खाना पका रहे थे। स्वामी जी ने कहा तुरंत चलो। यहाँ एक क्षण भी नही रूकना चाहिए। सेवकों ने बताया कि खाना पूरा पका नहीं है। स्वामी जी ने बताया खाना अपने आप पक जाएगा। चलो। पकते खाने को छोडकर सब बस स्टेषन पर आ पहुँचे। पोदलकूरु जाने वाली बस आ गयी थी। सब चढ़ने केलिए तैयार हो गए। स्वामी जी ने कहा कि यह बस हमारी नहीं। बाद में की बस से चलेंगे। सेवक ने कहा हम सब खाना छोड़कर आ गए है। स्वामी जी ने बताया कि खाना आएगा। सेवक ने बताया कि बस टिकट के लिए पैसे नहीं है। स्वामी जी ने बताया ऊपर वाला पैसा भेजेगा। इतने में पोट्टिपालेम से आदि लक्ष्मम्मा जी ने अपने कार में वहाँ आकर सबके लिए आवश्यक खाना, दोसा, वडा, पोंगली, इमली का भात आदि देकर सबको खिलाई। दक्षिणा के रूप में पैसा भी दिया। बस टिकट लिए आवश्यक पैसे से अधिक दक्षिणा उनको मिली।

एक गाँव में दो या तीन जगह स्वामी जी रहने के लिए इंतजाम करते थे। कुछ समय वे कहते थे कि इस दिशा में ही जाना है। वह रास्ता जितना तंग या संकट को होने पर भी उसी दिशा में उनको जाना पडता था। चाहे खाना खाए है या नहीं, बारिस हो या धूप उनको स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार जाना ही पडता था।

जंगल में स्वामी जी क्या करते है जानने के लिए बहुत लोगों ने कोशिश की। जब स्वामी जी को पता चलता था कि उनके पीछे लोग आ रहे हैं तब वे कांटों के ऊपर चलते थे। या तंग रास्ते पर चलते थे। उनको देखकर लोग वहीं रूक जाते थे।

दांतों को साफ करना या पानी से मुँह साफ करना कभी भी नहीं करते थे। मुँह के तंबाकू को बाहर थूककर रस पीते थे।

एक बार मैं स्वामी जी के सन्निधि में बैठने से मेरे दमा की बीमारी किस प्रकार ठीक हो गयी थी, का विवरण सबको बता रहा था। स्वामीजी एकांत में बैठे हुए थे। उन्होंने बताया कि तुम जिस प्रकार चाहते हो उस प्रकार क्यों बोलते हो। चुप रहो। एक सेवक ने बताया कि स्वामी जी बता रहे थे कि मेरे बारे में सभी लोग अनेक कहानियाँ सबको सुना रहे थे। ये सभी कहानी ठीक नहीं है न? वहाँ के तुलसम्मा ने भी बताया कि स्वामी जी बता रहे थे कि यहाँ के लोग मेरे बारे में बातों को गाडियों लादकर फैला रहे है। उनको बताओ कि यह ठीक नहीं है।

स्वामी जी की भाषा नहीं मालूम होने के कारण अनेक भक्त उनकी बातों को सुनकर दूसरे बार दर्शन के लिए नहीं आते थे। स्वामी चाहते थे कि उनकी महिमा सबके सामने प्रकट नहीं होनी चाहिए। वह रहस्य किसी को मालूम नहीं होना चाहिए। इसलिए अपनी बातों को करोड, फन, राशि आदि रहस्य नामों से व्यक्त करते थे।

कभी - कभी मन लगने पर शिरोमुंडन करवाते थे। सभी अन्य लोग नाई को पचास पैसा देने पर स्वामी नाई को एक या दो रूपए देते थे। 1980 के बाद में सेवक उनकी इच्छा के अनुसार सिर के पूरे बाल और मूँछ निकाल देते थे। श्री स्वामी जी के सेवक बरिगेला नगय्या हर समय यह काम करते थे। स्वामी जी के यौवन में सिर पर बहुत बडे बडे लंबे बाल और बडी मूँछ होती थी।

महासमाधी के एक साल पहले तक अपने दोनों हाथों की उँगलियों को एक दूसरे से बंद कर बैठे रहते थे। अस्वस्थ होने पर भी या मौन में रहने पर भी मूत्र विसर्जन आगे बढकर करते थे। कभी भी अपने पलंग पर नहीं करते थे। श्री रोशिरेड्डी जी स्वामी जी के मूत्र को पीते थे।

रोशिरेड्डी अंधा होने पर भी, भोजन छोडकर द्रव आहार को लेने पर भी, अपनी आखरी दिन तक गाँव में जाकर भिक्षा माँगकर भक्तों के लिए खाना खिलाते थे। स्वामी की सेवा करने वाले की स्वामी भी सेवा करेंगे। उनका यह अपार विश्वास ही उनका बल था।

स्वामी जी के लिए कोई नियमित दिनचर्या नहीं होती थी। कुछ दिन निरंतर दो दिन और दो रात गाडी रोको कहते हुए एक ही आसन पर बैठे रहते थे। उनके कहने पर और कोई सेवक दुहराते रहते थे। कुछ दिन रात और दिन योगनिद्रा में रहते थे। अज्ञान लोग उनको देखकर समझते थे कि वे अस्वस्थ है इसलिए वे निरंतर सोए हुए हैं। ऐसी स्थिति में भी स्वामी जी का ज्ञानी बनकर भक्तों की सहायता करने का अनेक भक्तों का अनुभव प्राप्त हुआ था।

उदाहरण के लिए 1978 में एक दिन स्वामी जी पूरा दिन और रात सोए हुए थे। मैं नामस्मरण करके तभी आया था। मुझे देखकर अचानक उठकर एक कागज पर लिखकर आशीर्वाद देकर फिर सो गए थे। सेवकों के कुछ पीने के लिए देने पर भी पीने से इनकार कर दिए थे। पांच मिनिट के बाद में मुझे समाचार मिला कि मेरी माँ मरणावस्था में थी। मुझे तुरंत आने केलिए समाचार मिला था। मैंने तुरंत कलिचेडु जाकर, श्री स्वामी जी के पादतीर्थ मेरी माँ के मुँह में डाला। तुलसी तीर्थ भी मुँह में डालने पर उसे भी पिया। दवा देने के लिए कोशिश करने पर पीने से इनकार कर दिया। केवल श्री स्वामी जी के पाद तीर्थ स्वीकार करके अपनी अंतिम स्वास छोडी थी। अपने अंतिम क्षणों में मेरी माँ ने केवल साइनाथ का नाम स्मरण ही किया था।

इसलिए ही स्वामी जी के रूप में आकर साई जी ने उनको आशीष देकर उनको सद्गति प्रदान की।

ऊपर के उदाहरण से हमें मालूम होता है कि स्वामी जी नींद में रहने पर भी सच कहे तो वह नींद नहीं है। उस स्थिति में उनको मालूम होता था कि तीन किलोमीटर दूर से उनके आशीर्वाद केलिए मैं पादचारी बनकर आ रहा था। दो घंटों में मेरी माँ मरने वाली थी.. यह समाचार भी उनको मालूम था। मुझे बुलाने केलिए कुछ आदमी आ गए थे यह समाचार भी उनको मालूम था। मेरी माँ सदा साई नाम स्मरण करती रहती थी इसलिए उसे सद्गति देना पडेगा यह भी उनको मालूम था। इसलिए ही मेरे आते ही उठकर मुझे कागज पर आशीर्वाद लिखकर देकर फिर सो गए थे। योगनिद्रा में डूब गए थे। सही योगी के लिए रात या दिन दोनों एक समान होते है। यह सत्य स्वामी जी के विषय में भी सही साबित हुआ है।

साधना काल में उनका अनन्य वैराग्य देखने में बहुत अच्छा लगता था। लड्डु देने पर खा लेते थे। उसमें थोडा खारा, चटनी मिलाकर खा लेते थे। कुछ समय तक भक्त लोग चना, गुड, नारियल मिला कर चून करके रखने से उसे खाते थे। एक बार इस चून के स्थान पर अभ्यंगस्नान के लिए इस्तेमाल करने वाले चून मिलाकर खा लिए थे। सेवक बहुत डर गए। अपनी भूल के लिए पश्चात्ताप व्यक्त किए थे। स्वामीजी अपनी समाधी के निकट पंद्रह सालों से कभी भी पानी पीना बंद कर दिए थे। गरम पानी में कुछ चीनी मिलाकर देने पर पीते थे। अपने पैरों को छूने का मौका किसी को नहीं देते थे। दस सेवकों से केवल तीन सेवकों को ही यह मौका मिलता था। किसी को उनकी पूजा नहीं करने देते थे। प्रदक्षिणा भी एक ही बार करने देते थे।

दक्ष शब्द का अर्थ संस्कृत में श्रद्धा है। हमें जिसके प्रति श्रद्धा होती है उसके समक्ष हमारी मन की भावना व्यक्त करने की विधि ही प्रदक्षिणा है। वहीं दक्षिणा प्रदान करना है। जिन लोगों के प्रति श्रद्धा होती है उनके बारे में बहुत जानने की उत्सुकता बढ़ती है। जो हमारे लिए प्रीतिपात्र है उनके प्रीतिपात्र कार्यों और बातों को याद करते हुए पूरे हृदय में उनके प्रेम को भरकर आनंद पाते हैं। इस प्रकार के अंतरंग का बाह्य प्रकट ही प्रदक्षिणा है। **स्वामी जी मानते है कि निरंतर मन को प्रिय के चारों ओर दौडाने वाले व्यक्ति को स्वामी जी के लिए एक बार प्रदक्षिणा करना उचित है।** 1

स्वामी जी के लिए ताड पत्र ही आसन है। मटकी (मिट्टी का घडा) ही बरतन है। जूट की थैली ही बिस्तर है। भूदेवी उनके लिए झूला है। रागि संगटि, प्याज, मिर्च का आटा उनके लिए पंचभक्ष्य परमान्न के समान है। पुराने कपडे उनके लिए सबकुछ हैं। वे सचमुच वैराग्य मूर्ति है।

बचपन में लोग समझते थे कि स्वामी जी पागल थे। लेकिन जब वे 20 साल अपने घर में रहते थे तब या जब वे पैदल बहुत गाँवों को घूमते थे तब किसीको

किसी भी तरह का विमर्श न करते थे। किसी के बारे में कुछ नहीं व्याख्या करते थे। स्वामी को अपनी कोई इच्छा नहीं होती थी। उनके साथ रहने वाले सेवकों कभी किसी के बारे में कुछ बोलने पर भी वे कभी भी उनको रोकने का प्रयत्न भी नहीं करते थे।

कभी भी वे अपने लिए यह सब्जी चाहिए, या यह सब्जी अच्छी नहीं है या यह काम ऐसा करो या यह काम ऐसा करना नहीं चाहिए.. इस प्रकार कोई व्याख्या किसी भी संदर्भ में नहीं करते थे। जो भी मिले उससे संतुष्ट रहते थे। मिठाई देते तो उसके साथ खारा या मिर्च मिलाकर खाते थे। जिह्वा को अच्छी रूचियों का आदि होना नहीं चाहते थे। बाह्य परिस्थितियों से टकराते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने का प्रयत्न वे निरंतर करते रहते थे। बारिश, धूप, हवा, ठंड किसी की परवाह नहीं करके निरंतर अग्नि को जलाते रहने में प्रयत्नशील रहते थे।

स्वामी जी के भोजन करने के तरीके के बारे में श्री देवल्ल वेंकय्या जी ने बताया कि श्री स्वामी जी किसी भी प्रांत में अपने सेवकों के साथ बसने पर उनके खाने के पत्ते पर भोजन पूरा परोसवाते थे। परोसा गया भोजन को वे पत्ते के किनारे पर रखकर बीच में कम भोजन रखते थे। बीच के भोजन खाने के बाद में किनारे पर रखा हुआ भोजन को चारों ओर फेंक देते थे।

स्वामी जी के भोजन खाते समय दो पत्तों में भोजन परोसना पडता था। एक बरतन भर भोजन लाकर उनके पत्ते पर डालना पडता था। अपने स्याही भरे हाथ से उस भोजन को छूकर आतिथ्य देनेवाले अपने भक्तों को देते थे। उसे प्रसाद के रूप में लोग स्वीकारते थे। फिर दूसरे बार उतना ही भोजन उनको परोसना पडता था। उस भोजन से गोलाकार में कुछ छोटे और कुछ बडे आकार में बनाकर पत्ते के किनारे पर रखते थे। बीच के भोजन को खाते थे। केवल दो ही बार उनको भोजन परोसना पडता था। पहले पत्ते के भोजन को प्रसाद के रूप में भक्त मानकर लेते थे।

पहले स्वामी जी सबको कुछ लाल मिर्च देने के लिए पूछते थे। लाल मिर्च के साथ नमक, प्याज सबको हाथ में रखकर मिलाकर खाते थे।

यह देखकर स्वामी जी के लिए श्रीमती रोशरेड्डी जी लाल मिर्च, धनिया, नमक मिलाकर आटा बनाकर एक डिब्बे में रखती थी। स्वामी जी जब चाहते थे तब उनको इस डिब्बे से यह देते थे। कुछ समय कभी कभी गुड भी पूछते थे। इसलिए रोशरेड्डी जी चना, नारियल, गुड आदि मिलाकर डिब्बे में रखते थे। स्वामी जी इनके साथ – साथ धनिया, इमली के पत्तों का चूर्ण भी भोजन में खाते थे।

एक दिन स्वामी जी ने एक सेवक से पूछा कि मुझे कुछ खाना पकाकर खिलाओ। वहाँ के भक्त गणों ने खाना पकाकर उनके सामने रखा। तब स्वामी जी ने उस खाने को अपने हाथ से छूकर सेवकों से कहा कि इस प्रसाद को सभी भक्तों को दीजिए। इसे खाने से उनकी बीमारियाँ गायब हो जाएंगी।

एक बार स्वामी जी ने मुझे पूछा कि कुछ पान और सुपारी खिलाओ। पान लाने पर कुछ ही खाकर उसे वापस देते थे और कहते थे... बहुत मसालादार नहीं हैं। कुछ मसाला डाल कर ले आओ। मसालादार पान लाते तो पूरा खा लेते थे। बीच बीच में अपने आप किसी अदृश्य व्यक्ति से कहते थे कि खाओ, खाओ। बाद में कहते थे कि उस औरत को यहाँ से चले जाने को कहो। मैं बाकी सब कुछ देखता हूँ।

एक दिन आंजनेयस्वामी के देवालय में भक्त गण जो तत्वगीत गा रहे थे उनको रोक कर ओं नारायणा, आदिनारायण नाम स्मरण सबसे करवाए थे। तब तक कभी भी स्वामी जी किसी से नामस्मरण नहीं करवाए थे।

माँड ही स्वामी जी लेते थे। उस समय कभी कभी लहसून को उबालकर रूची से खाते थे। लहसून को खाना बहुत पसंद करते थे।

स्वामी जी को माँड पिलाने का कार्य रोज श्री रोशरेड्डी करते थे। एक दिन रोशरेड्डी जंगल लकडी काट कर लाने गए थे। उस समय और एक सेवक स्वामी जी को माँड पिलाने केलिए गए थे। लेकिन स्वामी जी ने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने मना कर दिया। बाद रोशरेड्डी आकर माँड देने केलिए तैयार हुए तब सेवकों ने कहा कि स्वामी जी माँड पीना नहीं चाहते थे। इनकार कर दिए थे। तब रोशरेड्डी अपने आप स्वामी जी के पास माँड लेकर गए उनको देखकर माँड पी लिए थे और बोले थे कि तुमने प्रेम से ले आया था इसलिए मैंने पिया। स्वामी जी की सेवा जो सेवक करते थे उनको ही यह सेवा करना पडता था। नया सेवक आने पर वे उनको मना कर देते थे।

जब स्वामी जी भोजन करते थे उन दिनों में भी रोशरेड्डी वहीं खिलाने का कार्य करते थे। एक बार रोशरेड्डी के स्थान पर और एक सेवक ने आकर स्वामी जी को खिलाने का प्रयत्न किया। स्वामी जी ने उस खाने को वहीँ रखकर उसे वहाँ से चले जाने का आदेश दिया। खाना नहीं खाया। बाद में रोशरेड्डी को बुलाकर बोले कि यदि तुम चाहते हो तो मुझे भोजन खिलाओ नहीं तो मुझे गाडी में लादकर आश्रम में छोड़ दो। तब से रोशरेड्डी के अलावा और कोई स्वामी जी को खाना खिलाने आगे नहीं आते थे।

एक दिन रोशरेड्डी उरफ नागताता जी से स्वामी जी बोले दाए हाथ से दो मुट्टी भर पानी पीओ। उस दिन पानी पीने के बाद में उनका प्यास बुझ गया था।

साधारणतः अग्निकुंड के पास सेवक अग्नि जलाने के काम में उनकी सहायता करते थे। बाद किसी को कुंड के पास नहीं आने देते थे। तुलसी जी रोज कुंड में संभ्राणी डालकर कुंड को नमस्कार करती थी। श्री स्वामी जी ने तुलसी जी को कुंड के पास नहीं आने दिया। उसी प्रकार रोशरेड्डी जी को भी कुंड के पास लकडी संभालने नहीं दिया। अब मत छुओ। कहते हुए मना कर दिए थे। इससे मालूम होता कि उस

समय कोई स्थूल दृष्टि से देखने पर उनको वहाँ कुछ योगी या ऋषि आते दिखाए दिए होंगे। इसलिए ही इनको मना कर दिए थे।

एक बार स्वामी जी मैदान में धूनी लगाकर बैठे हुए थे। स्वामी जी के स्वभाव से अपरिचित व्यक्ति मुँह में बीडी को जलाने केलिए वहाँ आया था। स्वामी जी के पास के तंबूरा को देखकर उस धूनी से बीडी को जला सकता है या नहीं दुविधा में पडा हुआ था। उसे देखकर स्वामीजी ने कहा, क्या बीडी जलाना चाहते हो? तो जलाओ। स्वामी जी की बात सुनकर सभी लोग आश्चर्य में पड गए। कारण स्वामी जी किसी को धूनी के पास नहीं आने देते। ऐसे से स्वामी का बीडी जलाने के लिए उस व्यक्ति को अनुमती देना सबके लिए आश्चर्य की बात बन गयी थी। इस घटना से पता चलता है कि दूसरों के भावनाओं के अनुसार स्वामी अपना स्वाभाव बदलते थे।

दक्षिणा के रूप में आए हुए पैसे या अन्य सामग्री स्वामी जी अपने सेवकों को दे देते थे। अपने पास किसी भी चीज को नहीं रखते थे। त्योहारों के अवसर पर जो सामग्री भक्त लोगों से उनको मिलता था, उनको भक्तों को और अपने सेवकों को तुरंत बाँटते थे।

दशय्या, रमणय्या, रोशिरेड्डी उनके साथ बहुत काम करते थे। इसलिए उनके लिए अपने पास पत्येक वस्तु छिपाकर रखते थे और उनको देते थे।

रात और दिन अपने साथ रहकर काम करने वाले रोशिरेड्डी जी को अपने पास की मिठाइयाँ रात के समय देकर स्वामी जी कहने लगे कि तुम झोंपडी के पीछे जाकर खाकर आ जाओ।

महा समाधी प्राप्त करते समय स्वामी जी की उम्र 95-98 है। अंत के बारह साल केवल द्रव पदार्थों का सेवन ही करते थे। शरीर पर कहीं बूढ़ापन नहीं दिखाई देता था। स्वामी जी का शरीर हड्डियों के ऊपर चमकता हुआ दिखाई देता था। लगता था यह तो योग शरीर है।

स्वामी जी की आँखों में प्रशांतता, गंभीरता दिखाई देती थी। चमकती आँखे उस महायोगी के लिए आभूषण जैसे लगती थीं।

गुरवय्या सदा स्वामी जी के सिर के पास ही रहता था। स्वामी जी जो भी बोलते, चिल्लाते थे वहीं दुहरा कर सदा जाग कर रहते थे। स्वामी जी अपने हाथों को पीछे रखकर सिर के नीचे के तकिए को पकडकर आकाश की ओर देखते रहते थे। स्वामी जी को उस स्थिति में देखकर गुरवय्या बहुत आनंद पाते थे। उनको छोडकर कहीं भी नहीं जाते थे।

ऐसी स्थिति में गुरवय्या को अनुभव होता था कि स्वामी जी से एक कांति रेखा निकल कर अपने शरीर में घुस रही थी।

महा समाधी के पूर्व तीन सालों से निरंतर स्वामी जी समाधी स्थिति में ही रहते थे। सोने के लिए चादर डालने पर भी मना नहीं किए थे। गुरवय्या को भी चादर पर बैठने केलिए कहते थे।

इसके पहले स्वामी जी को ताड पत्ते के ऊपर जूट की थैली डालकर सुलवाते थे। वहीं उनका शयनागार था।

स्वामी जी के लिए सदा स्वामी जी का नाम जप करने वाली वक्कम्मा एक गद्दी बनाकर ले आयी थी। बाद में रूई से गद्दी बनाई गई।

स्वामी जी किसी भी गाँव में एक या दो दिन से अधिक नहीं ठहरते थे। वहाँ से किसी और घर या प्रांत चले जाते थे। स्वामी जी कहते थे कि मुझे रात या दिन का पता नहीं चल रहा था। अब कितना समय हुआ है? 10-3-1980 में स्वामी जी रात के समय श्री तलुपूरु नारायणदास के आश्रम में ठहरे हुए थे। उन्होंने गुरव्या से पूछा, जी इस जगह का नाम क्या है। गुरवय्या ने बताया कि आपको मालूम है यह तो तलुपूरू जी। हाँ, कहकर वे मौन रह गए। भगवद्गीता में एक श्लोक है। नतद्भासयते सूर्यो नशशांको नपावकः यद्गत्वा ननिवर्तंते तद्दाम परम् ममा। ऐसी स्थिति में स्वामी जी थे। जिसे सूर्य और चंद्र नहीं प्रज्वलित कर सकते हैं, जिस स्थिति से वापस अज्ञान की स्थिति में नहीं आते है ऐसी स्थिति में स्वामी जी आज विराजमान थे।

वे पैदल नहीं जा सकते थे। इसलिए सेवक उनका मूत्र एक घडे में भरते थे। मल विसर्जन के लिए उनको गाँव के बाहर एकांत प्रदेश में ले जाते थे। जमीन पर ताड पत्ता या घास या कोई पत्ता डालकर उस पर उनको सुलवाने पर कुछ समय के बाद मल विसर्जन करते थे। बाद में गरम पानी से स्नान करते थे। कभी भी गद्दे पर मल या मूत्र विसर्जन नही किए थे।

महा समाधी के दो साल के पहले वे निरंतर ध्याननिष्ठा में रहते थे। स्नान के लिए पानी कम गरम होने पर ठंड लग रहा है ठंड लग रहा है जोर से चिल्लाते थे। बहुत गरम होने पर अब्बा अब्बा कहकर चिल्लाते थे। सही गरम होने पर खुशी से स्नान करते थे। स्नान के बाद में सेवक उनको तौलिए से शरीर साफ करके उनको उठाकर गद्दे पर सुलाते थे। स्वामी जी के कौपीन या तौलिए साफ करने के बाद में जो पानी मिलता था उसे लोग भक्ती से स्वीकारते थे। कुछ लोग उस पानी से आँख में डालकर अपनी आँख की बीमारियों से स्वस्थता पाते थे। स्वामी जी कभी भी साबुन से शरीर को साफ करने से मना करते थे। इसलिए भक्त गण उनके शरीर साफ करने केलिए अन्य सांप्रदायक चीजों का करते थे। स्वामी जी के अंतिम दिनों में उच्च समाधी स्थिति में रहने के कारण साबुन से शरीर साफ करने पर भी इनकार नहीं करते थे।

स्वामी जी बाह्य पज्ञ के कारण पैरों और शरीर को तेल की मालिश पूछकर करवाते थे। केवल उनके सेवक ही उनके शरीर की मालिश करते थे। सेवक स्वामी जी का शरीर छूकर उनकी मालीश करना अपना भाग्य समझते थे।

जाडे के मौसम में स्वामी जी के लिए ठंडी से बचने केलिए छत लगाते थे। लेकिन स्वामी जी उसके बाहर जाकर वहीं धूनी बनाकर सोते थे। तलुवूरु में मच्छर अधिक होने से वे अपने सेवकों को कंघन से उनके पीट पर से मच्छरों को भगाने का काम सौंपते थे। उनके कष्ट को देखकर एक भक्त मच्छर दानी ले आया था। स्वामी जी ने उसे बाहर फेंक दिया। स्वामी जी के अंतिम दिनों में मच्छर दानी लगाकर अपनी इच्छा भक्तों ने पूरी की। ये दोनों कार्य साई नाथ के कार्यो की तरह दिखाई देते हैं।

रात के समय सभी सेवक स्वामी जी के बहुत निकट सोते थे। स्वामी जी किसी को कभी भी नहीं कहे थे कि यहाँ से उठकर चले जाओ।

निरंतर समाधी स्थिति में रहने वाले स्वामी जी को अपने भक्तों के व्यवहार, आचरण, परनिंदा, लोकाभिरामायण, गपशप, राजनीती, विमर्श या किसी अन्य विषयों की चिंता नहीं होती थी। कभी उनको रोकने का प्रयत्न भी नहीं किए थे।

एक बार स्वामी जी ने कहा कि इस दिन हमें समुद्र स्नान के लिए जाना है। हम सबको मौन रहना चाहिए। साथ वक्कम्मा को भी ले जाना है। लेकिन विचित्र की बात स्वामी जी समुद्र स्नान के लिए नहीं निकले थे। उनकी बात किसी को समझ में नही आयी थी। लेकिन वक्कम्मा उस दिन समुद्र स्नान करके आती हुई सपने में दिखाई दी। यह सपना साधारण सपना नहीं है। उन्होंने उनको उस पवित्र अनुभूति देने के लिए वक्कम्मा की कहानी रची थी। लेकिन किसी को मालूम नहीं था कि स्वामी जी सबको मौन रहने के लिए क्यों कहे थे?

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 03

अवधूत लीलाएँ

आदि शंकराचार्य जी ने कहा था कि माहन लोग छोटे बच्चे, राक्षस और पागल लोग जैसे दिखाई देते हैं। स्वामी जी जैसे पूर्ण पुरुषों के सभी चेष्टाओं का कोई अर्थ या गंभीर कारण होता है। यह कारण हमें मालूम न होने के कारण हम उन्हें पागल समझते हैं। उसी भ्रम में रहते हैं। हमारी दृष्टि में ऐसे लोगों के जो अर्थ रहित कार्य होते हैं, उनको समझने में समय लगता है। जब हमें भक्तों के द्वारा पता चलता हैं कि ऐसे पागलों की कृपा से भक्तों की रक्षा की गई है तब हमें उनका महत्व समझ में आता है। और अनेक लीलाएँ भक्तों के द्वारा कहे बिना रह जाती है।

एक दिन स्वामी जी ने चिल्लाया कि जलन हो रहा है, जल रहा है पानी डालो। ऐसे कहते हुए चिल्लाते हुए डेगपूडी के रामालय के दीवारों पर पानी डालवाए थे। सेवकों ने उनसे पूछा कि आग बुझ गई, क्या पानी डालना बंद करें? नहीं और बहुत जलन है कहते हुए मंदिर पर भी बहुत पानी डालवाए थे। स्वामी जी को ही मालूम था कि भक्तों को किस आग से बचाने के लिए पानी डालवाए थे। यह रहस्य किसी को मालूम नहीं होता है।

एक बार स्वामी जी के पैर, हाथ, उँगलियाँ जल गए थे। कारण किसी को मालूम नहीं था। वे कभी – कभी बेहोश हो जाते थे। रात के समय बेहोश होकर जलन का अनुभव करते थे। कुछ घाव शरीर पर दिखाई देते थे। लोग मानते थे कि साई भगवान की तरह भक्तों की रक्षा करते समय उनको ऐसे घाव हो गए होंगे। भक्त लोग पूछने पर कि स्वामी घाव आपके शरीर पर क्यों हो गए थे? स्वामी जी जवाब देते थे कि ऊपर से लोग आकर उन पर क्षार पदार्थ डाल कर चले गए थे। घुटनों पर के घावों के ऊपर के छिलके को निकाल देते थे। इससे घाव से रक्त बहता था। इस प्रकार तीन महीनों तक करते रहे और घाव की पीडा से तडपते रहे।

डॉक्टर आकर स्वामी जी के भुजाओं के घाव को पट्टी बाँधने के लिए कोशिश करने पर स्वामी जी मना करते थे। सेवकों ने जबरदस्ती उनके घाव पर मरहम लगाकर पट्टी बाँधी। स्वामीजी सबकी आँख बचाकर उन पट्टियों को चाकू से काट देते थे। चाकू देने से इनकार करने पर भी चाकू को देने तक बच्चे की तरह माराम करते थे। सेवक उनको चाकू से बचाने केलिए निगरानी रखते थे। जब रात में सेवक सोए हुए थे उस समय चाकू से पट्टी ही नहीं घाव को भी काट कर वहाँ के एक घडे में डाल दिए थे। घाव से बहते रक्त को देखकर सभी सेवक भय से चिल्लाने लगे। वहाँ के तुलसम्मा और वेंकम्मा काटा हुआ घाव को एक डिब्बे

मे सुरक्षित रखे थे। आश्चर्य की बात उससे निकला सुगंध वहाँ के चारों ओर फैल गया था। उस सुगंध का कारण बताने केलिए बहुत भक्त और सेवक तुलसम्मा और मंगम्मा से पूछे थे। तब वेकम्मा ने घडे में रखे हुए उस कटे हुए घाव को दिखाया। तब से उससे सुगंध निकलना बंद हो गया।

श्री स्वामी जी पैदल घूमते थे उन दिनों। रात और दिन बिना सोए तंबूरा का वादन सुनाते थे। रात नींद आने पर कुछ पानी पीकर, दाँतों में कंटक को दबाकर घडे से पानी पीते हुए तंबूरा बजाते थे। मसूडों से रक्त आते रहने पर भी उसका परवाह नहीं करते थे।

एक बार सेवक स्वामी को बैलगाडी पर ले जा रहे थे। स्वामी गाडी पर सो रहे थे। कुछ देर बाद ध्यान अवस्था में डूब गए। रास्ता साफ न होने के कारण उनका पैर गाडी के चक्र से टक्कर खाकर उससे रक्त बहने लगा। कुछ समय के बाद सेवक उनकी स्थिति को देखकर पैरों के रक्त को साफ करने के लिए तैयार हुए। लेकिन स्वामी जी मना कर दिए थे। हमने तो पढ़ा था कि समाधि स्थिति में रहने वाले श्री रामकृष्ण परमहंस की परीक्षा करने के लिए श्री विवेकानंद जी ने उनके जाँघ पर जलते हुए लोहे को रखने पर भी रामकृष्णा जी कुछ नहीं हिचके थे। रामकृष्णा जी की तरह स्वामी जी ने हमारे सामने प्रत्यक्ष रूप से यह लीला दिखाकर साबित किया कि वे भी अवधूत ही हैं।

उन दिनों में स्वामी जी चल नहीं पाते थे। उनको अक्किं वेंकटरामिरेड्डी जी के घर ले आए थे। दस बजे के समय सेवकों को पता चला कि स्वामी को जहाँ बिठाए थे उस स्थान पर नहीं थे। इधर – उधर ढूंढने पर पता चला कि वे गाडी के जाल में सोए हुए थे। उनके शरीर से 12 सेंटीमीटर लंबी एक आँत्र बाहर आ गयी थी। वहाँ के कौए उसको अपने चोंच से मारते रहने से उससे रक्त निकल रहा था। सेवकों के कौए को भगाने का प्रयत्न करने पर स्वामी जी ने कहा कि कौआ पाप निकाल रहा है, उसे क्यों रोक रहे हो। इस दृश्य को श्री वेंकटरामिरेड्डी देख नहीं सके। एक लकडी को हाथ में लेकर उन्होंने हवा में घुमाया। कौए उड गये थे। कुछ समय के बाद आंत्र शरीर के अंदर चला गया। सेवकों ने उनको अपने हाथों से उठाकर ले आने के लिए प्रयत्न किया लेकिन वे मना करके अपने आप आकर अपने स्थान पर बैठ गए थे।

बहुत लोग स्वामी जी की सन्निधि में बैठे रहते थे। स्वामी जी कभी भी किसी को घर वापस जाने को या और एक जगह बैठने को या रास्ते तक पैदल जाने का आदेश कभी भी नहीं देते थे। फरवरी 1980 में स्वामी जी अपने भक्त नारायण दास के आश्रम में थे। उस समय चार सेवकों को पूरब दिशा में रहने वाले पर्वत की ओर जाने को कहा। दो जाने के लिए तैयार हुए। लेकिन चार सेवक जाने तक वे सहमत नहीं हुए। चार सेवक जाकर उसी रास्ते से वापस आने लगे। तब स्वामी जी ने कहा

कि उनको उत्तर दिशा में वापस आना हैं। उनकी इस आज्ञा का कारण या रहस्य किसी को मालूम नहीं हुआ था।

कुछ समय स्वामी जी अपने आप हँसते थे।

जब स्वामी पेंचलकोना में थे तब उनके पास एक व्याधिग्रस्त व्यक्ति आया हुआ था। सेवक गुरवय्या को उसके लिए मंत्र जप करने को कहा था। गुरवय्या के लिए स्वामी जी जप करने लगे।

जब स्वामी जी जिंदा थे उस समय पेन्ना भद्वेलु के निकट के अंकालममा बोटु प्रांत के पास एक महिला खो गई अपने बकरी के बच्चे को ढूँढती हुई स्वामी जी के आश्रम प्रांत के पास आयी थी। उसने देखा कि स्वामी जी अग्नि कुंड के बीच में बैठे हुए थे। उसने सोचा कि आज स्वामी जी का काम हो गया है, कल से हम स्वामी जी को नहीं देख पाएँगे। सुबह जब वह बाहर गई तो उसने स्वामी जी को नहर के पास स्नान करके अपने कपडों को धूप में फैलाते हुए पाया। यह विषय उसने गोलगामूडि में सबको बताया।

एक बार स्वामी जी ने सेवकों से अपने पैर में लगे कंटक को निकालने को कहे थे। लेकिन वे उसे निकाल नहीं सके थे। वहाँ बैठी श्रीमती कोडूरु वेंकम्मा जी से अपने पैर से कंटन निकालने को कहे थे। बहुत प्रयत्न करने के बाद पैर के बडा कंटक वेंकम्मा जी ने निकाली। स्वामी जी ने कांटा निकालते समय कुछ भी पीडा का अनुभव नहीं किया। वेंकम्मा को स्वामी जी एक कांटा, एक ब्लेड और एक सूई भेंट के रूप में दिए थे।

नेल्लूर में बहुत ट्राफिक होने के कारण सेवक स्वामी जी को घर से या दत्तात्रेय मंदिर से रिक्शा में बस स्टेशन को ले जाते थे। एक दिन सेवक स्वामी जी को अकेले छोड़कर सिनेमा देख कर आए थे। सुबह स्वामी जी को ले जाने रिक्शा ले आए थे। लेकिन स्वामी जी ने रिक्शा में जाने के लिए इनकार किया और डोली में बैठकर बस स्टेशन तक सेवकों की सहायता से पहुँचे। रात बिना बताए हुए सिनेमा देखने के लिए उनको यह दंड दिया गया। स्वामी जी की इच्छा के विरुद्ध कोई काम करने पर उनको ऐसे दण्ड देते थे।

राजपद्मापुरम के श्री बिरजेपल्ली मस्तान नायुडु जी ने अपने अनुभव में आयी एक घटना के बारे में बताया था।

स्वामी जी एक बार एक घर में जाकर पूछे थे कि मुझे खाने के लिए कुछ दो। उनके घर में स्वामी जी को देने के लिए कुछ भी नहीं था। इसे बताने के लिए वह हिचकिचा रही थी। स्वामी जी को मालूम हो गया था तब उन्होंने पूछा कि खाने के लिए कुछ मिर्च मसाला दो। तब वह महिला स्वामी जी को एक गिलास भर मिर्च मसाला लाकर दे दी। उसने समझा कि स्वामी जी उस मसाला से कुछ पकाकर

खाएँगे। कुछ ही क्षणों में पूरा मसाला खाकर उसके बदले में एक कागज पर आशीर्वाद लिखकर उसे प्रदान किए थे।

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 04

सर्वज्ञ मूर्ति

साधना के द्वारा सद्गुरू की कृपा पाकर उनके अनुग्रह से आत्मज्ञान जो महान् व्यक्ति पाता है वहीं सिद्ध परुष कहा जाएगा। शास्त्रों में बताया गया सर्वज्ञ तत्व, सर्व समर्थता, सर्वव्यपकता ऐसे लोगों में संपूर्ण रूप से प्रस्फुटित होती है। यह भक्त गण को अपने अनुभव के द्वारा विदित होगा। ऐसे महान सिद्ध पुरूष विश्व में कहीं भी कोई घटना घटे तो पता लगा कर अपने भक्तों की समस्याओं को सुलझाने का हर प्रयत्न करते हैं। इस अध्याय में श्री स्वामी जी के सर्वज्ञान तत्व, सर्वसमर्थता के बारे में सविस्तार जान लेंगे।

गोलगामूडि के एस. के. मस्तान जी के पिता एक बार घूमने केलिए बाहर गए थे। उस समय बहुत बारीश आने से पूरा प्रांत जलमय हो गया था। उनके पिता, जो बहुत बूढे थे तीन दिन तक घर वापस नहीं आए थे। उनको हर जगह तलाश किया गया था। तब घरवालों ने स्वामी जी के पास जाकर उनकी जानकारी देने केलिए विनती की। स्वामी जी ने बताया कि उनके पिता ने अपना वेष बदल दिया है। कल पिंजडा हाथ लेकर आएगा। स्वामी जी की बातों का अर्थ उनको समझ में नहीं आया। सुबह किसी के कहने पर कि खेतों में एक लाश पडी है, वे वहाँ जाकर उस शव को देखे थे। उस शव का पूरा माँस मछलियाँ खाने से केवल हस्थिपंजर ही दिखाई दिया। उन हड्डियों के ऊपर लटके हुए कपडे से पता चला कि वह लाश उनके पिता की ही है। वही उस्थिपंजर को लाकर उन्होंने अपने सांप्रदाय के अनुसार अंतिम क्रियाओं को पूरा किया।

बाद उनको स्वमीजी की बातों का अर्थ समझ में आया कि उनका वेष बदल गया का अर्थ है वे अपने शरीर को त्याग दिए थे। उनकी आत्मा और एक शरीर को अपनाया है। पिंजडा लेकर आएँगे का मतलब है कि उनको केवल हस्थिपंजर ही मिलता है।

महिमलूरु मुनिकोटि रामय्या जी के घर में जब स्वामी जी थे तब वहाँ के गाँव वालों ने स्वामी जी को अपने घर आने के लिए विनती की। स्वामी जी ने बताया कि रास्ते पर कांटों के जाल बिछे हुए हैं मैं अब नहीं आ सकता हूँ। इसका अर्थ है कि वहाँ के लोगों में बहुत दुर्गुण रूपी कंटक जाल हैं। पहले उनके जीवन रूपी रास्ते से उनको निकालना है। तब ही स्वामी वहाँ आ सकते हैं।

मडपल्लि में जब स्वामी जी ठहरे थे उस समय वेलगटूरू के कुछ किसान उनसे मिलने आए थे। उन्होंने पूछा कि स्वामी जी इस साल खेतों में जावर का फसल उगा रहे है, क्या हमें अच्छा फल मिलेगा? स्वामी जी ने बताया कि लकडी को दो लगेगा। फसल के फल के बारे में कुछ नहीं बताया। बाद फसल को कीटक लगने से पूरा फसल बरबाद में हो गया था।

श्री स्वामी जी के बहिन मंगम्मा जी के ससुराल वाले बहुत गरीब थे। उनको खाने के लिए खाना भी नहीं मिलता था। एक बार स्वामी जी उन्मत्तअवस्था में थे। उनकी माता अस्वस्थ होने के कारण मंगम्मा जी को अपने साथ आने को कहा था। बहिन ने मन में ही सोचा कि स्वामी जी पागल व्यक्ति है। उसके साथ जाने से बीच में ही कहीं छोड़कर चला जाएगा। स्वामी जी ने बहिन मंगम्मा जी के मन की बात जानकर पूछे थे कि क्या तुम सोच रही हो? क्या मैं तुझे बीच में कहीं छोड़कर चला जाऊँगा? स्वामी जी की बात सुनकर मंगम्मा आश्चर्य चकित हो गई थी।

श्री स्वामी जी अपने चेलों के साथ चिट्टिपालेम में बसे हुए थे। उस समय गोलगामूडि के कोर्रकूटि बुज्जय्य को अस्वस्थता के कारण उपवास रहना पडा। स्वामी जी के पास जाने से उनका उपवास भंग हो जाता है। यह समझकर वे स्वामी जी के पास नहीं गए थे। वे अपने मन में सोच रहे थे कि इस स्थिति में स्वामी जी का सेवक रामानायुडु मेरे पास रहे तो वे मुझे अच्छी बातें और सलाहें देकर मेरा हिम्मत बढ़ाते रहते हैं। मेरे साथ सत्संगती करने वाला कोई नहीं है। उस समय आश्चर्य की बात स्वामी जी ने रामानायुडू जी को गोलगामूडि जाने की आज्ञा दी। स्वामी जी हर समय अपने को साथ रखते थे। लेकिन अब क्यों उसे गोलगामूडि जाने की आज्ञा दी?... उसको मालूम नहीं हुआ। तुरंत गोलगामूडि जाकर बुज्जय्या जी को मिलने के बाद में स्वामी जी की आज्ञा का रहस्य मालूम हुआ।

सोमशिला के पास के एक शिला के ऊपर एक छोटी सी झोंपडी में रात भर एक छोटा सा दीप जलाकर तंबूरा बजाते हुए आराम लेते थे। एक दिन शाम को स्वामी जी ने अपना सेवक चलम नायुडू से दो लोगों के लिए अधिक भोजन ले आने की आज्ञा दी। स्वामी जी की इच्छा को सेवकों के द्वारा भक्त गण को मालूम होने पर उन्होंने स्वामी जी के लिए बडा, पायासम के साथ भोजन भी भेजे थे। उस दिन रात 7 बजे को तलुपूरु पेम्मसानी मस्तानय्या और उनका दोस्त स्वामी रास्ते को ढूँढते हुए बहुत मुश्किल से स्वामी जी के पास पहुँचे थे। उनके आने के पहले ही स्वामी जी ने उनके लिए भोजन का इंतजाम कर दिया था। उनका आगमन का समाचार स्वामी जी को कैसा मालूम हुआ किसी को पता नहीं चाला था।

एक बार तूपिलि पिच्चम्मा जी ने श्री स्वामी जी के आश्रम में अपने साथियों के साथ भजन कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए संकल्प कर लिया था। आवश्यक

सभी सामग्री इंतजाम करके तैयार थी। उस समय श्री स्वामी जी आश्रम में नहीं थे। इस लिए उनको उस कार्यक्रम के बारे में नहीं बताया गया था। लेकिन आश्चर्य की बात स्वामी जी को भजन कार्यक्रम का पता किसी के बताने के पहले ही मालूम हो गया था। उन्होंने बताया कि कि आज आश्रम में भजन बहुत धूमधाम से चल रहा है। हमें वहाँ जाना हैं चलिए। जल्दी चलिए.. कहते हुए भजन में भाग लेने केलिए चलने लगे। आश्रम में पहुँच कर भजन कार्यक्रम में बहुत खुशी से भाग लेकर उनको अनुगृहीत किए थे।

मनुष्य के प्रारब्ध कर्म दो प्रकार होते हैं। कुछ मनुष्य अपनी तपस्या से अपने कर्मों को प्रक्षालन कर सकते हैं। और कुछ लोगों को उन कर्मों को भोगना ही पडता है। मनुष्य के कर्मों का विवरण केवल सद्गुरूओं को ही पता चलता है। हम अज्ञान के कारण इस निर्णय पर आ जाते हैं कि अपनी बाधाओं को स्वामी जी भी हल नहीं कर पाते हैं। बडे लोग मानते हैं कि भगवन्नामस्मरण के द्वारा हम भोगने वाले कर्मों को भी कम कर सकते हैं। इसलिए ही सद्गुरु अपने कर्मों को अगले जन्म तक नहीं ले जाते हैं, इसी जन्म में ही भोगने केलिए तैयार होते हैं। यह विषय स्वामी जी बहुत बार बताए थे।

दाचूरी के श्री कस्तूरी अंकय्या जी स्वामी जी से विनती की कि मैं चल नहीं पा रहा हूँ। मेरे घुटनों में दर्द है। किस प्रकार का इलाज करने से मेरे दर्द दूर होते हैं ऐसा इलाज का रहस्य मुझे स्वामी जी को ही बताना है। तब तक मैं स्वामी जी के सन्निधि में रहता हूँ। ऐसा दृढ़ संकल्प लेकर अंकय्याजी ने गोलगामूडि आश्रम को आ गए थे। उस समय आश्रम में भजन कार्यक्रम चल रहा था। स्वामी जी के आगे अंकय्या जी बैठे हुए थे। स्वामी जी का स्मरण कर रहे थे।

सर्वज्ञ मूर्ति श्री स्वामी जी ने बताया कि इसी प्रकार बैठने से इनका दर्द दूर हो जाएगा। भजन के बाद फिर वापस आकर रात 2.30 के समय स्वामी जी के पास आकर अंकय्या जी बैठ गए थे। वहीं इच्छा उनके मन में बार – बार आ रही थी। स्वामी जी ने उनकी ओर देखकर बताए थे ऐसा पूछना नहीं चाहिए। अंकय्या जी ने स्वामी जी की ओर मौन ही इशारा किया कि मैं आपकी बात मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। तब स्वामी जी ने बडी आवाज से चिल्लाया कि ऐसा पूछना नहीं चाहिए। और एक बार तुझे आना है।

एक बार इंदुकूरि पेटा में आत्मकूरू के वेंकय्या जी के घर स्वामी जी गए थे। स्वामी जी वेंकय्या जी के बडे बलिष्ठ बैलों को देखकर कहने लगे कि भविष्य में इनके लिए पैरों में कुछ बाधा आने की संभावना है। बाधा निवारण के कोई उपाय नहीं बताए थे। आश्चर्य की बात कुछ दिनों के बाद रास्ते पर चलते वक्त दोनों बैलों के पैंरों

की हड्डियाँ टूटने से नहीं चल सके। बहुत इलाज करने पर भी ठीक नहीं हो पाया। अंत में उनको बेचना ही पडा।

सोमशिला के परिवहन का निर्माण होने के दस साल के पहले ही स्वामी जी उस प्रांत के बारे में पूरा विवरण दिए थे। स्वामी जी ने अकेले कहीं गए थे। एक सेवक ने उनसे पूछा कि कहाँ से आ रहे हैं? तब स्वामी जी ने कहा कि वहाँ एक मंदिर का निर्माण होने वाला है। उस पवित्र स्थान को पहचान कर आया था। आश्चर्य की बात जिस स्थान को स्वामी जी ने चुना था, वहीं स्थान पर सोमशिला परिवहन का और पेंचलकोना मंदिर का निर्माण हुआ था।

एक बार गोपारम् के पालकोंड सुब्बारेड्डी जी से स्वामी जी ने बताया कि समुद्र यहाँ तक पहुँचने वाला है, यहाँ मत ठहरो। तुरंत तेरे घर चले जाओ। स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार सुब्बारेड्डी जी घर वापस पहुँचे थे। स्वामी जी की सेवा में सुब्बारेड्डी जी बहुत दिनों से आश्रम में ही रहने लगे। उनको पता चला कि इससे उनके भाई और अन्य घर वाले नाराज होकर उनको वापस ले जाने के लिए आश्रम आ रहे थे। घर वालों को मिले बिना ही वे अपने घर पहुँच गए थे। परिवार रूपी सागर बहुत खतरनाक है। सच कहे तो साधारण समुद्र पाप का हरण करने वाला है। यह स्वामी जी की भावना है।

एक बार कोमरगिरी रमनय्या, सुब्बारेड्डी जी स्वामी जी के अग्निकुंड के लिए लकडी इकट्टा करने केलिए जंगल जा रहे थे। स्वामी जी ने रात के समय अपने साथ लालटेन ले जाने के लिए 3-4 बार कहा था। स्वामी जी के कहने से वे अपने साथ लालटेन लेकर गए थे। एक पेड के नीचे एक बडा साँप उन्हें दिखाई दिया। लालटेन की रोशनी उस पर पडने से वहाँ से साँप अंदर बिल में चला गया। स्वामी जी हमारे ऊपर कृपा दिखाकर रक्षा करने के लिए कोशिश करने पर भी यदि उनकी बात पर हमें विश्वास नहीं होने पर, उनकी आज्ञा का पालन नहीं करने पर हमें नुकसान और कष्ट भोगना ही पडता है। **सद्गुरू कभी भी अपने चेले से नहीं करते हैं। बिना कारण के कभी भी हमें आज्ञा नहीं देते हैं। इसलिए उन पर विश्वास रखकर उनके अनुसार हमें व्यवहार करना हैं। इससे चेले बहुत सुख पा सकते हैं। सद्गुरू की सेवा में इच्छाओं को छोड़ना ही सही त्याग है। वहीं सही साधना है।** 3

एक बार स्वामी जी सेवक चलमानायुडू जी को आज्ञा दी कि वे कहीं जाए बिना उनके साथ ही रहे। चलमानायुडू स्वामी जी की आँख बचाकर बीच में अपने साथियों के घर गए थे। वहाँ कुछ मस्ती में किसीने उसकी गाल पर थप्पड मारा। वे वहीं नीचे गिर गए थे। दो दाँत टूट गए थे। उसका गरदन में भी दर्द होने लगा। तब ही उसे मालूम हुआ कि स्वामी जी ने उसे वहीं साथ रहने केलिए क्यों आज्ञा दिए थे?

तिरुपती के निवासी बंडि वेंकट मुनिरेड्डी जी हर पौर्णिमा को नारायण वन जाकर सोरकाय स्वामी जी का दर्शन करते थे। वे प्रार्थना करते थे कि स्वामी जी मैं आपको जीवित रहते समय आपके भौतिक शरीर का दर्शन नहीं कर पाया था। आप जैसे सजीव महान व्यक्ति का दर्शन भाग्य मुझे दीजिए। यही काम पर इसुमर्ती आकर श्री स्वामी जी के बारे में सुनकर उनके दर्शन के लिए गोलगामूडि आए थे।

तब स्वामी जी ने उनको पहले दर्शन के समय ही एक कागज पर कुछ लिखकर दिए थे। उसमें लिखा गया कि 21वीं दिन एक घात होने की संभावना है। लेकिन उससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा। स्वामी जी की बात सच निकली। 21 वी दिन खेत में कुछ गडबड चलने से एक दूसरे को मारने केलिए भी तैयार हो गए। स्वामी जी की कृपा से रेड्डी जी को संयम से व्यवहार करके मौन रहने के कारण कुछ भी नुकसान नहीं हुआ था। इसके बाद में वे स्वामी जी का प्रिय बन कर हर समय उनके दर्शन केलिए तिरुपती से गोलगनमूडी आने लगे।

स्वामी वेंकट मुनिरेड्डी जी हम सबके लिए नए कपडे ले आए थे। सेवकों ने स्वामी जी को यह विषय बताया था। तब स्वामी जी ने बताया कि उनके सभी कष्ट दूर होने वाले हैं। इसलिए ही उनको यह करने की इच्छा हुई।

संगम के पल्लंम रेड्डी कृष्णारेड्डी खेत में चावल का फसल लगाए थे। बहुत अच्छी तरह फसल उगा था। लेकिन फसल काटते समय पानी नहीं रहने के कारण पूरा फसल सूख गया। 30 क्विंटाल चावल आने की संभावना थी लेकिन अब 2 क्विंटाल फसल ही आ रही थी। 10 क्विंटाल फसल आने से उनका खर्च उठा सकते है। इसलिए कृष्णारेड्डी जी ने 10 क्विंटाल फसल मिलने पर रू. 100 स्वामी जी को समर्पण करने के लिए मन में निर्णय लिया। कृष्णा रेड्डी जी खेत में पलंग पर सोते हुए आकाश की ओर देखने लगे। आश्चर्य की बात हवा के साथ भारी बारिश शुरू हो गयी। पानी मिलने से उनको अच्छा फसल मिल गया। अपने निर्णय के अनुसार रू. 100 लेकर स्वामी जी को प्रदान करने केलिए आए थे। आने के खर्च के लिए रु. 30 लेकर बाकी रू, 70 स्वामी जी के चटाई के नीचे रख दिए थे। स्वामी जी ने कहा कि वादा के अनुसार पूरे पैसे नहीं दिया है न। बाकी तीस रूपया उसे देना है। ये रू 70 भी मुझे नहीं चाहिए। ले लो। वहाँ के एक सेवक ने कहा कि उसे खर्च के लिए पैसे नहीं हैं। वह बाकी पैसे बाद में दे देगा। ऐसा होने पर बाकी पैसे तुम दोगे। तब निकट के सेवक ने कृष्णारेडेडी जी की तरफ से बाकी पैसे देने के लिए सहमत हुआ था। स्वामीजी रू. 70 लेने के लिए तैयार हुए थे। बाद में उनके सेवक या कृष्णारेड्डी जी ने बाकी रु. 30 स्वामी जी को नहीं दिए थे।

पस्तुत कलिचेडु के निवासी, अध्यापक अत्युत नीलकंठ राजु जी की पत्नी नागभासुरा देवी अपना अनुभव इस प्रकार बताई थी।

नीलकंठ राजु जी चीराला में, उनकी पत्नी कलिचेडु में काम कर रहे थे। राजु जी को कलिचेडु में नौकरी मिलने पर दोनों एक जगह रह सकते हैं। अपने मन की इच्छा स्वामी जी के सामने प्रकट की। स्वामी जी ने बताया कि उनको तीन महीने के अंदर कलिचेडु में नौकरी मिल जाएगी। कलिचेडु में नौकरी करने वाले पी टी अध्यापक श्री साब्जान् जी को कलिचेडु छोड़कर बाहर जाने की इच्छा नहीं थी। इसलिए नीलकंठ राजु ने समझा कि यह असंभव है। लेकिन कुछ कारणों से साब्जान् जी अपनी नौकरी को इस्तेफा देकर चले जाने से राजु जी को कलिचेडु में नौकरी मिल गई। उनकी बेटी पद्मजा को अकस्मात् मूर्छा आती थी। स्वामी जी ने बताया कि नौ साल की उम्र में वह ठीक हो जाएगी। स्वामी जी की बात के अनुसार बाद में ऐसा ही हुआ था।

पोंगूरु के निवासी पि. दशरथरामय्या जी स्कूल में पढ़ते समय स्वामी जी के दर्शन करते थे। स्वामी जी ने उनको आशीर्वाद दिया कि तुम सबइनस्पेक्टर बनोगे। स्वामी जी की बात के अनुसार बाद में में मिलटरी में इन्सपेक्टर बनकर उन्होंने भारत सरकार की सेवा की।

एक बार नेल्लूर तहसिलदार गोलगामूडि आकर स्वामी जी से कहा कि सभी लोग आपको महान बताते है। मुझे आपकी महानता दिखाइए। बार बार पूछने पर स्वामी जी ने उनसे मध्याह्न को खाना नहीं... कागज पर लिखकर देने के लिए कहा। तहसिलदार ऐसे ही लिखकर दिया था। सबको आश्चर्य हुआ। जब तहसिलदार अपने घर पहुँचे तब उनकी पत्नी की तबियत कुछ ठीक नहीं होने से अस्पताल गई थी। घर को ताला लगा हुआ था। किस अस्पताल को गई उसका पता भी उनको मालूम नहीं पडा। पूरा दिन उसके बारे में पता लगाने में ही उनका समय बीत गया था। खाना नहीं मिलने के कारण केवल अल्पहार खाकर रहना पडा था। अगले दिन तहसिलदार स्वामी जी के पास आकर उनका साष्टांग प्रणाम करके माफी माँगी। महान् लोगों का परीक्षण करने की कोशिश करने का प्रयत्न करें तो ऐसे अनुभव होते हैं।

एक बार एक दंपत्ति स्वामी जी के पास आकर नारियल का फल अग्नि कुंड में समर्पित किए थे। बाद स्वामी जी ने बताया कि इन नारियल के फल को कुंड से निकाल दीजिए। इन्हें कुत्ते भी नहीं खाएँगे। सेवक उनको कुंड से निकाल दिए थे। स्वामी जी के कहने के अनुसार कुत्ते भी उनको खाने के लिए आगे नहीं आए थे।

श्री स्वामी जी पर जो पूरा विश्वास रखते हैं, जो नित्य उनकी स्मरण करते है, भक्ति दिखाते है उनको अपने कष्टों के बारे में स्वामी जी को बताने की जरूरत नहीं होती है। सर्वज्ञ मूर्ति को सब कुछ मालूम होगा। यदि आवश्यकता आने पर अपने बच्चों को क्या करना है उनको मालूम होता है। हमारे कहे बिना अपनी समस्याओं को जानकर उनको सुलझाने के लिए स्वामी जी ने जो कार्य किए थे वे अनेक हैं। ऐसी बहुत घटनाएँ हमारे सामने प्रस्तुत है।

उदाहरण के लिए एक बार श्री स्वामी जी श्री रामय्या को एक पत्र लिखवाए थे। उस खत में आवुल लक्ष्मी नरसु घर के सामने के श्री रामय्या के घर के आंगन में रहने वाले अस्ति जाल को निकालना चाहिए। रामय्या के घर वाले आंगन में खोद कर देखे तो उनको आश्चर्य हुआ कि वहाँ अनेक हड्डियाँ के जाल उनको मिले थे। उन हड्डियों को निकालने के बाद उनके घर की सभी समस्याएँ, स्वाश्थ्य सुधारने लगे। वे तब से शांति और सुख से जीने लगे।

भक्त संरक्षण ही परम कर्तव्य समझकर श्री स्वामी जी निरंतर बिना सोए सभी भक्तों की रक्षा करते हैं। आने वाले दुःखों की जानकारी देने के साथ – साथ कष्टों से बचने के उपाय भी बताते हैं। बार – बार हमें माँ से भी अधिक श्रद्धा से सबको प्रेम से मार्गदर्शन देते हैं। उनकी सूचना के अनुसार जो व्यक्ति काम करते है काम में कोई रूकावट आने पर उसे सुलझाने की जिम्मेदारी भी वे ही लेते हैं। 5

उदाहरण केलिए इनुकुर्ती के निवासी कारि रामस्वामी जी को मुँह से नाक से रक्त बहता था। ड़ॉक्टर की इलाज से भी उनकी समस्या ठीक नहीं हुई थी। वे स्वामी जी के पास आए थे। स्वामी जी ने कागज पर लिखकर बताया कि दो दिन में परसो ठीक हो जाएगा। 44 दिनों में एक दुर्घटना होने की संभावना है। आप 72 उम्र तक जीएँगे। तिरुपति, कंचि, तिरुवल्लूर जाकर वहाँ स्नान करके, पूजा करके, वहीँ सोकर आना है। स्वामी जी के कहने के अनुसार मुँह से रक्त बहना रूक गया। कुछ दिनों तक स्वामी जी के दर्शन करने आते थे। लेकिन तिरुपती, कंची, तिरुवल्लूर जाना भूल गए थे। जब रामस्वामी स्वामी जी से तलुपूरु में मिले थे तब उन्होंने कहा कि तुरंत यात्र पूरा करो। पैसा नहीं होने पर किसी से लेकर यात्र पूरा करो। स्वामी जी की सूचना के अनुसार वह यात्रा पर गए थे। यात्रा के बाद कसुमूरु मस्तानय्या दर्गा के दर्शन केलिए गए थे। दर्गा के पीछे एक जहरीला साँप उनको दिखाई दिया। आँख बंद करके स्वामी जी से प्रार्थना की। आँख खोलते ही आश्चर्य की बात साँप वहाँ से निकल गया था। अगले दिन स्वामी जी के पास आने पर उन्होंने बताया कि कल आपका 44 दिनों की दुर्घटना समाप्त हो गई थी। स्वामी जी की बात सुनकर रामस्वामी कृतज्ञता ज्ञापित किए थे। इस प्रकार स्वामी जी भक्तों के विश्वास का आदर करते थे।

एक बार स्वामी जी ने अकस्मात् अपने सेवकों से कहा कि हमें नेल्लूर से नरसिंहकोंडा बस से जाना है। चलिए। सेवकों के लिए टिकट के लिए पैसा नहीं थे। जब सेवकों ने बताया कि उनके पास पैसे नहीं हैं तब स्वामी जी ने बताया कि पैसे अपने आप आ जाते हैं, तुरंत निकल जाओ। वे सब बस में बैठ गए। बस निकलने वाली है इतने में वेंकटराव जी उस तरफ साइकिल पर जाते हुए उनको देखकर पचास रूपए उनको दिए थे। इस घटना को देखकर सभी आश्चर्य में पड गए थे। उनके लिए बस का किराया मिल गया था।

मोपूरु दशय्य को पडोसी वालों से सरहद की दिवार गिरने से सरहद के विषय में कुछ लडाई चढ रहा था। दोनों स्वामी जी के पास जाकर उन्हें सलाह देने केलिए विनती की। स्वामी जी ने बताया कि अब सहजन वृक्ष और करेला के बीच में लड़ाई आ गई है। स्वामी जी की बातों का अर्थ किसी को मालूम नहीं पडा था। स्वामी जी ने वहाँ के जमीन पर अपने पैर की उँगली से एक रेखा खींचते हुए बताया कि इसके पहले आप का सरहद और इसके बाद में आपका। स्वामी जी की पहले जो दीवार थी वहीं रेखा खींच कर दिखाना सबको आश्चर्य में डाल दिया था। यही नहीं एक घर के अंदर सहजन का वृक्ष होना दूसरे के घर में करेला की बेला होना और आश्चर्य में डाल दिया था।

एक दिन स्वामी जी कोडूरु वेंकम्मा जी के घर आए हुए थे। साधारणतः सभी भोजन करने के बाद स्वामी जी भोजन करते थे। उस दिन वेंकम्मा जी ने स्वामी जी को भोजन केलिए बुलाई थी। स्वामी जी ने कहा कि चालीस लोग खाना खाने के लिए आ रहे हैं। तुम इधर क्यों खडी हुई हो। जाओ पागल वेंक्म्मा। स्वामी जी की बात वेकम्मा की समझ में नहीं आई थी। उसी वक्त चालीस लोग खाने के लिए आ गए थे। वेंकम्मा जी ने दस मिनिट में ही खाना बनाकर, इमली से रसम और मिर्च से चटनी बनाकर खाना सबको खिलाया था।

महात्मा लोग कभी भी किसी भी भक्त को आज्ञा नहीं देते है कि तुझे इसी प्रकार करना है। सूक्ष्म रूप से सलाह देते हैं। इस सलाह का पालन करने से बहुत फायदा उठा सकते हैं। नहीं तो हमें अनेक कष्टों को भोगना पड़ता है। यह घटना हमें यहीं साबित करती है। 6

एक दिन स्वामी जी के सेवक महिमालूरु के एक भक्त से खाना पकाने के लिए एक छोटा सा बरतन ले आए थे। उस बरतन को वापस देने के लिए जयरामराजु तीन मील दूर के उस गाँव को जाने के लिए निकले थे। स्वामी जी ने बताया कि आज नहीं कल सुबह जा सकते हो। लेकिन स्वामी जी की बात सुने बिना जयरामराजु निकल गए थे। रास्ते में एक विषैला साँप ने उनको रोक दिया था। जिस तरफ वे निकल रहे थे उसी तरफ साँप आकर उन्हें बहुत परेशान करने लगा। डेढ घंटे तक वहीं स्थिति चली थी। बाद में स्वामी जी की बात याद आकर उन्होंने प्रार्थना की कि मैं आपकी बात नहीं मानकर आ गया हूँ, मुझे क्षमा कीजिए। प्रार्थना करने के बाद साँप धीरे से पास वाली झाडियों में चला गया था।

पालकोंड सुब्बारेड्डी (गोपारम्) स्वामी जी को निकट के नदी में नहाने केलिए ले जाते थे। वापस आते वक्त रास्ते पर पडे तिल के फसल के पौधों को इकट्ठा करके ले आने को स्वामी जी कहते थे। इस प्रकार के पौंधों से वेंकम्मा जी का घर भर गया। वेंकम्मा जी ने स्वामी जी से पूछा कि यह सब क्यों इकट्ठा करना है? तब स्वामी

जी ने बताया कि एक महीने में बारिश आने वाली है। हमें सावधान बरतनी चाहिए। स्वामी जी के कहने के अनुसार महीने के बाद बारिश आई। लडकी काम आई थी। निरंतर अग्नि का ज्वलन होता रहा। बारिश आने पर भी कोई संकट नहीं उत्पन्न हुआ था।

बहुत लोग स्वामी जी के पास रहकर उनकी लीलाओं को समझते हुए उनकी सेवा में रहकर बहुत पुलकित हो जाते थे। उसी समय अमेरिका के वैज्ञानिक अतरिक्ष यान में चंद्रमंडल पर अपना कदम रखकर आ गए थे। उस घटना को सभी लोग प्रशंसा करने लगे। एक भक्त नूतेटि आदेय्या ने स्वामी जी को बताया कि मनुष्य चंद्रमंडल तक जाकर वापस आ गए थे। स्वामी जी ने बताया कि चंद्रमंडल तक की रास्ता हमारे फुल से भी बहुत कम है इससे क्या आश्चर्य है। स्वामी जी की बातों से मालूम पडा कि अन्य ग्रहों की तुलना में चंद्रमंडल की दूर बहुत कम ही है। स्वामी जी को यह विषय मालूम होने से ही ऐसी बात कह रहे थे।

कुछ समय के पहले भक्त और सेवक स्वामी जी का उपमा बनाकर खिलाते थे। स्वामी जी कुछ ही उपमा खाकर बाकी उपमा वहाँ के कुत्ते को खिलाने केलिए मल्लिका वेकय्या जी को कहे थे। चार दिन तक ऐसा ही चला था। वेंकय्या ने कुत्ते को खिलाए बिना चुपके से खा लिया था। वेकय्या जी ने समझा कि यह स्वामी जी को मालूम नहीं होगा। लेकिन स्वामी जी ने उस दिन बताया कि मुझसे दिया गया उपमा कुत्ते से श्रेष्ठ दो पैर वाला जंतु खा रहा है। इसलिए मैं अब इसे अग्नि कुंड मे डाल दूँगा। ऐसा कहकर उस उपना को अग्नि कुंड में डाल दिए थे। वेकय्या को आश्चर्य हुआ और अपने झूठ के लिए माफी माँगी।

पालकोंड सुब्बारेड्डी जी मदनपल्ली से एक बैल को खरीद कर ले आ रहे थे। वह बैल जबरदस्ती उनके हाथों से निकल कर भाग गया। पच्चीस दिन इधर – उधर ढूँढने पर भी नहीं मिला। बाद में स्वामी जी के पास जाकर उन्होंने विनती की तो स्वामी जी ने बताया कि बैल ढूँढने की जरूरत नहीं, वह अपने आप वापस आ जाएगा। सुब्बारेड्डी घर वापस जाने पर उनके दोस्तों ने उस बैल को ले आकर उनके घर के पास खडे हुए थे। साई चरित में भी चाँद पाटिल को भी अपना घोडा बहुत समय तक ढूँढने पर भी नहीं मिला था। बाद में साई की कृपा से आसानी से मिल गया था।

और फिर एक बार स्वामी जी ने बताया कि पालकोंड सुब्बारेड्डी जी को जमीन पाने का योग है। स्वामी जी के कहने के अनुसार कुछ दिनों के बाद में उनको सरकार की ओर से जमीन मिला था। वहाँ के सरकारी अधिकारी ने अन्याय से उनको आने वाली जमीन को रोक दिया था। बाद सुब्बारेड्डी जी को जमीन मिलने से उसे रोकने वाले उस अधिकारी को नौकरी से निकाल दिया गया। स्वामी जी की बात सच निकली।

1978-79 में स्वामी जी तलपूरु आए हुए थे। नेल्लूरु सुब्बारेड्डी जी के रिश्तेदार के पाँच साल की लडकी को मुँह से रक्त निकल रहा था। इससे वह परेशान थी। बहुत डॉक्टरों ने इलाज करने का प्रयत्न करने पर भी कोई समाधान नहीं निकला। स्वामी जी की महिमा को सुनकर उस लडकी को स्वामी के पास ले आए। स्वामी जी ने उस लडकी के कंठ से पैरों तक अपने हाथों से सुश्रूषा की। तुरंत लडकी को सब ठीक हो गया। बाद उनके परिवार वाले आकर स्वामी जी को रू250 दक्षिण के रूप में देने केलिए तैयार हो गए थे। लेकिन स्वामी जी उसे स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने कहा चार महीने के बाद दीजिए मैं ले लूँगा। लेकिन चार महीने के अंदर दुर्भाग्यवश वह लडकी चल बसी थी। बाद में उनको मालूम हो गया स्वामी जी क्यों उनसे दक्षिणा स्वीकार नहीं की थी। आने वाली दुर्घटना को स्वामी जी ने पहले ही उनको बता दिया था।

जो लोग स्वामी जी की शरण में संपूर्ण रूप से आ जाते है उनकी देखभाल स्वामी जी स्वयं ले लेते हैं। बिना कोई संदेह के हमारे प्राणों को उनके हाथों में रखकर निश्चिंत हम जी सकते हैं। यही रहस्य साईमहाराज ने भी बताए थे कि सद्गुरू को हमारी जिम्मेदारी सौंपने के बाद में चिंता करने की जरूरत ही नहीं होती है। यह सच यहाँ याद करने की जरूरत है। 7

एक बार बुज्जय्या को पैसे की जरूरत पडी। उसने अपने भेडों को कसाई को बेचने का निर्णय लिया। उस रात स्वामी जी ने बुज्जय्या के सपने में आकर बताया कि पैसों के लिए भेडों को कसाई को बेचना बहुत बडा पाप है। बुज्जय्या को रात भर नींद नहीं आई। कैसे पैसों को संभालना है। यही उसकी चिंता थी। वह स्वामी जी को छोड़कर भेडों को साथ लेकर नेल्लूर गया था। नेल्लूर में कोई भी उसके भेडों को खरीदने नहीं आया। बाद में उसके गाँव के निकट के लोगों ने आकर कहा कि हम उनका पालन करेंगे, कुछ कम दाम में हमें दे दो। बुज्जन्ना उनको भेडे सौंपकर पैसा लेकर घर वापस आ गया था। स्वामी जी की कृपा से उनको पैसे भी मिल गए थे और भेडे भी बच गए थे। इस प्रकार स्वामी जी ने बुज्जन्ना को पाप कार्य से बचाया था।

एक बार श्री स्वामी जी समुद्र स्नान केलिए मैपाडु गए थे। बुज्जय्या को मालूम होने से वे स्वामी जी से मिलने केलिए वहाँ पहुँचे। स्वामी जी स्नान करके समुद्र के तट पर बैठे हुए थे। बहुत बार उनके सेवक के कहने पर भी वे वहाँ से नहीं हटे थे। लेकिन बुज्जय्या आकर समुद्र स्नान करके उनसे मिलने के बाद में उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गए थे। बुज्जय्या आने का समाचार उनको मालूम था इसलिए स्वामी जी ने जाने से इनकार किया था।

दाचूरु के कस्तूरी अंकय्या पोते के नामकरण केलिए स्वामी जी के पास आए थे। स्वामी जी ने बताया कि पूर्व जन्म में यह बालक सुब्बन्ना नाम का व्यापारी था।

सुब्बन्ना नाम रखिए। इस बालक को जल दुर्घटना होने की संभावना है लेकिन वीरराघव स्वामी की कृपा से वह बच जाएगा। कहकर स्वामी जी ने इसका विवरण एक कागज पर लिखकर उनको देकर उस बालक को आशीर्वाद दिया था।

साढे तीन उम्र वाले उस बालक का भाई बालजी और सुब्बन्ना मिलकर एक कुँए में पानी पीने केलिए गए थे। पानी पीते समय पैर फिसलने से सुब्बन्ना कुँए में घिर गया था। बालाजी उसे बचाने केलिए जोर से चिल्लाते हुए घर की ओर भागा। सुब्बान्ना के पिता ने आकर बालक को बचाया। आश्चर्य की बात थी कि सुब्बन्ना उस पानी में डूबे बिना, कुएँ के पानी पिए बिना वहीं खडा हुआ था। पिताजी आसानी से उसे कुँए से बाहर ले आये थे। बाद में स्वामी जी के द्वारा लिखा गये कागज की याद उनको आ गई थी।

पेरंमकोंडा से आए हुए नायुडु जी अपना अनुभव इस प्रकार बता रहे थे। एक बार स्वामी जी के साथ पंचलिंगालु कोना जाते समय उनके सेवकों ने बताया कि कुछ आराम के लिए एक जगह दिखाकर बैठने की अनुमती माँगी। यहाँ बैठना, रहना, सोना खतरनाक है कहकर स्वामी जी आगे बढ गए थे। बाद में वापस आते समय उनको वहाँ गिरे हुए कुछ बडे बडे पत्थर दिखाई दिए थे। वह नयी जगह होने पर भी वहाँ की स्थिति उनको मालूम होना उनको आश्चर्य में डाल दिया।

1977 में दिविसीमा में भयंकर तूफान आकर बहुत नुकसान हुआ था। उस समय स्वामी जी मद्रास के मन्नारकंड्रिगा में थे। उस समय नेल्लूर जिले को भी तूफान की चेतावनी आकाशवाणी से दी गयी थी। इस विषय के बारे में पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि हमारे जिले को कुंडो की रक्षा कवच है। हमें कोई नुकसान नहीं होगा। बाद में एक साल छे महीने के बाद में तूफान आने की संभावना है। स्वामी जी की बातें सच निकली थी।

त्रिमूर्त्यात्मुकुडु सद्गुरू की आज्ञा का पालन देवता गण भी मान लेंगे। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है। 8

इनकुर्ति के कारि रामस्वामी जी की बेटी किसी देवता शरीर पर छड़ने से अनियंत्रित रूप से व्यवहार करती थी। उनके घर में कई बिल आ गए थे। इससे मुक्ति पाने के लिए कसुमूरु दर्गा, अनासमुद्र, नागूरु नागपट्टणम दर्गा में पाँच साल से प्रदक्षिणा कर रहे थे। कोई नतीजा नहीं निकला। बाद में स्वामी जी के पास आए थे। स्वामी जी ने बताया कि जोन्नवाडा कामाक्षी देवी उसके शरीर पर आ रही है। जब देवी उसके शरीर पर आती है तब वह लडकी वर्तमान, भूत और भविष्य के अनेक विषयों के बारे में बताती थी। उस समय रोज बहुत लोग उसे सुनने केलिए आते थे। स्वामी जी ने हर रोज के बिना केवल शुक्रवार को ही शरीर पर देवी चड़ने के लिए कागज पर संदेश लिखकर दिए थे। बाद में ऐसा ही हुआ था। लोग हर शुक्रवार ही

आते थे। बाद में उसके पिता ने प्रार्थना की कि उसे विवाह करना है। देवी से उसे मुक्ति पाने के लिए उपाय बताइए। स्वामी जी की कृपा से उस लडकी के शरीर पर देवी चड़ना बन्द हो गया। बाद में स्वामी जी के आशीर्वाद से उस लडकी का विवाह हो गया था और बच्चे भी पैदा हुए थे।

कालचक्र में आने वाले दुर्घटनाओं के बारे में और उनसे बचने के उपाय पहले ही बताकर सबकी रक्षा स्वामी जी करते थे। 9

पालकोंड सुब्बाड्डी जी को स्वामी जी एक बार कागज पर लिखकर दिए थे कि आपके गाँव वालों से बगल के गाँव वालों से झगडा होने की संभावना है। यदि तुम जाकर कहो तो झगडा रूकने की संभावना है। सुब्बारेड्डी जी ने स्वामी जी से पूछा कि मैं तो साधारण इंसान हूँ क्या मेरी बात वे सुनेंगे। स्वामी जी ने बताया तुम यहाँ से जा रहे हो। तेरी बात वे सुनेंगे।

स्वामी जी के कहने के अनुसार दोनों गाँवो के लोग सभी प्रकार के लकडी, तलवार जैसे अश्त्र शस्त्रों को लेकर लड़ने के लिए खडे हुए थे। स्वामी जी के सूचना के अनुसार सुब्बारेड्डी ने जाकर उनको विनम्रता से बताया कि आप जैसे बडे लोगों के एक दूसरे से लड़ने से लोग क्या समझेंगे, जरा एक बार सोचिए। दोनों सुब्बारेड्डी जी की बात सुनकर वहाँ से चले गए। स्वामी जी के आज्ञा और कृपा के अनुसार ही यह संभव हो पाया था।

वक्केम्मा जी सपने में देखा था कि एक महिला कुंकम उसे दे रही थी। लेकिन उसने उसे इनकार कर दिया था। इससे उस स्त्री ने अपने हाथ में तेल भरकर जबरदस्त वक्केम्मा के सिर पर लगा दिया। सुबह देखने पर उसके सिर पर कुछ उभार आ गए थे। उनसे बहुत पीडा हो रही थी। स्वामी जी को बताने से उन्होंने बताया कि अच्छा हुआ। और एक बार उभार नहीं आते हैं। कहकर हँसने लगे।

स्वामी जी बहुत अच्छे कलाकार थे। वे अपनी रहस्य बताए बिना बहुत कला दिखाते थे। यद्भावम् तद्भवती। भक्तों और सेवको के अनुसार वे अपना व्यवहार करते थे। अपनी समस्या का समाधान पूछने वालों को अपनी तंबूरा के तंतों को अपनी उंगलियों को दबाते हुए या उंगलियों से कुछ गिनते हुए, आकाश की ओर देखते हुए, विभिन्न भंगिमाओं में रहकर कुछ कहते थे। लेकिन कुछ लोगों के लिए उनके प्रश्न सुनने के पहले ही उनका विषय बता देते थे। उनके बारे में भूत, वर्तमान और भविष्य विषय बताकर उनको आश्चर्य में डालते थे।

उदाहरण के लिए नूतेजि श्री रामय्या की पत्नी, वेलूरु गोविंदय्या की पत्नी दोनों गर्भवती हो गई थी। रामय्या और गोविंदय्या दोनों स्वामी जी के पास आकर जन्म लेने वाले उनके शिशुवों की जानकारी पाने केलिए कुछ प्रश्न पूछना चाहते थे।

स्वामी जी ने उनके प्रश्न पूछने के पहले ही उनको बताया कि उन दोनों को बच्चा पैदा होगा। बाद में स्वामी जी की बात सच निकली।

परम करुणामूर्ति श्री स्वामी जी की बात सुनकर उनको बहुत गुस्सा आ गया। **बेटा या बेटी जो चाहते है उसे उनको प्रदान करने की क्षमता रखने वाले स्वामी जी की महिमा जाने बिना मुझे बेटा पैदा होगा या बेटी पूछना अविवेक ही होगा। ये तो लोगों की हीन भावना है।** 10

कुछ दिनों के पहले अमेरिका के वैज्ञानिक अंतरिक्ष में स्कैलाभ नामक एक मिशीन को अंतरिक्ष यान के द्वारा भेजे थे। कुछ समय काम करने के बाद में देश के किसी भी प्रांत में गिर जाने की आशंका से सभी लोग डर गए। एक भक्त ने स्वामी जी से पूछा कि स्कैलाभ कहाँ गिरेगा? स्वामी जी ने बताया कि वह समुद्र में गिर जाएगा। स्वामी जी की बात के अनुसार वह समुद्र में ही गिर गया था। वह पसिफिक सागर में गिर गया था।

गोलगामूडि के सुब्बाराव का बेटा स्वामी जी का भक्त था। वह इंटर की परीक्षा लिख रहा था। हालटिकट दिखाकर स्वामीजी का आशीर्वाद लेने आया था। स्वामी जी ने बताया और कागज पर लिखकर दिया कि तुम उत्तीर्ण हो जाओगे। उसने सोचा कि स्वामी जी की कृपा से पास हो जाऊँगा। लेकिन परीक्षा फल आने पर उसका नंबर समाचार पत्र में नहीं दिखाई दिया। उसकी माँ ने आकर स्वामी जी से पूछा कि आपने बताया कि मेरा बेटा उत्तीर्ण हो जाएगा। लेकिन वह फेइल हो गया है। यह कैसा हुआ? स्वामी जी ने बताया कि वह उत्तीर्ण हो जाएगा। आश्चर्य की बात, कुछ गलती के कारण उसका नंबर समाचार पत्र में नहीं आया था। वह उत्तीर्ण हो गया था और उसे प्रमाणपत्र भी मिल गया था। स्वामी जी की बात कभी भी झूठ नहीं निकलती थी।

1968 में स्वामी जी ने पूछा था कि श्री रामय्या, तुझे घर नहीं है न? स्वामी जी की बात का अर्थ न समझ में आने से विवरण पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि तुम्हारा पडोसी अनंतप्पा तुम्हारा घर खरीद रहा है। रामय्या उन दिनों में बहुत धनवान किसान था। लेकिन अनंतप्पा बहुत गरीब था। रामय्या ने समझा कि स्वामी जी तमाशा कर रहे थे। लेकिन 1983 के बाद में दोनों की स्थितियों में बडा परिवर्तन आ गया था। अनंतप्पा धनवान बन गया था और जब रामय्या घर बेचने लगा तो उसने खरीद लिया। 20 साल के बाद में कौन किसका घर खरीदने वाले है ये सभी विषय बताने वाले स्वामी जी सर्वज्ञ मूर्ती है। **सृष्टि के सभी विषय निर्णय के अनुसार चलते रहते हैं। निर्णयों को अपने प्रयत्न से बदल सकते हैं। लेकिन ऐसे बदलने वाला सौ में या हजारों में एक ही रहता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने बताया कि सद्गुरू ही निर्णयों को बदल सकते हैं।** 11

दारा पुल्लय्या की पत्नी चिन्नम्मा ने अपनी साठवीं उम्र में आँख की शल्य चिकित्सा करवायी। चिकित्सा के बाद भी आँख ठीक नहीं हुई थी। अपनी बाधा को दूर करने केलिए स्वामी जी से पार्थना की थी। स्वामी जी ने उसके सपने में आकर बताया कि चिकित्सा के समय मैं डॉक्टर के साथ वहीं था। ठीक हो जाएगी। स्वामी जी की बात के अनुसार कुछ ही दिनों में आँख की समस्या ठीक हो गई थी। अपनी प्रार्थना को सुनकर सपने में आकर उसकी समस्या का समाधान बताने वाले स्वामी को अपनी कृतज्ञता चिन्नम्मा जी ने ज्ञापित की।

सही भक्ति और प्रेम को स्वामी जी कितना महत्व देते है इस उदाहरण के द्वारा हमें मालूम होता है। एक दिन मैं अपने घर में स्वामी जी के लिए इडली तैयार करके ले आ रहा था। मन में ठान लिया था कि स्वामी जी को उन इडली को अवश्य खाना चाहिए। इस दृढ़ संकल्प के साथ स्वामी जी का नाम स्मरण करते हुए घर से निकला था। लेकिन मेरे उनके आश्रम पहुँचने के पहले ही बाहर की दूकान से इडली मंगवाकर स्वामी जी खा चुके थे। विषय मालूम होने पर मुझे बहुत दुख हुआ था। सेवकों ने मेरे इडली स्वामी जी को देने से इनकार कर दिया क्योंकि उनका नाश्ता हो गया था। नरसारेड्डी की पत्नी ने अपनी और मेरे इडली को स्वामी जी के पास रखकर कुछ न कुछ स्वीकारने की प्रार्थना की। करुणामय स्वामी जी ने मेरी लाई गए सभी इडली को खा लिया। इससे मेरा हृदय पुलकित हो गया था। इस प्रकार स्वामी जी अनेक भक्तों को अपनी कृपा से आकर्षित करते थे। 12

कुछ भक्त आकर उनकी अनुमती के बिना उनकी बातों को रिकार्ड कर देते थे। आश्चर्य की बात है कि बाद में जाँच करने पर रिकार्ड की गई टेप में से कोई आवाज नहीं निकली थी।

कोटा गाँव के वेंकट रमनय्या फोटोग्राफर को साथ ले आकर स्वामी जी के साथ फोटो खींचने केलिए विनती की। बहुत बार कोशिश करने पर भी फोटो नहीं निकाल सके। फोटो लेते समय स्वामी जी किसी न किसी तरह फोटो फ्रेम से हट जाते थे। परेशान होकर रमनय्या जी ने फोटो ग्राफर को बताया कि मैं ध्यान में बैठूँगा। जब स्वामी जी फोटो के लिए तैयार हो तो चुपचाप फोटो निकाल दो। रमनय्या जी ध्यान में बैठ गए। कुछ समय के बाद में स्वामी जी ने सिर ऊपर रखते हुए एक अच्छा फोज दिया। फोटो ग्राफर ने तुरंत फोटो निकाल दिया। वहीं फोटो आज भी समाधी के पास हम देख सकते हैं। बाद में बहुत फोटो निकालने पर भी इस फोटो की एक अलग विशेषता है। फोटो में स्वामी जी हँसते हुए प्रसन्नता से दिखाई देते हैं। सच्चे प्रेम को स्वामी जी बहुत महत्व देते थे।

काटम रेड्डी सुब्बारेड्डी कल्लूरु पल्लि गाँव के थे। नेल्लरु जिला के अपने पिताजी श्री सुब्बारेड्डी जी के अनुभव स्वामी जी के साथ किस प्रकार होते थे उन्होंने बताया।

1966 में मेरी माँ की मृत्यु होने के बाद में पिताजी बहुत व्याकुल हो उठे। चिंता में डूबे हुए थे। उनके मित्रों ने सलाह दी कि सात्वना के लिए स्वामी जी के दर्शन करें। पहले दर्शन में ही उनका मन पूरी तरह बदल गया। तन और मन में प्रशांतता छा गई थी। बाद में पिताजी बहुत बार स्वामी जी के दर्शन करने आते थे। 1969 में घर मुझे सौंपकर स्वामी जी की सेवा में जुड गए थे। मैं कभी – कभी आकर उनको पैसा या अनाज देकर जाता था।

एक दिन मेरे पिताजी अग्नि कुंड में नारियल डालने लगे। तब स्वामी जी ने बताया कि उसे सूतक है उसे पवित्र कुंड में नारियाल नहीं डालना चाहिए। पिताजी को कुछ समझ में नहीं आया। बाद में पता लगा कि उनके भाई की पत्नी अचानक मर गई थी। स्वामी जी की बातों की विशिष्टता और उनकी दूरदर्शिता तभी सबको मालूम हो गयी थी।

उसी प्रकार एक बार मेरे पिताजी ने घर जाकर अपने परिवार और बाल बच्चों को देखकर वापस आ जाने की अनुमती स्वामी जी से माँगी। विनती की। स्वामी जी ने बताया जिस प्रकार तुम जाते हो उसी प्रकार तुझे वापस आ जाना चाहिए। आँखों से आँसु बहाना नहीं चाहिए। मेरे पिताजी घर पहुँचने के बाद में दो घंटों में उनके भाई की मृत्यु हो गई थी। पता लगने से पिताजी को आश्चर्य हुआ।

मेरे भाई और उसकी बीबी के मरने के पहले स्वामी जी ने बताया कि मुझे कोई संतान नहीं होगी। मेरा विवाह आठ साल के पहले ही हुआ था। तब तक मुझे कोई संतान नहीं हुई थी। स्वामी जी ने बताया कि मेरे भाई और उसकी बीबी मरने के बाद वे अपनी संतान को तेरे गोद में देंगे। स्वामी जी की बातों पर मुझे विश्वास नहीं हुआ था। उनकी बातों का अवहेलन भी किया था। जब भी मेरे पिताजी स्वामी जी की बातों को दोहराते थे मैं बहुत नाराज होता था। स्वामी जी का महत्व कम करके व्याख्या भी करता था। बाद में स्वामी जी की बातों के अनुसार मुझे संतान प्राप्त हुआ था। लेकिन स्वामी जी पर मेरा विश्वास नहीं हुआ था।

एक दिन स्वामी जी ने बताया कि तेरा बेटा सिर पर बरतन रखकर आ रहा था। खेत में काम करने वाले मजदूरों को खाना ले जा रहा था। मैंने स्वामी जी से पूछा मुझे नहीं दिखा रहा था कहाँ है मेरा बेटा। स्वामी जी ने बताया कि देखो सामने दिख रहा था। बाद में घर आकर मेरे पिताजी ने घर में पूछने पर पता चला कि मैं सिर पर बरतन रखकर मजदूरों को खाने ले गया था। अपने आश्रम में बैठ कर पूरे जग को देखने वाले स्वामी जी के चमत्कार सच ही अनिर्वचनीय हैं।

स्वामी जी को मेरे बारे में पिताजी ने शिकायत की कि मुझे स्वामी पर कोई भक्ति या विश्वास नहीं था। इसे कैसे संभाले? स्वामी जी ने बताया कि मैं अपने पिताजी से भी बहुत श्रेष्ठ बनूँगा। आज मैं स्वामी जी का प्यारा भक्त हूँ। यह केवल उनके आशीर्वाद से ही संभव हुआ था।

तलुपूरु में मेरे पिती चावल देकर वापस आ रहे थे। उस समय स्वामी जी ने मुझे एक कागज पर कुछ लिखकर दिया। उसमें लिखा गया था कि इसे मुर्गी का पाप लगा हुआ था। तीन दिन किसी बनिए के घर भोजन खाने से वह पाप दूर हो जाएगा। मैं तो स्वस्थ था। इसलिए स्वामी जी की बातों पर विश्वास नहीं हुआ था। मैंने सोचा कि मैं हफ्ते में चार बार मुर्गी का माँस खाता था। इसलिए ही मेरे पिताजी ने विषय स्वामी जी को बताकर उनके द्वारा मुजे समझाने का पयत्न किया था। यही विषय पर पिताजी से मैंने लडाई झगडा किया। पिताजी को बताया कि आप ने ही मुझे यह विषय बताया होता तो मैं मुर्गी का मांस खाना बंद कर देता। क्यों स्वामी जी के द्वारा आपने मुझे बताने की कोशिश की। मैं स्वामी जी की बात सुनकर खाना बंद नहीं करूँगा। स्वामी जी की बात की तुलना में आपकी बात को मैं बहुत अधिक महत्व देता हुँ। जब मैंने स्वामी जी को कम करके बात किया तो पिताजी बहुत नाराज हो उठे। मुझे बहुत डाँटे थे।

पिताजी ने स्वामी जी के पास जाकर बताया कि स्वामी मेरा बेटा मुर्गी के पाप को नहीं मान रहा था। उस बात पर उसे विश्वास नहीं हो रहा था। पिताजी की चिंता देखकर स्वामी जी ने बताया कि एक महीने के बाद में देखो समझ लेगा और वहीं अपने आप हमारे पास आ जाएगा।

आश्चर्य की बात एक महीने के बाद में मुझे मुर्गी का मांस खाते ही पेट में दर्द होता था और अतिसार की बीमारी से तडपने लगा। डॉक्टर को दिखाने पर बताया कि आंत्र में कुछ उबाल था ऑपरेशन करना पडता है। तीन महीने तक दवाइयाँ खाने पर भी कोई उपशमन नहीं हुआ था। बहुत दुबला पतला हो गया था। बाद में मेरे पिताजी मुझे स्वामी जी के पास ले गए थे। मुझे देखकर स्वामी जी बहुत हँसने लगे। बाद में उन्होंने बताया कि शाम को भात में कुछ काली मिर्च मिलाकर खिलाइए, ठीक हो जाएगा। स्वामी जी के सलाह के अनुसार करने से दस दिन में ही मैं स्वस्थ हो गया था। एक महीने में ही मुर्गी के मांस को देखते ही मुझे उल्टी होने लगी। उसके बाद स्वामी के ऊपर मेरा विश्वास बढ़ने लगा और मैं बाद में प्यारा भक्त बन गया था। पहले उनकी बातों पर विश्वास न रखने का कारण भी मेरे पूर्व कर्म ही होंगे।

एक बार मेरे पिताजी को अतिसार के कारण मरने की स्थिति हो गए थे। इलाज के लिए छे मील दूर के नेल्लूर ले जाने केलिए एक बैल गाडी में बिठाकर जा रहे थे। गाँव के बाहर आए थे। मेरे पिताजी डॉक्टर के पास इलाज के लिए मना कर

रहे थे। उन्होंने बताया कि स्वामी जी के पास जाकर मेरे लिए उनका संदेश एक कागज पर लिखवाकर लाओ। मैं चाहे जिंदा रहूँ या मरूँ मेरा पूरा जीवन स्वामी जी के हाथ में ही है। और कोई रास्ता न होने के कारण मैं तिरुपुर में बसे स्वामी जी के पास गया था। उस रात वहीं रह गया था। स्वामी जी ने बताया कि आपके पिता को कुछ भी नहीं होगा। तुम वापस जा कर देखो वह खाना खाते हुए दिखेंगे। चिंता मत करो। उन्होंने अपनी भाषा में करोड और मणुगु लिखकर मुझे आशीर्वाद देकर एक कागज मुझे दिया। मैंने मन में ठान लिया था कि मेरे घर वापस पहुँचते वक्त मेरे पिताजी मर गए होंगे। आश्चर्य की बात स्वामी जी के कहने के अनुसार घर पहुँचते ही मैंने पिताजी को खाना खाते हुए देखा था। इस अनुभव से और एक बार स्वामी जी पर मेरा विश्वास और बढ़ गया था।

एक बार मेरे घर की भैंस कहीं भाग गई थी। बहुत कोशिश करने पर भी पता नहीं लगा सके। मेरे पिताजी के स्वामी जी से पूछने पर उन्होंने बताया कि उनको पैदलों को काम करवाने का कर्म बाकी है। इसलिए वे इधर – उधर भटक रहे हैं। चौथे मील के पत्थर के पास वे सुरक्षित हैं। दो रूपए देने से वे अपने आप लाकर आपको सौंप देंगे। स्वामी जी पर रहे अचंचल विश्वास से मेरे पिताजी ने मेरे नौकर को दो रूपए देकर चौथे मील के पत्थर के पास भेजा। आश्चर्य की बात वहीं मेरी दोनों भैंस थीं और केवल दो रूपए लेकर उनको हमारे घर पहुँचा दिया था।

ज्वार – बाजरा मेरे पिताजी नहीं खाते थे। इसलिए स्वामी जी उनके लिए चावल मँगवाए थे।

इस दुनिया के स्वल्प विषय भी स्वामी जी को मालूम हो जाएगा। इस विषय के बारे में पेनमर्ति गाँव के मोपूरु दशय्या की बहिन वनम्मा इस प्रकार बताती है।

एक बार स्वामी जी ने दशय्या को बताया कि आज वसम्मा अलग जा रही है। उस समय हमें सब कुछ उसे देना पडेगा। पति के मरने के बाद में वसम्मा अपने भाई के घर रहती थी। भाई को छोड़कर किसी भी स्थिति में वह अलग नहीं जा सकती है। लेकिन स्वामी क्यों ऐसा कहे थे किसी को समझ में नहीं आया।

एक हफ्ते के बाद में दशय्या और वनम्मा को किसी विषय पर एक दूसरे से लड़ने के कारण वनम्मा अपनी पकाई अलग करना शुरू किया। पकाने की सभी चीजें दशय्या जी की ही हैं। लेकिन पकाना अलग। इससे दशय्या के बेटे ने वनम्मा से कहा कि ऐसे अलग खाना पकाने से वह और घर के सभी सदस्य खाना बंद कर देंगे। इससे वनम्मा सहमत हुई और फिर सबके साथ रहने के लिए तैयार हो गई। बाद में वनम्मा के स्वामी जी के पास जाने पर वनम्मा को देख कर स्वामी जी हँस पडे और कहने लगे कि वनम्मा अब वापस आ गई है। स्वामी जी का सर्वज्ञ स्वभाव समझकर आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

अपनी लीलाओं के द्वारा स्वामी जी हम सबको बहुत अच्छे सबक सिखा रहे थे। उन्होंने बताया कि हमारे भविष्य के सभी सूक्ष्म अंश भी पहले ही निर्णय हो जाते हैं। कब, कौन, किससे लडना है? किस अनाज का दाना किसे खाना है?... ये सब पहले ही निर्णय हो जाते हैं। कबीर के द्वारा बताया गया यह संदेश सच ही है। ये सभी सूक्ष्म निर्णय स्वामी जी को अवगत होने के कारण वे भविष्यवाणी दे रहे हैं। कोई व्यक्ति किसी विषय के बारे में बोलने पर भी, चर्चा करने पर भी वह निर्णय पहले ही हो जाता है। उसके अनुसार ही वह ये बातें कह सकता है। निर्णय के विरुद्ध कोई कुछ भी नहीं कर पाता है। सद्गुरू के संकल्प से आगे बढ़ने वाले ही गुरू के संकल्प के अनुसार जीवन में उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। **इसलिए कोई किसी तरह की चीज देने पर भी, नहीं देने पर भी, कोई किसी विषय के बारे में बताने पर भी या नहीं बताने पर भी, हमारी प्रशंसा या अपमान करने पर भी हम विचलित न होकर राग - द्वेषों से दूर रहकर सद्भावना से स्वामी जी के आदेशानुसार बिना कुछ कहे** 13 **काम करें तो हम अपने कर्म बंद नों से मुक्ति पा सकते हैं। स्वामी जी की कृपा पा सकते है। पारिवारिक बंद न रूपी चक्र से बाहर आ सकते हैं। इसलिए कहा गया है कि उदाशीनो गतव्यधः।**

ॐ नारायण - आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 05

सर्वसमर्थ इंसान

अज्ञान के कारण हम अपने देश को ही बहुत महत्व देते हैं। इससे हमारे शरीर के विभिन्न अंग और इंद्रिय हमारे अधीन में नहीं रहेंगे। गुरु की कृपा पाने वाले स्वामीजी जैसे महान लोग देह भ्रांति से दूर रहकर पूरे विश्व को अपनाते हैं और अपने ही अधीन में रख सकते हैं। वे चाहे तो हमारे कर्म सूत्रों को भी बदल कर भक्तों की रक्षा करने के लिए तैयार रहते हैं और भक्तों की सहायता के लिए सक्षम रहते हैं। ऐसे महान लोगों की कृपा पाने के लिए हमें अपने जीवन को उनके अनुसार बदलना अनिवार्य है। ऐसे बदलने वाले अनेक भक्त लोग उनकी कृपापात्र बनकर अपने जीवन को सार्थक बनाए थे।

रोशरेड्डी जी बहुत दिनों से अपना घर की ओर देखे बिना स्वामी जी की सेवा में मग्न होकर जीवन बिता रहे थे। वृद्धाप्य में नजर की कमी होने पर भी स्वामी जी की सेवा नहीं छोड रहे थे। किसीने रोशरेड्डी जी को देखकर कहा कि यह बूढा बिना कोई काम के यही आश्रम में लटककर रह रहा है। उनकी बातों से दुःखी होकर रोशरेड्डी विष पीकर मरने के लिए तैयार हो गए थे। उनकी मन की बात समझकर स्वामी जी रोशरेड्डी जी को अपने पास बुलाकर कहा कि रोशरेड्डी किसी के कहने पर तुम मरना चाहते हो। तुम भिख माँगकर खाना खाओ। अपने जीवन का अंतिम चरण यहीं समाप्त करो। स्वामी जी की सर्वज्ञता देखकर रोशरेड्डी जी को बहुत आश्चर्य हुआ।

एक बार स्वामी जी ने पूछा पाँच दिन तक खाने खाए बिना रहनेवाला यहाँ कौन है मुझे दिखाओ। रोशरेड्डी ने स्वामी जी के सामने ही प्रतिज्ञा की कि मैं ही रहूँगा। उस दिन से पाँच दिन तक बिना खाए या पिए रोशरेड्डी जी रह गए। बाद वे हर शनिवार और सोमवार संपूर्ण रूप से उपवास रहते थे। बाकी दिन केवल दिन में एक बार ही खाना खाते थे। बाद चावल छोडकर केवल दूध और पूहा खाकर रह जाते थे। हर दिन भिक्षा माँगकर भोजन लाते थे। उसी प्रकार वे वहीं अंतिम दिनों तक रहकर स्वामी जी की सन्निधि पहँच चुके थे।

स्वामी जी कहते थे कि वेंकय्या की बात एक ही है। स्वामी जी के विषय में विश्लेषण करने पर हमें इसका अर्थ मालूम हो जाता है।

रोशरेड्डी अपने परिवार और संतान को छोडकर निरंतर स्वामी जी की सेवा में ही रहते थे। एक दिन स्वामी जी ने कहा कि तुम अपने घर जाकर निंबू के पेड लगाकर वापस आओ। रोशरेड्डी जी घर जाकर वहाँ नींबू के पेड लगाने के लिए कोशिश करने

पर उनके परिवार वालों ने मना कर दिया। उनका उद्धेश्य था कि रोशरेड्डी निंबू के पेड लगाकर चले जाने पर उनका संरक्षण कौन करेगा। पेडों के लिए पानी डालना, खेत के चोरों। ओर हदों को सुरक्षित रखना ये सभी जिम्मेदारी कौन लेंगे? इसलिए ही उन्होंने पेड लगाने से मना कर दिया। लेकिन रोशरेड्डी जी को स्वामी जी की बातों पर पूरा विश्वास होने के कारण कुछ पैसा खर्च करके नींबू के पेड लगाकर स्वामी जी के पास सेवा केलिए वापस आ गए थे। बाद में उनके परिवार वालों ने पानी सींचकर फसल की जिम्मेदारी ले ली। बहुत खर्च करना पडा। स्वामी जी के पास वापस आकर स्वामी जी से विनती की आप क्यों मुझे ऐसे मुश्किल काम में फँसा दिए थे। तब स्वामी जी ने बताया कि इस खेत की सुरक्षा देवी कर रही है। चिंता मत करो। डेढ लाख रूपयों की संपत्ति है। आप अपने परिवार के साथ उसी खेत में निवास स्थान बनाकर रहो। उस प्रदेश का नाम शिरिमेल्ला रखो। स्वामी जी विवरण देने पर भी अनिच्छा से ही स्वामी जी के कहे के अनुसार खेत का काम संभालने लगे। आश्चर्य की बात उस खेत से अधिक मात्रा में उनको फसल आने लगी। उनकी आमदनी भी बढ़ी। खेत का मूल्य बढ़कर तीन लाख हो गया। यह सब स्वामी जी की महिमा के द्वारा ही संभव हो सका था।

कलिचेडु के नरसारेड्डी की पत्नी ईश्वरम्मा ने एक नया घर बनाया था। स्वामी जी को बुलाकर उसमें गृहप्रवेश कार्यक्रम करवाने का संकल्प लिया था। स्वामी जी ने भी उसकी विनती स्वीकार कर ली थी। तीन महीने तक स्वामी जी उस गाँव की ओर नहीं आए थे। स्वामी जी के आगमन की प्रतीक्षा करती हुई इंतजार करती रही। अपने सामान को वहीं एक टूटे फूटे मकान में रखकर स्वामी जी के आगमन के लिए इंतजार करती रही थी। गाँव के लोग उसे देखकर हँसने लगे। लेकिन ईश्वरम्मा बिना हटे डटकर स्वामी जी के लिए प्रतीक्षा करती रही। स्वामी जी निकट के गाँव आने का समाचार पाकर और एक बार स्वामी जी को अपने घर आकर गृहप्रवेश करने की विनती की थी। स्वामी जी ने बताया कि कल सुबह सूर्योदय के समय बहुत अच्छा है, मैं भी उस समय आउँगा। उस समय तुम गृहप्रवेस कर लो। ईश्वरम्मा ने बताया कि इतने कम समय में मैं आपके आगमन के लिए आवश्यक सुवाधाएँ जुट नहीं पाऊँगी। तब स्वामी जी ने बताया कि तेरे प्रयास के बिना वे अपने आप जुट जाती हैं। रात घर जाकर ईश्वरम्मा अपने घर को साफ करना, स्वामी जी के आगमन के लिए आवश्यक काम करना आदि में व्यस्थ थी। इतने में कुछ मजदूर जिन्होंने उससे पैसे लिए थे वे आकर पैसे के स्थान पर अनाज और कुछ पैसे देकर चले गए। प्रातःकाल स्वामी जी अपने सेवकों के साथ तीन बजे ही ईश्वरम्मा के घर आ पहुँचे। स्वामी जी ने अपने सुवर्णहस्थों से कपूर जलाकर अग्नि कुंड बनाया। दस किलो चावल पकाया गया। उसकी सहेली ने सबके लिए खाने के 200 केले के पत्ते दिये। सभी लोग खुशी से खाना खाये थे। ईश्वरम्मा को और स्वामी जी को खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था।

आश्चर्य की बात वहाँ कोने में मीठी पोंगली रह गई। किसी ने उसे नहीं देखा था। उसीको स्वामी जी के साथ ईश्वरम्मा ने भी प्रसाद के रूप में स्वीकार कर लिया। केवल दस किलो चावल से स्वामी जी ने दो सौ लोगों को खाना बनाकर परोसवाया था।

पेनमर्ति के पूसल मीरय्या बेंगलूर में काम कर रहे थे। उनकी पत्नि स्वामी जी की सेवा के लिए पहली बार गोलगामूडि आई थी। स्वामी जी के नित्य पूजा के लिए हर महीने भक्त जन पैसा जमा करने का एक कार्यक्रम चला रहे थे। ये उसी कार्यक्रम के लिए हर महीना दस रूपया देने के लिए अपने पति का नाम लिखवायी थी। वह अपने पति की सहमती के बिना ही हर महीना यह दस रूपए भेजने केलिए लिखवायी थी। उसके पति की सहमती उसे मिलने केलिए स्वामी जी से प्रार्थना की। घर जाने के बाद में जब वह अपने पति को दस रूपये के बारे में बताई थी तब पति ने बताया कि स्वामी मुझसे स्वयं माँगने से ही मैं दूँगा।

कुछ दिनों के बाद में स्वामी सपने में आकर अपने लिए कुछ माँग रहे थे। क्या देना है आपके लिए?.. मीरय्या जी ने पूछा। तब स्वामी जी ने बताया आपके पास जो कुछ है वहीं दो। तब मीरय्या को बात समझ में आ गई थी। महीने - महीने देनेवाले दस दस रुपये कुल मिलाकर स्वामी जी को समर्पित कर दिए थे। तुरंत मीरय्या जी ने स्वामी जी की महिमा पहचान कर उनकी समाधी के दर्शन करने के लिए गोलगामूडि पहुँच गए।

संगम के पल्लंम रेड्डी कृष्णारेड्डी जी स्वामी जी के समक्ष विनायक व्रत मनाने केलिए एक किलो मूँगफल, दो किलो गुड मीठा, एक किलो दाल के वडा बनाकर रखे थे।

हर दिन स्वामी जी के सेवक अनिकेपल्ली जाकर मध्याह्न तक भीख माँगकर एक बजे के समय वापस आते थे। उस दिन जो सेवक भिक्षा माँगने के लिए गया था उसे बस न मिलने से एक बजे को वापस नहीं आ पाया था। इतने में स्वामी जी खाने के लिए बैठ गए। चावल माँग रहे थे। सेवक ने बताया कि चावल नहीं है केवल गुड का मीठा ही है, वह भी पक रहा है। स्वामी जी को वही उपलब्ध पदार्थ परोसे गए। स्वामी जी बहुत कुछ खाकर बाकी छोडकर उठ गए। कृष्णारेड्डी जी के द्वारा बनाया गया बहुत पदार्थ 25 सेवक खाने के बाद में भी ऐसे ही रह गए। मत्तई 14.17-21 के अनुसार ईसा सात रोटी, सात मछली, सात हजार पुरूष, स्त्रियाँ और बच्चों को बाँटने पर भी सात टोकरियों भर पदार्थ रह गए थे।

एक बार कृष्णारेड्डी जी ने गोलगामूडि मे स्वामी जी की सेवा करने के बाद में अपने घर जाने के लिए स्वामी जी से अनुमती माँगी। स्वामी जी ने बताया मैं भी आपके साथ आ रहा हूँ। स्वामी जी को अपने साथ ले जाने में कृष्णारेड्डी जी को एक दिक्कत थी। साधु संतों को आतिथ्य देना उनके घर के बूढे पसंद नहीं करते थे। उसकी

अनुमती के बिना स्वामी जी को घर ले जाने से उनकी बुरी बातें सुनना पडता है। इसलिए कृष्णरेड्डी जी स्वामी जी की बात सुनकर भी चुप रह गए। तुरंत स्वामी जी ने बताया कि कृष्णारेड्डी जी आप मुझे आपके घर आने में कैसे मना कर सकते हैं? आप अपने मन में बहुत परेशान हो रहे है न? मैं आपका घर बाद में आऊँगा। सर्वज्ञ स्वामी जी की बात सुनकर कृष्णारेड्डी जी आश्चर्य में पड गए थे। उन्होंने बताया कि आप जब चाहते है तब मेरे घर आ सकते हैं।

1982 में स्वामी जी समाधी प्राप्त कर लिए थे। 1986 एप्रिल में रेड्डी जी के घर में बूढा भी स्वर्ग सिधार चुके थे। उस बूढे के मरने के बाद 15 दिन के बडे कर्म कार्यक्रम में सभी लोगों को भोजन के लिए बुलाया था। 170 किलो चावल लगभग 500 लोगों केलिए पकाए थे। स्वामी जी के चित्र की पूजा करके भोजन परोसने केलिए तैयार हुए थे तभी एक साधू उनके घर आया था। तुरंत रेड्डी जी ने पूजा बीच में छोड़कर उस साधू को भोजन खिलाकर भेज दिए थे। बाद में स्वामी जी को हारती जलाकर भोजन परोसना शुरू किया गया।

उनके अंदाजा से बढ़कर बहुत लोग आ गए। चावल, सब्जी, अन्य चीज सभी लोगों के लिए उपलब्ध नहीं थे। रेड्डी जी का तनाव बढ़ गया। मजदूरों को भोजन खाने से रोक दिया गया।

500 सौ लोगों के लिए बनाये गये पदार्थ 1000 लोगों तक खा लिए थे। और 400 लोगों केलिए खाना भी बाकी रह गया। यह घटना भी अद्भुत सा लगा। तब स्वमी जी की बात उन्हें याद आई। उनको पता लगाने में देर नहीं लगा कि स्वामी जी साधु केरूप में उनके घर आकर खाना खाकर पहले ही चले गए।

जो बूढ़ा स्वामी जी को रेड्डी जी के घर आने के लिए पसंद नहीं करते थे वहीं बूढ़ा मरने के बाद स्वामी रेड्डी जी के घर आकर भर पेट खाकर चले गए थे। जो साधु उनके घर आए थे वे अवश्य स्वामी जी ही थे। यह साबित हो गया था।

भगवान ईसा भी 7 मछलियों से 7 हजार लोगों को भोजन खिलाया था। फिर भी सात टोकरियों भर खाना रह गया था। यही भगवान की लीला है।

यदि हम भगवान पर हमारा पूरा भार रखकर मन लगाकर उसकी सेवा करे तो पर वे हमारी पूरी जिम्मेदारी अपने आप ले लेते हैं। इसका एक उदाहरण यहाँ दिया गया है। उनकी लीला के द्वारा हमें मालूम होता है कि वे हमारी ही नहीं सबकी जिम्मेदारी सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वसमर्थ होकर ले लेते हैं और हमारी रक्षा भी करते हैं। 15

रोशिरेड्डी जी बहुत दिनों से स्वामी जी की सेवा में थे। एक दिन स्वामी जी ने कहा कि अपने छोटे बेटे के नाम पर एक कागज पर लिखकर मुझे दो। रोशरेड्डी के द्वारा लिखी गई चिट्टी को वे अपने जाँघ के नीचे रखकर बैठ गए थे। रोशरेड्डी ने समझा कि स्वामी जी अपने बेटे को किसी कष्ट से बचा रहे हैं। स्वामी जी की चेष्टा का मतलब

उन्हें मालूम नहीं हुआ था। तीसरे दिन रोशरेड्डी का बेटा राजमपेटा से अपने आप स्वामी जी की सेवा और दर्शन के लिए स्वामी जी के पास आया था। गाडी भर लकडी होने के कारण दोनों बैल गाडी को नहीं संभाल सके। ऊपर चढ़ते समय गाडी के साथ दोनों बैल वहाँ के पहाडी प्रांत की नदी में 40 फुट नीचे गिर गए थे। गाडी, बैल या किसी को भी कुछ भी नहीं हुआ। यह केवल स्वामी जी की महिमा के कारण ही हुआ था। यह समझकर स्वामी जी को कृतज्ञता ज्ञापित करने केलिए वह आया था। जब स्वामी जी चिट्ठी लिखवाए थे उसी समय वहाँ यह दुर्घटना घटी थी। यह समाचार सुनकर सब आश्चर्य में पड गए। स्वामी जी को घटने वाली घटना की जानकारी पहले ही प्राप्त होना उनकी सर्वसमर्थता, सर्वव्यापकता और सर्वांतर्यामी होने का परिचय कराता है।

महिला ग्रंथालय में काम करने वाली जयम्मा के पति श्री जयचंद्रा रेड्डी साई के परम भक्त थे। वे स्वामी जी के द्वारा दिया गया प्रथम दर्शन के बारे में इस प्रकार बता रहे थे।

श्री स्वामी जी के बारे में मैंने श्री साई लीलामृतम में पढा था। लेकिन मैं अब तक उनके दर्शन नहीं कर पाया। उनके मंडल आराधना के बारे में भी मुझे पता नहीं था। एक दिन पहले मैंने एक सपना देखा था। नेल्लूरु के गांधी मूर्ति के निकट एक बूढ़ा आदमी मुझ से मिला। उन्होंने पूछा, क्या आपने गोलगामूडि के अवधूता को देखा है? नहीं देखने पर दक्षिण दिशा में जाओ। वहाँ फौज वाले आपको रास्ता दिखाएँगे। मैं सपने में ही अवधूत के दर्शन के लिए जाने लगा। रास्ते में वहाँ के फौज के जवानों से रास्ता पूछा था। गोलगामूडि जा रहा था। एक दुबला पतला आदमी कोंडय्यपालेम के पास दिखाई दिया था। एक छोटा सा कपडा पहना हुआ था। उसके हाथ में एक लकडी थी। और एक हाथ में एक छोटा सा मटका था। पुराने कपडों में कुछ पुरानी चीजें रखकर एक माला की तरह उनको पहना हुआ था। मैंने समझा कि ये ही स्वामी होंगे। मैंने उनको पादाभिवंदन किया। मेरा सपना टूट गया। सुबह मेरे दोस्तों ने बताया कि हम सब गोलगामूडि स्वामी जी के मंडलाराधन के लिए जा रहे हैं। उनके साथ मैं भी गोलगामूडि पहुँच कर स्वामी जी की समाधी का दर्शन करके धुनि की पूजा की। वहाँ के गुरू भारद्वाज मास्टर का दर्शन भी मुझे मिला। इस प्रकार स्वामी जी अपने भक्त को अपने पास ले आए थे। सर्वज्ञमूर्ति स्वामी जी ने बताया कि हजारों भेडों में रहने पर भी अपने भेडों को पहचान कर उनकी रक्षा करने की क्षमता स्वामी जी के पास होती है।

गोलगामूडि के तूपिलि वेंकय्या की बेटी उमामहेश्वरी का विवाह अनेके पल्ली के वर से हुआ था। कुछ कारणों से नूतन वर और वधू के बीच कुछ भेद भाव आ गए थे। तालाक लेने के लिए तैयार हो गए थे। पति पत्नि को बहुत मारता था। डाँटता

था। सबको बुलाकर रास्ते पर ही विषय की चर्चा करने लगा। पति से ऊबकर पत्नी उमा तालाक देने के लिए तैयार हो गई थी। अपने मंगल सूत्र भी उसने निकाल दिया था। उस दिन पिच्चम्मा ने अपनी बेटी उमा को स्वामी जी के आश्रम में काम करने के लिए बूढी तुलसी जी को सौंप दिया। तुलसी जी के सहचर रहकर उमा ने स्वामी जी की सेवा एक साल तक की। और एक व्यक्ति से दूसरा विवाह करने के लिए प्रयत्न करने पर भी वह मना कर दी थी। बहुत लोग कहने पर भी मंगल सूत्र नहीं पहनी थी। मेरे लिए कोई पति नहीं हैं। मुझे मंगल सूत्र की क्या जरूरत है कहती हुई सेवा में जुट गई थी। स्वामी जी की कृपा होने से उसकी समस्या का समाधान मिल जाएगा - सोचकर तुलसी जी ने मंगल सूत्र मंगवाकर स्वामी जी के आसन के नीचे रख दिया। बहुत विचित्र बात थी पति और पत्नि दोनों बदल चुके थे। दोनों एक दूसरे से मिलकर जीवन चलाने के लिए सहमत हो गए थे। बडों की सहायता से एक दिन शुभ मुहर्त में उमा स्वामी जी के हाथ से दिया हुआ मंगलसूत्र धारण करके दो मील दूर में अनिकेपल्ली में रहने वाले अपने पति के पास चली गयी थी। पति ने भी उमा का स्वागत किया। बाद वे दोनों खुशी से रहने लगे। बाद में उनको दो लडकी भी पैदा हुई थी। यह सब केवल स्वामी जी की कृपा से संपन्न हुआ था।

एक दिन वक्कम्मा को मालूम हुआ था कि श्री स्वामी जी पेन्ना नदी के दूसरे किनार पर बसे हुए थे। स्वामी जी के दर्शन के लिए निकली थी। लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए एक नदी को पार करना पडता था। नदी में बहुत पानी होने के कारण लोगों ने बताया कि अब नदी पार करना खतरनाक है। लेकिन वक्कम्मा उनकी बात नहीं सुनी थी। नदी पार करके जाने केलिए निश्चय कर ली। आश्चर्य की बात नदी का पानी नदी पार करते समय केवल घुटनों तक ही आया था। तब उसे लगा कि वहाँ के लोग उससे झूठ बोले थे। स्वामी जी के पास पहुँचने के बाद में वहाँ के सेवकों ने पूछा कि नदी को पार कर कैसी आई हो? बाद में उसे अवगत हुआ कि केवल स्वामी जी की लीला से ही यह संभव हो सका है।

कन्नवरम राजय्या को 1982 में बहुत शारीरक निस्तेज, भय, और हृदय संबंधी रोग हो गया था। नेल्लूर के डॉक्टर से इलाज लेना चाहता था। स्वामी जी से प्रार्थना की। स्वामी जी के सामने फूटफूटकर रोने लगा। सुबह डॉक्टर के पास जाकर इंजक्सन लेने से रियाक्सन के कारण उसकी स्थिति और बिगड गई थी। स्वामी जी का दर्शन करके, शरीर पर विभूति लगाकर नेल्लूर कार में ले गए थे। राजय्या को कार के सामने स्वामी हाथ में लकडी लेकर जाते हुए दिखाई दिया। राजय्या के सिवाय और किसी को स्वामी दिखाई नहीं दिया। अस्पताल का समय होने से उन्होंने सोचा था कि डॉक्टर नहीं रहेंगे। लेकिन डॉक्टर अस्पताल में ही थे। आवश्यक दवा देकर, इलाज करने के बाद में डॉक्टर ने बताया कि मुझे बहुत समय पहले ही जाना था लेकिन आज आपके लिए रह गया था। स्वामी जी ही आपके लिए मुझे यहाँ बिठा दिए थे।

1981 में तिरुपती के वेंकटमुनिरेड्डी जी का दोस्त वि. बोडय्या ने स्वामी जी की लीलाओं के बारे में सुना था। टाइफाइड के कारण कुछ महीने चित्तूर जिले के अस्पताल में भर्ती हुए थे। अठारह महीनों से उसे कोई आहार नहीं दिया जा रहा था। डॉक्टर ने बोडय्या को रायवेल्लूर सि एम अस्पताल ले जाने के लिए सलाह दी। बोडय्या बुहुत गरीब था। रायवेल्लूर जाने के लिए पैसे उसके पास नहीं थे। चिंता में डूबा हुआ था। बोडय्या स्वामी जी के बारे में सुना हुआ था। उनसे प्रार्थना की कि उसकी सहायता करें। स्वामी जी ने उसके पलंग के पास आकर बताया कि तीन दिनों में ठीक हो जाएगा। तुझे कुछ नहीं होगा। भरोसा देकर वहाँ से अदृश्य हो गए थे। स्वामी जी की भरोसा से बोडय्या को अपार शक्ति मिल गई। डॉक्टर को कहे बिना 18 किलोमीटर पैदल ही रात में चलकर अपना घर वापस पहुँच गया। कुछ ही दिनों में वह स्वस्थ हो गया था। बाद में अपनी राम कहानी सबको बताकर उसने स्वामी जी की लीलाओं का प्रचार किया।

एक दिन तलपूरु नारायण दास के आश्रम में स्वामी जी आए हुए थे। स्वामी जी ने बताया कि बहुत लोग पेंचलकोना में सभा रखने केलिए आए हुए थे। पेंचलय्या उनको नहीं मना कर पा रहा था। इसलिए हम सबको वहाँ बुला रहा था। तीन दिनों से वह हमारे लिए इंतजार कर रहा था। आज हमें सब जाकर सबको समझाकर पेंचलय्या की सहायता करनी चाहिए। चलिए हम सब जाएँगे। सब मिलकर पेटलकोना के लिए जाने लगे। मंदिर के सामने बैठकर स्वामी जी अपने आप में किसी से बातचित कर रहे थे। बाद में स्वामी जी ने बताया कि मुझे सबको जो बताना था सबकुछ बता दिया है। अब पेंचलय्या को कुछ चिंता नहीं होगी। हमारा काम हो गया है चलिए वापस चलें जाएँगे। सब मिलकर वापस आ गए थे।

आज बुधवार था। शनिवार और रविवार के सिवाय बाकी दिनों में बस पेंचलकोना नहीं आती थी। स्वामी जी को बताने पर उन्होंने बताया कि आज बस जरूर आएगी। तैयार रहिए। आश्चर्य की बात 15 मिनिट में बस आ गई थी।

आज बुधवार है। आज भी आप क्यों बस ले आए थे।.. ड्राइवर से पूछने पर उसने बताया कि गोसुपल्लि से कदिलि केवल दस पर्लांग दूर पर है। मै स्वामी जी का दर्शन करना चाहता हूँ। इसलिए ही मैं बस लेकर आ गया हूँ। श्री वेंकय्यस्वामी जी को ले जाने के लिए ही भगवान ऐसा किया गया होगा। ड्राइवर को मालूम नहीं था कि स्वामी जी संकल्पशिद्ध परुष है।

और एक बार कलुवाई रास्ते में श्री स्वामी जी आ रहे थे। उनको देखकर भी ड्राइवर ने बस को नहीं रोका था। कुछ दूर जाकर बस अपने आप रूक गई थी। स्वामी जी के सभी सेवक बस चढ़ने के बाद में बस फिर से चलने लगी।

महान लोग अपनी कृपा का प्रसारण विभिन्न विचित्र तरीकों से करते रहते हैं। उनकी बात, काम, अज्ञान के कारण हमें अर्थ रहित दिखते हैं। लेकिन जो उनकी 16
बातों पर विश्वास करते हैं, जो उनकी बातों का मर्म समझते हैं उनके लिए स्वामी जी की कृपा बहुत आसानी से मिल जाती है। स्वामी जी के संदेशों का पालन करके वे अपार शक्ति और लाभ पा सकते हैं।

एक बार कोर्रकूटि बुज्जय्य जी पिता जी की अस्वस्थता और न्यायालय के विभिन्न समस्याओं से ऊबकर मन की शांति केलिए स्वामी जी के पास आकर खडे हुए थे। बुज्जय्या के मन की बात समझकर स्वामी जी ने बताया कि आप कोई चिंता मत कीजिए। आप घर वापस चलिए। मैं सबकुछ देख लेता हूँ। स्वामी जी की बात के अनुसार बुज्जय्या जी घर वापस चले गए और उनकी सभी समस्याएँ अपने आप हट गई।

बहुत दिनों के बाद बुज्जय्या जी ने अपने मामा के एक क्रिमिनल केस में फँस जाने से उसकी सहायता करने के लिए स्वामी जी से विनती की। स्वामी जी ने बताया कि जी आप कोंडायपालेम तक बस में जाकर वहाँ से नेल्लूर जाकर केस के संबंद में बातचीत करके नेल्लूर रंगनायकुल मंदिर जाकर पूजा करके मध्याह्न 12 बजे वापस आइए।

स्वामी जी की सलाह के अनुसार बुज्जय्या जी बस से, कुछ दूर पैदल से जाकर केस के मामले में पूरी चर्चा करके, विवरण देकर रंगनायकुल मंदिर में पूजा पूरा करके वापस आ रहे थे। उस समय बस नहीं थी। 12 बजे वे किसी भी अवस्था में पहुँच नहीं पाते । बीच में उनका दोस्त दिखाई दिया था। वे गोलगामूडि की ओर ही ऑफीस काम पर जा रहे थे। उनको अपने कार में बिठाकर गोलगामूडि के पास पहुँचा दिया। बुज्जय्या 12 के पहले ही स्वामी जी के पास पहुँच गए थे। बुज्जय्या का आश्यर्य का ठिकाना नहीं रहा था। न्यायालय के सभी केस पूरी तरह हल हो गए थे। यह सब केवल स्वामी जी की लीला ही है।

श्री स्वामी जी से किए जाने वाले काम बहुत विचित्र होते हैं। किस व्यक्ति से किस समय पर बात करना, कहाँ कब चर्चा करना, किस 17
देवालय में पूजा कब करना आदि विषयों के बारे में पहले ही बता देने से केवल स्वामीजी की दूरदृष्टि का पता चलता है। अज्ञान रूपी अंधकार में रहने वाले हमको उनकी सभी चेष्टाएँ पागलपन जैसे दिखते हैं।

कोंडय्यपालेम के दोरतोटा में रहने वाले दोड्ड रामिरेड्डी जी अदालत में केस की जीत हो जाने के बाद स्वामी जी से पूछा कि जी आप की कृपा से मैंने आपके लिए एक घर बनवाना चाहता हूँ। कहाँ आपका घर बनाना है बताइए। स्वामी जी ने

बताया कि मेरे लिए घर की जरूरत नहीं है, तुम आंजनेय स्वामी मंदिर केलिए चारों ओर दीवार बनाओ। रामिरेड्डी जी ने बहुत दिनों तक यह काम नहीं कर पाए थे।

स्वामी जी ने एक दिन कोर्रकूटि बुज्जय्या और काटंम रेड्डी सुब्बारेड्डी जी को बुलाकर बताया कि आप रात दो बजे रामिरेड्डी के पास जाइए। रामिरेड्डी जी ने मंदिर के लिए चारों ओर दीवार बनाने की सहमती दी। जाकर पूछ लीजिए कब वह उसका निर्माण करेगा। स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार छेः मील पैदल जाकर वे दोनों रामिरेड्डी के घर पहुँचकर उनसे स्वामी जी की बात बताई। रामिरेड्डी ने बताया कि मेरे लिए अदालत में और कुछ केस हैं। उन सबसे मुक्ति पाने के बाद ही मैं वह काम कर सकता हूँ। स्वामी जी ने आपको भेजा था। इसलिए मेरी ओर से 400 सौ रूपए देता हूँ। आप बाकी पैसे गाँव वालों से वसूल करके उसका निर्माण कर लीजिए। बुज्जय्या और सुब्बारेड्डी ने बताया कि हम स्वामी जी के कहने के अनुसार करेंगे। स्वामी जी के पैसे लेने से इनकार करने पर हम पैसों को वापस कर देंगे। इस शर्त पर सहमत होने पर हमें पैसा दीजिए। सहमत होकर 400 रूपए स्वामी जी के पास भेजे थे। स्वामी जी ने 4 सौ रुपए को देखकर बताया कि रामिरेड्डी जरूर आकर दीवार का निर्माण करेगा। आप काम शुरू कीजिए। स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार पैसा खर्च करके काम शुरू कर दिया गया। रामिरेड्डी चौथा दिन दीवार का निर्माण देखने आए थे। उन्होंने बताया कि बाकी रूपए भी तुरंत मैं भेजता हूँ। अधिक मजदूरों को रखकर जल्दी से काम पूरा करवाइए। ऐसा कहकर मंदिर के चारों ओर पूरी दीवार अपने आप निर्माण करके स्वामी जी के प्रति अपना प्रेम दिखाए थे। इस प्रकार दो व्यक्तियों को रात में भेजकर मंदिर की दीवार पूरा करवाने के पीछे स्वामी जी का लक्ष्य सबको बहुत समय के बाद में ही मालूम हुआ था।

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 06

भूत नियंत

निर्मल, निष्फल, नित्य, निर्विकल्प, निरंजन होने वाले इस परमात्मा ने अपने को अनेक बनाने के दृढसंकल्प से इस स्थूल जगत को अपनाया था। जिस प्रकार हमारा शरीर अपने मन के अधीन हो जाता है उसी प्रकार हमारा मन आत्मा का अधीन हो जाता है। सद्गुरू त्रिमूर्त्यात्मक परब्रह्मा का स्वरूप ही है। इसलिए पूरा विश्व उसीके अधीन में रहता है। **यह विषय सद्गुरू के द्वारा प्रकटित होने वाले दिव्यलीलाओं के द्वारा भक्त जनों को अवगत होता है। अनंत प्रकृति को अपने अधीन में रखने वाले सद्गुरू** 18
के सामर्थ्य का अनुभव करने वाले भक्त गुरू के प्रति विश्वास रखकर श्रद्धा और भक्ति से उनकी सेवा करके स्वयं अपना उद्धार कर सकते हैं।

सद्गुरू हम सबको अवगत करवाना चाहते हैं कि हमारे जीवन में घटनेवाली घटनाओं को नियंत्रण करने वाली एक दैवशक्ति हमारे बीच में है। उस शक्ति के द्वारा हमें जीवन में विवेक, वैराग्य की भावना पैदा कर सकते हैं। त्रिकरण शुद्धि के साथ धार्मिक जीवन का आचरण हम कर सकते है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया में हमें भगवान या सद्गुरू की लीलाओं का अनुभव करते है।

सद्गुरू हमसे पवित्र जीवन पद्धति चाहते हैं। यदि हम पवित्र जीवन को अपना ले तो वहीं गुरू के लिए गुरुदक्षिणा बन जाता है। हमारे ऐसा नहीं करने पर लीला की 19
जो शक्ति हमारे ऊपर पड़ती है वह सद्गुरू की कृपा हमारे साथ नहीं होने के कारण निष्फल हो जाती है।

एक बार स्वामी जी तलपूरु के शिवालय में आए थे। एक सेवक, शेट्टी जी ही उनके साथ थे। अचानक मेघावृत होकर बारिश शुरू हो गयी थी। आकाश में प्रलय जैसा वातावरण छा गया था। बिजली गिरने के साथ – साथ अंधकार छा गया था। स्वामी जी को अंदर ले जाने केलिए कोई नहीं था। बारिश के कारण स्वामी जी के भीगने की संभावना है। इस स्थिति में स्वामी जी ने उनके सामने चटाई लाकर रखने केलिए कहा। सेवक शेट्टी ने बताया कि बारिश आने पर मैं आपको अकेला अंदर नहीं ले जा सकता हूँ। तब चटाई पर बैठकर स्वामी जी आकाश में बादलों की ओर देखने लगे। आश्चर्य की बात कुछ ही क्षणों में वहाँ सब कुछ ठीक हो गया था। बिजली गिरना रूक गयी थी, अंधकार मिट गया था..., सबकुछ केवल स्वामी जी की शक्ति से संभव हो गया था।

तलुपूरू में नारायण दास नामक एक भक्त था। 1977 में एक दिन स्वामी जी उनके आश्रम को गए थे। स्वामी के सेवक बरिगल नागय्या जी ने स्वामी जी से पूछा कि कब बारिश होगी? स्वामी जी ने बताया कि इस साल केवल तीन बार बारिश होगी। डेढ महीने के बाद, दो महीने के बाद और तीन महीन पाँच दिनों के बाद बारिश होगी। यह बारिश भगवान के द्वारा हमें मिलती है। तब नागय्या ने स्वामी जी को निवेदन किया कि बारिश न होने पर सभी जानवर और बच्चे मर जाने की संभावना है।

स्वामी जी ने बताया कि ऐसी स्थिति में हम सबको मिलकर बारिश को ले आना है। स्वामी जी पीने के लिए नागय्या चावल का सूप लाया, पर भी स्वामी जी ने उसे पीने से इनकार कर दिया। उन्होंने बताया कि मेरा काम पूरा होने तक मैं पानी भी नहीं पीऊँगा। उसके बाद में सिद्धलय्या के पर्वत के पास तीन दिनों तक, करिचेडु में तीन दिनों तक निराहार उपवास दीक्षा में रह गए थे। गाडी रोकिए। गाडी रोकिए।... चिल्लाते हुए दिन-रात बिना सोए जाग कर बैठे रहे। बिना आसन भी बदले ऐसे ही आखरी दिन तक बैठे रहे थे। इसके पहले दिन – रात सोते रहते थे। स्वामी जी को देखने वाले सोचते थे कि स्वामी जी बूढे हो गए थे। दुबले - पतले हो गए थे। शारीरिक बलहीनता के कारण वे फिर स्वस्थ नहीं बन सके। स्वामी जी की वर्तमान स्थिति देखकर सबको स्वामी जी की कार्यदीक्षा और अपार शक्ति का परिचय मिला। छठे दिन स्वामी जी ने स्नान करवाने की विनती की। स्नान करवाकर बिठाने के बाद हँसते हुए उन्होंने बताया कि ग्रिध्द जमीन के टुकडा हाथ में लेकर भाग गया है। इसका अर्थ समझने के पहले ही बडी बारिश शुरू होकर सभी नाले, तालाब जलमय हो गए थे।

ऋषि लोग तपस्या, यज्ञ आदि बारिश ले आने केलिए करते थे। यह बात स्वामी जी की बात सुनने के बाद में सच साबित होती है। इसीलिए ऐसे महान लोगों को भूसुरुलु कहकर पुकारते थे।

हमारे मन में प्रश्न उठता है कि यदि स्वामी जी इतने शक्तिशाली हैं तो वर्षा ले आने में एक हफ्ता क्यों लगा। लोग मानते हैं कि गाँव के स्थानीय लोगों के सम्मिलित पाप कर्मो का फल ही अनावृष्टि के रूप में प्रकट होता है। उन सभी लोगों के पाप कर्मों को अपने तपःशक्ति से मिटाने के लिए स्वामी जी को कुछ समय लगेगा।

शास्त्र मानते हैं कि प्रजा के निःस्वार्थ भाव, श्रद्धा और प्रेम से भगवान की पूजा नहीं करने से लोगों के बीच भक्ति भावना, धर्म आचरण जगाने के लिए आवश्यक कार्य नहीं करने से अनावृष्टि जैसे अरिष्ट पैदा होते हैं।

दो बैल वाली गाडी में श्री स्वामी जी को मुदिगेडु से सिद्धलय्य कोंडा को सेवक ले आ रहे थे। मध्य मार्ग में पूरा आकाश मेघावृत होकर बारिश शुरू हो गई थी। सेवकों ने बताया कि स्वामी बडी बारिश आनेवाली है हम और हमारा सामान

भीग जाएगा। स्वामी जी आकाश की ओर अपने हाथ रखकर आकाश के मेघों से विनती की कुछ देर तक रूक जाओ। आश्चर्य की बात बारिश रूक गई। स्वामी जी सिद्धलय्य कोंडा पहुँच गए। भारी वर्षा शुरू हो गई थी। ऐसी अनेक लीलाएँ स्वामी जी के बारे में लोगों से हम जान और सुन सकते हैं। स्वामी जी की लीलाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखकर उनकी सेवा करने वाले अनेक सेवक और भक्त गण धन्य हो गए थे।

तलपूरू में डी मैका नामका एक मैका का खान था। जब स्वामी जी वहाँ ठहरे थे उस समय मेघ आकाश में छा गए थे। बहुत बारिश का आभास आ रहा था। सेवकों ने स्वामी जी को बताया स्वामी जी बारिश आने वाली है। हमारी सभी चीजें भीग जाएगी। हमारे लिए घर भी यहाँ नहीं है। तब स्वामी जी ने तंबूरा का वादन करते हुए पूछा,.. हे मेघराज जी! हमारा यहाँ रहना आप नहीं चाहते है क्या? आपको मालूम है हम यहाँ ठहरे हुए हैं। बारिश आने से हमें बहुत नुकसान हो जाएगा। लगता है कि यह सब जानबूझ कर रहे हो। आश्चर्य की बात है कि श्री स्वामी जी की विनती के बाद में केवल पाँच मिनिट में ही आकाश के सभी बाद में ल तितर - बितर हो गए थे। बीच में सूरज स्पष्ट रूप से दिखने लगा। उसी प्रकार एक बार शिरिडी में तूफान मच गया था। वहाँ के सभी सेवक अपने घर वापस जाने के लिए परेशान हो रहे थे। साई अपने मसजिद से बाहर आकर विनती की कि हे अल्ला! मेरी सभी संतानों को बिना कोई परेशानी के घर वापस पहुँचना है। बारिश रोक लो। साई की विनती से बारिश रुक गई थी। सभी सेवक अपने घर सुरक्षित पहुँच गए थे।

एक बार मद्रास से आए हुए भक्त ने स्वामी जी को बताया कि अपने प्रांत में दो वर्षों से बारिश नहीं हो रही है। स्वामी जी ने कागज की चिट्ठी पर प्रार्थना लिखकर अपने जाँघ के नीचे रख दी। पाँच दिन तक बिना पानी पिए, खाना खाए और बिना सोए बैठे रहे। पाँचवें दिन बहुत बडी बारिश आई। गाँव के सभी तालाब पानी से भर गए। तब ही स्वामी जी ने आहार स्वीकार लिया।

कलिचेडु सिद्धलय्या कोंड के पास स्वामी जी पधारे हुए थे। कट्टमूडि गाँव के आसपास के सभी खेत पानी नहीं मिलने से सूख रहे थे। किसानों ने स्वामी जी के पास आकर सहायता के लिए विनती की। स्वामी जी ने एक कागज की चिट्ठी पर लिखकर दिया कि मैं भगवान को अर्जी भेजता हूँ। दो दिन में ही बडी बारिश होगी। स्वामी जी के कहने के अनुसार सुबह ही बडी बारिश आ गई। तालाब पानी से भर गए। तीसरे दिन किसानों ने खेत में फसल उगाने का काम शुरू कर दिया। गाँव के सभी किसान स्वामी जी की सेवाओं की भूरिभूरि प्रशंसा करने लगे।

तलपूरु में एक दिन मध्यान्ह के समय ताटि बोलुगु नामक विषैला साँप स्वामी जी के जाँघ के नीचे पर आकर बैठा हुआ था। स्वामी जी के सेवकों के बताने पर

उन्होंने कहा कि वह साँप कुछ भी नहीं करेगा। अपने आप चला जाएगा। बाद में वह साँप अपने आप वहाँ से चला गया था।

वे गरमी के दिन थे। 1974 वर्ष की बात थी। एक दिन गोलगामूडि के आश्रम के ऊपरी छत पर चारों ओर अग्नि फैल रही थी। बहुत धुँआ फैल रहा था। दक्षिण से हवा बह रही थी। आग बुझाने के लिए पानी भी नहीं था। स्वामी जी के शिष्य रमनय्या जी ने स्वामी जी का आशीर्वाद स्वीकार करके छत के ऊपर सीढ़ी की सहायता से पहुँचकर आग पर एक घडा भर पानी डाला। आश्चर्य की बात सेवक अपने बाल्टी से पानी लेकर आग के ऊपर डालने लगे। बहुत कम समय में ही स्थिति नियंत्रण में आ गई थी।

एक दिन श्री स्वामी जी कलिचेडु में नरसारेड्डी जी के घर आए थे। नरसारेड्डी की पत्नी ईश्वरम्मा जहाँ खाना पका रही थी, वहाँ स्वामी जी ने जाकर उस जगह पर एक शेड डालने की माँग की। ईश्वरम्मा ने बताया कि मेरी आर्थिक स्थिति आपको मालूम है। शेड कैसा बना सकती हूँ। तेरी देखबाल वे करेंगे। कहकर स्वामी जी चले गए थे। पाँच दिन के बाद ईश्वरम्मा रसोई में वडा बना रही थी। उस बरतन के बीच छिद्र होने से तेल आग पर गिरने लगा। तब उसने बरतन के तेल को और एक बरतन में डाल दिया। तेल आग पर गिरने पर भी आग की ज्वाला ऊपर नहीं चढ़ी थी। आग की ज्वाला को ऊपर आ जाना था। इसलिए ही स्वामी जी ने शेड बनाने की बात कहीं थी। स्वामी जी की कृपा से कोई दुर्घटना नहीं घटी थी।

बोइंपल्ली गाँव के पास कुछ भक्त गण बातचीत कर रहे थे कि ब्राह्मण जी की पत्नी गोविंदम्मा पानी से दीप जला रही है। उनकी बात सुनकर स्वामी जी भी उनको लोटे भर पानी देकर बोले थे कि आप भी इस पानी से दीप जलाइए। आश्चर्य की बात उस पानी से उनके दीप भी जलने लगे। इस प्रकार के स्वामी जी की अनेक लीलाएँ लोगों को मालूम होने पर भी स्वामी जी उनको गुप्त रखने का आदेश देते थे।

पेनवर्ती के निवासी पोलु मस्तानय्या जी इस प्रकार बता रहे थे।

एक बार पेनवर्ती से तलुपूरु को नारायणरेड्डी जी के कार में स्वामी जी जा रहे थे। स्वामी जी अचानक बोले कि मेरी गरदन काटनी पडेगी। कुछ देर बाद स्वामी जी अचानक जोर से चिल्लाने पर कार अचानक रूक गयी थी। एक बकरी दौडती हुई कार के सामने आ गयी थी। यदि कार नहीं रूकी तो बकरी कार के नीचे गिरकर मर गयी होती। उसका गरदन कट गया होती। इस घटना से मुझे स्वामी जी के ऊपर अपार श्रद्धा और भक्ति जाग उठी। मैं उनका परमभक्त बन गया था।

एक दिन रात रोशरेड्डी ने वहाँ के डेरे में छिपे हुए कागज निकालने की कोशिश की। उनके हाथ की उँगली पर साँप ने डस लिया। पता लगने से श्री स्वामी जी ने उसके हाथ की उँगली को अपने जाँघ पर पाँच मिनिट तक रखा। उसकी पीडा बहुत

कम हो गई थी। स्वामी जी ने कहा तुम्हारा शरीर अब संजीवनी बन गया है। चलो। उसके बाद रोशरेड्डी के शरीर पर कोई विष का प्रभाव नहीं पडा। वे स्वस्थ रहने लगे।

एक समय यार्लपाडू के गाँव में बिना कोई कारण के लोग मरने लगे। कारण नहीं मालूम होने से पूरे गाँव के लोग डरने लगे। सभी सोचने लगे कि कोई दुष्टशक्ती गाँव में प्रवेश करके ऐसा नुकसान पहुँचा रही है। सुबह होने तक सभी गाँव वाले घर में ही दरवाजा बंदकर रहने लगे। कुछ गाँव वाले स्वामी जी से प्रार्थना करके उनको अपने गाँव ले गए। स्वामी जी गाँव रात में पहुँचे थे। किसीने भी उनको अपने घर के अंदर आने नहीं दिया। अंत में एक बूढ़ी भय से अपने घर का दरवाजा खोली थी। स्वामी जी को देखकर गाँव के सभी लोगों को बुलाई थी। सभी मिलकर स्वामी जी का स्वागत किए थे।

स्वामी जी ने उस गाँव के एक क्षेत्र में अग्नि कुंड बनावाया था। उसी गाँव में कुछ दिन ठहरे थे। आश्चर्य की बात थी कि स्वामी जी के आगमन के बाद में एक व्यक्ति की भी मृत्यु नहीं हुई थी।

मोपूर दशय्या, कोमरगिरि रमनय्या दोनों ने मिलकर जम्मी पेड काटे थे। उसे गाडी पर लादकर ले आना था। कटे पेड के एक भाग गाडी को रस्सी से बाँधकर दूसरे तरफ की पेड को ऊपर उठाने के लिए बहुत कोशिश करने पर भी नहीं उठा सके। यह बात स्वामी जी को बताया गया। तब स्वामी जी ने बताया जो लोग पुलाव खाते हैं उनको बुलाओ। वे आसान से उठा सकते हैं। स्वामी जी चले जाने के बाद कोशिश करने पर बहुत आसानी से उसे उठा कर गाडी में लाद सके।

एक दिन स्वामी जी की सेविका वक्केम्मा श्री स्वामी जी की सन्निधि में थी। स्वामी जी ने पानी के प्रवाह में आई एक झाडियों का जाल लाकर पेन्ना नदी के पानी के ऊपर डाल दिया। उस झाडी को अपने पास के कपिल मोकू से आग लगाई। बाद में उस आग को अपने हाथ के मटके से नदी के पानी को लेकर बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन आग की ज्वालाएँ मिटने के अलावा और अधिक जोर से ऊपर चड़ने लगी। इस तरह की लीला श्री अक्कलकोटा के स्वामी जी भी दिखाते थे।

कुल्लूरु राजुपालेम के एरुकुल राजू के कुएँ में गर्मियों में पानी नहीं रहता था। बारिश के समय पानी होने पर भी दुर्गध के कारण पानी निरुपयोगी रहता था। एक बार स्वामी जी उस कुएँ के पानी में नहा कर आए थे। उसके बाद में पानी स्वच्छ और साफ हो गया था। सभी लोगों के लिए बहुत काम आने लगा।

एक दिन मंगुपल्ले में हैजा फैल गया था। हैजा के कारण अनेक लोग मरने लगे। गाँव के पास की नदी में अधिक पानी होने के कारण कोई स्वामी जी के पास नहीं आ सका। स्वामी जी ने एक मुराडा जलाकर चलमनायुडू को हाथ में रखकर बताया कि अपनी दृष्टि मुराडे पर ही रखकर आगे बढ़ो। इधर – उधर नहीं देखना है।

चलमनायुडू पहले, बाद में स्वामी जी चलते हुए गाँव में पहुँचे थे। नदी में पानी चलमनायुडू के घुटनों तक ही था। **श्री स्वामी जी गाँव के समीप एक लडकी को एक कागज पर कुछ लिखकर बँधवाकर वापस आ गए थे। उसके बाद उस गाँव में एक** 20 **व्यक्ति भी नहीं मरा था। स्वामी जी जिनकी रक्षा के लिए काम करते है उनकी रक्षा अवश्य होगी। स्वामी जी के ऊपर विश्वास रखने से सब कुछ संभव हो सकता है।**

वेंकय्या के नाम पर मुट्ठी भर अनाज देने वाले को, या लाने वाले को स्वामी जी का अनुग्रह होगा। स्वामी जी भक्त का सब कुछ देख लेते हैं। इसी विषय के बारे 21 **में अपना अनुभव श्री शेषय्या नायुडू इस प्रकार बताते है।**

श्री स्वामी जी जब अकेले जंगलों में घूमते थे, उन दिनों में बहुत बार चेर्लोपल्ली गाँव के एस. शेषय्या जी के घर आया करते थे। रात के समय आने पर भी उनकी माँ स्वामी जी को भर पेट खाना पकाकर खिलाती थीं।

1976 में चेर्लोपल्ली शेषय्य नायुडू को स्वामी जी ने एक कागज की चिट्ठी पर लिखकर दिया कि आने वाले चार महीने छे दिनों में तेरे लिए एक दुर्घटना घटेगी। तिरुवल्लुवार वीरराघवस्वामी आपकी सहायता करेंगे। बाद नायुडू ने अपने खेतों में एक गड्ढे में पानी भर कर सिंचाई करना शुरू की थी। खेत जोतने के लिए बैलों को ले गए थे। एक बैल पानी से भरे एक गड्ढे में गिर कर वहीं रह गया। बहुत कोशिश करने पर भी ऊपर उठ नही पा रहा था। शेषय्या नायुडू ने स्वयं बैल को बचाने के लिए पानी के गड्ढे में अपने पैर रखे पर उन्हें बिजली का शाँक लग गई थी। तब उनको मालूम हुआ था कि बैल को बिजली का शाँक लग गई थी। तुरंत बिजली को रोकवाए थे। इतने में एक बैल बिजली के शाँक से मर चुका था। बिजली के षाक से दूसरे बैल को कुछ नहीं हुआ था और शेषय्या नायुडू को भी कुछ नहीं हुआ था। बाद में स्वामी जी की कागज की चिट्ठी पर लिखी गयी बात याद आई तो देखने पर एक साल, चार महीने छे दिनों में उन्हें दुर्घटना होने वाली थी। स्वामी जी की कृपा से ही वे उस दुर्घटना से बच गए थे।

22 **अणिमादि अष्ठसिद्धि भी श्री स्वामी जी के लिए दाश्य बन जाती थी।** पालकोंड सुब्बारेड्डी जी ने एक दिन चाकलिगुंटा के पास जम्मी के पेड को काट दिया। स्वामी जी उन दिनों पैदल जाते थे। स्वामी जी ने बताया कि हमें जल्दी से यहाँ से जाना, इस कटे पेड को सिर पर रखकर चलिए। लकडी का वजन बहुत अधिक था। स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार बहुत वजन होने पर भी सुब्बारेड्डी ने उसे अपने सिर पर रख दिया। उसके भार से वह बहुत परेशान हो रहे थे। चार फुट तक ही चल सके। इतने में स्वामी जी ने बताया कि लकडी का वजन बहुत अधिक है न उसे वहीं नीचे डाल दो। तब स्वामी जी ने अपने हाथ के एक लाठी से उस कटे पेड पर इधर से उधर तक घुमाकर सुब्बारेड्डी से बोले अब उठाकर देखो। आश्चर्य की बात है कि पेड की लकडी

का वजन बहुत कम हो गया था। उसे आसानी से सुब्बारेड्डी अपने सिर पर रखकर आगे ले जा सके। तभी सुब्बारेड्डी को स्वामी जी की लीला मालूम हुई कि यदि स्वामी जी चाहें, तो सब कुछ कर सकते हैं।

नरसापुरम का एक किसान बहुत गहरा खोदने पर भी कुएँ में पानी नहीं पा सका। तब स्वामी जी से प्रार्थना की। स्वामी जी वहाँ नारियल के फल को तोडकर उसके पानी से उस स्थान में पूजा करके वापस आ गए। सुबह देखने पर पूरा कुऑ पानी से भरा हुआ था। यह सब देखकर गाँव वाले आश्चर्य में पड गए थे।

नागुलवेल्लटूरु के निवासी नूतेटि श्रीरामुलु नायुडू अपने खेत में कुऑ खुदवा रहा था। 18 फुट खोदने के बाद एक बडा पत्थर बीच में आने से आगे नहीं खोद सके। उनको मालूम था कि उस प्रांत में 30 फुट से अधिक खोदने से ही पानी मिलेगा। स्वामी के पास जाने पर उन्होंने बताया कि चार दिन मटके में से कुछ भात लेकर कुएँ में डालकर चार दिनों के बाद देखिए। आश्चर्य की बात 18 फुट के बाद में जो पत्थर अटक गया था वह भी खोदते समय अपने आप हट गया था। खुदवाई 30 फुट तक कर सके थे। पानी से कुऑ भर गया था।

गोपारम के पाल कोंडय्या जी के एक बार कुऑ खोदवाने के लिए स्वामी जी के पास प्रस्तावना रखने पर स्वामी जी ने कहा कि कागज पर समुद्र लिख दो। कुएँ में पाँच हार्स पवर इंजन लगाकर पानी निकालने का काम करने पर भी पानी लगातार आता ही रहा था। समुद्र के समान अपार जलराशी उस कुएँ से निकलने से सबको आश्चर्य में डाल दिया था।

मल्लिका वेंकय्या स्वामी जी के अग्नि कुंड के लिए लकडी देते थे। एक दिन सिद्दलय्या पर्वत के पास मुनि कन्याओं ने वेकय्या को अपने साथ आने के लिए बहुत बार बुलाया था। उन्होंने बताया कि वे उनके लिए एक श्रेष्ठ गुरू को दिखाएगी। लेकिन वेंकय्या ने अपने स्वामी जी को छोडकर उनके साथ जाने केलिए मना कर दिए थे। वे वहाँ से चली गई थी। बार - बार आकर उनको वे परेशान करने लगी। स्वामी जी के सन्निधि में बैठने के समय भी मुनि कन्याएँ आकर उनको अपने साथ आने के लिए बुला रही थीं। स्वामी जी ने वेकय्या को अपने पास बुलाकर उनकी छाती पर एक थप्पड मार कर उन मुनि कन्याओं को वहाँ से भगा दिया। बाद में कभी भी वे उनके पास नहीं आयी थीं।

एक बार श्री स्वामी जी बोले कि वेंकय्या यदि कोई पिशाच, राक्षस. कोई अदृश्य शक्ति आकर तेरी आज्ञा का पालन नहीं उनसे पूछो कि तुम मेरे कहने के अनुसार व्यावहार करोगे या गुरुदेव जी के अग्नि कुंड को पकडोगे। तुम्हें किसी भी पिशाच से डरने की जरूरत नहीं है। मेरी आज्ञा के अनुसार काम करने से सभी दुष्ट शक्तियाँ दूर भाग जाएँगी।

एक बार कंटेपल्लि में पशुओं की बीमारी आने से बहुत बैल अस्वस्थ हो गए थे। श्री स्वामी जी के अग्निकुंड के लिए लकडी भेजने वाले वेंकय्या को कोई बैल गाडी नहीं दे पाया था। वेंकय्या ने गुरू की प्रार्थना करके पोलेरम्मा देवता से विनती की। तुरंत पोलेरम्मा वेकय्या के सामने प्रत्यक्ष हो गयी थी। वह उसके सामने अपने सिर के केशों को बिखेरी हुई खडी हो गयी थी। उनके बीच असंख्य आँखों का प्रदर्शन करके दिखाई। उसने सोचा कि वेंकय्या उसके उग्र रूप को देखकर भयभीत हो जाएगा। लेकिन वेंकय्या बहुत दृढता से उसके सामने खडा हो गया था। पोलेरम्मा से विनती की तुम यह गाँव को छोड़कर चले जाओ। नहीं जाने पर अग्नि कुंड के स्तंभ को तुझे पकडना पडेगा। पोलेरम्मा उसकी बात सुनकर तीन दिनों के बाद में गाँव छोडकर जाने के लिए सहमत हो गयी थी। और प्रमाण भी किया कि भूदेवी, आकाश, सूर्य और चंद्र ही इसके लिए साक्षी हैं। तीन दिनों के बाद में सभी बैल और अन्य पशु स्वस्थ हो गए थे। स्वामी जी के अग्नि कुंड के लिए आवश्यक लकडी भेजने केलिए बैल गाडियाँ तैयार हो गई थीं।

इस श्रृष्टि में सद्गुरू के लिए सब कुछ साध्य हैं। यह सत्य इस लीला से हमें अवगत होता है। 23

स्वामी जी कोडितीर्थ में बसे हुए थे। एक भक्त ने स्वामी जी से पूछा कि सिद्दलय्या के पहाड पर मंदिर का एक पत्थर टूटने पर वहाँ के साधू ने उस टूटे हुए पत्थर को अपनी महिमा से फिर मिला दिया। क्या यह संभव है? तब स्वामी जी ने बताया कि हो सकता है। मैंने भी एक बार देवालय के शिवलिंग के सामने आग जलाकर उसे दरवाजा बंद करके ऊपर से देखा था। आग जलने से जमीन पर रखे सभी पत्थर टूट कर ऊपर चले गए थे। मैं सोच रहा था कि सुबह गाँव के लोग उस दृश्य को देखकर क्या सोचेंगे। **फिर सभी टुकडों ने अपने आप नीचे आकर अपना यथा स्थान ग्रहण करके सबको आश्चर्य में डाल दिया। इसका मतलब है कि सही संकल्प होने पर यह संभव हो सकता है।** 24

उन दिनों में स्वामी जी पैदल जाते थे। आश्रम में एक बडा पत्थर पडा हुआ था जिसे दो व्यक्ति को मिलकर उठाना पडता था। एक दिन स्वामी जी अकेले उस पत्थर को अपने सिर पर उठाकर पश्चिम की ओर चले गए थे। तीन घंटे के बाद वापस आए थे। कहाँ है पत्थर पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि पत्थर यहाँ नहीं रहना चाहिए था।

एक बार अपना घर बनाने केलिए एक भक्त ने नीम के पेड की लकडी लाकर रखी थी। उस रात स्वामी जी उतनी बडी लकडी को किस प्रकार ले आए थे यह बात किसी को मालूम नहीं थी। श्री स्वामी जी ने उस लकडी को अग्नि कुंड में डाल दिया। वह लकडी सुबह अग्नि कुंड में जल रही थी। जलती लकडी को देखकर भक्त रोने

लगा। स्वामी जी ने उस भक्त के हाथ में एक कुल्हाडी देकर उस जलती लकडी को दो भागों में काटने के लिए कहा था। काटने से उस लकडी के बीच में से एक साँप निकला। बाद में पता चला कि शास्त्र के अनुसार ऐसे लकडी घर बनाने के लिए इस्तेमाल करना श्रेयस्कर नहीं होगा। इसिलए ही स्वामी जी ने उसे अग्नि कुंड में डाल दिया था।

एक बार सत्तेम्मा को स्वप्न में स्वामी जी अपने मुँह से अग्नि ज्वालाएँ निकालते हुए दिखाई दिए थे। स्वामी जी के रास्ते से भैंस के गोबर को निकालकर साफ कर रही थी। स्वामी जी ने बताया कि मेरे नाम पर जो लोग मुट्टी भर खाना दूसरों को दे रहे थे उनके लिए कुछ न कुछ करके मुझे आना था।

मल्लिका वेंकय्या स्वामी के पहली आराधना के लिए लकडी भेज रहा था। सुबह चार बजे बैल किसी साँप के ऊपर पैर रख दिए थे या नहीं, मालूम नही था। लेकिन एक साँप ने अपनी पूँछ पर खडे होकर बैल गाडी को रोक दिया था। वेकय्या ने गाडी रोककर साँप को मारने के लिए अपनी कुल्हाडी हाथ में ले लिया था। साँप अपने पूँछ पर खडे होकर बहुत नाराजगी से डसने के लिए तैयार था। उस साँप ने बैलों को या वेंकय्या को कुछ नहीं किया था। वेंकय्या स्वामी जी के द्वारा सिखाया गया मंत्र जपने लगा। कुछ ही समय में साँप रास्ते से दक्षिण की ओर चला गया था।

पेनवर्ति के वड्डिपालेम् का निवासी बता रहा था। नेल्लुरू पोट्टेपालेम के समीप पेन्ना नदी के किनारे किसान खरबूजा का फसल उगा रहे थे। श्री स्वामी जी वहाँ आकर साधारण अग्नि कुंड लगाकर बसने लगे। किसानों ने सोचा कि यह बूढा खेत में है। खेत की देखभाल करने के लिए और आदमी को नियुक्त करने की जरूरत नहीं है। बहुत बारिश होने से पानी बहने लगा। किसानों ने बताया कि बारिश अधिक होने से बहुत पानी आएगा। गाँव में पक्का घर में रहने केलिए आकर ठहरने केलिए बहुत बार विनती करने पर भी स्वामी जी नहीं माने थे। किसान ऊब कर चले गए थे। अधिक बारिश से बहुत पानी खेतों से बहने लगा। तीन दिन के बाद आकर किसानों ने देखा कि स्वामी जी बिना कुछ हिचके वहीं बैठे थे। उनके चारों ओर दस मीटर तक सूखा रेत दिखाई दिया था। नदी के चारों ओर पेडों पर पानी 15 से 20 फुट ऊपर बहने के चिह्न दिखाई दिए थे। इस प्रकार सूखा रेत स्वामी जी के चारों ओर देखकर किसानों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा था। उन दिनों में मोशेस भी नदी के लिए मार्ग दिया हुआ था यह चित्र भी ऐसा ही था।

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 07

आपद्बांधव

अज्ञान रूपी अंधकार में अहंकार रूपी मगरमच्छ से हम सदा लडते रहते हैं। हम अपने अज्ञान के द्वारा यह निर्णय पर आ जाते हैं कि अपने कर्म को पार करना हमारे वश में नहीं है। ब्रहम् के द्वारा जो भाग्य लिखा गया है उसे हटाना भी हमारे हाथ में नहीं है। यह अज्ञान हमारे जितने भी महान् होने पर भी हमें अनुभव जुटाने नहीं देता है। पूर्व पुण्य के कारण सद्गुरु की कृपा पानेवाले जितने भी दुःष्कर्म करने पर भी, जितना भी बुरा भाग्य होने पर भी, बुरे प्रभाव से बाहर आकर अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। श्री स्वामी जी, शिर्डी साई ही नहीं, अनेक महान व्यक्तियों के इतिहास को देखने पर यह सत्य साबित होता है। सद्गुरू, कृपा प्रार्थना करते समय ही नहीं, अन्य समयों में भी हमारे साथ रहकर हमारी रक्षा करती हैं। यह सत्य साबित करने के लिए हमारे पास अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं।

कोर्रकूटि बुज्जय्य जी की बहिन पद्मम्मा का विवाह निश्चय हुआ था। स्वामी जी ने आज्ञा दी कि कंचि वरदराज स्वामी के सन्निधि में शादी करना चाहिए। उनकी आज्ञा के अनुसार सभी इंतजाम किए गए थे। उन्होंने स्वामी जी से नूतन वधु – वर को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। स्वामी जी अपने सेवकों के साथ आकर विवाह के लिए आवश्यक मंगल सूत्र और तलंब्रालु के लिए चावल देकर उनका आशीर्वाद दिया था। वे वहीं रहकर उनकी शादी को संभाले थे। स्वामी जी ने अपने पैसे से कपूर मंगाकर उसे जलाकर अपने बगले में रखा था। इसके पहले या बाद में भी किसी भी विवाह के लिए स्वामी जी स्वयं नहीं गए थे। स्वामी जी ने पद्मम्मा को बताया था कि कितने भी कष्ट आने पर भी आँखों से आँसु बहाना नहीं चाहिए। श्री स्वामी जी के आशीर्वाद से बाद में कुछ कष्ट आने पर भी वे दोनों बहुत खुशी से अपना जीवन बिताने लगे।

एक बार श्री स्वामी जी तलुपुलूरु से गोलगामूडि आते समय नेल्लूरू मद्रास बस स्टेशन के पास आकर बोले थे कि हमें अस्पताल जाना है। उन्होंने जूबिली अस्पताल की रास्ता दिखाते हुए वहाँ ले जाने के लिए इशारा किया। कभी भी अस्पताल की ओर न जाने वाले स्वामीजी क्यों अस्पताल को ले जाने को पूछ रहे हैं किसी को मालूम नहीं हुआ था। अस्पताल जाने के बाद वहाँ उनका भक्त बुज्जय्या और अस्वस्थ पडी उनकी बहिन नंबूरी पद्मम्मा स्वामी जी को देखकर बहुत खुश हो गए थे। उनके दर्शन करके उनका आशीर्वाद भी पाए थे। स्वामी जी ने कुछ समय ठहरने के बाद में

बताया कि यहाँ हमारा काम हो गया है चलिए। कुछ दिनों के बाद पद्मम्मा स्वस्थ होकर अपना घर वापस पहुँच गई थी।

कम्मंपाडू गाँव की ललितम्मा जी को शादी होने के बाद में चार साल तक कोई संतान नहीं हुई थी। शारीरिक अश्वस्थता से उसका परिवार बहुत तनाव भोग रहा था। डॉक्टरों का इलाज या दवाइयों का कोई लाभ नहीं हुआ था। जब स्वामी जी के दर्शन के लिए वे आए थे उनके कहे बिना ही स्वामी जी ने बताया कि तुझे अस्वस्थता है यह नहीं ठीक हो रही है। गूडूरु करणम् मर गया था, उन्हें इसके गोद में डाला था। विषय एक कागज की चिट्ठी पर लिखकर एक धागा देकर भेज दिए थे। बाद कोई दवा लिए बिना गर्भधारण करके एक साल के अंदर एक बेटे को जन्म दी थी। आजकल भी ललितम्मा पचास मील दूर से आकर स्वामी जी के दर्शन करके चली जाती है।

एक दिन रोशरेड्डी जी को एक कीडा ने काट लिया। पाँव लाल रंग में बदल गया। चलने में बहुत दिक्कत हो रहा था। नदी में स्नान करके श्री स्वामी जी से प्रार्थना की कि स्वामी जी आप ही मेरे रक्षक है। मेरी पीडा को दूर कीजिए। स्नान करके वहाँ के पानी से पैर को साफ करके स्वामी जी की सन्निधि पहुँचे। आश्चर्य की बात उनके पाँव का पूरा दर्द गायब हो गया था। उस रात स्वामी जी ने रोशरेड्डी जी को बताया कि तुम स्नान करके देखो मेरी महिमा तुझे मालूम होगी। आश्चर्य की बात स्वामी जी के कहने के अनुसार हुआ था। श्री स्वामी जी सर्वांतर्यामी हैं। हर समय भक्तों की विनतियों को सुनते हैं और उनकी सेवा करते रहते हैं। स्नान करके स्वामी जी के कहने के अनुसार वहाँ के रेत से पाँव को साफ करने से पूरा दर्द गायब हो गया था। यह अवश्य स्वामी जी की महिमा ही है।

बुज्जय्या अनेक अदालत के मुकदमों के मामलों से ऊब गया था। वह एक बार स्वामी जी के पास आकर दूर खडा हुआ था। स्वामी जी ने बाताया तुझे कुछ मन में रखने की जरूरत नहीं है, मैं अपनी ओर से सब कुछ देखता हूँ। तुम निश्चिंत चले जाओ। कुछ ही दिनों में बुज्जय्या के सभी अदालत संबंधी मामलें ठीक हो गए थे।

गोलगामूडि के सुब्बाराव इस प्रकार बता रहे थे।

सरकार के नौकरी होने के कारण एक व्यक्ति पर बहुत आरोपण आ गए थे। इससे जिला अधिकारी कलक्टर ने उसे निलम्बित करने का आदेश दिया। उस समय वह व्यक्ति स्वामी जी के पास आशीर्वाद के लिए आया था। उसे देखकर स्वामी जी ने बताया कि उसके साथ बहुत बडा पाप हैं। यदि वह यहाँ रहे तो हमारे लिए एक पैसा का फायदा भी नहीं होता है। तुरंत उसे चले जाने केलिए कह दीजिए। लेकिन वह वहीं रह गया था। स्वामी जी बहुत बार अनुरोध करने पर भी बिना गए वहीं रह कर स्वामी जी से विनती की कि आपकी कृपा मुझे चाहिए। तब स्वामी ने बताया कि

तुम अपना पता लिखकर चले जाओ। मैं कागज पर लिखकर भेजता हूँ। बाद में उस व्यक्ति का निलम्बिन रूक गया। लेकिन और एक जगह स्तानांतरण किया गया था।

एक बार श्री स्वामी जी रोशरेड्डी से बोले थे कि वेकय्या की बात बहुत शक्तिशाली होती है। स्वामी जी के अमृतवाक् के प्रभाव और महत्व की जानकारी का केवल जिन लोगों को अनुभव होता है वे ही जान सकते हैं। 26

स्वामी जी के सेवकों को एक - एक को अपना - अपना काम सौंपा जाता था। हर दिन वे सौंपे गए काम भक्ति और श्रद्धा से करते थे। अग्नि कुंड के लिए लकडी काटकर ले आने का काम वै. रमनय्या करता था। एक दिन सुबह उठते ही स्वामी जी ने रमनय्या को बुलाकर कहा कि यहाँ आज पानी और आग का प्रबंद तुझे करना है। उसने सोचा कि आज स्वामी जी अपना काम बदल दिए थे क्या। स्वामी जी की बात को ध्यान में न लेकर उस दिन लकडी काटने के लिए गया था। वहाँ पेड पर चढ़कर लकडी काटते समय उसे लकडी के साथ गिरने से लकडी उसके शरीर में घुस गयी थी। हाथ की हड्डी भी टूट गई थी। वहीं पत्थर भी था जिस पर गिरने से वह मर गया होता था। भाग्यवश एसा नहीं हुआ था। स्वामी जी ने रमनय्या को कागज की चिट्ठी पर अस्पताल को बंद करो लिखकर दिए थे।

बहुत दिनों से स्वामी जी की सेवा में रहने वाले बरिगेल नागय्या को दाएँ भुज की हड्डी में पीडा होने से बहुत तडप रहा था। वहाँ के लोगों ने डॉक्टर के पास जाने की सलाह दी। लेकिन नागय्या ने बताया कि मेरे लिए स्वामी जी ही सब कुछ हैं। स्वामी जी ही मेरी बाधा दूर कर सकते है। लेकिन बहुत समय तक बाधा दूर नहीं हुई थी। तब उसने स्वामी जी से विनती की है कि स्वामी जी कलियुग में भूलोक को छोड़कर क्या वैकुंठ चले गए हो क्या। क्या मुझे भूल गए हो। स्वामी जी से की गयी प्रार्थना से उसकी बाधा कुछ ही क्षणों में गायब हो गयी। स्वामी जी स्वप्न में आकर बताए थे कि मैं तेरे साथ ही हूँ, तुझे छोडकर कहीं भी नहीं जाऊँगा।

श्री स्वामी जी की सेवा में रहने वाला जयरामराजु अपने अनुभव को नागुलवेल्लटूरु के वेलूरु सुब्रह्मण्यम नायुडू को समाने इस प्रकार बताए थे। मैं एक दिन अपने बैलों को चराने केलिए जंगल में ले जा रहा था। उनको जंगल में छोडकर वापस आने केलिए स्वामी जी आदेश दिये थे। मैंने बताया कि बैलों को चरानेवाला कोई नहीं है। स्वामी जी ने बताया कोई चिंता नहीं वापस आ जाओ। स्वामी जी पर भरोसा रखकर मैं वापस आ गया था। स्वामी जी के पास बैठा हुआ था। कुछ ही समय में स्वामी जी अपने हाथ में एक बडी लकडी को लेकर थेय थेय आवाज देते हुए दस मीटर तक दौडकर वापस आकर बैठ गए थे। मुझे आश्चर्य हुआ और पूछा स्वामी जी वहाँ कोई नहीं है किसे आप बुला रहे है। स्वामी जी ने बताया कि आपके बैलों को ही मैं दौडा रहा हूँ। बाद में सुबह मेरे बैलों के पास रहने वाले व्यक्ति ने

बताया कि कल आपके बैलों को खाने के लिए एक तेंदुआ आ गया था किसी ने लकडी से उस तेंदुआ को भगा दिया था। बैलों की रक्षा की। तब ही स्वामी जी की बातें मुझे याद आई थी। इस प्रकार के अनेक अनुभव जयरामराजु के पास है। इसलिए ही वे स्वामी जी के अनन्य भक्त बन गए थे और अपने जीवन को स्वामी जी को अर्पत कर दिया था।

एक बार स्वामी जी अपने बाएँ हाथ को ऊपर दिखाते हुए दाएँ हाथ की अंगुठी को उस हाथ पर रखकर बता रहे थे कि एक लकडी का टुकडा उँगली में घुस गया है। असल में कोई लकडी का टुकडा नहीं घुस गया था। स्वामी जी क्यों उस प्रकार झूठ बोले थे किसीको मालूम नहीं हुआ था। एक घंटे के बाद में उनको उस बात का अर्थ समझ में आया कि कोर्रपाटी बुज्जय्या रास्ते से आ रहा था। उस समय एक बिच्छू ने उस हाथ में काट लिया था। स्वामी जी का स्मरण करने से किसी तरह की दवा के बिना पूरी पीडा गायाब हो गई थी।

एक समय श्री स्वामी जी करिचेडु में थे। श्री स्वामी के सेवक रोशरेड्डी जी को आँख की चिकित्सा के कारण आँख में दर्द हो रहा था। एक दिन स्वामी जी ने बताया कि तुझे घर जाकर वापस आना है। चालीस लाख रूपए जमा करने से रास्ते में राम लक्ष्मण तेरी रक्षा करेंगे। गाँव जाने से वहाँ की देवता अम्मण्णि तेरी रक्षा करेंगे। कल सुबह मुझे कहे बिना तुम गाँव जाकर वापस आ जाओ। रोशरेड्डी स्वामी जी के कहने के अनुसार गाँव गया था। राजमपेटा के रेल प्लाटफारम पर जा रहे थे। प्रकाश अपनी आँखों पर पड़ने के कारण सामने वाला कुछ भी नहीं दिखाई दिया। प्लाटफारम से चार फुट के नीचे पटरियों पर गिर पडा था। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ था। वहाँ चार दिन तक ठहरा था। चारों दिन वहाँ की ग्राम देवता उसका दर्शन देते रहे और उसकी रक्षा करते रहे थे। रेल की पटरी पर गिरने पर स्वामी जी की बातें, राम – लक्ष्मण उसकी सहायता करेंगे।... याद आई थी।

गोलगामूडि के चेत्तय्या को खेत में काम करते समय एक बिच्छु ने मार दिया था। स्वामी जी से प्रार्थना करने से उसकी पूरी बाधा दूर हो गई और बहुत खुशी से अपना काम पूरा कर दिया था।।

गोड्डेटि शेषय्या जी अपने भेडों को बीमारी होने से स्वामी जी के पास आए थे। उस समय स्वामी जी माँड पी रहे थे। सेवकों ने बताया कि स्वामी जी अब माँड पी रहे हैं। दूर रहो। लेकिन शेषय्या स्वामी जी से मिलने की उत्सुकता में स्वामी जी के सामने खडे हुए थे। स्वामी जी उनको देखकर बताया था कि घर जाओ। वहाँ तेरे भेडा स्वस्थ दिखाई देगा। आश्चर्य की बात घर जाकर देखने पर अस्वस्थ भेडा स्वस्थ होकर घास चर रहा था।

गोलगामूडि के तुलिपि वेंकय्या जी स्वामी जी के साथ रहकर उनके कपडे धोते थे। 1981 गरमियों में अर्थरात्री जाग गए। अपने पलंग पर सो नहीं सके। बीडी जलाने के लिए अपने घर के दीप के सामने पहुँचे। अंधेरे में वहाँ बैठे हुए आदमी को देखकर जोर से चिल्लाने लगे। वह आदमी भी चिल्लाना शुरु कर दिया । सभी लोग जाग उठे। वहाँ के घर के सामान और मूल्यवान कपडे आदि इकट्ठा करके एक डाकू बैठा हुआ था। वह डाकू पकडा गया था। उस डाकू के पास बहुत बडी लकडी भी थी। किसी ने पूछा इतने आसानी से कैसे पकडे गए हो। तब उस डाकू ने बताया कि घर में प्रवेश करते समय ही किसी ने मेरे पीट पर मारा था। उस मार से मैं अचेतन हो गया था। सभी सामान जुटाने पर भी किसी ने मुझे सभी सामान को वहीं रख दो की आज्ञा दी। उस आज्ञा के अनुसार सभी सामान सौंपने के लिए मैं तैयार होकर बैठा हुआ था। मुझे उठकर भागने की शक्ति भी नहीं रही। पहले बार ऐसा अनुभव कर रहा था। डाकू की बात सुनकर सब आश्चर्य में पड गए थे।

पेम्मसानी हरिनारायण जी अपनी गाडी में स्वामी जी को जहाँ चाहते थे वहाँ ले जाते थे। उनकी पत्नी ने स्वामी जी के पास जाकर नमस्कार कर ली थी। स्वामी जी ने कहा कि तुझे मांगल्य का खतरा है। तिरुवल्लुवर वीरराघवस्वामी तेरी रक्षा करेगा। उस रात स्वामी जी उनके घर आकर अग्नि कुंड जलाकर पूजा करके सुबह उनकी गाडी में ही बगले का प्रांत मैकागनी को गए थे। श्री हरिनायुडू अपने बैलों को घास चरा रहे थे। गाडी के बैल ने अपने सींगों से मारकर हरिनायुडू को ऊपर उठाकर नीचे फेंक दिया था। शरीर में सींग लगने से बहुत बडा घाँव हो गया था उससे रक्त बहने लगा। अस्पताल जाकर इलाज करवाए थे। श्री स्वामी जी के अभय के कारण प्राणहानी नहीं हुई थी। तब से वे स्वामी जी की अनेक सेवाओं को करने में लग गए थे।

नेल्लूरु के निवासी माकानी वेंकट्राव जी ने मद्रास जाने केलिए स्वामी जी से अनुमती माँगी। साधारणतः स्वामी जी बताते थे कि जाओ। लेकिन उस वक्त उन्होंने बताया कि इस दिन तेरी तिरुवल्लुरू वीरराघव स्वामी. कंचि वरदराजुल स्वामी रक्षा करेंगे। वेंकट्राव मद्रास में बस पकडते समय जल्दी में बस के सीढ़ी पर चढ़ते समय वहाँ की हैंगर को पकड नहीं पाए थे। संतुलन खोकर टायर के नीचे गिरने वाले थे। इतने में टायर पंचर होने से बस रूक गई थी। वेकट्राव बच गए थे। तभी उनको स्वामी जी की बातों का महत्व समझ में आया था।

एक बार स्वामी जी अपने सभी चेलों के साथ तिरुपती गए थे। स्वामी जी के सेवक रोशरेड्डी को तिरुपती में छोडकर बाकी कलिचेडु वापस आगए थे। रोशरेड्डी रेल में टिकट के बिना यात्रा कर रहे थे। बिना पैसा के गुडूरू से कलिचेडू कैसा जाना है। यहीं उनके लिए सवाला था। उस समय एक स्त्री ने थैली में एक रूपया और कुछ

फल रखकर उसे दिया। उस रूपए से टिकट खरीद कर रोशरेड्डी जी ने कलिचेडु पहुँच गए थे।

वल्लपरेड्डी के बेटा नरायणरेड्डी को दमा था। उनकी स्थिति बहुत खराब हो गई थी। मरने के लिए तैयार था। सभी लोग उनके पास जाकर, देखकर सांत्वना दे रहे थे। श्री स्वामी जी की सेवा में बहुत दिनों से रहने वाली तुलसम्मा जी को जाकर उनके बेटे को देखकर आने की सलाह सभी लोगों ने दिया। घर जाकर बेटे को देखकर वापस आने की अनुमती स्वामी जी से माँगी थी। स्वामी जी ने बताया कि वह ठीक ही रहेगा, तुझे जाने की कोई जरूरत नहीं है। स्वामी जी की बात सुनकर वह बेटे को देखने नहीं गई थी। स्वामी जी के कहने के अनुसार नारायण रेड्डी ठीक हो गया था। बाद में शादी भी करके बाल बच्चों से आनंद पूर्वक जीवन बिताने लगा।

गोलगामूडि के सुब्बाराव का बेटा अपने दोस्तों से मिलकर रास्ते से आ रहा था। पीछे से एक ट्राक्टर ने टकराया। उसके पेट के ऊपर से ट्राक्टर का पहला चक्र निकल गया था। उसकी हड्डी टूट जाने से अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। तीन महीने में ठीक हो जाने का वादा डॉक्टरों से दिया गया था। लेकिन उसके दोस्त को ट्राक्टर के बीच में गिरने पर भी कुछ नहीं हुआ था। उस समय स्वामी जी ने उसके लिए आश्रम में दीप जलाकर दीपाराधन करवाया था। इसलिए ही वह बच निकला था।

भक्त जन को कुछ समझ में नहीं आया था। सुबह दुर्घटना का समाचार सुनने के बाद में ही स्वामी जी की बातों का महत्व सबको समझ में आ गया था। स्वामी जी के सेवक जब स्वामी जी को इस दुर्घटना का समाचार बताए थे तब स्वामी जी ने बताया कि केवल पन्द्रह दिनों में वह ठीक हो जाएगा। भगवान ने उसकी रक्षा की है। अपने वस्त्र और विभूदी देकर उसके पास भेजे थे।

आश्चर्य की बात यह है कि

1. ट्राक्टर का पीछे वाली चक्र उसके ऊपर नहीं चढ़ना।
2. डॉक्टर ने तीन महीने में ठीक होगा बताए थे। लेकिन स्वामी जी की कहने के अनुसार पंद्रह दिनों में ही ठीक होकर डिस्चार्ज होकर घर वापस आ जाना। ये सब केवल स्वामी जी की महिमा ही है।

ॐ नारायण – आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 08

अमृतवाक्

परमात्मा की दिव्य शक्ति ने इस विश्व में अनेक रूपों को प्रदान किया है। वही शक्ति हमारे शरीर में भी काम करती है। इस शक्ति के सही रूप में हमारे ऊपर काम करने पर हम स्वस्थ रह सकते हैं। हमारे पूर्व कर्मों के अनुसार वह शक्ति हमारे अंदर काम करती है। वहीं रोगों का कारण है। महनीय लोगों में यह शक्ति तपस्या के प्रभाव से बहुत अधिक मात्रा में काम करती है। इसलिए वे बाकी प्रकृति को बहुत विचित्र रूप से शासित कर सकते हैं। दु:साध्य रोगों को भी वे नियंत्रित कर सकते हैं। जो लोग उनकी सहायता पाते है वे उनके प्रति कृतज्ञता भाव और भक्ति, विश्वासों के साथ रहकर धर्ममार्ग में आगे बढ़ते रहते हैं। भगवान का अस्तित्व की पहचान और विश्वास लौकिक लोगों को और साधारण मनुष्यों को भी मालूम होती है। ऐसे विश्वास को जगाकर मानव जाती को धर्मपथ पर आगे बढ़ाना ही महान व्यक्तियों की लीलाओं का कारण है।

पागल वेंकय्या का नाम चला गया और भगवान श्री वेंकय्यस्वामी का नाम स्वामी जी को मिल गया था। कहीं किसी जानवर, पशु या लोगों के लिए कलरा, मशूची जैसी बीमारियाँ होने पर गाँवों से एक या दो लोग आकर स्वामी जी के सामने अपनी बाधा व्यक्त करते थे। स्वामी जी आशीर्वाद देकर, धागा देकर सभी जानवरों को एक जगह इकट्ठा करवाकर संब्राणी का धूप लगवाते थे। उस गाँव में पशु या लोग नहीं मरते थे। स्वामी जी ने बिच्छुओं और साँपों से अनेक लोगों को मुक्त किया था। अनेक उदाहरण हम देख सकते हैं। आज भी श्री स्वामी जी की समाधी का प्रदक्षिणा करके विष जीवों से मुक्ति पाने वाले अनेक लोग दिखाई देते हैं। बहुत लोग दीर्घकाल के रोगों से विमुक्ति पाते थे।

बुज्जय्या को गरदन की रक्तनाली हड्डी के नीचे दब जाने से रक्त प्रसरण में बाधा के कारण पूरे शरीर में कंपन आ जाते थे। मद्रास के डॉ. राममूर्ति जी भी इनका इलाज किए थे। लेकिन पूरी तरह स्वस्थता नहीं पा सके। अंत में बुज्जय्या श्री स्वामी जी से अपनी इस बाधा को हराने की विनती की। स्वामी जी अपने हाथों से उनके गरदन पर ऊपर से नीचे तक दो बार छुए थे। आश्चर्य की बात कुछ ही दिनों में उनकी पीडा दूर हो गयी थी।

नागुलु वेलटूरु संजीवय्या के बेटा ओबय्या बचपन में स्वामी जी के साथ खेलता था। वह स्वामी जी का बाल्यकाल मित्र था। वह बहुत समय से दमा से

परेशान हो रहा था। स्वामी जी से अपनी बीमारी के बारे में एक बार बताया। स्वामी जी अपने हाथों से उसके पूरा शरीर को छुए थे। उस दिन से उसका दया गायब हो गया था।

पेनवर्ती के निवासी वल्लपरेड्डी तुलसम्मा को कैंसर था। अमेरिकन अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। डॉक्टर बेरम्मा ने बताया कि वल्लपरेड्डी की बीमारी नियत्रण में नहीं है। वह कभी भी मर सकती है, इसलिए उसे घर ले जाइए। उनके रिस्तेदार ने उसे स्वामी जी के पास ले आए थे। तीन दिन तक स्वामी जी के पास रखे थे। स्वामी जी ने आज्ञा दी कि उसे तीन दिन तक घर में रखकर वापस ले आना। वे ऐसे ही किए थे। बाद में उसका कैंसर गायाब हो गया था और बीस साल तक स्वामी जी की सेवा में जुडी रही थी। उसे देखकर स्वामी जी कहते थे कि ये तो ब्रह्म के पास रहने वाली थी। उसे सदा माँ कहकर पुकारते थे। माँ का अर्थ है प्रकृति माता। स्वामी का उद्देश्य भगवान से दिया गया नूतन जीवन उसे भगवान की सेवा में ही, सन्निधि में ही बिताना था।

तुलसम्मा जी को अंतिम स्वास तक श्री स्वामी जी की सेवा करने का भाग्य कैसे मिला इसका विवरण स्वामी जी ने इस प्रकार दिया था। स्वामी जी ने बताया कि तुलसम्मा जी गत चार जन्मों से मुझे खाना खिला रही थी। प्रेम से, प्रीति से जो लोग कुछ जन्मों से स्वामी जी की सेवा करेंगे उन लोगों को ही सदा स्वामी या सद्गुरू की सेवा करने का और सान्निधि में रहने का मौका मिलेगा।

पल्लम रेड्डी कृष्णरेड्डी जी स्वामी जी के दर्शन के लिए बहुत कम बार आते थे। संगम के निवासी कृष्णरेड्डी जी के साथ आकर गोलगामूडि में स्वामी जी को देखा था। स्वामी जी ऐसे क्यों है। न्यूनता भाव से उसने स्वामी जी को देखकर वहीं खडा हुआ था। इतने में कोई बिच्छु काटने के दर्द से स्वामी जी के पास आया था। स्वामी जी ने बताया कि कुछ भी नहीं होगा, ठीक हो जाएगा। स्वामी जी की बात से ही उसका दर्द दूर होकर वह बहुत खुशी से अपने घर वापस चला गया था। इस घटना को देखकर संगम के निवासी को स्वामी जी का महत्व मालूम हुआ और उसने स्वामी जी को नमस्कार किया। उसके चले जाने के बाद स्वामी जी ने कहा कि बिच्छु काटने से उसकी बाधा बहुत होती है न।

कलिचेडु नरसारेड्डी के बैल को साँप ने काटा था। बैल ने घास खाना बंद कर दिया था। पानी भी पीना बंद कर दिया था। उस स्थिति में उसे स्वमी जी के पास लाया गया था। श्री स्वामी जी ने बैल के शरीर पर जहाँ साँप ने काटा था वहाँ अपना हाथ रखकर बहुत जोर स्वास ले लिया। बैल तुरंत गोबर डालकर घास खाने को तैयार हो गया और पेट भर पानी भी पिया था। स्वामी जी की योग शक्ति ने सबको आश्चर्य में डाल दिया था।

एक दिन स्वामी जी एक चिट्ठी पर लिखकर दिए थे कि नरसा रेड्डी जी को साँप से मरने की संभावना है। तिरुवल्लुवरु वीरराघव स्वामी उसकी रक्षा करेंगे। कुछ दिनों के बाद नरसा रेड्डी कमरे में चावल के बोरे को निकालने के लिए अंदर गए पर वहाँ उन्हें एक लचीला पदार्थ जैसा उसके पैर के नीचे लगा। लाइट लगाकर देखने पर उसे पता चला कि उसका पैर एक विषैले साँप पर रखा हुआ है। तुरंत एक छलांग मारकर बाहर आ गए। बाद में लकडी से उस साँप को मार डाला था। बाद उसे अवगत हुआ कि सांप पर पैर रखने पर भी उसे नहीं डसने का कारण केवल स्वामी जी की कृपा और आशीर्वाद ही है।

गुत्ता नरसम्मा को पैर के घुटनों में दर्द होता था। वह अपने पैर को मुड नहीं पाती थी। स्वामी जी की विभूती लगाने पर भी कुछ भी उपशामन नहीं मिला था। वहाँ के सेवकों ने स्वामी जी को बताया था कि हमारे लिए खाना पकाने वाली नरसम्मा के पैरों में दर्द होने से बहुत परेशान हो रही है। स्वामी जी ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि एक चिट्ठी लिखकर दो। स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार सेवकों ने उसे दर्द गायाब होने के लिए चिट्ठी लिखकर दी। कुछ ही दिनों में उसे दर्द से पूरी सांत्वना मिली थी।

एक दिन स्वामी जी अपने लिए मंत्र जपने के लिए पूछ रहे थे। किसी को मालूम नहीं हुआ कि स्वस्थ रहने वाले स्वामी क्यों ऐसा पूछ रहे थे। कुछ समय के बाद तूपिली पिच्चेम्मा को साँप डसने से स्वामी जी के पास ले आए थे। मंत्र जपकर उसकी बाधा को दूर किए थे। तब ही सबको मालूम हुआ कि अपनी सेविका की बाधा दूर करने के लिए ही स्वामी मंत्र जपने के लिए पूछ रहे थे। किसी दवा का इस्तेमाल किए बिना केवल स्वामी जी की विभूदी से ही उसका दर्द दूर हो गया था।

गोलगामूडि के गाँव के सुब्बाराव जी की पत्नी दमा से बहुत परेशान हो रही थी। बहुत डॉक्टरों से इलाज करवाने पर भी, बहुत पैसे खर्च करने पर भी कुछ भी फायदा नहीं हुआ था। तब श्री आंजनेय स्वामी के मंदिर में प्रदक्षिणा करने के लिए अनिकेपल्लि से गोलगामूडि पहुँच कर स्वामी जी से विनती की।

स्वामी जी ने बताया कि 20 दिनों में ठीक हो जाएगा। आप गोलगामूडि में जहाँ ठहर रहे हैं उस घर को छोड़कर मत जाइए। आप अपने अनिकेपल्लि को छोडकर गोलगामूडि आ जाइए। चाहे तो यहाँ छोटी झोंपडी बनाकर रहिए। जब मैं कहूँगा तब आप स्थिर निवास गोलगामूडि में बना सकते हैं। स्वामी जी के कहने के अनुसार सुब्बाराव और उसकी पत्नी ने किया। दमा से मुक्ति मिल गई थी।

1981 में तूफान के कारण उनकी झोंपडी गिर गई थी। उस जगह में घर का निर्माण करने के प्रयत्न में स्वामी जी को बताए बिना अपने घर में रहने के लिए अनिकेपल्लि गए थे। फिर बीमार पड गए थे। इस समय ऑपरेशन करना पडा था।

स्वामी जी के पास जाकर बताने से उन्होंने बताया कि आप इस झोंपडी में ही रहिए। आप स्वस्थ रहेंगे। वे ऐसे ही किए थे। स्वामी जी की कृपा से फिर स्वस्थता उनको मिल गई थी। कृतज्ञता से हर दिन स्वामी जी की पूजा करते रहे। स्वामी जी का शरीर जिस जगह त्याग कर दिए थे वहाँ स्वामी जी के द्वारा प्रतिष्ठित पादुकाओं की पूजा हर दिन करते रहते है। इस प्रकार सद्गुरू के द्वरा ही यह सब संभव होता है।

पेद्द गोपारम् से 1979 में एक महिला स्वामी के दर्शन के लिए आयी थी। उसे 22 उम्र का बेटा था। दो साल से उसका बेटा मानसिक स्थिति खराब होने से पागल जैसा व्यावहार कर रहा था। स्वामी जी ने उसे अपने पास रखने की आज्ञा दी। स्वामी जी के पास रहने से वह बेटा कुछ ही दिनों में स्वस्थ होकर साधारण व्यक्ति बन गया था। वह महिला आज भी स्वामी जी की नित्य पूजा अपने घर में करती रहती है।

कलिचेडु ईस्वरम्मा के पेट में गाँठ पैदा होने से नव मास की गर्भवती जैसी हो गई थी। डॉक्टरों ने ऑपरेशन करवाने की सलाह दी। श्री स्वामी जी के प्रति जो विश्वास है उसके अनुसार उसने स्वामी जी का सलाह माँगी। स्वामी जी ने बताया कि तुम रू 100 चुकाने से तेरी बाधा कल ही दूर हो जाएगी। उसके पास तुरंत रू 100 न होने से किसी से माँगकर स्वामी जी को रू100 चुकाई थी। उस रात उसे स्वामी जी ऑपरेशन करते हुए सपने में दिखाई दिये थे। सुबह उठते ही उसकी बाधा दूर होने लगी। कुछ ही दिनों में साधारण स्थिति आ गई थी। पेट का दर्द ही नहीं उसका पेट की सूजन भी दूर हो गयी थी।

रोशरेड्डी के हाथ की उँगली पर साँप ने डस लिया था। स्वामी जी उस उँगली को अपने जाँघ पर रखवाकर उस पर अपना हाथ रखकर दबाए थे। कुछ ही देर में पूरा दर्द गायब हो गया था। स्वामी जी ने बताया कि रोशरेड्डी तुम्हारा शरीर संजीवनी बन गया है। उस दिन के बाद कई विष जीव काटने से भी कोई विष का प्रभाव उनके शरीर पर नहीं पडा था।

गोलगामूडि के कोर्रकूटि हरिनाथ नायुडू के मुँह से रक्त गिरता था। दवा खाने से तत्काल उपशामन मिला और फिर से रक्त का श्राव शुरू हो गया था। इस बार डॉक्टरों श्री स्वामी जी से इलाज करवाना चाहा था। वह चाह रहा था कि किसी दवा खाने के बिना उसकी बीमारी ठीक हो जाए। इसके लिए नारियल का फल नैवेद्य देने का प्रण लिया था। विचित्र सा लगा कि उस प्रण के बाद उसका रक्त श्राव बंद हो गया था।

कुछ दिन स्वामी जी पेन्ना बद्देलु में बसे हुए थे। उस समय महिमालूरु के निवासी मुनिकोटी रामय्या जी को पेट में दर्द, शरीर में कमजोरी और पूरा शरीर में

थकावट महसूस होने लगी। इलाज डॉक्टर नहीं कर सके थे। पेन्ना बद्वेलू के निवासी ने आकर स्वामी जी की महिमा को बताकर उनसे संपर्क करने की सलाह दी थी।

उस दिन श्री स्वामी जी रामय्या जी के स्वप्न में आकर दर्शन दिए थे। उन्होंने कहा मैं अब पेन्ना बद्वेलु में ही हूँ। मेरे पास आने से तुझे ठीक कर दूँगा। वह स्वामी जी को मिलने गया। स्वप्न में जिनको देखा था वहीं स्वामी उसके सामने देखकर उसका आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा था।

श्री स्वामी जी उनको एक महीने तक अपने ही आश्रम में ठहरने की आज्ञा दी। एक महीने के अंदर ही वह स्वस्थ हो गया था। उसके बाद में गरीब होने पर भी अपने घर में एक झोंपडी बना कर स्वामी जी को आश्रय देकर भक्ति और श्रद्धा के साथ उनकी सेवा करने लगे थे।

श्री स्वामी जी मुनिकोटा रामय्या जी के घर में रहते समय उनसे कुछ चावल ले आने के लिए आज्ञा दी थी। उन चावल को वहाँ के बरतन में डालकर बता दिए थे कि यहाँ बहुत बडा भवन का निर्माण होने की संभावना है। गरीब रामय्या ने बाद में धनवान बनकर वहीँ एक बडा भवन का निर्माण कर दिया था। महासमाधि प्राप्त करने के बाद में श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए हर महीन एक बार गोलगामूडि आते थे।

नारायण रेड्डी की माँ तुलसम्मा जी नरसम्मा जी को इस प्रकार बताई थी कि एक व्यक्ति पेट दर्द से बहुत दिनों तक परेशान हो रहा था। बहुत बार इलाज करवाने पर भी कुछ ठीक नहीं हुआ था। किसी के कहने पर स्वामी जी के पास आया था। स्वामी जी के आशीर्वाद से कुछ दर्द कम हो गया था। पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था। एक बार सपने में जलने वाले एक ताड के वृक्ष के अग्रभाग में श्री स्वामी जी बेठकर उनको दर्शन दिए थे। उस दृश्य को देखकर उन्होंने जोर से चिल्लाया। सभी लोग उसे डाँटकर संभाल लिए थे। सुबह होते ही उसकी बाधा बहुत कम हो गई थी। श्री स्वामी जी ने व्यक्ति को आज्ञा दी कि तुम्हारी पीडा अब बडेगा नहीं या घटेगा नहीं। जाओ, घर जाओ। वह व्यक्ति घर वापस चला गया था।

नेल्लूरु के निवासी ताल्लूरु श्रीनिवासुलू जी हृदय संबंधी बीमारी से परेशान थे। बचपने से ही भय से जीते थे। स्वामी जी का दर्शन करने के बाद उनका भय ही नहीं शारीरिक और मानसिक बाधाएँ भी दूर हो गए थे। इसलिए वे हमेशा समय मिलने पर स्वामी जी की समाधी का दर्शन करने आते थे।

एक समय इनके हाथ में बहुत दर्द होता था। उनकी दीदी और पत्नी मातुल्ला अस्पताल को ले जाने आ रहे थे। स्वामी जी के प्रति अंचंचल विश्वास रखने वाले श्रीनिवासुलु जी ने अस्पताल जाने से मना कर सीधा श्री स्वामी जी की सन्निधि पहुँच गए थे। विचित्र बात बस में चढ़ते ही उनकी पूरी बाधा दूर होती रही थी। मेरा भी वहीं अनुभव हुआ था। मैं भी स्वामी जी के पास जाने लगा था। उस समय मेरी

तबियत ठीक नहीं थी। खांसी और ठण्ड से बहुत परेशान हो रहा था। जब मैं बस से गोलगामूडि के निकट पहुँच रहा था मेरी खांसी और ठण्ड दूर होती जा रही थी। जब मैं स्वामी जी के पास पहुँचा पूरी तरह ठीक हो गया था। विश्वास और भरोसा पूरे पर्वतों को भी पिघल देता है। मेरे साथ ही श्रीनिवासुल जी के अनुभव जैसा ही अनुभव हुआ था।

डेगपूडी गाँव के निवासी मद्दिनेनी कामाक्षम्मा जी बहुत दिनों से स्वामी जी की सेवा कर रही थी। उसकी रीढ की हड्डी में बहुत दर्द होता था। इस विषय के बारे में स्वामी जी को बहुत बार बताई थी। स्वामी जी ने बताया कि पत्तों का रस लेकर उस पर लेपन करने से ठीक हो जाएगा। कामाक्षम्मा ने स्वामी जी के कहने के उनुसार लेपन किया। लेकिन कुछ भी सांत्वना नहीं मिली थी। स्वामी जी को मालूम होने पर एक कागज पर लिखकर उसे दिया कि परसो ठीक हो जाएगा। स्वामी जी के कहने के अनुसार दो दिनों में ही ठीक हो गया था। दर्द और फिर नहीं आया था। स्वामी जी ने बताया कि वीरराघवुलू की पूजा करो। मांस या मछली मत खाओ।

कामाक्षम्मा के बेटे को विवाह होने के बाद बहुत दिनों तक संतान नहीं हुई थी। स्वामी जी ने बताया कि उनके घर तीन बच्चे जन्म लेंगे। कामाक्षम्मा ने पूछा कि इतने दिन हो गए हैं अब तक संतान नहीं है। भविष्य में कैसे होंगे? तब स्वामी जी ने चिट्ठी पर लिखकर दिए थे कि अन्य जाति वाले आ रहे थे। इसलिए मैंने ही रोक लगा दिया था। अब वेंकटगिरी के बनिए के संतान को दे रहा हूँ। बाद स्वामी जी के कहने के अनुसार एक बच्चे ने जन्म लिया था। लेकिन उस बच्चे के लिए माँ के पास दूध नहीं था। फिर प्रार्थना करने पर स्वामी जी ने अपने कौपीनं देकर माता के वक्षों पर उससे साफ करने की सलाह दी। अगले दिन से ही माँ अपने बेटे को दूध देने लगी। इस घटना के बाद में उनका सारा परिवार श्री स्वामी जी की सेवा में जुडे रहे थे।

श्री स्वामी जी एक बार अपने सेवकों के साथ मुदिगेडु गाँव के तिम्मारेड्डी जी के घर आए थे। कोडूरु वेंकम्मा जी अपने घर आने केलिए श्री स्वामी जी से बहुत बार विनती करने पर भी वे मना कर देते थे। एक बार श्री स्वामी जी रात के समय आकर वेंकम्मा जी के आंगन के बैलों के पास बैठे हुए थे। वेकम्मा के दामाद बैलों को घास चराने के लिए आकर अचानक श्री स्वामी जी को देखकर सबको बुलाए थे। श्री स्वामी जी का उचित सत्कार करके उनका स्वागत किया गया था। बाद में श्री स्वामी जी बहुत बार वेंकम्मा का घर आते थे और एक महीने तक वहीं ठहरते थे।

कुछ समय वेंकम्मा जी को खाने से उल्टी आ जाती थी। पाँच साल तक बीमारी के कारण पलंग पर पडी रही थी। वह केवल बीस साल उम्र की ही थी। बुहत डॉक्टर, वैध्य और अनेक अन्य लोग भी इलाज करने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ था। श्री स्वामी जी जब भी वेंकम्मा के घर आते थे। वेंकम्मा उनसे विनती करती थी।

लेकिन श्री स्वामी जी जब बद्वेलु में थे तब वेंकम्मा को अपने पास ले आने की आज्ञा जारी की थी। सेवक उनको वहाँ ले गए थे। श्री स्वामी जी को देखते ही उसकी भूख ज्यादा हो गयी थी। खाने को मन लगने लगा था। एक किलो चावल पकाने से भी उसे कम लगता था। दो किलो चावल पकाने पर भी खा लेती थी। श्री स्वामी जी उसे अपने पास ही रखते थे। तीसरे दिन श्री स्वामी जी उसे कुछ भी खाने नहीं दिया था। तीसरे दिन केवल एक केला और कुछ आटा ही खाने को दिए थे। उसके बाद में उसकी तंदुरूस्ती ठीक हो गई थी। बाद में अंत तक श्री स्वामी जी की समाधी के पास रहकर अपनी सेवाएँ देती रही थी।

गोलगामूडि की गौनि पेंचलम्मा बहुत दिनों से दमा और खाँसी से परेशान हो रही थी। सभी इलाजों से कोई फायदा नहीं मिला था। श्री स्वामी जी से विनती करने पर उन्होंने छे रूपए उनके पास रखने के लिए आज्ञा दी। उसके पास पैसा नहीं होने से चुपचाप खडी रही थी। तब श्री स्वामी जी ने कहा यदि तुम अपनी बीमारी से मुक्ति पाना चाहती हो तो हजार रूपए अग्नि कुंड में डालना पडेगा। तब भी वह चुपचाप खडी रही थी। दूसरे दिन आकर श्री स्वामी जी को पाँच रूपए समर्पित करके अपनी बाधा के बारे में विनती की थी। मैं नही वह माँ तेरी बीमारी ठीक करेगी। कहकर उसके पाँच रूपए वापस देकर वहाँ के तुलसम्मा के पास श्री स्वामी जी ने उसे भेजा था। तुलसम्मा श्री स्वामी जी की बात सुनकर हँसने लगी। तुलसम्मा ने कहा कि श्री स्वामी जी ऐसे ही करते हैं। उन्होंने तेरी बीमारी निकाल दी थी अब खुशी से घर चले जाओ। तुलसम्मा के कहने के अनुसार उसकी दामा और खाँशी दो हफ्तों में ठीक हो गया था।

पल्लम रेड्डी कृष्णारेड्डी के पास एक भैंस होती थी। उसके पेट में कुछ बीमारी के कारण उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था। वह कुछ भी नहीं खा रही थी। कृष्णारेड्डी ने सोते समय सोचने लगा कि स्मामी जी को ही मैंने माना था लेकिन श्री स्वामी जी मेरी भैंस को मार रहे थे। सपने में श्री स्वामी जी भैंस के पास बैठे हुए दिखाई दिए थे। रात जाकर आंगने के भैंस को देखा तो वह बहुत जोर से घास चर रही थी। एक बकेट भरा मूत्र विसर्जन करके पेट भर घास खा लिया था। फिर से स्वस्थ हो गयी थी।

श्री स्वामी जी तलुपुलूरु मादिगा के पास बसे हुए थे। वहाँ से जाने के लिए तैयार हुए थे। बीच में कमर में दर्द होने से श्री स्वामी जी वहीं रह गए थे। इतने में एक महिला अपने बेटे को श्री स्वामी जी के पास ले आई थी। उसका बेटा पेट में दर्द के कारण बहुत परेसान हो रहा था और जोर जोर से रो रहा था। श्री स्वामी जी एक चिट्ठी लिखवाकर उसके दर्द को दूर कर दिया था। वह लडका आते वक्त रोते हुए आया था, जाते वक्त हँसते हुए घर चला गया था।

तलपूरु गाँव के विंजम मीनम्म इस प्रकार बता रही थी।

मेरा बेटा चिरंजीवी प्रसाद 11 महीने का शिशु था। वह अभी - अभी चलना सीख रहा था। 1972 में बाएँ पैर निकम्मा होने से वह ठीक से चल नहीं पा रहा था। नेल्लूरु के डॉक्टरों ने कहा कि उसकी रीड की हड्डी में पानी है उसे निकालने से ठीक हो जाएगा। उसके लिए दवा खा रहा था। चौथा दिन श्री स्वामी जी हमारे घर के निकट आए हुए थे। किसी ने बताया कि श्री स्वामी जी के आशीर्वाद एक बार लीजिए।

तब तक मेरी राय थी कि श्री स्वामी जी और उनके सेवक निकम्मे लोग हैं। केवल खाना खाने के लिए ही गाँव - गाँव घूमते रहते हैं। लेकिन बहुत लोगों के बताने पर और कोई चारा नहीं होने से मैं अपने बेटे को लेकर श्री स्वामी जी के सामने खडी हुई थी। सुबह ही बहुत लोग खडे होने पर भी श्री स्वामी जी केवल मुझे अपने पास बुलाए थे। और बताए थे कि इस लडके का 16 दिनों में पैर निकाल दिया जाएगा। उसका आयुष 6 नहीं सात है। 9 नहीं केवल 16 ही है। उनकी बात सुनकर मैं रोने लगी थी। मैं इस बूढे को अपने बेटे को क्यों दिखाया, ऐसे दुर्वचन उससे सनना पडा था। अपने भाग्य पर कोसने लगी थी।

16 दिन के लिए इंतजार करती रही थी। वह लिख रही थी कि उस दिन मेरा बेटा दौडते हुए मेरी ओर आने से मेरे आनंद की कोई हद नहीं थी। तब हम पति पत्नी दोनों अपने बेटे को साथ लेकर गोलगामूडि पहँच गए थे। श्री स्वामी जी से क्षमा माँग कर पोंगल, नारियल के फल का प्रसाद चढा कर उनकी सेवा की थी। उस दिन के बाद मेरा बेटा स्वस्थ हो गया था। उसके आयुष के बारे में भी जो श्री स्वामी जी बाताए थे वह आशीर्वाद के रूप में ही हम लिए थे। अज्ञान के कारण स्वामी जी की बात हम समझ नहीं सके थे।

बिरिजे पल्ली के रमनय्या जी इस प्रकार बता रहे थे। राजपद्मापुरम के निवासी एक कमजोर बैल को खेत जोतने के लिए ले आया था। गाँव आते समय वह कमजोर बैल रास्ते में ही गिर गयी थी। बैल वाला उस बैल को उठाने के प्रयत्न में बहुत मार रहा था। उसे देखकर श्री स्वामी जी ने अपने सेवकों से कहा कि उस बैल वाले को बताओ कि उस बैल को मत मारना। सेवक जाकर बताने पर भी वह बैल वाला नहीं माना था। बैल को मारता ही रहा था। तब श्री स्वामी जी वहाँ जाकर उस बैल के शरीर पर अपना हाथ फेर कर उस बैल को प्यार से उठने को कहा था। बैल श्री स्वामी जी की बात सुनकर उठकर चलने लगा। तब श्री स्वामी जी उस बैल वाले को कहा कि चार दिन तक उसे आराम लेने दीजिए। बाद में वह ठीक हो जाएगा। बाद में श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार वह बैल बहुत काम करने के लिए सक्षम निकला।

एक दिन श्री स्वामी जी नेल्लूर रंगनायकुल पेटा देवालयम को गए थे। दर्शन का समय होने पर भी श्री स्वामी जी के ऊपर के प्रेम के कारण पुजारी लोग गर्भगुडी

को ताला नहीं लगाकर भोजन करने गए थे। श्री स्वामी जी वहाँ बहुत विचित्र रूप से बोलने लगे। हे रंगनायकुल, मैं तुझे बुला रहा हूँ क्यों सुन रहे हो? तुझे ठीक कर दूँगा। क्या समझ रहे हो यह कैसी पद्धती है? मेरे कहने के अनुसार करोगे या तेरे दाँत निकाल दूँ। तुम अपने बारे में क्या सोच रहे हो? ऐसा कहकर अपने सेवकों से कहा कि चलिए। हमारी बात वह नहीं सुनेगा। हमारा काम हो गया है। उसी प्रकार पेंचल नरसिंहस्वामी जी को भी कभी – कभी डांटते थे। श्री स्वामी जी की आज्ञा मान लेंगे --- ऐसा आश्वासन उनसे पाकर शांत होकर बाहर निकलते थे। उनकी बात कौन सुन रहे थे, कौन उनकी आज्ञा का पालन करते है यह सब किसीकी समझ में नहीं आता था। केवल श्री स्वामी जी को उसका रहस्य मालूम होता था।

ॐ नारायण - आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 09

दया सागर

परम कारुण्यमूर्ति श्री स्वामी जी के ऊपर जो भक्त पूरा विश्वास रखते हैं, वे विश्व में कहीँ भी रहने पर भी, केवल स्मरण करने से उनकी रक्षा करने के लिए सदा तैयार रहते हैं। विचित्र रीतियों में उनकी रक्षा करते हैं। अनेक भयंकर रोगों से तडपने वाले भक्तों की प्रार्थनाओं को सुनकर श्री स्वामी जी उनकी बाधाओं को अपने आप स्वीकार करके भक्तों को बाधाओं से मुक्ति प्रदान करते हैं।

कुछ समय तक श्री स्वामी जी दमा के कारण बहुत परेशान होते थे। भक्तों ने छोटे प्याजों के रस तैयार करके उनको पिलाया था। स्वामी जी की नाडी अचानक् गायब हो गई थी। सभी ने सोचा कि स्वामी जी अपने शरीर को छोडने वाले है। स्वामी जी दूर होने की बाधा में सभी भक्त उनको देखकर रो रोकर सो गए थे। कुछ समय के बाद वे जागकर देखे तो स्वामी जी अपने स्थान पर नहीं थे। सभी लोग स्वामी जी को ढूँढने लगे। आधे घंटे के बाद स्वामी जी स्नान करके हँसते हुए आ रहे थे। उस स्थिति में स्वामी जी को देखकर सभी आश्चर्य में पड गए थे। किस भक्त की बाधा उन्होंने अपना ली थी, किसी को मालूम नहीं होता है।

एक समय कोढ़ से पीडित भक्त भी स्वामी जी की सन्निधि में रहता था। श्री स्वामी जी कुछ बाधा से तडप रहे थे। रात के समय रोशरेड्डी श्री स्वामी जी की बाधा नहीं देख पाए थे। वह श्री स्वामी जी के पैरों को दबाने लगे। श्री स्वामी जी जोर - जोर से चिल्लाने लगे कि मुझे मत पकडो। मेरे पाव मत पकडो। दूर चले जाओ। एक घंटे के बाद रोशरेड्डी की पाँव की उँगली में कोढी जैसा घाँव लगा हुआ था। रोशरेड्डी को मालूम हुआ था कि कोढी की बाधा को श्री स्वामी जी अपना कर कोढ़ ग्रस्त रोगी का उपचार करते समय उसने उनका पाँव पकडकर दबाने का प्रयत्न किया था। इसलिए ही मुझे कोढी जैसा घाँव लग गया था। यह समझ कर रोशरेड्डी ने चार दिन तक गुरुस्मरण किया था। चौथे दिन उसका पैर की उँगली ठीक हो गई थी।

गोलगामूडि के गौनी पेंचलम्मा के पूरे शरीर में खुजली लग गई थी। बार - बार खुजली के कारण शरीर पर जलने के साथ – साथ दर्द होने लगा। तरह – तरह का इलाज करवाने पर भी कोई स्वस्थता नहीं मिली थी। अपनी बाधा को गुरवय्या जी के द्वारा श्री स्वामी जी को बताई थी। स्वामी जी ने रू 1000 अग्नि कुंड में डालने की आज्ञा दी। पेंचलम्मा ने बताया कि उतने पैसे उसके पास नहीं थे। तो स्वामी जी ने बताया केवल दस रूपए डालो। पेंचलम्मा ने बताया कि अपने पास दस पैसे भी नहीं

है। स्वामी जी ने पेंचलम्मा को अपने सामने दस मिनिट तक खडे होने की आज्ञा दी। पाँच मिनिट खडे होने के बाद चले जाने को कहा। उस क्षण से उसके शरीर के सभी खुजली गायब हो गई थी। बाद में स्वामी जी को खुजली लगने से दस दिन तक सेवक उनकी सेवा करते रहे।

श्री राम और श्री कृष्ण जैसे अवतार पुरूष साधारण मनुष्य जैसे ही जीवन बिताए थे। उसी प्रकार श्री स्वामी जी शिबि चक्रवर्ती जैसे महान त्यागी थे। अपने भक्तों की सेवा करने के लिए अपने शरीर को ही समर्पित कर दिया था।

श्री स्वामी जी मानते थे कि कुछ जाति के लोगों के घरों में भोजन करने से बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। ब्राह्मण के घरों में रोज दो बार भोजन खाने की सलाह देते थे। वैश्य के घरों में तीन बार रोज भोजन खाने की सलाह देते थे। उसी प्रकार अन्य जाति वालों के घर में भी भोजन करने के लिए प्रोत्साहन देते थे। उनकी बात मानकर जो लोग भोजन खाते थे वे जीवन आनंद से बिताते थे। जो लोग उनकी बात न मानते थे वे अपने जीवन में अनेक कष्ट भोगते हुए जीवन बिताते थे। अपने पेन्निधि को खो बैठे थे।

नूतेटि श्री रामानायुडू ने श्री स्वामी जी के दर्शन किए थे। श्री स्वामी जी तभी भोजन लाकर खाने केलिए तैयार थे। श्री स्वामी जी के रामानायुडू को भोजन खाने केलिए बहुत बार कहने पर भी उन्होंने नहीं खाया था। उसने सोचा कि उनके खाने से श्री स्वामी जी को खाना कम हो जाएगा। श्री स्वामी जी ने बोला यह खाना साधारण खाना नहीं है। आने वाले दिनों में तुझे इसका महत्व समझ में आएगा। श्रीरामय्या के अंजली भर खाना देकर श्री स्वामी जी ने बोला उधर जाकर खाओ। उन कुम्हारों के घर जाकर पानी पीओ। श्री स्वामी जी के आज्ञा के अनुसार श्री रामय्या ने ऐसा ही किया था। बहुत सालों के बाद, आज भी श्री स्वामी जी की सेवा के लिए अंकित होकर श्री रामय्या जी उनके सेवकों के लिए अनिकेपल्ली जाकर भिक्षा माँगकर खाना खिलाते है। अब उनको मालूम हो गया था कि श्री स्वामी जी उनसे क्यों कहे थे कि आने वाले दिनों में तुझे इसका महत्व समझ में आएगा।

कलिचेडु के निवासी कल्याणराम मैका खान सर्वेयर पोलिरेड्डी जी को कोपरेटिव सोसाइटी में कुछ समस्याएँ आई थी। उसी समय उनके खान में प्रबंद क का पद खाली हो गया था। सोसाइटी की समस्याओं के कारण उस प्रबंद के पद के लिए उसके मालिक राजा जी से विनती नहीं की थी। सर्वज्ञमूर्ति श्री स्वामी जी को खान की पूरी समस्याओं के बारे में अवगत होने के कारण उन्होंने अपनी लीला दिखाई थी।

एक दिन पोलिरेडेडी जी ने श्री स्वामी जी के दर्शन करके नमस्कार किया था। पोलिरेड्डी के कहे बिना ही श्री स्वामी जी ने कहा कि ये तो पाताललोक का अधिपति

बनना है। वे उनके लिए संकट डाल रहे हैं। भगवान उनको निकाल देगा। ऐसा कहकर उन्होंने एक चिट्ठी लिखवाकर दी थी। और आशीर्वाद भी दिया था। उसके बाद उनके प्रयत्न के बिना ही उनको वहाँ के प्रबंद क के रूप में नियुक्त कर दिए थे। उस दिन से पोलिरेड्डी श्री स्वामी जी के आश्रम को हर महीने पचास रूपए भेजने लगे और जब समय मिलता था उनके दर्शन के लिए आते थे।

चेर्लोपल्लि की निवासी कूचि ईश्वरम्मा ने बताया कि एक दिन रात नौ बजे को सभी सो रहे थे। श्री स्वामी जी बैठे हुए थे। उनके पास रमनय्या बैठा हुआ था। वह भी नींद में जा रहा था। श्री स्वामी जी के लिए मसाला हरी दाल लाकर रखी थी। लेकिन सभी सो रहे थे। उनको देखकर वह सोचने लगी कि उसकी मसाला दाल कोई नहीं खाएगा। उसी समय श्री स्वामी जी रमनय्या से पूछ रहे थे मुझे कुछ मसाला दाल खिलाओ। रमनय्या ने बताया कि यह रात का समय है सुबह तैयार करके आप को खिलाएँगे। श्री स्वामी जी पूछ रहे थे मुझे अभी चाहिए। यह सुनकर ईश्वरम्मा अपने पास के मलावे हरे दाल को श्री स्वामी जी को खिलाकर संतुष्टि पाई थी।

कलिचेडु के निवासी नरसारेड्डी की पत्नी ईश्वरम्मा बहुत गरीब थी। श्री स्वामी जी से उसको अपार प्रेम था। श्री स्वामी जी जब भी उसके गाँव आते थे उसके घर के सामने वाली मसजद के सामने के नीम के पेड के नीचे ही सोते थे। वह अपने घर में एक किलो चीनी श्री स्वामी जी के लिए रखती थी। उस चीनी को अन्य संदर्भों में इस्तेमाल नहीं करती थी। श्री स्वामी जी आने पर उनको चीनी गरम पानी मिलाकर देती थी। श्री स्वामी जी बहुत पसंद से उसे सेवन करते थे। श्री स्वामी जी अनेक बार ईश्वरम्मा जी के घर आते थे। बाद उनके सेवकों की संख्या बढ गयी थी। ईस्वरम्मा की आर्थिक स्थिति को समझकर श्री स्वामी जी उसके घर आना बंद कर दिए थे।

एक दिन ईश्वरम्मा श्री स्वामी जी के पदकमलों को पकडकर भक्ति प्रकट करना चाहती थी। श्री स्वामी जी के सेवकों ने उसे दूर रहने केलिए आज्ञा दी। उनकी आज्ञा के अनुसार दूर बैठकर मन ही मन श्री स्वामी जी से विनती करके अपनी मन की इच्छा प्रकट की। आचानक श्री स्वामी जी ईश्वरम्मा की ओर अपने पाँव को दिखाते हुए कहा कि मेरे पाँव में कंटक चुभ गया है। उसे निकाल दो। ईश्वरम्मा ने बहुत समय तक पाँव में कंटक को ढूँढती रही थी। बाद में बताने पर श्री स्वामी जी ने कहा छोड दो कोई दिक्कत नहीं है।

ढोली में घूमने वाले श्री स्वामी जी के पाँव में कंटक कैसे चुभता । श्री स्वामी जी ईश्वरम्मा को पाँव से कंटक निकालने को क्यों कहे थे उसका रहस्य बाद में सबको मालूम हो गया था। जब श्री स्वामी जी अतीत योग में रहते थे तब भक्त जन आकर उनको छूना पसंद नहीं करते थे। इसलिए ही वे अपने सेवकों से कहते थे उस समय किसी को मेरे पास नहीं आने दो। लेकिन ईश्वरम्मा को इस प्रकार अनुमती देने के लिए

कंटक को सामने ले आकर सबकी दृष्टि बदल दिए थे। ईश्वरम्मा की इच्छा पूरी कर दिए थे।

तूपिलि पिच्चम्मा हर दिन श्री स्वामी जी के कपडे धोती थी और अपने भैंस का दूध उनको पिलाती थी। इस प्रकार उनकी सेवा करती थी। पिच्चम्मा अपने पारिवारिक जीवन से बहुत ऊब गयी थी। उसके बाल बच्चे की बीमारी, पति के व्यसन, शराब पीने की आदत इस प्रकार अनेक समस्याओं से वह बहुत परेशान होती थी। तुलसी माँ ने उसे अपना घर छोडकर, आश्रम के बगल में एक छोटी सी झोंपडी बनाकर रहने की सलाह दी। लेकिन कुछ लोगों ने बताया कि वह स्थल जिसमें झोंपडी बनानेवाली थी वह सैतानों का निवास था। लेकिन श्री स्वामी जी ने बताया कि सरकार घर बनाने के लिए पैसे देगी। यहीं तुम घर बनाओगी। कुछ दिनों के बाद में श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार सरकार की ओर से उसे घर बनाने केलिए तूफान ग्रांट मिली थी।

पैसे मिलने से उसी शैतानों के स्थल में ही घर बना लिया गया था। पिच्चम्मा का विश्वास था कि श्री स्वामी जी के आकर उस स्थल में पैर रखने से सभी शैतान भाग जाएँगे। इसलिए ही पिच्चाम्मा ने श्री स्वामी जी को अपने घर आने की प्रार्थना की थी। यदि श्री स्वामी जी पिच्चम्मा के घर गए तो वहाँ के सभी लोग अपने घर भी आने के लिए बुलाएँगे। इसलिए सेवकों ने सलाह दी कि श्री स्वामी जी उसके घर नहीं जाए। लेकिन पाँचवें दिन श्री स्वामी जी पूछने लगे कि मुझे नए घर को ले जाइए। लेकिन सेवक उन्हें आंजनेयस्वामी के मंदिर ले चले थे। तब स्वामी जी ने कहा मैं दक्षिण की ओर जाता हूँ। पिच्चम्मा के घर ले जाओ। लेकिन श्री स्वामी जी के सेवक उनकी बात सुने बिना उनको पूरब दिशा के एक नाले पर ले गए थे। तब श्री स्वामी जी इतना माराम करने लगे कि उनको पिच्चम्मा का घर ले जाना ही पडा था। पिच्चम्मा के घर तीन दिन तक ठहरे थे। श्री स्वामी जी पिच्चम्मा के घर पहुँचते समय पिच्चम्मा कपडे धो रही थी। श्री स्वामी जी को अपने घर में देखकर पिच्चम्मा आश्चर्य चकित हो उठी। उसे सपना जैसा लग रहा था। बाद में पिच्चम्मा ने श्री स्वामी जी की सेवा करके अपनी भक्ति प्रकट की थी। **भगवान सदा अपने भक्तों की भक्ति में बंधी ही बनता है।** 29

पेन्ना बद्वेलु के प्रांत में श्री स्वामी जी रहते समय वक्केम्मा उनके लिए रसोई घर में पकाने के लिए लकडी, खाने के लिए केले के पत्ते देती थी। एकांत में ध्यान में बैठी रहती थी। ध्यान के समय भोजन की याद भी उसे नहीं होती थी। प्रेम मूर्ती श्री स्वामी जी सेवकों से कहते थे कि वक्केम्मा खाना भूल गयी थी उसे बुलाकर भोजन खिलाओ।

वक्केम्मा कभी – कभी आकर श्री स्वामी जी के दर्शन करके अपने घर जाती थी। एक बार क्या हुआ था किसी को मालूम नहीं था कि वक्केम्मा सेवा करती हुई श्री स्वामी जी के यहीं रह गयी थी। श्री स्वामी जी को नमस्कार करने पर **श्री स्वामी जी ने बताया कि मैंने सोचा था कि वक्केम्मा मर गयी थी। मन में रहने वाले आशा व्यामोह,** 30 **बन्धुप्रीति आदि चापल्यों को श्री स्वामी जी अपने आप प्रक्षालन करते थे। हमारे आध्यात्मिक पुरोभिवृद्धि के प्रति उनकी श्रद्धा, शक्ति और सामर्थ्यों के बारे में हम इन बातों के द्वारा समझ सकते हैं। वे अपनी बातों के द्वारा ये सब हमें अवगत कराते थे।**

निरंतर स्वामी जी की सेवा में रहने वाली गुत्ता नरसम्मा कि कुछ समय अपने रिस्तेदारों के पास जाकर बिताना चाहती थी। श्री स्वामी जी उसे कहीं भी नहीं भेजते थे। एक दिन श्री स्वामी जी ने एक चिट्ठी पर इस प्रकार लिखकर नरसम्मा को भेजे थे कि नरसम्मा मर गयी थी। उस चिट्ठी को पढ़ने के बाद नरसम्मा को अपने रिस्तेदोरों के पास जाकर समय बिताने की इच्छा ही दूर हो गई थी।

श्री स्वामी जी के टीम में बहुत सेवक अपने – अपने कामों के लिए बाहर जाया करते थे। तुलसम्मा ने वक्कम्मा से कहा कि श्री स्वामी जी को माँड दे दो। मैं स्नान करने जा रही हूँ। वक्कम्मा कभी भी श्री स्वामी जी को माँड देने की सेवा नहीं की थी। यही नहीं वह हरिजन जाति के होने से वह ऐसी सेवा कर सकती है या नहीं भी उसे मालूम नहीं था। इस शंका से माँड हाथ में लेकर श्री स्वामी जी के सामने खडी हुई थी। सर्वज्ञ श्री स्वामी जी वक्कम्मा की मन की बात समझकर कहा क्यों वही खडी हो। लाकर माँड इसमें डाल दो। अपने हाथ में रही एक मटके को आगे बढ़ाए थे। सत् पुरुषों के प्रति भक्ति, श्रद्धा पवित्र व्यवहार जिनके पास होते है उनके प्रति कोई जाति भेद श्री स्वामी जी नहीं दिखाते हैं। श्री स्वामी जी सदा जाति भेदों से दूर रहते थे। सबको एक समान देखते थे।

सच कहे तो उसका स्वभाव ही ऐसा होता था। एक बार नेल्लूरु बस स्टेशन में वह सो रही थी। इतने में एक डाकू आकर उसके दाएँ कान का आभूषण को लूटने का प्रयत्न कर रहा था। यह समझकर वह चुपचाप रह गयी थी। इसके बाद वह एक तरफ मुढ़कर बाएँ कान के आभूषण को भी लेने के लिए सहयोग देने लगी थी। सुबह किसीने पूछा कि आपके कानों के आभूषण कहाँ चले गए थे। तब वक्केम्मा ने बताया कि मेरे से भी अधिक गरीब दरिद्र व्यक्ति ने मेरे कान के ये आभूषण निकाल दिया था। मैंने ही उसे लेने के लिए सहयोग दे दिया था।

गोपवरम् में एक कुत्ता एक किसान के भेडों में से एक - एक भडे को हर दिन मार कर खा रहा था। किसान ने नाराजगी से उस कुत्ते को मार डाला था। विचित्र बात है कि बाद किसान के जितने भी संतान हुए थे, सभी कुत्ते की तरह भौंककर मरने लगे थे। तब अपनी बाधा श्री स्वामी जी को उसने बताया था। जन्म लेगा, जन्म लेगा,

जन्म लेगा ... इस प्रकार तीन बार श्री स्वामी जी चिल्लाए थे। श्री स्वामी जी के आशीर्वाद से बाद तीन बच्चे पैदा हुए थे।

मंदल वेंकय्या को श्री स्वामी जी से परिचय नहीं था। 1956 में एक दिन सुबह श्री स्वामी जी वेंकय्या के सामने से आते दिखाई दिए थे। श्री स्वामी जी ने कहा तुझे एक बात बताना है। बाद में मेरे पास आना। जरूर आना। ऐसा कहकर वहाँ से चले गए थे। उस गाँव का एक निवासी श्री स्वामी जी को अपने घर ले जा रहा था। उसके साथ वेंकय्या भी पहुँच गए थे। श्री स्वामी जी अपने साथ एक मटका और एक लकडी लेकर जा रहे थे। वेंकय्या उनके साथ चल रहे थे। श्री स्वामी जी उनके घर पहुँचने के बाद बताए थे कि यहाँ सब कुछ ठीक है। ये यहाँ सफेद घर बनाएगा। ऐसा कहकर जमीन पर एक घर का चित्र खींचकर दिखाए थे। श्री स्वामी जी उस घर के ईशान्य दिशा में एक छोटा सा गड्ढा खुदवाकर उसमें दूध डालवाए थे। बाद में वहीं वेंकय्या ने अपना घर बनवाया था। उसी घर में श्री स्वामी जी ने भोजन भी किया था।

वेंकय्या को नया घर बनाने की आर्धिक स्थिति नहीं थी। आश्चर्य की बात थी कि वेंकय्या ने कुछ जमीन भी खरीद लिया था और श्री स्वामी जी कहने के अनुसार एक नया घर भी बनाया था। वह भी श्री स्वामी जी जिस प्रकार के नमूने को दिखाए थे ऐसा ही घर बनाया था। ऐसी स्थिति देने वाले श्री स्वामी जी के प्रति वेकय्या ने कृतज्ञता ज्ञापित किया था। जीवन भर उनकी सेवा में लगी रही।

चिलकलमर्रि के निवासी देवुडय्या बहुत गरीब था। लेकिन श्री स्वामी जी का परम भक्त था। त्यागशील था। जब भी श्री स्वामी जी उनके गाँव आते थे देवुडय्या ही 5,6 बार उनको आतिथ्य देता था। देवुडय्या की धर्मबुद्धि के लिए श्री स्वामी जी बहुत पुलकित हो जाते थे। श्री स्वामी जी ने समझा होगा कि ऐसे देवुडय्या धनवान बने तो सबके लिए आनंद दायक होगा। एक बार श्री स्वामी जी देवुडय्या से एक मटके भर माँड (अंबली) बनवाकर ईशान्य दिशा में एक बडा गड्ढा बना कर उसमें रखवाए थे। उस दिन से श्री स्वामी जी की कृपा से देवुडय्या दिन व दिन धनवान बनता रहा, सबकी सेवाएँ करने लगा था। समाज में उच्छ स्थिति प्राप्त कर लिया था।

नेल्लूरु के निवासी तिरुपति जानकी रामय्या की बेटी रमनम्मा श्री स्वामी जी के बारे में सुनकर उनके दर्शन के लिए बुहत दिनों से इंतजार करती रही थी। लेकिन श्री स्वामी जी के दर्शन भाग्य उसे नहीं मिला था।

एक बार श्री स्वामी जी नेल्लूरु सरकार अस्पताल के सामने वाले धर्मशाला में ठहरे हुए थे। उन दिनों में वह पूरा प्रदेश जंगल जैसा दिखता था कोई भवन का निर्माण नहीं हुआ था।

उस समय कुछ दोस्त श्री स्वामी जी के दर्शन केलिए जाते हुए रमनम्मा को भी बुलाए थे। बिना भोजन खाए स्वामी जी को देखने के लिए उनके साथ चली गयी

थी। उसकी सहेलियों ने कहा कि हम सब भोजन खाकर आ रही है तुम भी खाना खाकर आयी तो ठीक होगा। रमनम्मा को बहुत दृढ विश्वास था कि यदि उसे भूख लगे तो श्री स्वामी जी उसे खाना खिलाएँगे। सहेलियों ने बताया कि श्री स्वामी जी और उनके सेवक बारह बजे को खा लेंगे। तुझे इस असमय में कौन खाना खिलाएँगे। उस समय श्री स्वामी जी और एक जगह ठहरने के लिए जा रहे थे। सभी भोजन खाने के बाद ही हम सब यहाँ से निकलेंगे कहकर श्री स्वामी जी सबको खाना खिला रहे थे। सेवकों ने कहा सबका खाना हो गया है क्या हम जा सकते है। तब श्री स्वामी जी ने कहा कि और कुछ आने वाले हैं ठहरो। इतने में रमनम्मा और उनकी सहेली वहाँ पहुँच गई थीं। सबको श्री स्वामी जी ने आशीर्वाद दिए थे। रमनम्मा को श्री स्वामी जी ने अति श्रद्धा से खाना खिलाए थे। और बोले थे कि रमनम्मा बिना खाए आ गई थी। उसे कुछ खाना खिलाइए। सेवकों ने कहा पका हुआ खाना हो गया है। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि देखो कहीं बरतनों में होगा। आश्चर्य की बात एक नहीं दो लोगों के लिए खाना बरतन में बचा हुआ था। उसे बुहत खुशी से रमनम्मा और उसकी सहेलियों ने प्रसाद के रूप स्वीकार कर खा लिया था। बाद में श्री स्वामी जी ने कहा कि रमनम्मा साधारण स्त्री नहीं है दूरदर्शी है।

एक बार श्री स्वामी जी ने एक चिट्ठी पर लिखकर दिए थे कि वक्केम्मा को 99 बार जन्म लेना पड़ता है। इस चिट्ठी को देखकर वक्केम्मा फूट - फूट कर रोने लगी। वक्केम्मा ने श्री स्वामी जी से बताया कि मुझे आप चाहे तो किसी जंगल में एक वृक्ष के रूप में जन्म लेने केलिए शाप दीजिए। लेकिन मुझे और एक बार मनुष्य जन्म लेने के लिए आशीर्वाद मत दीजिए। बहुत विनती करने पर श्री स्वामी जी उसकी बात मान ली और उसे और एक बार मनुष्य जन्म नहीं लेगी। ठीक है न?.. चिट्ठी पर लिखकर दिए थे।

तलुपूरु गाँव के निवासी वि. सुंदररामिरेड्डी जी इस प्रकार बता रहे थे।

1977 में श्री स्वामी जी को अपने सेवकों के साथ रहने के लिए श्री एस. वी. के. रेड्डी जी के पद्मावती खान के पास तीस अंकणों वाली विशाल झोंपडी बनाकर दिया गया था। एक दिन सुबह श्री स्वामी जी यहाँ एक क्षण भी नहीं रहूँगा तुरंत जाना है कहकर सबको जाने के लिए आज्ञा दे चुके थे। श्री स्वामी जी के सेवकों ने मद्याह्न दो बजे तक स्वामी जी की बात पर ध्यान दिए बिना अपने काम में रह गए थे। लेकिन श्री स्वामी जी उस स्थान को छोड़ने केलिए तैयार थे। सबको बार – बार बता रहे थे कि जल्दी से इस जगह से चले जाएँगे। इतने में अचानक झोंपडी में आग लग गयी थी। देखते - देखते ही पूरी झोंपडी जलने लगी। श्री स्वामी जी को सुरक्षित स्थान पर सेवकों ने ले गए थे। श्री स्वामी जी जोर - जोर से चिल्ला रहे थे कि यहाँ सोना बरसेगा। बाद सोना बरसेगा।

श्री स्वामी जी एक चिट्ठी पर लिखकर भेजे थे कि झोंपडी जलने से जो नुकसान हुआ था उसके लिए चिंता करने की जरूरत नहीं। यहाँ उनको बीस करोड रूपए मिलेंगे। अचरज की बात है कि कुछ ही दिनों में एस. वि. के रेड्डी जी को श्री स्वामी जी के आशीर्वाद से व्यापार में बहुत लाभ आए थे। उनकी आर्थिक स्थिति में बहुत बढोत्तरी आई थी।

श्री स्वामी जी एक बार वि. सुंदररामिरेड्डी के खेत में बसे हुए थे। वहाँ के सूखे पत्ते, गिरी लकडी और अन्य चीजों को अग्नि कुंड में डाले थे। उन चीजों में डैनमैट भी मिल जाने से आग में गिरते ही भयानक आवाज देते हुए भम जैसा फट गया था। वहाँ सभी भय से इधर – उधर दौडने लगे थे। लेकिन अग्नि कुंड के सामने बैठे हुए श्री स्वामी जी एक इंच भी बिना हटे रह गए थे। उनके मुँह में भय के कुछ चिह्न भी नहीं दिखाई दिए थे। सभी को तभी श्री स्वामी जी की स्थितप्रज्ञता के बारे में मालूम हुआ था।

ॐ नारायण – आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 10

पतितपावन

दत्त महिमा बताती है कि परम दयानिधि श्री परमात्मा दीन जनों के उद्धार के लिए महनीयों के रूप में जब तक यह श्रृष्टि रहेगी तब तक अवतरित होते ही रहते हैं। इन महनीयों की कृपा कितनी अपार है, जितनी अमोघ है, उनके इतिहास को देखने से ही पता चलता है। इस प्रकार की उनकी अव्याज कृपा जो आपदाओं में फँसे हुए लोगों की सहायता करना, दीर्घ बीमारियों से मुक्ति दिलाना ही नहीं पतितों को पावन बनाने में भी यह लीला कामयाब होती है। नारद महर्षि के दर्शन से क्रूर वाल्मीकी महर्षि बन गए थे। इसी प्रकार हमारे श्री स्वामी जी भी अनेक शराबी, दुर्जनों को सज्जन बनाए थे। ऐसी कुछ घटनाओं का विवरण यहाँ दिया जाएगा।

सहवास के प्रभाव से, जठिल समस्याओँ के समाधान न मिलने से उनके बारे में सोचते – सोचते मनःशांति खो बैठ कर या अन्य कारणों से शराबी बनकर, जुँआ खेलते हुए अपने जीवन को ही नहीं अपने परिवार के सदस्यों के जीवनों में भी अशांति फैला देते हैं। ऐसे बलहीनताओं से बाहर आने के लिए हृदयपूर्वक अपनी इच्छा प्रकट करना पडता है। इच्छा प्रकट किए बिना बलहीनताओं से बाहर नहीं आ पाते हैं। ऐसे लोगों को श्री स्वामी जी ही सहायता देकर बचा सकते हैं। सर्वप्रेरणाधिकारी, सर्वभूत हृदयांतर्वर्ति श्री स्वामी जी को असाध्य कोई नहीं होता है।

गोलगामूडि आश्रम के समीप एक पेड पर एक सारस घोंसला बनाकर अपने बच्चों के साथ जी रहा था। एक दिन उस प्रांत में निवास करने वाला एक साँप पकडने वाला उस सारस को मारने लिए धनुष पर बाण लगाकर खडा हुआ था। इसे देखकर वहाँ के आश्रमवासी उसे डाँटने लगे। बहुत बार डाँटने पर भी फिर एक बार सारस को मारने के लिए कोशिश कर रहा था। अंत में भक्त लोगों से श्री स्वामी जी को यह बात बताया। श्री स्वामी जी ने कहा कि उसका बाण सारस को लगेगा ही नहीं। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार बाण सारस को नहीं लगा। सारस उड कर चला गया था। इससे नाराज होकर वह साँपों को पकडने वाला ने अपने धनुष को टुकडा – टुकडा करके वहीं फेंक दिया था और फिर उस धनुष को नहीं पकडा था। श्री स्वामी जी की रक्षा सारस को ही नहीं उसे मारने वाले शिकारी को भी दिया गया था।

बहुत शराब पीने वाला बेतु जयरामय्या नायुडु 1978 में आकर श्री स्वामी जी के पाँवों को पकडकर श्री स्वीमी जी से विनती की कि यह मोह ऐसे ही रहने दीजिए। स्वामी जी के पावों को छोडने केलिए कहने पर भी वह नहीं छोडा था। अंत

में श्री स्वामी जी ने कहा चलो तेरी मन की बात संपन्न हो जाएगी। बाद नायुडू का जीवन बदल गया था। उसने शराब पीना छोड़ दिया था। किसी से व्यर्थ बातों में समय बरबाद करना भी छोड़कर सदा मौन रहने लगा था।

गोलगामूडि के तूलिपि वेंकय्या हमेशा शराब पीता था, मुर्गी के झगडों के व्यसन में पैसा लगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को खराब कर दिया था। उसकी पत्नी पिच्चम्मा को स्वामी पर अपार भक्ति थी। वह आश्रमवासियों के और श्री स्वामी जी के लिए कपडे धोकर दिया करती थी। अपने पति के दुर्व्यवहार के बारे में बुहत बार बताने पर भी श्री स्वामी जी मौन रहते थे। अपने भैंस के दूध निकालकर हर दिन पिच्चम्मा श्री स्वामी जी को देती थी। एक दिन काम अधिक होने से पिच्चम्मा श्री स्वामी जी के लिए दूध अपने पति के द्वारा भेजी थी। श्री स्वामी जी ने दूध पीकर कोकरोको मुर्गी की तरह आवाज दी। वहाँ बैठे हुए सभी लोग उसे सुनकर हँस पडे। क्योंकि उन सबको मालूम था कि वह व्यक्ति जो दूध लाया था वह मुर्गी के झगडों में अपना समय और पैसे बहुत खो बैठा था। श्री स्वामी जी के मार्गदर्शन पाकर उसके बाद वेंकय्या अपने पूर व्यसन छोड कर अच्छा इंसान बन गया था।

कुछ समय श्री स्वामी जी ने गोलगामूडि में आठ साल तक निरंतर अग्नि कुंड जलाए थे। उनके सेवक निकटवाले जंगलों में जाकर लकडी काटकर भैंसा गाडी में लादकर ले आते थे। उसी गाँव के सुब्बाराव के मनुष्य जंगलों से लकडी काटने केलिए मना करके उनका विरोध करने लगे। फिर भी सेवक लकडी काटना बंद नहीं किए थे। तब सुब्बाराव ने स्वयं आकर लकडी काटने से रोकने का प्रयत्न किया था। सुब्बाराव वहाँ खडे हुए स्वामी जी को देखकर अचानक उसका व्यवहार बदल गया था। उसने स्वामी जी को दिखाते हुए बता दिया कि ये तो पागल है उसे लकडी काटने दो। स्वामी आप नीम के पेड को मत काटिए। बाकी लकडी काट सकते है कहकर वहाँ से चला गया था।

श्री स्वामी जी की महिमा स्वयं देखने वाले गोलगामूडि के कोर्रपाटि वेंकम नायुडू जी इस प्रकार बता रहे थे।

श्री स्वामी जी ग्रामांतर पर्यटन को गए बिना गोलगामूडि में आठ साल तक निरंतर समाधि मंदिर में ही बैठकर पुण्यभूमि में निरंतर अग्नि जलाते हुए बिता रहे थे। गोलगामूडि के निकटतम गाँवों के जंगलों को काटकर हर दिन लगभग तीन या चार गाडी भर लकडी जला रहे थे। पूरा जंगल खाली हो रहा था। इसी तरह और कुछ दिन रहने से गोलगामूडि और कंटेपल्लि के गाँववालों ने समझा कि उनके लिए रसोई के लिए लकडी नहीं मिलेगी।

एक दिन कंटेपल्लि के कुछ युवकों ने श्री स्वामी जी के सेवकों से लड़कर लडकी काटने से रोकने और उनको वहाँ से वापस भेजने का निर्णय लिए थे। उस

समय मैं बकरी को ढूँढते हुए उसी कंटेपल्लि के जंगल में गया था। वे सभी युवा लोग श्री स्वामी जी को गालियाँ देते हुए और बहुत युवकों को लड़ने केलिए इकट्ठा कर रहे थे। श्री स्वामी जी को गालियाँ देने से रोकने के लिए मेरे बहुत प्रयत्न करने पर भी वे नहीं सुन रहे थे। वे सभी युवा हाथ में लकडी लेकर लकडी काटने वाले सेवकों की तरफ जा रहे थे। उस स्थिति में वे युवक स्वामी जी को और सेवकों को मारने की शंका से मैंने भी उनके पीछे दौडा था।

वह भीड कुछ दूर श्री स्वामी जी के सामने आकर रूक गयी थी। सभी के मुँह बंद हो गए थे। उनकी गति मंद पड़ गई थी। वे सभी श्री स्वामी जी के पास जाकर वहाँ कटी हुई लकडी को इकट्ठा कर रहे थे। कुछ लोग लकडी गाडी में लाद रहे थे।

मैंने सोचा था कि ये सभी लकडी वे अपने घर ले जाएँगे। तो श्री स्वामी जी के अग्नि कुंड के लिए लकडी कैसी मिलेगी? तब कुछ युवक श्री स्वामी जी से बोले, स्वामी जी बोलिए और कुछ लकडी काटने के बाद में हम इकट्ठा करके गाडियों में लादकर आपके आश्रम में पहुँचाएँगे। श्री स्वामी जी ने कुछ पेडों को दिखाकर बताया कि इन पेडों को हमारे सेवक नहीं काट पा रहे थे। आप इनको काटकर कल ले आइए। हाँ.. कहकर युवक गाडी के पीछे अपने भुजाओँ पर कुछ लकडी की डालियों को रखकर आश्रम की ओर चल पडे। गाडी के साथ वे जितना ला सके उतनी लकडी ले आकर आश्रम में अग्नि कुंड के लिए रख दिए थे। और बाताए थे कि कल आप जो लकडी हमें काटने केलिए बताये थे उसे काटकर ले आएँगे। युवकों की आवाज में आई बदलाव को देखकर मुझे आश्चर्य हो गया था। यह केवल श्री स्वामी जी की महिमा के कारण ही हुआ था।

नागुलवेल्लटूरु के मालेपाटी चेंचम्मा ने पहली बार श्री स्वामी जी के दर्शन करके उनसे विनती की कि और एक बार मुझे जन्म नहीं दीजिए। स्वामी जी ने बताया कि चेंचम्मा बहुत तेज है। वह सब कुछ कर सकती है। श्री स्वामी जी चेंचम्मा को अपने पास ही रहने के लिए कहते थे। लेकिन वह अपने परिवार को छोड़कर नहीं आती थी। एक बार श्री स्वामी जी को कहे बिना आश्रम छोड़कर चली गई थी। बाद में अनेक बार स्वामी जी के दर्शन केलिए आती थी। श्री स्वामी जी उसे अपने घर नहीं जाने देते थे। लेकिन वह श्री स्वामी जी को बताए बिना ही चली जाती थी। एक बार श्री स्वामी जी ने उसे सपने में दर्शन देकर मंत्रोपदेश दिए थे। और एक बार सपने में दर्शन देकर उसे चंदमा को दिखाए थे और बताये थे कि यह है आवश्यक बदलाव। अब लोक बदल गया था।

बहुत दिनों तक उनकी सेवा केलिए चेंचम्मा नहीं आयी थी। तब श्री स्वामी जी ने उसके मन को बदल दिया था। तब वह खाली हाथों से घर से सीधा श्री स्वामी जी के आश्रम पहुँच गयी थी। श्री स्वामी जी उसके मन में बहुत परिवर्तन ले आए थे।

अब उसे कोई साधन करने की इच्छा नहीं थी। किसी लौकिक व्यवहार या बंद न उसे याद नहीं आते थे। निरंतर गुरू के ध्यान में ही रहती थी। उसकी बाधा एक ही थी कि उसका मन उसके अधीन में पूरी तरह नहीं आया था। एक दिन श्री स्वामी जी ने स्वप्न में बताया कि तेरे पास क्रोधी घोडा रहने पर वह तुम्हारी बात नहीं मानेगा। ऐसे घोडे को मुझे दे दो। इसका मतलब था कि श्री स्वामी जी उसके चपल मन को नियंत्रण में रखना चाहते थे। अन्य चिंतन छोड़ने की सलाह भी दिए थे। श्री स्वामी जी को जो चाहते थे उनके लिए इससे बढ़कर और क्या आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिल सकता है?

नागुलवेल्लटूरु का नूतेटि श्री रामय्या बहुत दिनों से श्री स्वामी जी के भक्त था। परिवार की जिम्मेदारी अपने पुत्र को सौंपकर श्री स्वामी जी की सेवा करने के लिए गोलगामूडि पहुँचे थे। उनके आने के पहले श्री स्वामी जी दो दिनों से माँड भी नहीं पी रहे थे। मौन में थे। श्री रामय्या जी आते ही श्री स्मामी जी को नमस्कार किया था और मन की बात बताया कि केवल आपकी कृपा से ही मैं इस धरती पर हूँ नहीं तो बहुत दिनों के पहले ही सर्वनाश हो गया होता। श्री स्वामी जी आँख खोलकर हँस पडे थे। श्री रामय्या के आते ही श्री स्वामी जी क्यों हँस पडे। सभी को आश्चर्य हुआ था। उस दिन से अंतिम स्वास तक वे स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार सेवा में रहकर उनके लिए अनिकेपल्लि से प्रति दिन भिक्षा माँगकर ले आते थे।

राजमपेटा के एल्लंराजु ईश्वरराजु विद्यानगर शिर्डी साई के मंदिर आविष्करण के संदर्भ में आविष्कृत ग्रंथ सद्गुरु दर्शन का अध्ययन किए थे। उस ग्रंथ में श्री स्वामी जी के बारे में पढ़कर श्री स्वामी जी के दर्शन करने केलिए गोलगामूडि आए थे। श्री स्वामी जी के पाद तीर्थ स्वीकार करके उन्हें अद्भुत लगा। उनमें तन्मयता बढी। उस दिन के बाद से बहुत दूर होने पर भी श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए बार – बार आते रहे थे। आज भी वे श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए आते ही रहते हैं।

बद्वेलु के सुब्बारेड्डी जी इस प्रकार बताए थे। श्री स्वामी जी के अग्नि कुंड में आवश्यक लकडी भेजने वाली गाडी के भैंस खेत में फसल खाते रहने से उन्हें पकड कर ले जा रहे थे। खेत के मालिक से बहुत विनती करने पर भी वह भैंसों को नहीं छोडा था। बीच में श्री स्वामी जी ने पूछा भैंसों को कहाँ ले जा रहे हो। उस मालिक ने समाधान नहीं दिया था। तब श्री स्वामी जी ने उसे इशारा किया कि ठहर जाओ। आश्चर्य की बात दोनों भैंस और वह मालिक अचानक ठहर गए थे। यह तो मेरा काम नहीं, यह तो समाज हित का काम है। यदि चाहे तो कुंड के कुछ भाग तुम ले लो।

ऐसा काम कभी भी मत करो। माँ से पूछ कर खाना खाओ। स्वामी जी की बातों से उसमें परिवर्तन आ गया था। वह बाद में हर दिन श्री स्वामी जी के आश्रम आकर कुछ सेवा भी करने लगा था।

तिरुपति जानकी रामय्या की बेटी रमनम्मा अपनी दीदी की बेटी के साथ श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए गोलगामूडि आयी थी। उनको देखकर श्री स्वामी जी ने अपने पास आने के लिए अनुमती नहीं दी थी। उनको देखकर बहुत नाराज हो उठे। अपने हाथ की सभी चीजों को धुनि में फेंकते हुए वे भी धुनि में गिरने के लिए तैयार हो गए थे। स्थिति को देखकर श्री स्वामी जी के सेवक उनको वहीं रोक दिए थे। कुछ समय के बाद रमनम्मा ने बताया कि वह श्री स्वामी जी से कुछ बात कहना चाहती है। श्री स्वामी जी ने साठ फुट दूर से बात कहने की अनुमती दी थी। रमनम्मा ने कहा कि स्वामी जी मैं आप जो भी दण्ड देंगे मैं उसे भोगने केलिए तैयार हूँ। लेकिन आप को छोडकर मैं अब नहीं जा सकती हूँ। फूट - फूट कर रोने वाली रमनम्मा को देखकर श्री स्वामी जी ने सेवकों से पूछा कि ये रमनम्मा दण्ड भोगने केलिए तैयार है। तो उसे ले जाकर आंजनेय स्वामी जी के मंदिर में जाकर रात भर भजन करवाओ। वह सुबह वापस माँ के पास आ जा सकती है। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार वह सुबह आकर श्री स्वामी जी के आशीर्वाद पायी थी। लेकिन उसकी दीदी की बहिन घर चली गयी थी।

एक दिन श्री स्वामी जी दर्शन के लिए बहुत अलंकरणों से खरीदी साडी पहनकर तीन महिलाएँ आयी थी। श्री स्वामी जी बैठने केलिए कहने पर भी साडी को मिट्टी लग जाने की आशंका से उनमें से दो महिलाएँ ताड के पत्तों पर बैठने के लिए तैयार नहीं हुई थी। एक महिला ही ताड के पत्ते पर बैठी थी। बैठी महिला के लिए चिट्ठी लिखवाकर दिए थे। खडी हुई महिलाओं को कुछ दिए बिना भेज दिए थे। **श्री स्वामी जी अनुग्रह मूर्ति होने पर भी बिना कोई सोच विचार किए जो प्रेम से उनके दर्शन करते है, उनकी बात मानते हैं। वे ही उनकी कृपा का पात्र बनते हैं। तालाब** 32 **के पानी पाने के लिए मटके के साथ अवश्य झुककर पानी लेना पडता है। उसी प्रकार श्री स्वामी जी की कृपा पाने के लिए उनके सामने झुकना पडता है।**

एक दिन श्री स्वामी जी वेलूरु सुब्रह्मण्यम जी से कहा कि ग्राम देवती बंगारम्मा समुद्र स्नान के लिए जाकर आ गयी थी। गाँव के सभी लोगों को दूध की पोंगली पकाकर नैवेद्य लगाना है। यह बात सबको बताओ। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार गाँव के लोग दूध की पोंगली नैवेद्य के रूप में चढ़ाना शुरू किए थे। ग्राम देवता के लिए जंतु बलि देना छोड़ दिए थे।

ॐ नारायण आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 11

अवधूत वैद्य

परब्रह्म स्वरूप सद्गुरू अपने संकल्प से भयंकर रोगों का इलाज भी कर सकते है, मरे व्यक्तियों को फिर जिंदा रख सकते हैं। ये सभी लीलाओं का विवरण गुरू चरित और साई चरित में देख सकते हैं। **दत्तात्रेय परंपरा में अवधूत सांप्रदाय में रोगी को विषतुल्य पदार्थ देकर रोग का इलाज करना एक दिव्य लीला के समान दिखाया गया था।** उनकी बातों को मानने वालों को, विश्वास रखने वालों को वह अमृततुल्य होकर स्वस्थता देता है। इस अवधूत सांप्रदाय में महान् श्री स्वामी जी के द्वारा भी इस प्रकार के विष पदार्थों के द्वारा रोग का इलाज करना अनेक संदर्भो में देख सकते है। 33 33A

नागुलवेल्लटूरु के वलूरु रामानायुडु को राजयक्ष्मा रोग था। नेल्लूरु के डॉक्टर का इलाज भा उनका ठीक नहीं कर पाए थे। मद्रास को जाते हुए श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए आए थे। श्री स्वामी जी ने बताया कि तेरे फेफडों में कुछ छापें हैं। तुझे मद्रास जाने की जरूरत नहीं है। ठीक हो जाएगा। नागफनी के दूध पीओ। ठीक हो जाएगा। यह समाचार सुनते ही घर वाले हँस पडे और बताया कि श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार दूध पीने से आँख खराब हो जाते हैं और पेट भी खराब हो जाता है। डॉक्टरों की बात मानकर ऑपरेशन करवाकर मर जाने से स्वामी जी के कहने के अनुसार नागफनी दूध पीना उत्तम है निर्णय पर आकर श्री स्वामी जी के आश्रम आकर रामानायुडू ने नागफनी दूध पी लिया। बाद उसका पूरा रोग ठीक हो गया था वह स्वस्थ रहने लगा। बाद में बहुत दिनों तक वह स्वस्थ होकर श्री स्वामी जी की सेवा करता रहा था।

श्री स्वामी जी वेंकटरेड्डी पल्ले में ठहरे हुए थे। बद्वेलु के बापनपल्लि के एक व्यक्ति ठंड और ज्वर से तडप रहा था। उन दिनों में वहाँ के वैद्यों से उसका रोग ठीक नहीं हुआ था। उसने श्री स्वामी जी का शरण लिया था। श्री स्वामी जी ने उसे हाथ भर मूँगफली देकर खाने को कहा। वह खाने के लिए तैयार नहीं था। तब श्री स्वामी जी ने कहा कि तेरे ज्वर के लिए यही औषध है, खाने से ठीक हो जाएगा। श्री स्वामी जी मूँगफली खाने के बाद एक मटके भर खारे पानी देकर पिलवाए थे। बाद नजदीक के नदी के किनारे ले जाकर उसे वहाँ के रेत में एक गड्ढा खुदवाकर उसमें बिठवाए थे। सिर तक रेत भर दिए थे। एक घंटे के बाद ले आने की आज्ञा दी। सबने सोचा कि इससे वह मर जाएगा। लेकिन आश्चर्य की बात रेत की गड्ढे से निकालते ही उसका ज्वर और ठंडापन पूरी तरह ठीक हो गया था। खाना भी खाया था। श्री स्वामी जी के

इस प्रकार के विचित्र लीलाएँ गुरुचरित्र और श्री साई बाबा चरित, श्री अक्कोलकोटा स्वामी के चरित में देख सकते हैं। अवधूतों में मुख्य श्री दत्तात्रेय स्वामी की लीलाएँ इनमें प्रमुख है।

श्री स्वामी जी की दिव्य लीलाओं के बारे में मुदिगेडु गाँव के निवासी सुने हुए थे। बहुत बार विनती करने से श्री स्वामी जी मुदिगेडु गाँव पधारे हुए थे। उस गाँव में धोबी रोशय्या शरीर में एक घाव से पीडित था। वह घाव शरीर के एक तरफ से दूसरे तरफ तक फैल गया था। घाव से रक्त और दुर्गंध फैल रहा था। केवल द्रव आहार ही ले रहा था। घाव से रक्त निरंतर बहता रहता था। कोई भी डॉक्टर उसका इलाज नहीं कर पाए थे।

उसकी दीन कहानी सुनकर श्री स्वामी जी ने अपने बाएँ पाव की अंगुली से कुछ मिट्टी उठाकर उसे एक कपडे में बाँधकर उसे दिया और उसे उस घाव में रखकर बाँधने को कहा। और केसरी की डालियाँ लाकर उन्हें वहीं जमीन पर गाड कर पानी डालकर जाने को कहा। केसरी की डालियों से नवीन पत्ते निकलते ही उसका घाव ठीक हो गया था।

इस दिव्य लीला ने मुदिगेडु के गाँव वालों के हृदय में श्री स्वामी जी के प्रति श्रद्धा और भक्ति जगाई थी। उसके बाद अनेक लोग श्री स्वामी जी के भक्त बन गए थे। वे भजन और पूजा के द्वारा श्री स्वामी जी की आराधना करने लगे।

कोल्ला जयरामराजु ठंड और ज्वर से (चेलिदि) से पीडित था। यह विषय श्री स्वामी जी को बताने पर श्री स्वामी जी उससे एक किलो मूँगफली जबरदस्त खिलवाए थे। बाद मट्ठा पिलवाए थे। नदी में नहाकर आने की आज्ञा दी। नदी में नहने से उसका पूरा रोग गायब हो गया था। श्री स्वामी जी के ऊपर उसकी श्रद्धा और बढ़ गई थी।

मोतीझरा (टाइफाइड रोग) से तडपनेवाले एक रोगी को साई भगवान दूध में पिस्ता मिलाकर खिलवाया था और संग्रहणी (डयोरिया) से पीडित रोगी को मूँगफली खिलाकर पानी पिलवाना हम पढे हुए होंगे। उसी तरह श्री स्वामी ने जी इनकी इलाज करवायी थी। निषिद्ध आहार से रोगों का इलाज करवाना अवधूतों को मुख्यतः दत्तात्रेय को साधारण सी बात थी। यह उनकी लीला है। इसलिए ही दत्तभागवत बताता है कि अवधूत सभी दत्तात्रेय के रूप ही है।

एक समय पाँच साल की बच्ची को पेट में एक गांठ पैदा होकर शरीर के बाहर भी आ गया था। बहुत इलाज करने पर भी ठीक नहीं हुआ था। उस बच्ची को वे श्री स्वामी जी के पास ले आए थे। स्वामी जी ने उस बच्ची को अपने हाथों पर सुलवाकर एक सीढियों वाले कुएँ के पास ले गए थे। वहाँ उस लडकी को पानी से एक मीटर ऊपर उठाकर पानी में गिरा दिए थे। बाद उस बच्ची को ऊपर लाकर उसके

पेट पर अपना पैर रखकर एक बार दबाए थे। उस बच्ची के पेट में रहने वाली गांठ से रक्त और बुरे रस मुँह से और गुदा से बाहर आ गए थे। कुछ ही दिनों के बाद में वह बच्ची स्वस्थ हो गई थी।

श्री स्वामी जी जब ताडिपत्री में थे तब 1975 में एक पागल युवक को रस्सियों से बाँधकर ले आए थे। श्री स्वामी जी ने उससे कहा कि अग्नि कुंड से निकलने वाली धुँआ को अपने अंदर ले लो। चार आदमी मिलकर उस युवक से धुँआ के सामने रखकर श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार किए थे। सुबह होते ही वह ठीक होने लगा और एक हफ्ते में ही वह साधारण युवक बन गया था।

एक बार श्री स्वामी जी ने वेलूरु रामानायुडू को पन्द्रह दिन तिरुवल्लूरु निकट तम प्रदेशों की तीर्थयात्रा करके आने की आज्ञा दी थी। जानेवाले नायुडू को बुलाकर दो चीजों के बारे में बताकर उन्हें खरीदकर रस्सी से कटि में बांधने की सलाह दी। श्री स्वामी जी ने बताया ऐसा करने से तेरी ही नहीं सामने वालों की सभी बीमरियाँ गायब हो जाएगीं। भविष्य में भी तुम स्वस्थ रहोगे। रेल में जाते वक्त उनके सामने एक भिखारिणी ज्वर से तडप रही थी। नायुडू जी ने उसको स्वस्थता देने की प्रार्थना की। उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह देखते ही स्वस्थ हो गई थी। इस प्रकार अपनी यात्रा में अनेक लोगों की बीमरियों को ठीक करते हुए यात्रा पूरी करके श्री स्वामी जी के पास वापस आ गए थे। श्री स्वामी जी के दर्शन करते समय एक व्यक्ति अपने बैल को अस्वस्थता कारण ले आए थे। रामानायुडू ने बैल के पास जाकर बैल से बीमारी हट जाने की आज्ञा दी। लेकिन वह बैल मर गया था। भक्त लोग सोचने लगे कि श्री स्वामी जी इतने लोगों को स्वस्थता दिए हुए थे लेकिन उनकी शक्ति कहाँ चली गयी थी। यह बात उनकी समझ में नहीं आई थी। तुरंत श्री स्वामी जी से इस विषय के बारे में पूछे थे। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि अब वह शक्ति नहीं काम आएगी। यात्रा से वापस आकर मेरे दर्शन करते ही तेरी शक्ति चली गयी थी। सबकी रोगों को मिटाने वाले श्री स्वामी जी ही है, उनसे दिया हुआ पदार्थ नहीं है।

एक बार स्वामी जी ने अपने सेवक को एक मंत्र का कपडा देकर बताया कि इस कपडे से तुम दूसरों की बाधाओं को हटा सकते हो। सेवक ने तेरह लोगों को जिनको साँप, बिच्छु आदि डसने से उस मंत्र कपडे की सहायता से उनकी बाधा को दूर किया था। बाद में और कुछ लोगों की बाधा दूर करने के लिए प्रयत्न करने पर कुछ समय के बाद ही उनकी बाधा दूर हुई थी। **तब सेवकों के पूछने पर श्री स्वामी जी ने बताया कि लाख पाप करने पर एक बार बिच्छु काटता है। यदि वह पाप को भोगने के पहले ही उसकी बाधा को दूर करने से और एक बार ऊपर वाला बिच्छु को भेजकर उसे काटवाता है। तब पूरा पाप और एक बार भोगना पड़ता है। इसके अलावा**

अब कुछ समय दर्द भोगने से अच्छा है न। कर्मफल किस प्रकार काम करता है सद्गुरु जी उस पाप से किस प्रकार मुक्ति देते हैं सविवरण बताए थे।

1986 तक मल्लिक वेंकय्या निरंतर श्री स्वामी जी के लिए अग्नि कुंड के लिए आवश्यक बोंतजेमुडु जाती की लकडी भेजते थे। बोंतजेमुडु से निकलने वाला दुध यदि शरीर पर गिरे तो घाव कर देता है। उसी प्रकार यदि पशु इन पेडों से टकराए तो उनके शरीर पर भी घाव बन जाते हैं। उस प्रकार के भयानक प्रभाव डालने वाली लकडी को पेड से काटकर उसे गाडियों में लादकर भेजते समय शरीर पर लकडी का दूध पड़ने पर भी कुछ भी नहीं होता था। अनेक बार दूध उनकी आँखों में भी गिरा था। फिर भी उसका प्रभाव कुछ नहीं पडा था। यह सब श्री स्वामी जी की सेवा के प्रभाव का फल है।

श्री स्वामी जी रापूर तालूक ने मुदिगेडु गाँव में आए हुए थे। एक दिन एक महिला को श्री स्वामी जी के पास ले आए थे जो गर्भ संबंधी रोग से तड़प रही थी। बहुत डॉक्टर इलाज करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ था। बाद में श्री स्वामी जी के पास ले आयी गयी थी। दो तीन दिनों तक श्री स्वामी जी कुछ नहीं बोले थे। तीसरे दिन वह महिला ने अपनी बीमारी से ऊबकर अग्नि कुंड में कूद कर मरने का निश्चय किया था। और रात में कुंड में कूद गई थी। आश्चर्य की बात उसे वहाँ के अग्नि से कुछ नहीं हुआ था। दीर्घ रोग से मुक्ति पाई थी।

पालकोल्लु सुब्बम्मा जी को थैयराइड के कारण फोडा (कैंसर) हो गया था। रायवेलूरु में इलाज भी करवाया गया था। ऑपरेशन भी किया गया था। सुब्बम्मा को ऑपरेशन से बहुत भय था। ऑपरेशन के पहले उसने श्री स्वामी जी से प्रार्थना की थी। ऑपरेशन के समय उसे लगा कि श्री स्वामी जी उसके साथ ही बैठे हुए थे। धैर्य के साथ ऑपरेशन थियेटर में चली गयी थी। ऑपरेशने भी सफलता पूर्वक पूरा होकर वह स्वस्थ हो गयी थी।

नागुलवेल्लटूरु के निवासी पट्टाभि रामय्या बचपन में पाँच साल तक ठंड, ज्वर और संग्रहणी से पीडित थे। उनके माता - पिता बहुत बार तरह – तरह के इलाज करवाए थे। मंत्र तत्र भी करवाए थे। कोई सफलता नहीं मिली थी। उनको लगा कि वह लडका मर जाएगा। उसी समय वहाँ के निकट गाँव बद्वेलु तिप्प के पास आए हुए श्री स्वामी जी के पास ले आए थे। स्वामी जी ने उसे देखकर बताया कि वह आनेवाले दिनों में बहुत धनवान बनेगा। बहुत भवनों का निर्माण भी करेगा। बाद में श्री स्वामी जी ने उसे कुछ कच्चे मूंगफली देकर खिलवाए थे और मंत्र का कपडा देकर उसे भेज दिए थे। बाद उसका पूरा रोग ठीक हो गया था।

श्री स्वामी जी की बात पर पट्टाभिरामय्या जी को बहुत विश्वास होता था। 1971 में श्री स्वामी जी को कहे बिना ही भवन निर्माण शुरु कर लिए थे। दीवारों का

निर्माण पूरे हो गए थे। आठ महीने बीत जाने पर भी चौरस (स्लाब) नहीं डाल सके थे। गलती मालूम होने से श्री स्वामी जी के पास जाकर उनके आशीर्वाद के लिए विनती की। श्री स्वामी जी ने बताया कि पूर्वकाल में वह शवों को दफनाने की जगह है। उस स्थल को छोडकर चार या पाँच फुट दक्षिण की ओर भवन का निर्माण करो। भवन पूरा हो जाएगा। दस हजार रूपए खर्च करके बनाई गई दीवारों को निकाल कर नए जगह भवन का निर्माण करने से भवन पूरा हो गया था। उसका परिवार उस नूतन भवन में खुशी से रहने लगे थे।

नूतेटि ने श्री रामय्या जी के नींबू का पेड बहुत बडा होने पर भी कुछ फल नहीं दे रहा था। श्री स्वामी जी को बताने पर उन्होंने कहा कि निकट के तालाब से पानी लाकर हर पेड के ऊपर छिडकिए। तबसे पेड बहुत फल देगा। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार उन्होंने ऐसा ही किया था। एक ही समय में पूरे खेत में सभी नींबू के पेडों में फल निकल आए थे।

पसुपुलेटि लक्ष्मम्मा को जितने भी बच्चे पैदा हुए थे सभी मर चुके थे। तब किसी के कहने पर वह श्री स्वामी जी के दर्शन करने आई थी। स्वामी जी ने बताया कि उनके साथ रहने से बहुत धन आएगा। लाभ भी होगा। एक बार स्वामी जी सपने में बताए थे कि दो दिन भजन करने से तुम भी स्वामी जी के प्रियतमा बन पाओगी। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार वह श्री स्वामी जी के पास बैठकर भजन करने लगी थी। बहुत दिन होने पर भी स्वामी जी ने उसे जाने के लिए अनुमति नहीं दी थी। बीमारी के कारण उसकी माँ पलंग पर पडी हुई थी। यह विषय श्री स्वामी जी को बताने पर उन्होंने बताया कि कुछ पैसे देकर किसीको माँ की सेवा के लिए रखो। यहाँ लाखों रूपए तुझे मिलने की संभावना है। लक्ष्मम्मा का भाई आने पर भी यही विषय बताकर उसे भी भेज दिया था। भाई जाने के बाद और एक बार सेवकों के द्वारा श्री स्वामी जी को अपने घर जाकर माँ की सेवा करने की मन की इच्छा बताने की कोशिश की। तब श्री स्वामी जी ने सेवकों को बताया कि उसके भाई को बताओ कि लक्ष्मम्मा के पावों में घाव होने के कारण यहाँ पडी हुई थी। उसे माँ की सेवा के लिए ले जाना व्यर्थ है। लेकिन लक्ष्मम्मा के पाँव पर कोई घाव नहीं था।

आश्चर्य की बात थी कि दूसरे दिन सुबह लक्ष्मम्मा के पाँव पर एक घाव अचानक आ गया था। श्री स्वामी जी ने उसे दिखाते हुए सेवकों से कहा कि देखो उसे मैंने बताया कि भजन करते हुए यही पडे रहो। उसने मेरी बात नहीं मानी थी। उसके दिमाग में और एक विचार होने के कारण यह घाव आ गया था। श्री स्वामी जी की बात सुनकर लक्ष्मम्मा पश्चात्ताप व्यक्त की थी।

शाम को श्री स्वामी जी ने लक्ष्मम्मा को बुलाकर कहा क्या तेरे पाव में घाव निकले क्या? कोई चिंता नहीं। ठीक हो जाएगा।... कहकर अपने हाथ को घाव पर

रखे थे। दूसरे दिन पाव के घाव गायब हो गए थे। तब से वह बहुत बार आकर श्री स्वामी जी के दर्शन करने लगी थी।

तलुपूरु के जी वी रमनय्या जी इस प्रकार बता रहे थे।

श्री रमनय्या जी पेट में दर्द के कारण इलाज के लिए अनेक डॉक्टरों से मिले थे। कोई उपशमन नहीं मिला था। इसी विषय पर श्री स्वामी जी से मिलने केलिए केला और दक्षिणा साथ लेकर गया था। श्री स्वामी जी केला नहीं लिए थे। उनको बगल के अग्नि कुंड में डालवा दिए थे। मेरे प्रश्न के पहले ही वे मेरे पेट के दर्द के बारे में बताने लगे थे।

गाँव के उत्तर दिशा में रहने वाले के घर में बिना कहे जाकर भोजन खाकर वहीं रात भर सो जाओ। तब तेरे पेटे का दर्द ठीक हो जाएगा। यह अवधूत वैध्य पद्धति नहीं मालूम होने से मैंने समझा कि स्वामी जी की बात सच नहीं है। उनकी सलाह को मैंने छोड दिया था। बहुत दिनों तक मैं पेट दर्द से परेशान हो ही रहा था। लेकिन श्री स्वामी जी मुझे नहीं छोडे थे। एक दिन मेरे घर में कोई नहीं थे। रात 9.30 को खाना पकाने केलिए चूल्हा जला रहा था। अचानक मेरे गाँव के उत्तर दिशा में रहने वाले मंदिर के पुजारी आकर अपने साथ ले जाकर खाना खिलाए थे। वहाँ केवल मैं कुछ लाचार और मट्ठा से भोजन खाया था। लेकिन श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार मेरे पेट का दर्द पूरी तरह ठीक हो गया। मैं स्वस्थ रहने लगा था।

श्री स्वमी जी के दिव्यवाक् और अनुग्रह बल के बारे में जितना कहने पर भी कम ही रहेगा।

ॐ नारायण- आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 12

सज्जन वदिता

रमण महर्षि ने कहा कि ज्ञानी ही ज्ञानी को पहचान सकता है। मोती की कीमत मोती के व्यापारी को ही मालूम होती है। बैंगन बेचने वाले को मालूम नहीं होती है। लोग जब मानते थे कि श्री स्वामी जी बहुत अच्छी तरह प्रश्नों का जवाब देते है तब ही ऋषिकेश से चिदानंद स्वामी, देवानंद स्वामी जी आकर श्री स्वामी जी को परमानंद स्वरूप मानकर पादाभिनंदन किए थे। उसी प्रकार आचार्य भारद्वाज जी श्री स्वामी जी के दर्शन करने के बाद अपने परिचित सभी लोगों को श्री स्वामी जी की महानता के बारे में बताकर उनके दर्शन करने की सलाह देते थे। वे स्वामी जी को धरती पर अवतरित दैव स्वरूप मानते थे। उनका यशोगान करते थे। उसी प्रकार अनेक अवधूत आकर श्री स्वामी जी के दर्शन करके उनका आशीर्वाद पाकर जाते थे। श्री स्वामी जी के सेवकों के पास दर्शन किए हुए उन अवधूतों का विवरण नहीं था।

गोपारं के निवासी पालकोंड सुब्बारेड्डी जी इस प्रकार बता रहे थे।

उन दिनों में श्री स्वामी जी के पास अधिक भक्त नहीं आते थे। उनके आग जलाने की विधि, बोरे, पाम के पत्ते आदि को देखकर लोग उनको पागल समझते थे। अनुभवी लोग ही उनको समझकर उनका गौरव देते थे और उनको मानते थे।

ऋषिकेश से श्री चिदानंद स्वामी, देवानंद स्वामी, माधवानंद स्वामी एक दिन श्री स्वामी जी को देखने आने का समाचार उनको मिला था। उनको देखने के लिए बहुत भीड आ चुकी थी। शाम को 4.30 तक वे गोलगामूडि नहीं पहुँचे थे। देर होने पर सभी लोग निरुत्साह में इंतजार कर रहे थे। तब श्री स्वामी जी ने बताया अभी समय नहीं हुआ है, कुछ ही घंटों में वे आ रहे हैं। स्वामी जी की कहने के अनुसार कुछ ही घंटों में श्री चिदानंद स्वामी और अन्य स्वामीजी आ पहुँचे थे। वहाँ पहुँचते ही वे नारायण स्मरण करते हुए श्री स्वामी जी के पादों पर गिर कर साष्टांग प्रमाण कर लिए थे। इस दृश्य को देखकर वहाँ इकट्टे हुए सभी लोगों के भगवन्नाम स्मरण से वह प्रदेश गूँज उठा। लोगों को अवगत हो गया था कि उन स्वामियों से हमारे स्वामी ही श्रेष्ठ हैं। कुछ मीठा श्री स्वामी को देकर स्वीकार करने की विनती की थी। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि मेरे अकेला इस मीठे को खाने से वह विष के समान बन जाएगा। यहाँ मेरे सामने बहुत लोग खडे हुए हैं उन सबको खिलाने के बाद ही मुझे खाना चाहिए। श्री स्वामी जी की बात सुनकर चिदानंद स्वामी को अपनी गलती समझ में आ गयी थी।

तब श्री स्वामी जी उनको आशीर्वाद देकर बताया कि वे भविष्य में समुद्र पार कर जाएँगे। जब स्वामी जी अपने आश्रम लौटे थे तो श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार उनको अमेरिका देश से आह्वान पत्र मिला हुआ था।

नंद्याल प्रांत से आया हुआ एक भक्त और उसके साथ आया हुआ एक सुब्बन्ना नाम का साधु श्री स्वामी जी को तलुपूरु नारायण दास के आश्रम में दर्शन किए थे। वह साधु सिद्धियों को जानता था। उदाहरण केलिए भोजन खाते समय दस लोगों के लिए आवश्यक या बीस लोगों के लिए आवश्यक खाना परोसने पर भी कभी नहीं कहेगा। जितना परोसो उतना खाता ही रहेगा। बाकी भक्तों को खाना है न। उठो कहने पर ही वह खाने से उठेगा। यदि हम बुलाकर खाना देते तो खाएगा। नहीं बुलाने पर बहुत दिनों तक भूखा रह जाएगा। किसी से खाना नहीं माँगेगा। देवालय, गाँव के आंगन, पुराने घर ही उनके लिए आवास बन जाएँगे। एक क्षण भी कही भी नहीं ठहरता, चलता ही रहता था। पैदल जाने की तरीका भी विचित्र लगता था। बाएँ पाव के उँगलियों से दाएँ पाव के एडी को मिलाकर चलता था। अपने आप बातचित करते हुए धीरे – धीरे चलते हुए अपना समय व्यतीत करता था।

ये साधु सुब्बन्ना जी श्री स्वामी जी के बारे में भक्तों से इस प्रकार बताए थे।

स्वामी जैसा ही लग रहा था। बहुत सावधानी से रहो।

भक्तों ने साधु से कहा कि वे श्री स्वामी जी से मिलकर चाहे तो कुछ लिखवा कर ले सकते है। साधु ने कहा कि हम आते वक्त सबकुछ चर्चा कर लिए थे। और कुछ जानने या समझने की जरूरत नहीं है।

श्री स्वामी जी जब सोमशिला के पास रहने लगे, तब उनके पास एक दिगंबर स्वामी जी दर्शन करने आए थे। श्री स्वामी जी ने सेवकों से कहा कि उनको कुछ कपडा देकर वहाँ नीचे ओढ़ने के लिए कहे थे। उस दिगंबर स्वामी जी ने बताया कि वह लडका नहीं बडा ही हूँ। मैं उसे दिखावट के लिए नहीं रखा था।

उन बातों का अर्थ उन दोनों को ही मालूम होता है। इस प्रकार अनेक साधु, संत, योगी, साधक श्री स्वामी जी के दर्शन और आशीर्वाद के लिए आते थे और अपना काम पूरा करके चले जाते थे।

श्री स्वामी जी के महत्तर संकल्प के कारण इस प्रकार के अनेक घटनाओँ या चर्चाओं का विवरण कहीं भी ग्रंधस्थ नहीं किया गया था। यह बहुत दुर्भाग्य की बात है। आज भी ये आध्यात्मिक भिक्षा जिनको चाहिए उनको प्रदान करके उनमें परिवर्तन लाकर जब चाहे तब उनको भौतिक दर्शन भी दिलवाकर पि. माधवराव और नंदगिरि सुंदरराव जी आत्मपथ पर सहारा देकर आगे ले जा रहे थे।

एक बार दो मंत्र जप करने वाले मशहूर तांत्रिक व्यक्ति श्री स्वामी जी के पास आए थे। गोलगामूडि के आश्रम में एक पीपल के पेड के नीचे बैठे हुए थे। सुबह से

शाम चार बजे तक वहीं बैठे हुए थे। किसी से बात नहीं किए थे, बिना हिले डुले वहीं बैठे हुए थे। उस दिन श्री स्वामी जी बहुत अग्नि जला रहे थे। चार बजे के समय उनको भोजन खिलवाए थे। वे बहुत थक गए थे। उनको दो रूपए दीजिए। कहकर भक्तों से उन दोनों को दो - दो रूपए दिलवाए थे।

उन दोनों तांत्रिकों ने जाते वक्त सेवकों से कहा था कि श्री स्वामी जी की महानता सुनकर, ईर्या से उनपर मंत्रतंत्र से परेशान करने के लिए यहाँ आए हुए थे। लेकिन विचित्र है कि हम जहाँ पेड के नीचे बैठे हुए थे वहाँ से उठ नहीं पाए थे। यह सब श्री स्वामी जी की महिमा है। हमें दुर्बुध्दि से आने पर भी श्री स्वामी जी ने हमें बहुत आदर किए थे। श्री स्वामी जी की कृपा केलिए हम ना लायक है। इस प्रकार वे अपनी गलती को पहचान कर श्री स्वामी जी को प्रणाम करके चले गए थे।

ॐ नारायण- आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 13

दक्षिणा

दैव, गुरू, सत्पुरुष के प्रति हमारे हृदय में रहने वाले पुण्य भाव, प्रेम, श्रद्धा आदि व्यक्त करने केलिए समर्पण करने वाली चीज ही दक्षिणा है। संस्कृत में दक्ष का अर्थ है श्रद्धा। हमारे हृदय में ऐसी पूज्य भाव केबिना बाह्य से समर्पित दक्षिणा कितनी भी बडी या भारी हो व्यर्थ ही लगती है। हमारा हृदय ऐसे पूज्य भाव और प्रेम से भरे रहने पर हमारी दक्षिणी छोटी होने पर भी स्वीकारने वालों केलिए बहुत महत्वपूर्ण लगेगी।

इसलिए ही भगवत् गीता में श्री कृष्ण ने बताया था कि भक्ति से समर्पित पत्र, पुष्प, फल, पानी आदि को मैं प्रेम से स्वीकारता हूँ।

सर्वस्व को आगे ले जाने वाला भगवान ही है। वहीं भक्त पालन के लिए, प्रजा को धर्मबोध करने के लिए विविध महात्माओं के रूप में धरती पर अवतिरित होता है। यह सत्य समझना ही श्रध्दा पूर्वक भक्ति है। यह सत्य अपने भक्तों को समझाने केलिए ही श्री स्वामी जी अपने भक्तों से दक्षिणा स्वीकारते हैं। भक्त के आर्थिक और मानसिक स्थिति के अनुसार यह दक्षिणा की मात्रा विभिन्न भक्तों केलिए विभिन्न रूपों में होता है। उनका अर्थ और विशेषताएँ बदलते रहते हैं।

जनवरी 1980 में तुलसव्वा को श्री स्वामी जी ने ग्यारह चादर दक्षिणा के रूप में देने की आज्ञा दी। श्री साई भी आध्यात्मिक सत्यों को समझाते समय दक्षिणा मांगते थे। दक्षिणा के साथ – साथ उनके दुर्गुणों को छोडने के लिए आवश्यक चीजें ही लोगों से दक्षिणा केरूप में माँगते थे। श्री स्वामी जी तुलसव्वा से 5 ज्ञानेंद्रिय, 5 कर्मेंद्रिय और मन 1 कुल 11 के प्रतीक में ग्यारह चादर माँगे थे। आत्मज्ञान को पाकर ब्रह्म से हमको परिमित करने केलिए चादर दक्षिणा के रूप में श्री स्वामी जी ने माँगने का उद्धेश्य होगा।

स्वामी जी – मेरे नौ चादर मुझे दे दीजिए।

बि. नागय्या – आपके लिए छे ही चादर हैं। नौं कहाँ के हैं? ये छः चादर ले लीजिए।

स्वामी जी - आहा ... वह नौ चादर मुझे दीजिए।

(नागय्या ने छे चादर और तीन तौलिए कुल मिलाकर नौ कपडे दे दिए थे।)

स्वामी - ये क्या है? बहुत छोटे कपडे दिए हो। मुझे बडे चादर ही चाहिए। (नागय्या अपना, गुरवय्या और रोशरेड्डी के चादर भी स्वामी जी के लिए दे दिया था।)

स्वामी - हाँ, अब ठीक है। मेरे चादर मुझे मिल गए थे।

पंचभूत. मन, बुद्धि, अहंकार जैसे अष्ठविध प्रकृतियाँ, उनके आधार पर बननेवाले परमात्मा के तत्व कुल मिलाकर भगवान बन जाता है। 36 भगवत् स्वरूप के श्री स्वामी इनको पहचान कर इनके प्रतीक में नौ चादर स्वीकारे थे। यही भाव हमें अवगत होता है।

और एक बार तुलसव्वा को श्री स्वामी जी ने छे चादर अग्नि कुंड में डालने की आज्ञा दी। छे अरिष्डवर्गों के प्रतीक में छे चादर अग्नि में डालकर जलाने का भाव इससे हमें अवगत होता है। 37

सच्ची भक्ति और प्रेम को ही श्री स्वमी जी प्रघनता देते थे। हमारे द्वारा समर्पित चीजों के मूल्य को देखकर नहीं देते थे। भक्ति और प्रेम के बिना लोक के लिए, साथियों से यश पाने के लिए, हमारे स्थाई दिखाने केलिए समर्पित चीजें जितनी भी मूल्यवान होने पर भी श्रीस्वामी जी की दृष्टि में वे निरर्थक ही है। 38

मुझे दमा से मुक्ति प्रदान करने केलिए कृतज्ञता ज्ञापित करने केलिए तलुपूरु में हर रोज श्री स्वामी जी के लिए चार इडली लाकर स्वामी जी को देता था। आते वक्त श्री शिर्डी साई का नाम जप करते आता था। एक दिन मेरी जेब में केवल दस पैसे ही थे। उन दस पैसों से एक इडली ले आना चाहिए या उधार लेकर चार इडली ले आना है इस दुविधा में पडा हुआ था। मैंने सोचा कि एक इडली से स्वामी जी की भूख नहीं मिटेगी। इसलिए दूकानदार से बाकी तीन इडली के पैसे बाद में देने का वादा करके चार इडली ले आया था। श्री स्वामी जी उन इडलियों को छुआ तक नहीं। मेरा नाम जप भी रूक गया था। एक इडली के स्थान पर उधार लेकर चार इडली ले आना श्री स्वामीजी को अच्छा नहीं लगा था। इसलिए ही वे सभी को छोड दिए थे।

त्योहार, यात्रा या कोई पर्वदिन मनाने केलिए पैसे उधार लेना श्री शिर्डी साई भी बुरा मानते थे।

एक दिन कलिचेडु हिंदी पंडित मस्तान साहब जी श्री स्वामी जी को दो रूपए समर्पित करके नमस्कार किए थे। श्री स्वामी जी ने सेवकों से बताया कि मस्तान जी को मुझे छब्बीस रूपए देना है। कागज पर लिखकर दो। बाद में मस्तान साहब को सरकार की ओर से बहुत दिनों से जो इंक्रिमेट मिलना था वह इंक्रिमेंट के पैसा छब्बीस रूपए मिले थे। श्री स्वामी जी को जब से छब्बीस रूपए दक्षिण दिए थे उस महीने से इंक्रिमेंट के रूप में वेतन में छब्बीस रूपए की बढोत्तरी मिली थी। यह सुनकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा था।

श्री स्वामी जी कुछ लोगों के लिए पैसे देने पर ही बोलते थे। धनाड्य लोग, लोभी समझते थे कि श्री स्वामी जी को पैसों का लालच है। श्री स्वामी जी की परिशुद्ध वैराग्य जीवन की स्थिति जिनको मालूम होती है उनको ही मालूम होगा कि श्री स्वामी जी को धन के प्रति कुछ भी चिंता नहीं है, वे अपने लिए कुछ संपत्ति नहीं चाहते हैं। वे अपने लिए कभी भी संपत्ति को इकट्ठा नहीं किए थे। हर शाम को जो पैसे उनको मिलते थे उनको अपने सेवकों को उनकी सेवा के अनुसार बाँटते थे। कुछ लोगों के दक्षिणा देने पर भी नहीं स्वीकारते थे।

कुछ कारणों से श्रीरामय्या अपने बगल वाले खेत से देर से ज्वार का फसल लगाए थे। खेत में सार नहीं होने के कारण उसने ज्वार का फसल लगाया था। श्री स्वामी जी को अच्छा फसल मिलने पर उस फसल में से कुछ ज्वार मनौती के रूप में देने का निर्णय लिया था। श्री स्वामी जी की कृपा से अच्छी फसल निकली थी। मनौती के रूप में जो देना चाहता था वह सब नहीं दिया था। दो साल बीत गए थे। कभी – कभी याद आने पर कुछ समय पछताना था। एक दिन श्री स्वामी जी के दर्शन करके उनको प्रणाम किया था। श्री स्वामी जी अपने आप में बोल रहे थे कि तुम्हारा ज्वार अपने आप चले गए थे। उनकी बात सुनकर उनको अपनी मनौती के बारे में याद आई थी। तुरंत उसने बाकी ज्वार श्री स्वामी जी को समर्पित कर दिया था।

श्री साई नाथ जी की तरह श्री स्वामी जी भी जो दक्षिण या मनौती उनको मिलना था, उनको पूछकर ले लेते थे। कुछ समय कम मात्रा में दक्षिणा वसूल करते थे। जब तक उनको पूरा दक्षिणा मिल जाता था, तब तक छोटी मात्रा में दक्षिण वसूल करते थे। दक्षिणा पूरा हो जाने पर पूछना बंद कर देते थे।

एक बार दक्षिण भारत से आया हुआ एक किसान ने श्री स्वामी जी को दो रूपया चुकाकर एक प्रश्न पूछा था। श्री स्वामी जी एक ही बात बोलकर और फिर पैसे रखने के लिए कहे थे। इस प्रकार बार – बार पैसे माँगते हुए उसके पास के सभी पैसों को श्री स्वामी जी ने ले लिया था। उसके लिए बस टिकट के लिए भी पैसे नहीं बचे थे। बाद में एक कागज पर आशीर्वाद लिखकर दिए थे। बाद में श्री स्वामी जी को मालूम हुआ था कि उसके पास बस टिकट के लिए भी पैसे नहीं थे। तब उन्होंने उसे छे रूपए देकर भेजे थे।

कडपा जिले से एक भक्त दर्शन के लिए आया था। श्री स्वामी जी बार – बार उससे दक्षिण माँगकर उसके पास के सभी पैसे ले लिए थे। उस भक्त ने समझा कि यह सब अपनी भलाई के लिए हो रहा था। इसलिए वह बहुत खुशी से अपने पास के सभी पैसे श्री स्वामी जी को दे दिया था। श्री स्वामी जी के आश्रम में भोजन करके के बाद अपना गाँव वापस चला गया था। उसके हाथ में एक पैसा भी नहीं था। बस में उसने सोचा था कि श्री स्वामी जी उसकी सहायता करेंगे। गाँव जाने के

पहले तीन बस और एक नाव में यात्रा करने पर भी एक जगह भी उसे किसीने पैसे नहीं माँगे थे। इस विषय को अपने सभी मित्रों को बताकर श्री स्वामी जी की महिमा के बारे में सबको बताया था।

ॐ नारायण- आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 14

साधु दूषण

कोटितीर्थम के पास पेन्ना नदी के प्रवाह में बडा पेड का तना आया था। बहुत लोग उसे अपनी गाडी में लादकर लाना चाहते थे। बहुत भारी होने से उसे वहीं छोडकर चले गए थे। श्री स्वामी जी रात में अकेले अपने बाहु पर ले आए थे और अग्नि कुंड में उसे डाल दिए थे। सुबह होते ही सभी किसान और मजदूर अग्नि कुंड में उसे देखकर कहने लगे कि इस पागल वेंकय्या ने क्यों ऐसा काम किया था? उसके लिए ही उस तने को वहाँ रखे थे। उनमें से एक व्यक्ति ने ऐसी पागल चेष्टा मत करो कहते हुए उसके मुह पर थप्पड भी मारा था। वह व्यक्ति अपने घर वापस गया तो उसका घर जल रहा था। आस पडोस के लोग श्री स्वामी जी से अपनी रक्षा करने की विनती करने लगे। श्री स्वामी जी ने बताया कि जहाँ तक पाप होगा वहाँ तक जल जाएगा। बाकी वही रह जाएगा। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार वह व्यक्ति जिसने स्वामी जी को थप्पड मारा था उसका घर जल गया था। बाकी कोई घर नहीं जले थे। सुबह होते ही वह व्यक्ति आकर श्री स्वामी जी से क्षमा माँगा था।

एक दिन श्री स्वामी जी मुदिगेडु में एक घर जाकर जोर से चिल्लाए- माँ। उस घर से एक गृहिणी ने बोला कौन चिल्ला रहा है? स्वामी जी बोले मैं हूँ पागल। वह औरत को नहीं सुनाई दिया। इसलिए और एक बार बोली कौन हो? तब श्री स्वामी जी अपने सिर के बालों को संभालते हुए बोले पागल व्यक्ति हूँ। वह औरत बोली, तो क्या होता है? तब स्वामी जी ने बोला कि कुछ भात देती तो...। उस औरत ने मेरे पास भात नहीं है कहती हुई कुछ बची हुई खाने को उसके तौलिए में डाल दी थी। श्री स्वामी जी ने उसे खाने केलिए कुछ चटनी या सब्जी देने केलिए विनती की। ऐसी चीज नहीं है कहती हुई उस पर नाराजगी व्यक्त की थी और कुछ आचार डाल दी थी। तब स्वामी जी कुछ घी डालने की विनती की। तब वह औरत बडी नाराजगी से उसकी ओर देखी थी। तब श्री स्वामी जी ने बोला माँ वहाँ ऊपर वाली मटके में है। मुझे खाने के लिए दो। वह औरत मना कर रही थी इतने में घी का मटका ऊपर से नीचे गिर कर पूरा घी जमीन पर गिर गया था। श्री स्वामी जी हँसते हुए वहाँ से चले गए थे। इसलिए ही श्री साइनाथ जी ने बताया कि भिखमांगों को भिक्षा देने से इनकार नहीं करना चाहिए। उसी प्रकार भिखारियों को अवहेलन नहीं करना चाहिए।

उसी प्रकार बडे व्यक्ति को अपने पैर फिसल जाने पर भी परवाह नहीं लेकिन उसकी बात से कभी भी नहीं फिसलना चाहिए।

ॐ नारायण- आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 15

भिक्षा

बहुत धनवान लोग आकर उनके सामने धन रासी रखने पर भी उनके प्रश्नों का समाधान नहीं बताते थे। ऊपर वाला अनुमति नहीं दे रहा है या बात नहीं निकल रही है आदि कारण बताकर चुप रह जाते थे। भक्ति और श्रद्धा वाले भक्तों को पैसे दिए बिना भी, बिना पूछे उनके प्रश्नों का समाधान कागज पर लिखकर अभयमुद्रा के साथ आशीर्वाद देकर भेजते थे। अपनी इच्छाओं को पूरा न होने पर ऐसे भक्त को श्री स्वामी जी के आश्रम में ठहर कर भिक्षा लाने के लिए जाना ही पडता था। कुछ त्योहार या पर्वदिनों के समय कुछ लोग आकर सबको भोजन वितरण करते थे। ऐसे संदर्भों में भी सेवकों को भिक्षा के लिए जाना ही पड़ता था। श्री स्वामी जी बताते थे कि यदि हमारे अपने पास आज भोजन है, मानकर भिक्षा के लिए नहीं जाते तो कल हम जाने पर भी नहीं देंगे। इसलिए हमें हर दिन भिक्षा केलिए जाना ही चाहिए।

दशय्या – स्वामी आश्रम में बीस आदमी है। हम कैसे जीएँगे?

स्वामी - यहाँ का फसल किनका है? हम सबका ही है।

श्री स्वामी जी बताते थे कि भगवान ने ही सबको भूख दिया है, खाने के लिए आवश्यक आहार भी दिया है। हमारे खेत में जो फसल पैदा होती है उसे हम ही न खाकर निस्वार्थ भावना से हमें सबको बाँटना भी चाहिए।

श्री स्वामी के लिए भिक्षा, नैवेद्य, दान समर्पित करते समय कृतज्ञता भाव से समर्पण करने पर ही बहत्तर फल मिलता है। हम भिखारी को दे रहे है, समझकर दान देने से उसका कम फल ही मिलता है।

श्री स्वामी जी महासमाधि के बाद में भी अपने सेवकों के हृदयों को प्रेरित करके निरंतर भिक्षा सांप्रदायों का प्रोत्साहन देते थे।

श्री स्वामी जी के आज्ञा के अनुसार भोजन नहीं खाकर रोज पोहा और चीनी पानी के साथ खाकर जीवन बिताने वाले रोशरेड्डी इस प्रकार बता रहे थे। बुढापे के कारण मेरी आँखों की दृष्टि सामर्ध्य कम हो गयी थी। द्रव आहार लेने के कारण मैं बहुत कमजोर हो गया था। लेकिन भिक्षा को जाते वक्त बहुत तेज हो जाता था और शक्तिशाली बन जाता था। सोना भी नहीं चाहता था। भिक्षा पात्र लेकर जाते वक्त सफेद धागे के समान साफ रास्ता दिखाई देता था। जाते वक्त एक भी पत्थर से टक्कर मारना या पांव में एक कंटक भी अभी तक नहीं लगा था। दो किलो चावल का भात, मट्ठा, भक्तों के द्वारा दिया हुआ कोई खाने का पदार्थ नीचे रखे बिना सीधा आश्रम तक

ले आता था। बाद स्नान करके श्री स्वामी जी से आशीर्वाद लेकर पलंग पर आराम लेने केलिए सो जाता था। उस समय उसकी शक्ति कहाँ चली जाती थी उसे मालूम नहीं होता था। दूसरे दिन भिक्षाटन को निकलते समय फिर शक्तिशाली बन जाता था। यह सब केवल श्री स्वामी जी की कृपा से ही संभव होता था। श्री स्वामी जी की यह सेवा मैंने जीवन भर करने का निश्चय किया था।

रोशरेड्डी जी के महीने के अंत में 1986 में स्वर्ग प्राप्त करने के बाद में वह सेवा रामय्या और उनके मित्र करते थे। एक दिन भिक्षा ले आने केलिए आश्रम में कोई आदमी नहीं था। ऐसी स्थिति में भी भिक्षाटन कार्यक्रम निरंतर चलते रहने के लिए श्री स्वामी जी एक विचित्र कार्यक्रम को लागू किए थे।

बचपन में ही पति मरने से अस्वस्थ होकर गरीबी और दुःख से निस्तेज होकर पडी हुई कोडूरु वेंकम्मा श्री स्वामी जी की कृपा से स्वस्थ होकर श्री स्वामी जी के आश्रम में रहने लगी। वह किसी भी समय गांव में नहीं ठहरती थी। श्री स्वामी जी की प्रेरणा पाकर वह स्वयं भिक्षा के लिए जाना शुरू कर दी थी। लगभग एक साल तक वह श्री स्वामी जी के लिए हर दिन भिक्षा लाकर सेव करती रही थी। आजकल भी यह कार्यक्रम चल रहा था। श्री स्वामी जी की कृपा से आज भी दर्शन केलिए आए हुए भक्तों के लिए आश्रम की ओर से नित्य अन्नदान कार्यक्रम चल रहा है।

भिक्षाटन के बारे में रोशरेड्डी जी के द्वारा कही गई बातों पर यहाँ हम सबको ध्यान रखना चाहिए।

आश्रम में बहुत संख्या में भक्त जन आने पर अधिक मात्रा में अन्न उपलब्ध होता था। कम भक्त आने पर कम अन्न उपलब्ध होता था। आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। आज भिक्षा के लिए पूरा गाँव घूमना है, क्या मैं इस स्थिति में घूम सकता हूँ?....ऐसा सोच विचार मन में आने पर एक नहीं दो नास्ता खाने केलिए मिल जाते थे। यह केवल श्री स्वामी जी की लीला है। यह लीला के बारे में हर एक व्यक्ति अपने आप जान सकता है, किसी के कहने से मालूम नहीं होता है।

यदि आश्रम में कोई चीज की कमी होती तो वह चीज किसी न किसी तरह अपने आप आ जाती थी। श्री स्वामी जी कहते थे कि मेरे रहने से किस प्रकार आश्रम चल रहा है उसी प्रकार उससे भी बढिया आगे भी चलेगा। आज उनकी बातें याद आकर आश्चर्य हो जाता है। श्री स्वामी जी के द्वारा दिया गया वह अभय, आशीर्वाद सच निकला था।

ॐ नारायण- आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय 16

जन्म जन्म के अनुबंद

परमात्मा का स्वरूप मनुष्य अज्ञान से, रागद्वेष और ईर्या के वश में रहकर सुकृत और दुष्कृत करता रहता है। उन कर्म फलों को भोगने केलिए बहुत जन्म लेता रहता है। मनुष्यानाम सहश्रेषु ... के अनुसार किसी न किसी महान् व्यक्ति की सहायता से अज्ञान को छेदकर ज्ञानी बन जाता है। ऐसे लोगों को जीवों के पूर्वजन्म वृत्तांत और कर्मफलों का विवरण मालूम होता है। यह विवरण सभी महान् लोगों की जीवनियों में हम देख सकते हैं। श्री स्वामी जी भी अनेक लोगों के पूर्वजन्म वृत्तांत और उनके साथ उनका संबंद आदि के बारे में चिट्ठी पर लिखकर देते थे। जिन लोगों को श्री स्वामी जी के पूर्व जन्म का संबंद मालूम होता था वे श्री स्वामी जी के साथ बहुत अच्छा और कृतज्ञता पूर्वक व्यवहार करते थे। स्वामी जी के साथ रहकर उनकी सेवा करते थे। 39

एक दिन गुरवय्या के बारे में श्री स्वामी जी ने इस प्रकार बताया था।

यह गुरवय्या बैंगलूर के दक्षिण गली में एक सुनार के घर पैदा हुआ था। बाद में एक बनिए के घर जन्म लिया था। उसके बाद में मैं वेंकटगिरी राजा के घर में पैदा हुआ था और ये गुरवय्या राजा के मामा के घर में पैदा हुआ था।

एक बार चलमय्या नायुडु से श्री स्वामी जी ने बताया कि हे चलमय्यनायुडू पूर्व जन्म में वेकटगिरी राजा के घर में मैंने गवर्नर की शिक्षा और तुमने न्यायाधीस की शिक्षा प्राप्त की थी। नगर में बसे हुए थे। हम दोनों की शादी नहीं हुई थी। अब झोंपडियों में रहते हैं। हर समय भवन हमें रहने के लिए नहीं मिलते हैं। बाद में पिठापुरम राजा के घर रहकर अब नागलेटूर आ गए थे।

अनिकेपल्लि के मल्लिक वेंकय्या जी पच्चीस साल की उम्र में श्री स्वामी जी के पास आए थे। बाईस सालों से श्री स्वामी जी के अग्नि कुंड के लिए लकडी काटकर सेवा कर रहे थे।

एक बार श्री स्वामी जी वेंकय्या को देखकर कहने लगे कि तुम मेरे पास आ जाओ। वेंकय्या ने बोला मैं नहीं आ सकता हूँ। आप के पास आने पर हर दिन भिक्षा ले आने के लिए जाना पडता है। मैं वह काम नहीं कर सकता हूँ। तब स्वामी जी ने बोला कि रामेश्वरम् में मैं प्रबंद क था और तुम लिपिक थे। इस प्रदेश में तेरा ऋण पूरा हो गया था इसलिए मेरे पास आ जाओ। तब वेंकय्या ने कहा **स्वामी जी आपको मेरे लिए शैतानों को भगानेवाले मंत्र, पोलेरम्मा मंत्र आदि मंत्रों को सिखाने से ही मैं** 40

आऊँगा। स्वामी जी ने बताया कि अवश्य बताता हूँ आओ। तेरे समूह में तुम अगुआ रहोगे और लकडी काटते रहो। तेरे पीछे ये सभी आते रहेंगे। श्री स्वामी जी ने वेंकय्या जो पूछा था वे सभी मंत्र उसे सिखाए थे। उन मंत्रों को किस प्रकार सदुपयोग करना है किन किन नियमों का पालन करना है आदि का विवरण भी दिये थे। अहंकार किस प्रकार मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है देखिए। मनुष्य की किसी भी बाधा को निकालने का वर मैं देने केलिए तैयार हूँ। श्री स्वामी जी कहने पर वेंकय्या वह वर नहीं स्वीकारे थे। उसे स्वीकारने से मंत्र, नियम या निष्ठा की जरूरत नहीं पडती है न। श्री स्वामी जी ने वेलूरु रामानायुडु से कहा था मैं जो चीज दे रहा हूँ, उसे तेरे कमर में बाँध दो। उससे सभी रोग 'चले जोओ'.. कहने से चल जाएँगे।

श्री स्वामी जी अपनी सेविका कोडूरु वेंकम्मा के बारे में इस प्रकार बताए थे। पूर्व में झंडा वंश की बहु बनी हुई थी। ऊँचे ऊँचे आलीशान भवन में रहकर आँखे ऊँचे करकर गर्व से जीवन बितायी थी। एक दिन तेरा पैर लगाकर झंडा नीचे गिर गया था। तुम भी जमीन पर गिर पडी थी। तब झंडे ने तुझे शाप दिया कि तुम इस धरती पर जन्म लेकर साधारण विधवा का जीवन बिताओगी। वह शाप नहीं होने पर तुझे शादी नहीं होगी। उस शाप के कारण बाल्यकाल में ही तेरी शादी हो गई थी और पति मरने से विधवा बन गयी थी। लेकिन हम तुझे नहीं छोडेंगे।

इनुकुर्ति में एक अध्यापक रहता था। उसके बेटे को बुद्धि हीनता के कारण हाथ और पैर उसके अधीन में नहीं थे। डॉक्टरी इलाज करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ था। वे श्री स्वामी जी के पास ले आए थे। तब उस बेटे को देखकर श्री स्वामी जी ने बताया कि पूर्व जन्म में घोडों के दौड में यह लडका घोडों को बहुत मारता था। वह पाप अब भोग रहा है।

एक दिन श्री स्वामी जी के पास एक सन्यासी आया था। उसे मूर्च्छा रोग था। लोग श्री स्वामी जी से पूछने लगे कि यह स्वामी इतना स्वच्छ और पवित्र सेवा कर रहा था। उसे यह रोग कैसे आ गया था। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि **पूर्व जन्म में यह व्यक्ति पक्षियों का अपने खुशी के लिए शिकार करता था। अब वह पाप भोग रहा था।** भूख से तडपने पर जंतुओं को मारकर मांस नहीं खाना चाहिए। अपनी खुशी के लिए शिकार खेलना नहीं चाहिए। ऐसा करने से उनको पाप भोगना ही पडता है। 40

शिकारी की मार खाए पक्षी किस प्रकार जमीन पर गिर कर जिस प्रकार तडपता है उसी प्रकार मूर्च्छा आने पर वह सन्यासी भी तडपता था। कर्म का सूत्र किस प्रकार काम आता है श्री स्वामी जी ने बहुत अच्छी तरह सबको बताया था।

नागुलवेल्लटूरु में एक लडके को दोनों हाथों की उँगलियों में स्पर्श नहीं थी। श्री स्वामी जी के पास उसे ले आए थे। श्री स्वामी जी ने बताया कि वह तमाशा के लिए पक्षियों को पत्थरों से मारता था। अब वह पाप भोग रहा था।

एक दिन श्री स्वामी जी ने रोशरेड्डी ने बुला कर बताया कि गत जन्म में तुम एक सुब्बय्या नामका ब्राह्मण थे। तुम मुझे पाठ पढाने वाले गुरू थे। ये कपडे और दस रूपए लो। ये तो गुरुदक्षिणा है। कहकर नए कपडे और दस रूपए श्री स्वामी जी ने रोशरेड्डी को दिए थे।

1979 में श्री स्वामी जी इनकुर्ती में रहते थे। उस समय यानादी जाती की स्त्री और उसकी तीन बेटियाँ बहुत भूख से आई थीं। उनकी भूख समझकर श्री स्वामी जी ने उनको खाना खिलवाया था। स्वामी जी स्वयं उनको खाना परोसे थे। माँ के पहले ही तीनों बेटियाँ परोसा गया खाना खा चुकी थीं। श्री स्वामी जी और कुछ खाना परोसकर माँ के भूख को भी मिटा दिए थे। श्री स्वामी जी ने उस स्त्री को देखकर कहा कि इसे और चार संतान हैं। पूर्वकाल में यह स्त्री राजा की प्रिय रानी थी। झूला झूलती हुई अपनी नौकरानियों को खाना खिलाए बिना उनके सामने वह खुशी से खा लेती थी। इस जन्म ने ये सात दासियाँ उसके संतान के रूप पैदा होकर उसे खाना नहीं खाने दे रही थीं। वह स्त्री पेट भर खाने के बाद श्री स्वामी जी ने उसे दस रूपए और एक साढी देकर अपने घर भेजे थे। कर्म फल कैसा होता है, इसका और एक उदाहरण है यह स्त्री की कहानी।

1969 में गोलगामूडि आश्रम को हर दिन एक गिरिजन जाति की लडकी भिक्षा ले आती थी। तुलसम्मा जी इस बालिका को भिक्षा खिलाकर भेजती थी। एक दिन जब वह बालिका आई थी उसे देखकर वहीं बैठे हुए श्री स्वामी जी तुलसम्मा को बुलाए थे। तुलसम्मा से दिया हुआ भोजन लेकर वह लडकी चली गयी थी। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि यह लडकी गत जन्म में ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर अब इस जन्म में यानादी परिवार में आयी थी। कैसी श्रृष्टि है?.... कहकर हँसने लगे। श्री स्वामी जी के कहने का मतलब है कि दान गुण कम होने पर मनुष्य को भवन से साधारण घर वहाँ से झोंपडी में आना पडता है।

वेलूरु सुब्रह्मण्यम जी की पत्नी बहुत दिनों से पैर में दर्द होने से परेशान हो रही थी। यही बात श्री स्वामी जी को बताया गया था। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि यह औरत गत जन्म में कलिवेडु गाँव में आदमी के रूप में रहती थी। उस आदमी ने धान्य खाती हुई गाय को बडी लकडी से मारा था। अब वह कर्म फल भोग रहा है। ग्राम देवता बंगारम्मा और वीरराघवुलु स्वामी उसकी परेशानी को ठीक कर देंगे। लेकिन पूरा इलाज नहीं हो पाएगा। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार ऐसा ही हुआ था।

ॐ नारायण- आदिनारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 17

दिव्यानुभव

राक्षस संहार से भूभार को कम करके ऋषियों का अनुग्रह करने केलिए भगवान राम अवतरित हुए थे। उसी प्रकार महाभारत युद्ध के द्वारा भू भार कम करने केलिए और अर्जुन, उद्धव, यशोदा, गोप-गोपिकाओं को अनुगृहीत करने केलिए भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया था।

उसी प्रकार पूरे इतिहास में मुमुक्षुओं को आध्यात्मिक प्रबोध प्रदान करके, दिव्य अनुभवों से प्रोत्साहित करके कृतार्थ करने हेतु, दीनजनोद्धरण के लिए इस धरती पर परिपूर्ण महनीयों के रूप में ये परमात्मा अवतरित होते हैं। उपनिषद् हमें बताते हैं कि ऐसे महनीयों और मुमुक्षुओं का आश्रय हमें अवश्य लेना है। उर्जुन, और उद्धव का श्री कृष्ण का, श्री कृष्ण का सांदीपनी महर्षि का, श्री राम के वशिष्ट मुनि का आश्रय लेने का रहस्य हमें मालूम होता है। इसका कारण है कि सकल शास्त्रों के सार महनीयों ने बोध किए थे। यही नहीं कुछ अविश्वासनीय विषयों को भी वे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा बता सकते हैं। विश्वरूप साक्षात्कार के द्वारा श्री कृष्ण ने अर्जुन को यही उपदेश दिए थे।

ऐसे अनुभवों को दत्तात्रेय स्वरूप के श्री शिरिडी साईबाबा, अक्कलकोटा स्वामी जी जैसे महान् लोगों का अपने भक्तों को अनुगृहीत करना उनकी इतिहास में हम देख सकते हैं। उनके पहले अवतरित दत्तात्रेय विशेषों को श्री गुरुचरित में हमें देखने को मिलता है। ऐसे महनीयों में आज के जमाने में प्राप्त अवधूत श्री वेंकय्या स्वामी भी एक है। सच कहे तो बाकी दत्तपुरुषों के इतिहासों को श्रद्धा के साथ जांच किए बिना श्री वेंकय्या स्वामी जी की महिमा हमें पूरी तरह अवगत नहीं होती है। इस मर्म को या सूत्र को नहीं जानने से श्री स्वामी जी एक पागल या केवल कुछ प्रश्नों के उत्तर देने वाले सामान्य साधु के रूप में देखने या भ्रम में रहने की संभावना है। अन्य दत्तावतार की तरह इस अवधूत श्री वेंकय्या स्वामी जी के भक्तों को अनुगृहीत करके दिखाने वाले दिव्य अनुभवों को इस अध्याय में देखेंगे।

मुदिगेडु के अक्किम वेंकट रामिरेड्डी जी इस प्रकार बता रहे थे।

एक बार श्री स्वामी जी मुदिगेडु आए थे। वे मेरा नाम भूल गए थे। श्री स्वामी जी ने मुझसे कहा कि सुब्बरामय्या तुम्हें मुझे तलुपूरु का रास्ता दिखाना है। मेरे साथ आओ। मुझे उनके साथ ले गए थे। बाकी सभी सो रहे थे। हम दोनों कुछ देर जाकर कोक्केराक्षु के पास एक शिला के पास रुक गए थे। श्री स्वामी जी मुझे वहीं

बिठाकर सामने वाले शिला पर चढ़कर उसे दबाने से वह मृदल बन जाता है.. कहकर उस शिला के पास गए थे। मैं उनके पीछे – पीछे जाकर चुपचाप देख रहा था कि वे वहाँ जाकर क्या करेंगे। श्री स्वामी जी ने उस शिला के ऊपर चढ़कर वहाँ अपने पैर पर पैर रखकर लेटकर आकाश की ओर देखते हुए आराम से गीत गाना शुरू किया था। उनके गीत सुनने की इच्छा से मैं चुपके - चुपके उस शिला के नीचे जाकर खडा हो गया था। मुझे देखकर श्री स्वामी जी ने बताया कि ये तो राक्षसों के संचार का समय है। इस वक्त तुम यहाँ क्यों आ गए हो। मुझे बहुत डर लगा था। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि पश्चिम दिशा की ओर देखो, वहाँ गायों का समूह है। मैंने देखा। तीन किलोमीटर दूर तक गायों का समूह है। बहुत गाएँ उस समूह में खडी हुई थी। बहुत कांति फैली हुई थी। बहुत आदमी दूध दुह रहे थे। अनेक गोपिकाएँ दूध के मटकों को अपने सिर पर रखकर जा रही थीं। उस दृश्य को देखते समय मुझे लगा कि मैं देवलोग में हूँ। मैंने कहा कि मैं भी जाकर एक दूध के मटके को उनको देकर आ जाता हूँ। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि वे रेपल्ले को जा रही हैं। अब संध्या समय है। अब तुम कहाँ जाते हो? तब मैंने पूरब और पश्चिम दिशाओं की ओर देखा था। पूरा अंधकार छाया हुआ था। वह दृश्य मेरी आँखों के सामने से गायाब हो गया था। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि उठो, चलो, हम जाएँगे। तलुपुलूरु जाकर कुछ चिह्न लगाना है। ऐसा कहकर आगे चल पडे थे।

मुझे शाम तक अपने साथ श्री स्वामी जी ठहरने दिए थे। बिना खाना खाए, पानी पिए हम दोनों ऐसे ही रह गए थे। बाद में श्री स्वामी जी ने मुझे अपने गाँव जाने का आदेश दिये थे।

एक बार तलुपूरु गाँव में ईश्वरय्या के धर श्री स्वामी जी पधारे हुए थे। वर्षा की ऋतु थी। श्री स्वामी जी रात तक कागजों पर अपनी उँगलियों के चिह्न लगाते रहे थे। ईश्वरय्या ने मुझे और श्री स्वामी जी को रात होने से खाना खाने की विनती की। तब स्वामी जी ने वेंकटरेड्डी को आदेश देते हुए कहा अब तुझे अपने गाँव जाना है। तुरंत जाने के लिए तैयार हो जाओ। वहाँ रहनेवाले चलमनायुडु स्वामी जी की बात से नाराज हो उठा। स्वामी जी से कहा अब आप इतनी बारिश में गाँव कैसे जा सकते हैं। आपके लिए उसे भेजना कहाँ तक उचित है? केवल कहना ही नहीं वह वहाँ के एक कुल्हाडी को हाथ में लेकर स्वामी जी को मारने केलिए उनके सामने आया था। तब स्वामी जी ने कहा कि अब वेंकटरेड्डी को यहाँ नहीं ठहरना चाहिए। बाद में क्या हुआ... इसके बारे में अक्किं वेंकटरेड्डी इस प्रकार बता रहे थे।

बाद में सदा श्री स्वामी जी के आज्ञा का पालन करने वाला मैं रात में बारिश में ही अपने गाँव को रवाना हो गया था। तलुपूरु जाने तक मुझे सब कुछ मालूम हो रहा था। उसके बाद में मुझे मैं क्या कर रहा हूँ? कहाँ जा रहा हूँ?... मालूम नहीं हो

रहा था। किस रास्ते से आया था? नदी में कितना पानी था?... यह सब मुझे मालूम नहीं हो रहा था। मेरे घर पहुँचने के बाद वहाँ एक भैंसा जोर से आवाज देने पर मुझे होश आया था। तभी मुझे मालूम हुआ था कि मैं अपने गाँव पहुँच गया था, वह मेरा ही घर था और वह मेरा ही भैंसा की आवाज थी। यह एक विचित्र अनुभूति थी। वर्षा काल में 15 फूट पानी वाली नदी को पार करके घर पहुँचना साधारण विषय नहीं था। श्री स्वामी जी ने बेहोश स्थिति में नदी को पार करवाकर मुझे मेरे घर ले आए थे। उस महान् स्वामी जी की दिव्य शक्ति की प्रशंसा करना हजारों फन वाले आदिशेषु को भी संभव नहीं हो पाता है।

एक बार श्री स्वामी जी ने कहा कि और एक बार पर्वत के चारों ओर घूमकर आना है। यह बात कहकर श्री स्वामी जी हम सबको, कुल आठ लोगों को अपने साथ पैदल पेंचलकोना ले चले थे। हमारी भीड में से कुछ सेवक सबके लिए भोजन, धुनि की तैयारी करने लगे थे। उस समय श्री स्वामी जी ने बताया कि हम बीच में मल्लेंकोंड को जाकर आएँगे। श्री स्वामी जी मुझे भी अपने साथ आने केलिए बुलाए थे। आप जहाँ भी बुलाएँगे वहाँ मैं भी आऊँगा कहकर उनके साथ जाने के लिए तैयार हो गया था। हम दोनों मिलकर तीन किलोमीटर दूर के मल्लेंकोंड पहुँच गए थे। वहाँ मल्लेश्वर का लिंगाकार पत्थर था। श्री स्वामी जी अपनी अलग भाषा में उस पत्थर से बातचित करने लगे। वहाँ से एक किलो मीटर दूर पर रहने वाले मामेल्ल कोना पहुँचे थे। वहाँ एक गुफा में श्री स्वामी जी पहुँचे थे। मैं भी उनके साथ अंदर गया था। गुफा को पार करने के बाद वहाँ बहुत बडी संख्या में आम के पेड थे। वहाँ जमीन पर बहुत आम के फल गिरे हुए थे। पेडों पर भी अनेक फल लगे हुए थे। हम दोनों उन आम के फलों के ऊपर तीन किलोमीटर पैदल चलते रहे थे। उस गुफा के अंतिम चरण में एक भालू बहुत बडी आवाज देता हुए सामने खडा हो गया था। उसके मुँह में से बडे - बडे दाँत बाहर आए हुए थे। मुँह खोलकर हम पर कूदने केलिए वह तैयार था। पहले श्री स्वामी जी और पीछे मैं जा रहा था। मैं भयभीत होकर वहाँ के एक पेड के पीछे छिप कर देख रहा था। तब श्री स्वामी जी ने भालू के पास जाकर अपने हाथों से उसके शरीर को सिर से पूँछ तक स्पर्श करके उसकी ओर प्रेम से देखकर पुचकारा। भालू श्री स्वामी जी के पैरों के सामने एक प्यारे बच्चे की तरह बैठकर अपना पूँछ हिलाने लगा। बाद में वह जंगल में चला गया। बाद में मैं स्वामी जी के पास आया था।

वहाँ एक रास्ता, एक ईश्वर लिंग, दो स्त्री मूर्तियाँ थी। पर्वत के शिखर से उन तीनों मूर्तियों पर पानी गिर रहा था। किसीने उन पर हल्दी, कुंकम और फूलों से पूजा की हुई थी। वह प्रांत पूरा सुगंध से भरा हुआ था। श्री स्वामी जी अपने दाएँ हाथ में एक लकडी को पकड़कर उन मूर्तियों से अपनी भाषा में कुछ बोलने लगे थे। बाद में तीन पर्लांग दूर पर रहने वाले जल कुंड के पास हम पहुँचे थे। उस कुंड के दक्षिण की

ओर दो आम के पेड थे। बडी बडी टहनियाँ नीचे झुकी हुई थी। उसके उत्तर दिशा के पेड की टहनी पकड़कर नीचे कुंड में देखा था। कुंड में पानी बहुत गहरे में था। उस पानी में सोना और चाँदी के धन राशियाँ मुझे दिखाई दिए थे। इतने में एक बडी मछली का सिर उस कुंड में घुसा था। उस मछली के ओठों और गलफडे पर सोना दिखाई दे रहा था। उसका सिर हाथी के सिर के समान बहुत बडा था। मछली अपने गलफडों को हिलाने से पानी में भयंकर लहरे ऊपर उठने लगी थी। मैं डर से श्री स्वामी जी के पास भागकर बताने लगा कि श्री स्वामी जी वहाँ का पानी ऊपर आ रहा है। हमें यहाँ से तुरंत भागना चाहिए था।

तब स्वामी जी ने बताया कि वहाँ पानी केवल घुटनों तक भी नहीं आता है। चलो। कहकर श्री स्वामी जी ने मुझे वहाँ से तीन किलो मीटर दूर तक पानी में ही ले चले थे। कहीं भी हमें कोई तकलीफ नहीं हुई थी। वहाँ पत्थर और पेड हमें दिखाई दिए थे। वहाँ से हम पेंचैलकोना पहुँच गए थे। तब श्री स्वामी जी ने हमें तेगचेर्ला की ओर से कल्लूर आने की आज्ञा दी। वे साधुवय्या से मिलने अकेले जंगल की ओर चले गए थे। बहुत निकट रास्ता होने पर भी हम कल्लूरु पहुँचने के पहले ही श्री स्वामी जी अपना भक्त पेद्दय्या जी के घर हमारे पहले ही पहुँच कर धुनि बनाकर अंगुली के निशाने लगाते बैठे हुए थे। श्री स्वामी जी ने मुझे बुलाकर कहा कि तुम्हारा नाम बदल गया था। तुझे कुछ निंदा भोगना पडेगा। तुरंत घर चले जाओ।

मुझे तुलसम्मा जी ने टिकट के लिए दो रूपए दी थी। मेरे घर पहुँचते ही वहाँ मेरे घर के पास सभी लोग इकट्टे हुए थे। वे सब मेरी ओर आश्चर्य से देख रहे थे। बाद मालूम हुआ था गाँव में बात फैल गई थी कि कुछ मजदूर मुझे मार कर मेरे लाश को चटाई में बाँधकर पेड के नीचे रखे थे। गाँव के सभी लोग मेरे लाश को घर लाने केलिए इकट्टे हुए थे। सब मिलकर पेड के पास गए थे। वहाँ केवल चटाई ही दिखाई गयी थी। श्री स्वामी जी की बातों का अर्थ तब ही मालूम हुआ था।

एक बार गोलगामूडि में श्री स्वामी जी के साथ कुछ दिन ठहरा था। एक दिन रात के समय श्री स्वामी जी अकेले कहीं जा रहे थे। मैं भी अपने आप श्री स्वामी जी के पीछे जाने लगा। श्री स्वामी जी नागुलवरम् जाकर वहाँ जंगल को पार करके पेगड्राजु गुंटा के पास रूक गए थे। मैं वहाँ के विडवली (तुंगा) के पास की झाडियों के पीछे से देख रहा था। श्री स्वामी जी उस झाडी के पास आकर कहने लगे थे कि तुम बहुत बार कहने पर भी चपके - चुपके मेरे साथ आते हो। यह बहुत भयानक काल है। देखो उस दिशा में। वहाँ एक बडा साँप टुकडों में काट कर पडा हुआ था। श्री स्वामी जी ने बताया कि ऊपर वाला यदि इस साँप को इस प्रकार काटे बिना छोड देते तो वह साँप हम दोनों को बहुत नुकसान पहुँच गया होगा। तुझे मेरे साथ कभी भी नहीं आना चाहिए। ऐसा कहकर उन्होंने मुझे वापस भेज दिया था। मैं अपने गाँव

पहुँच गया था। बाद में सुबह श्री स्वामी जी अपने साथ जंगल से कुछ नागफनी की लकडियाँ लेकर आए थे।

श्री स्वामी जी आधी रात बिना कोई भय के इधर – उधर घूमते थे। एक बार वर्षा काल में बहुत बारिश के साथ बिजलियाँ भी बरस रही थीं। श्री स्वामी जी अपने सिर के ऊपर एक ताड का पत्ता रखकर धुनि के पास जा रहे थे। कहाँ जा रहे है का पता लगाने केलिए उनके पीछे मैं भी चल रहा था। वे मुदिगेडु के पास के कल्लेरु नदी के किनारे धोबीघाट के पास पहुँच गए थे। श्री स्वामी अपने शरीर से कपडा निकालकर वहीं किनारे पर रख दिए थे। कल्लेरु नदी में बहुत पानी का प्रवाह था। छोटे बच्चे के समान पानी में इधर – उधर दौडते हुए श्री स्वामी जी खेल रहे थे। पानी को हाथों में लेकर ऊपर फेंककर आनंद उठा रहे थे। नदी के एक तरफ से दूसरे तरफ तक जा रहे थे और आ रहे थे। बाद में मेरे पास आकर बोलने लगे कि अब राक्षस गण का समय है। इस समय में तुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था। मेरे बाहुँओं के ऊपर लकडी रखकर मुझे ढकेलते हुए आश्रम ले आए थे। बाद श्री स्वामी जी धुनि के पास बैठ गए थे। मैं अपने कमरे में जाकर लेट गया था।

उस समय मैं एक छोटी सी झोंपडी में रहता था। मेरी आर्थिक स्थिति मुझे घर का निर्माण करने नहीं दे रही थी। एक दिन श्री स्वामी जी मुझे घर का निर्माण करने की सलाह दी और इसकी भूमि पूजा भी कर ली थी। मेरी स्थिति मुझे मालूम थी, मेरी मानसिक स्थिति को जानकर श्री स्वामी जी ने बताया कि तुम इस दिशा में चले तो तुम्हारा घर का निर्माण पूरा हो जाएगा। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार जब मैं उस दिशा में जा रहा था मुझे राज, लोहार, बढ़ई आदि दिखाई दिए। वे अपने आप मेरी सहायता करने केलिए तैयार हो गए थे। दोस्तों ने भी मेरे कहे बिना मेरे पास आकर आर्थिक सहायता की। मेरे कोई प्रयास केबिना ही मेरा घर का निर्माण पूरा हो गया था। कुछ समय के बाद में श्री स्वामी जी ने मेरे घर आकर घर में धुनि लगाई थी। गाँव के सभी लोग कहते है गाँव के घरों की तुलना में मेरा घर ही बहुत सुंदर है। यह केवल श्री स्वामी जी की महिमा ही है।

एक बार कुछ भक्त लोग काशी यात्रा पर जाना चाह रहे थे। उनकी दोस्त वल्लपुरेड्डी तुलसम्मा को अपने साथ काशी की यात्रा के लिए ले जाना चाह रहे थे। तुलसम्मा ने श्री स्वामी जी से यात्रा में शामिल होने की प्रार्थना की थी। स्वामी जी ने कहा कि उनको जाने दो, हम साथ मिलकर कल जाएँगे। चार दिन तो बीत गए थे। श्री स्वामी जी यात्रा के बारे में कुछ नहीं बता रहे थे। तब स्वामी जी के व्यवहार से ऊबकर तुलसम्मा बिना खाए रात सो गयी थी। सुबह आठ बजने पर भी नहीं उठी थी। सेवकों ने उसे जगाया। जागते ही वह बोल उठी कि मैं कहाँ थी? जागने के बाद में वह सबको बताने लगी कि वह रात भर काशी यात्रा कर रही थी। सपने में काशी

की पूरी यात्रा कर डाली थी। उसने बताया कि मुझे श्री स्वामी जी साथ लेकर पूरी यात्रा करवाए थे। भक्तों ने समझा कि यह तो सपना था। सपने में काशी यात्रा करे तो वह यात्रा कैसी होगी? एक महीने के बाद वापस आए हुए काशी यात्रियों को काशी के सभी दर्शनीय स्थानों का विवरण तुलसम्मा सविवरण देने लगी थी। उसकी बात सुनकर उनको आश्चर्य हुआ था। तब ही उनको पता चला कि श्री स्वामी जी ने ही उनके साथ काशी यात्रा स्वयं करवाए थे। यह लीला पूरी तरह समझने केलिए श्री गुरुचरित में निहित कुछ लीलाओं के बारे में जानना आवश्यक है।

श्री स्वामी जी अग्नि कुंड के समीप ही सोते थे। गोलगामूडि में इमली के पेड के नीचे गुरवय्या सो रहा था। सभी लोग सो रहे थे। कुछ दिगंबर ऋषि आकर श्री स्वामी जी के चारों ओर बैठकर बातचित कर रहे थे। गुरवय्या अचानक जागकर कुंड में लकडी डालने के लिए आया था। स्वामी जी ने पूछा कि गुरवय्या अब क्यों उठ गए हो। स्वामी जी की बात सुनकर गुरवय्या वहीं बेहोश होकर गिर पडा। ऋषि लोग जाने के बाद में ही उसे होश आया था।

एक बार श्री स्वामी जी और राजुपालें जयरामय्या दोनों मिलकर बद्वेलु जा रहे थे। जाते समय आकाश की ओर देखते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि उनको देखो आकाश में। जयरामय्या ने कहा कि मुझे कोई नहीं दिखाई दे रहा है। तब स्वामी जी उसकी आँखों को छूकर बताए थे अब देखो। क्या दिखाई दे रहा है? बहुत लंबे – लंबे आदमी घूमते हुए दिखाई दिए। और एक बार आँखों को स्वामी जी छूने से कुछ भी नहीं दिखाई दिया था केवल साधारण माहौल ही दिखाई दिया था।

एक बार वक्केम्मा के आंजनेय स्वामी के मंदिर जाने पर उसे सभी देवता सभा करते दिखाई दिये थे। उसे वह दृश्य अद्भुत सा लगा था। ब्रह्मा मूर्ति को रूप देकर हमारा भाग्य लिखना, एक स्त्री वहाँ के मूर्तियों के रूपों में आई हुई कमियों को ठीक करना आदि दिखाई दिए थे। ऐसा दर्शन केवल भ्रांति नहीं कह सकते हैं। विशाखापट्टनम के मुसलमान यासिर बाबा ने सोमय्या नाम के एक भक्त को ऐसा ही दर्शन दिया था।

वक्केम्मा एक बार श्री स्वामी जी से दूर खडी हुई थी। श्री स्वामी जी प्रेम से उसे अपने पास बुलाए थे। निकट आने पर स्वामी जी के स्थान पर उसे मुरली वादन करने वाला श्री कृष्ण नाचते हुए

दिखाई दिया था। तन्मयता से आनंद के साथ वह उसे देखती रही थी। उसके बाद श्री स्वामी जी का साधारण रूप दिखायी दिया था।

वक्कम्मा एक दिन गोलगामूडि के आंजनेय स्वामी जी के मंदिर गयी थी। आंजनेय स्वामी ने उसके बगल में खडे होकर स्पष्ट रूप से बताया कि तुम फूलमाला चढ़ाकर पूजा कर सकती हो।

सद्गुरु के अनुग्रह जो प्राप्त करते हैं देवता लोग भी उनके वश में आ जाते हैं और अपने आप साक्षात्कार देते है। यह सत्य श्री गुरूचरित पढ़ने से मालूम होता है। 42

एक समय महान् भक्त वक्केम्मा श्री स्वामी जी के महत्य को देखना चाहती थी। एक दिन आश्रम में स्वामी जी के सामने 30 फुट दूर जमीन पर सोई हुई थी। उसको वहाँ से 20 फुट दूर पर राम और लक्ष्मण का दर्शन मिला था। उनके वहाँ से अदृश्य होने से उनके स्थान पर श्री कृष्ण का दर्शन मिला था। दोनों को भक्ति भाव से प्रणाम करके अपने को धन्य मानने लगी थी। वक्केम्मा को ऐसे अनेक अद्भुत अनुभव दिखाई दिए थे। उन सबको बताने की अनुमती श्री स्वामी जी ने उसे नहीं दिए थे। इसलिए श्री स्वामी जी की समाधि प्राप्त करने तक वह चुपचाप ही रही थी। उसी प्रकार नेल्लूर के गुरुलदिब्बा के पास सूर्यनमस्कार कर रही थी। उस समय उसे अनुभव हुआ था कि वह अंतरिक्ष में घूम रही थी। वहाँ भी भूमि की तरह पर्वत, पत्थर आदि दिखाई दिए थे।

एक दिन वक्केम्मा को एक सपना आया था। उसमें उसने देखा कि श्री स्वामी जी सोते हुए तीव्र गति से चार किलोमीटर नीचे फिसल रहे थे। इस प्रकार तीन बार नीचे और तीन बार आगे जाकर बाद में वक्केम्मा के पास आकर अपना मुँह खोलकर विश्वरूप दिखा रहे थे। इतने में तुलसम्मा अपना पैर श्री स्वामी जी के मुँह के सामने रखकर कहा कि देखो स्वामी किस प्रकार अपना विश्वरूप दिखा रहे हैं। वक्केम्मा ने तुलसम्मा को नाराजगी से हटा दिया। **विश्वरूप दिखाना खतम हो गया था। तुलसम्मा अपना पैर रखने का अर्थ होता है कि प्रकृति बीच में आ गई होगी।** 43

एक दिन रोशरेड्डी गोलगामूडि आश्रम में दिन में ही सोने की स्थिति में बैठा हुआ था। अपनी पलक झपकते ही वह वहाँ से 90 किलो मीटर दूर के गाँव के पास पहुँच गया था। उनके परिवार के सभी सदश्य बारिश में भीगते हुए तिल इकट्टा कर रहे थे। उनके घर में कच्चे नींबू काटकर इकट्टा कर रहे थे। कुछ देर के बाद में सपने से बाहर आ गया था। तीसरे दिन रेड्डी जी को देखने उनके छोटा बेटा गोलगामूडि आया था। अपने घर के तिल और नींबू इकट्टा करने के सभी विषयों के बारे में पूछने वाले रेड्डी जी को देखकर उसको आश्चर्य हुआ था कि **ये सभी विषय उनको कैसे मालूम हो गए थे। सद्गुरु की महिमा कैसी होती है उसकी जानकारी उस बच्चे को मालूम हुई होगी।** 44

एक दिन रोशरेड्डी के हाथ में एक स्लेट देकर स्वामी जी ने पूछा कि उस पर क्या लिखा हुआ है, पढो। रोशरेड्डी ने जाँच कर देखा और बोला इस पर कुछ नहीं है। तब स्वामी जी ने बताया कि सावधानी से देखो। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार देखने से स्लेट पर उसके इष्ट देव और देवता श्री वेंकटेश्वर स्वामी, लक्ष्मी देवी,गणपति आदि की मूर्तियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई दी। कुछ देर के बाद गायाब हो गई थीं।

नागूलु वेल्लपाडु के वेलूरु रामानायुडु और उनके परिवार के सभी सदस्य श्री स्वामी जी के दर्शन बहुत भक्ति भाव से करते थे। एक बार माँ और उसका बेटा पलंग पर सोए हुए थे। बेटे को श्री स्वामी जी मुकुट, भुजकीर्तियाँ धारण करके विष्णु के समान अग्नि कुंड में बैठे हुए दिखाई दिए थे। उसने आश्चर्य चकित होकर माँ से कहा कि तुम भी देखो। लेकिन उसे कुछ भी नहीं दिखाई दिया था। श्री स्वामी जी उस समय उसी गाँव में बसे हुए थे। अगले दिन माँ ने जाकर श्री स्वामी जी का दर्शन किया था। तब स्वामी जी ने उसे बताया कि रात को ऊपर वाले आकर कुंड में बसकर चले गए थे। श्री स्वामी जी की बात सुनने के बाद में उसे मालूम हुआ था कि रात में उसका बेटा जो कुछ देखा था वह सही है। उसके बेटे को भी अवगत हुआ था कि पहले रात जो कुछ उसने देखा था वह भ्रम या सपना नहीं था, वह केवल श्री स्वामी जी के अनुग्रह के कारण ही उसको मिला हुआ था।

अनंत सागर के चड्डा वेंकटरेड्डी के घर श्री स्वामी जी बहुत बार जाते थे। रेड्डी जी बहुत प्रेम से उनको आतिथ्य देते थे। उस गाँव के और आसपास के गाँवों के लोग आकर श्री स्वामी जी का आशीर्वाद पाकर खुश हो जाते थे। अनेक लोग अपनी समस्याओं के समाधान भी स्वामी जी से पाते थे। स्वामी जी के दिए हुए आशीर्वाद को पाकर बहुत आनंद पाते थे।

एक दिन रेड्डी जी ने स्वामी जी से पूछा कि स्वामी सभी लोग आपको महान् मानते है, आप मुझे अपनी महानता संबंधी एक घटना साबित कीजिए। तब स्वामी जी ने बताया कि तुम अपनी आँखे बंद कर लो। बाद में स्वामी जी उसके सिर पर हाथ रखकर बोले अब आँख खोल दो। रेड्डी जी की आँखों के सामने से सब कुछ गायब हो गया था। सब कुछ सून्य दिखाई दे रहा था। पेड या घर या कोई भी नहीं थे। सभी जगह पानी के गड्डे थे। हर गड्डे में स्वामी जी के सिर ही दिखाई दे रहे थे। कुछ देर तक देखने के बाद में रेड्डी ने बताया कि मैं उस दृश्य को नहीं देख सकता हूँ। आप तो दैवस्वरूप है। आप अनंत है, कृपा करके मुझे मेरी दृष्टि वापस दिलवाइए। जिस प्रकार अर्जुन को श्री कृष्ण ने विश्वरूप दिखाया था उसी प्रकार श्री स्वामी जी दिखाए थे। बाद में स्वामी जी के रेड्डी जी के सिर पर हाथ फेरते ही उसकी दृष्टि वापस आ गई थी।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 18

जिस चिंता में डूबे रहते है उसीमें वे ढ़केले जाते है।

स्वामी मनुष्य के मरने के बाद में क्या होता है? मनुष्य मनुष्य के रूप में ही पुनरजन्म लेकर पाप भोगता है या पुण्य? किसीने श्री स्वामी जी से प्रश्न पूछने पर उन्होंने बताया कि **जिस चिंता में डूबे रहते है उसीमें वे ढकेले जाते है।** 45

भगवद्गीता आदि ग्रंथ और अन्य शास्त्र बताते हैं कि आखरी क्षणों में जीव जिनका स्मरण करते हैं वे उनको ही पाते हैं। जीवन भर लौकिक व्यवहारों में तड़पने वाले सामान्य मनुष्यों के आखरी क्षणों में वहीं स्मृतियाँ उन्हें प्राप्त होती हैं। लेकिन पूर्व पुण्य के कारण जो लोग महन् मनीषीयों का आश्रय लेते हैं वे निरंतर उनका स्मरण और सेवा में ही अपना जीवन बिताते हैं। ऐसे लोगों के लिए सहज रूप में अंतिम स्वास में अच्छे फल और स्मृतियाँ ही मिलते हैं।

हमारे शास्त्र, विद्याओं को परविद्या, अपरविद्या दो भागों में विभाजित किये थे। मोक्ष देनेवाले विद्या को परविद्या कहते है जिसे मोक्षगामियाँ आश्रय लेते हैं। ज्योतिष, व्याकरण आदि अपर विद्याएँ हैं। ये तो बहिर्मुख और ऐहिक होने से मोक्ष के लिए प्रधान रूप से काम नहीं आते है। ये विद्याएँ मनुष्य को भ्रांति में डालकर अधोगति 46
की ओर ले जाते हैं। इसलिए ही मुमुक्षुओं को इनकी ओर अपनी दृष्टि नहीं डालकर, इनकी परवाह नहीं करके, केवल सद्गुरु पर ही अपनी दृष्टि डालनी चाहिए। इस सत्य को साबित करने वाले अनेक उदाहरण श्री स्वामी जी के चरित में हमें दिखाई देते हैं।

नागुलवेल्लटूरु के सोंपल्लि रामानायुडु ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करके बहुत समय श्री स्वामी जी के साथ ही बिताए थे। वे अपनी विद्या में पारंगत होने की इच्छा से स्वामी जी के पास ठहरे थे या और कुछ उद्देश्य से ठहरे थे यह विषय किसी को मालूम नहीं था। वे लोगों के प्रश्नों का समाधान बहुत अच्छी तरह बताते थे। एक बार किसी का आभूषण चोरी होने से उस पर कुछ गणन करके बताया कि उनके घर के ताड पत्ते के अंदर आभूषण छिपा हुआ है। पत्ते के अंदर देखने पर वह आभूषण दिखाई दिया। घर वापस नहीं आए भैंस के विषय में भी उन्होंने बताया कि यदि उत्तर दिशा में तीन किलो मीटर दूर वाले गाँव में परसो जाकर सूर्योदय के पहले ढूँढने से मिलेगी। उसी समय जाकर ढूँढने से उनको भैंस मिल गयी थी।

एक बार श्री स्वामी जी यात्रा पर और एक गाँव जा रहे थे। उस समय रामानायुडू ने कहा कि मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैं घर पर ही रहूँगा। श्री स्वामी जी चले गए थे। दूसरे दिन रामानायुडु आश्रम में मर गया था। श्री स्वामी जी को यह समाचार मिलने पर उन्होंने बताया कि वहीं आश्रम में उसकी समाधि बनाने की आज्ञा दी। सेवकों ने ऐसा ही किया था।

उस समाधी के बगल में ही पोलिरेड्डी जी की समाधि भी बनी हुई थी। पोलिरेड्डी हमेशा श्री स्वामी जी के साथ रहकर उनकी सेवा करते थे। श्री स्वामी जी जहाँ भी जाते थे वहाँ पहले ही जाकर श्री स्वामी जी के लिए आवश्यक तरकारियाँ ले आकर उनके भोजन की व्यवस्था करते थे। श्री स्वामी जी हरे पत्तों वाली सब्जियाँ बहुत पसंद से खाते थे। इस प्रकार श्री स्वामी जी को मन पसंद खाना बनाकर उनको संतुष्ट करना ही उनका लक्ष्य था। इसी सेवा में वह रहता था। पोलिरेड्डी के मृत्यु के चालीस दिन पहले श्री स्वामी जी ने बताया कि चालीस दिनों में भगवान विचारण के लिए आएगा। उस दिन हमें पानी भी नहीं छूना है। श्री स्वामी जी की बातों का मर्म किसी को मालूम नहीं हुआ था। उस दिन श्री स्वामी जी मैपाडु में थे। उन्होंने कहा कि हम सबको तुरंत आश्रम जाना हैं। वहाँ जाने तक हमें पानी को भी नहीं छूना हैं। हमें जल्दी से जल्दी गोलगामूडि पहुँचना हैं। बारिश होने पर भी सभी सेवक श्री स्वामी जी के आज्ञा के अनुसार पैदल नेल्लूर पहुँचकर वहाँ से कार से गोलगामूडि पहुँच गए थे। उसी दिन सुबह पोलिरेड्डी गोलगामूडि आश्रम में स्वर्ग लोक चले गए थे। उसकी अंतिम संस्कार करने के विषय में सभी सेवक चर्चा करने लगे थे। श्री स्वामी जी से संपर्क करना चाहते थे। लेकिन श्री स्वामी जी का पता उन्हें नहीं मालूम हुआ था। लेकिन श्री स्वामी जी को सब कुछ मालूम था। उन्होंने सभी सेवकों को गोलगामूडि पहुँचा दिये थे। बाद में स्वामी जी स्वयं पोलिरेड्डी जी के मृत शरीर के लिए समाधि बनवाए थे।

पोलिरेड्डी जी की समाधि बनाने में भाग लेने वाले श्री स्वामी जी ज्योतिष्य में प्रवीण रामानायुडू की मृत्यु के समय आश्रम में क्यों नहीं आए थे। यह सेवकों के लिए एक चर्चा का विषय बन गया था। श्री स्वामी जी की सेवा के बिना कुछ भी नहीं चाहने वाला व्यक्ति, अनन्य भक्त और मुवुश्रुव श्री पोलिरेड्डी थे। श्री स्वामी जी स्वयं उनकी समाधि करवाकर उनको सद्गति प्राप्त करवाए थे। लेकिन रामानायुडु श्री स्वामी जी से केवल ज्योतिष शास्त्र सीखने वाला विद्यार्थी था। फिर भी पूर्वपुण्य के कारण श्री स्वामी जी उनकी मृत्यु के बाद भी उन्हें परम पवित्र श्री स्वामी जी के आश्रम में ही समाधि करवा दिए थे। श्री साई चरित में भी किसी इच्छा के बिना, अनन्य रूप से सेवा करने वाले मेघ को अपना प्रियतम बताया था। मेघ के मरने के बाद उसके शव के साथ बहुत दूर जाकर उसकी विदाई देना ही नहीं, अपने खर्च से भक्तों को संतर्पण भी करवाए थे। बिना इच्छा के करने वाली सेवा ही भक्ति है।

नेल्लूर के निवासी आय - कर विभाग के अधिकारी के पास एक पालतू कुत्ता रहता था। वे उसे बहुत प्यार से पालते थे। अस्वस्थ होने से डॉक्टर के इलाज से ठीक न होने पर वे उस कुत्ते को श्री स्वामी जी के पास कार में ले आए थे। कुत्ता श्री स्वामी जी को और श्री स्वामी जी कुत्ते को एक दूसरे की कुछ समय देखने के बाद में कुत्ता मर गया था। श्री स्वामी जी की सन्निधि में प्राण छोडने वाले जीव को सद्गति प्राप्त होगी। साई चरित में भी एक घटना था कि साइनाथ के दर्शन के बाद में एक बाघ ने अपने प्राणों को छोड़ दिया था।

गोलगामूडि के कुर्रकूटि नरसिंहनायुडू जी की पत्नी अनेक सालों से श्री स्वामी जी की भक्त थी। श्री स्वामी जी की बात पर अचल विश्वास होता था। श्री स्वामी जी ने उन्हें एक साल तक गोलगामूडि आश्रम छोडकर पश्चिम दिशा में चले जाने की आज्ञा दी थी। स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार अपना घर छोडकर तलुपूरु में एक झोंपडी बनाकर खुशी से रहने लगी थी।

1983 में नायुडू की पत्नी को फोडा बीमारी आयी थी। डॉक्टर इलाज नहीं कर सके थे और उसे छोड दिए थे। श्री स्वामी जी के पास आकर उनके द्वारा दी गयी विभूदी ले रही थी। श्री स्वामी जी के भक्त बुज्जन्ना ने स्वामी जी की समाधि के पास के धागे को बाँधकर सांब्राणी का धुँआ चढ़ाते हुए स्वामी जी से प्रार्थना की थी।

उस रात बुज्जन्ना ने एक सपना देखा था। उस सपने में उसने देखा था कि नायुडू की पत्नी को एक बडे सपाट पर सुलवाया गया था। उसके ऊपर फूलों की माला चढ़ाई गई थी। उसका मुख बेजवाडा कनकदुर्गा माता की तरह विराज मान था। सुबह देखने पर वह मरी हुई थी। श्री स्वामी जी ने ऐसी रचना की थी बुज्जन्ना के सपने के द्वारा उसे अवगत कराया कि उसकी मृत्यु का समय आ गया है, ऐसे वक्त स्वामी जी भी कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए ही स्वामी जी उसकी रक्षा नहीं कर सके थे।

उसे मृत्यु के समय दैवत्व देकर उसके मुँह पर कांति फैलाकर सद्गति श्री स्वामी जी ने प्रदान की थी।

कल्लूरु पल्ली के निवासी पाबोलु सुब्बम्मा बहुत दया वाली स्त्री थी। वह समस्त प्राणियों में भगवान को देखने के स्वभाव वाली थी। गाँववाले एक चोर को पकड़कर उसके घर के सामने एक गाडी से बाँधकर रखे थे। उसने चुपके से उस डाकू को दही का भोजन खिलाकर उसकी सहायता की थी।

बुढापे में कलिचेडु में पलंग पर रहकर भगवान का स्मरण करती हुई सोती रहती थी। उसके पोते पि. सुब्बरामय्या ने एक बार श्री स्वामी जी का सिद्धलय्य कोंड के पास दर्शन किया था। तब तक मौन मुद्रा में रहने वाला श्री स्वामी जी उसे देखकर उसे एक चिट्ठी पर अभयमुद्रा और आशीर्वाद देकर भेजे थे। माँड पीने के लिए कहने

पर भी नहीं पीकर फिर मौन में चले गए थे। उसी क्षण सुब्बरामय्या के लिए एक आदमी आया था। यह समझकर श्री स्वामी जी ने मौन को छोडकर उसको भी सद्गति के लिए चिट्ठी लिखवाकर दिए थे। घर जाने के बाद में तब तक कुछ भी नहीं पीने वाली सुब्बम्मा मुँह खोलकर श्री स्वामी जी के द्वारा दिया गया प्रसाद और विभूदि स्वीकारने के लिए तैयार हो गयी थी। उनको स्वीकारने के बाद में वह अपने प्राणों को त्याग कर दी थी। उसे सकल साधु स्वरूप वाले श्री साई ही श्री वेंकय्या स्वामी के द्वारा सद्गति प्रदान किए थे। पवित्र धनुर्मास में शरीर त्याग करके वह अमर बन गयी थी। यह सब श्री स्वामी जी की कृपा के द्वारा ही होने की संभावना है।

वल्लपुरेड्डी आदिनारायणरेड्डी जी अपनी माँ के बारे में इस प्रकार बता रहे थे।

मेरी माँ तुलसम्मा जी श्री स्वामी जी की सेवा अनेक सालों से करती रही थी। मेरी माँ के बारे में श्री स्वामी जी बताते थे कि पूरब दिशा में हमारे लिए माँ थी। वह हमारे लिए पाँच जन्मों से खाना खिला रही थी। भविष्य में भी हमें उसका खाना ही खाना पड़ता है। सेवक पूछते थे वह माँ कौन थी? कहाँ रहती थी? लेकिन श्री स्वामी जी उसके बारे में नहीं बताते थे। बाद में जब तुलसम्मा श्री स्वामी जी की सेवा करने आई थी तब ही सबको मालूम हुआ था कि वह माँ तुलसम्मा ही है। वह अपना घर, संपत्ति छोडकर श्री स्वामी जी की सेवा में पच्चीस साल बितायी थी। श्री स्वामी जी हमेशा उसे माँ कहकर बुलाते थे। उसके साथ रहनेवाली अन्य महिलाओं को कभी भी श्री स्वामी जी माँ कहकर नहीं बुलाते थे। उसकी सेवा के कारण ही श्री स्वामी जी ने उसे सद्गती प्रदान की थी।

1. जब तुलसम्मा स्वर्ग प्राप्त कर चुकी थी तब उसके दहन कार्य में कोई चंदन की लकडी या सुगंध द्रव्यों का इस्तेमाल नहीं किया गया था। फिर भी कोई दुर्गंध नहीं निकली थी।
2. मरने के पहले दो महीने तुलसम्मा को श्री स्वामी जी मौन प्रदान किए थे। इसी ध्यान स्थिति में वह अपने प्राणों को छोड दी थी।
3. विचित्र प्रेरणा देकर वेंकय्या और वेंकम्मा के नाम के भक्तों को तुलसम्मा की सेवा के लिए श्री स्वामी जी रखे थे। ये दोनों तुलसम्मा को श्री स्वामी जी मानकर उसकी सेवा बहुत भक्ति और श्रध्दा भाव से किए थे।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 19

श्री स्वामी जी का अभय

श्री स्वामी जी की सेवा में ही अपने जीवन को समर्पित करके उनको ही अपने गुरू, दैव, माता, पिता, भाई ही नहीं अपना सर्वस्व मानकर, उसी भावना से श्री स्वामी जी की सेवा करनेवाले सेवकों को स्वामी जी से दूर रहने का सोच - विचार उनके हृदयों को पिघल दिया था। समाधि स्थिति पाने पर उनका भविष्य क्या होगा? यही शंका सभी लोगों को सता रहा था। यही प्रश्न श्री स्वामी जी से पूछने पर करुणामय श्री स्वामी जी उनको जो अभय दिए थे उसने उनके सेवकों को ही नहीं, बहुत जन्मों से उनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंद रखने वाले अनेक लोगों को भी धीरज बंधाया था।। उनके दिये गए अभय के अनुसार उनके आदर्शों का पालन करने से उनकी दिव्य सन्निधि और रक्षा की कोई चिंता नहीं होती है। हमारे असावधान क्षणों में भी श्री स्वामी जी हमारे साथ रहकर हमारी रक्षा करते हैं। श्री स्वामी जी की समाधि के बाद में उनकी अनेक लीलाओं के द्वारा ये सत्य साबित हुए थे। उनके द्वारा दिए गए कुछ अभयों के बारे में यहाँ पढेंगे।

वल्लपुरेड्डी नारायणरेड्डी मद्रास से कार खरीद लिए थे। लेकिन सी बुक में कुछ समस्याएँ आई थी। बहुत बार कोशिश करने पर भी समस्याओँ का समाधान नहीं मिला था। ऐसी स्थिति में एक दिन पेनवर्ती में उनके घर में दीवार पर लगा हुआ श्री स्वामी जी के चित्र के ढाँचे को अपनी समस्या निवेदन की कि स्वामी तीन महीनों से मद्रास इस काम पर जा रहा था, कार की यह समस्या ऐसी ही रह गयी थी। तीन दिनों में और एक बार मद्रास जाने वाला हूँ। इस बार काम हो जाने का आशीर्वाद दीजिए। तीसरे दिन मद्रास जाते वक्त गोलगामूडि जाकर श्री स्वामी जी का दर्शन करके उनके सामने अपनी विनती सुनाई। श्री स्वामी जी ने बताया कि तीन दिन के पहले ही तुम्हारा काम हो गया था। इसका मतलब यह है कि चित्र के सामने जब विनती किया गया उसी दिन वह काम श्री स्वामी जी पूरा करवाए थे। इसलिए ही श्री स्वामी जी एक बार बताए थे कि जिस प्रकार लोग रहते है उसी प्रकार मैं भी रहता हूँ। **श्री स्वामी जी के चित्र को एक साधारण चित्र नहीं मानना है। हमें समझना है कि एक महात्मा हमारे ऊपर करुणा दिखाने के लिए हमारे घरों में विराजमान है। ऐसे समझने पर उनकी चित्र के प्रति भक्ति और श्रद्धा दिखाने पर उनकी सेवा करने पर वे हमें अभय देते हैं।**

जब सबको मालूम हो गया था कि श्री स्वामी जी दो साल के बाद में समाधि प्राप्त करेंगे उस समय उन्होंने बताया कि हर जीवों में वेंकय्या विराजमान है। **इसलिए हमें जीवों का आदर करने पर या उनको सताने पर वे दोनों कर्म श्री स्वामी जी के पास पहुँच जाते हैं। इस सत्य को जानकर हमें हर दिन व्यवहार करना चाहिए। यही** 48 **श्री स्वामी जी के लिए हमारी पूजा है। अपने प्रतिरूप समझने वाले सभी जीवों पर उनको अपार प्रेम था।** इसलिए ही श्री स्वामी जी हर दिन उन जीवों के लिए बहुत भारी मात्रा में भोजन भूतबलि के रूप में उनको समर्पित करते थे। चावल, रागी, धाने आदि चींटों को भी देते थे। भक्तों के भयंकर रोगों को अपने शरीर पर स्वीकार कर उनके स्थान पर वे पीडा भोगते थे।

एक बार श्री स्वामी जी ने अपने को सिद्धलकोंड शिखर पर ले जाने की विनती की। उस समय श्री स्वामी जी चल नहीं पाते थे। डोली में बिठाकर ले जाने केलिए वह पक्का रास्ता नहीं था। एक भक्त ने श्री स्वामी जी को अपने पीट पर बिठाकर शिखर तक पहुँचाया था। स्वामी जी ने कहा कि हर एक फर्लांग के लिए तीन हजार रुपए आपके खाते में लिख दो। भक्त की सेवा के लिए अपार पुण्य उसे प्रदान किए थे। कुछ सेवकों ने कहा कि यदि आप समाधि प्राप्त कर ले तो हम अपने घर नहीं जाएँगे। यहीं आश्रम में रहकर भिक्षा माँगकर यहीं समाधि के पास ही रह जाएँगे। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि आपके जंगल में बैठने पर भी आपका आवश्यक खाना आपके पास ही आ जाएगा। इस प्रकार श्री स्वामी जी ने सभी सेवकों के लिए भक्ति, मुक्ति दोनों अनुगृहीत किए थे।

और एक बार श्री स्वामी जी से गुरवय्या जी ने पूछा था आपके समाधि को प्राप्त करने पर हमें कहाँ रहना चाहिए? और क्या करना चाहिए? तब श्री स्वामी जी ने आदेश दिया कि तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं। मेरी समाधि के पास ही बैठिए। मैं जो कुछ सोच रहा था वहीं होगा। मेरी समाधि अपने भक्तों से वार्तालाप करेगी, मेरी मिट्ठी समाधान देगी। हर जगह मेरा नाम गूँज उठेगा। साई की बातों के समान श्री स्वामी जी की वचन भी सत्य होना यहाँ देख सकते हैं।

एक दिन गरमी के दिनों में मध्याह्न 12 बजे के समय में किसी एक पर्वत को दिखाकर श्री स्वामी जी बताए थे कि उसे वहाँ जाना है। पक्का रास्ते पर ले जाते तो मना करते थे। सीधे रास्ते से जाना पडेगा, चाहे वह कच्चा रास्ता हो, उस पर कंटक या पत्थर पडा हुआ हो। श्री स्वामी जी की ढोली संभालने वाले अपने पैरों में चप्पल नहीं पहनते थे।

बी नागय्या बता रहा था। श्री स्वामी जी कंटकों के रास्ते पर जाने को कहने पर भी ओंकार सुनाते हुए मन में स्वामी के ऊपर भरोसा रखकर आगे बढ़ते थे। एक कंटक भी नहीं चुभता था। श्री स्वामी जी जो रास्ता दिखाते थे उसी रास्ते पर हम जाते

थे। धूप में मध्याह्न 12 बजे को शुरू होकर तीन बजे तक बिना कोई विराम लिए पैदल जाने पर भी कुछ अस्वस्थता या थकावट महसूस नहीं होता था। पहुँचने के बाद में श्री स्वामी जी बताते थे कि आप मेरी सेवा करके तीस करोड रसीद ले गए थे।

एक बार धुनि को दिखाते हुए कहा कि **यहाँ होने वाली है कोटि लिंगों की पूजा है।** 49

तिरुपती में संचालित एक यज्ञ के बारे में बताने पर श्री स्वामी जी ने बताया कि वहाँ चालीस घंटों में जो फल मिलता है वहीं फल यहाँ चार घंटों में मिल जाता है। 50

और एक बार श्री स्वामी जी ने बताया कि बालयोगी अपना काम आप ही करके चला जाता है लेकिन मैं सबका काम देखता हूँ। आप मुझे देख रहे हैं न।

एक बार गुरवय्या से श्री स्वामी जी ने बताया कि मैं वीरब्रह्मम जी की तरह गड्ढा खुदवाकर उसमें धिपकर, बैठकर नहीं रहूँगा। सबके लिए सभी सुविधाएँ इंतजाम करके चला जाता हूँ। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार सभी सुविधाओं का इंतजाम करवा कर प्रेम मूर्ति बन गए थे।

एक बार रोशरेड्डी से श्री स्वामी जी ने बताया कि **मैं सबके लिए खाना पकवाकर रखवाया था। डाकुओं से उसे बचाइए। आध्यात्मिक रुप से इसका अर्थ यह होता है कि मैंने आध्यात्मिक रूप से सबको अनुगृहीत किया था। आपके अंदर प्राकृतिक रूप से रहने वाले दुष्ट संस्कार रूप के चोर की इस कृपा को चुराने की संभावना है।** 51 उनसे इसे परिरक्षित करने की जरुरत है। मैं श्री स्वामी जी को मानता हूँ। वे ही मेरा सब कुछ देखते हैं। ऐसा सोचकर गलितियाँ करना उचित नहीं है। हमारे अंदर छिपे हुए दुर्गुण रूप के चोरों को पकडकर दूर भगाने से श्री स्वामी जी की कृपा हमें प्राप्त होती है। अपार अनुभव हमें प्राप्त होते हैं। यदि आप चले जाए तो हमारे कौन साथ रहेंगे?... ऐसा सोचने वालों के समाधान भी श्री स्वामी जी ने दिए थे कि मैं कहाँ जाने वाला हूँ, जब तक सूर्य चंद्र रहेंगे तब तक मैं भी रहूँगा। यह सत्य है। इसको साबित करने केलिए श्री स्वामी जी की अनेक लीलाएँ समाधि के बाद में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। श्री स्वामी जी ने बताया कि वेंकय्या के नाम पर मुट्टि भर चावल या कुछ आहार खिलाने वाले या देने वालों की देखभाल मैं ही करूँगा।

एक बार श्री स्वामी जी ने कहा कि अब जो सेवक जो काम कर रहा है भविष्य में भी उसे वहीं काम करते रहना है। क्योंकि हर काम में मैं हूँ।

बिच्छु काटने पर व्यक्ति यदि श्री स्वामी जी के पास आते तो उनकी पीडा दूर होती थी। कुछ लोगों के प्रदक्षिणा करने पर उनकी पीडा कम होती थी। और कुछ लोगों को काटने के समय ही श्री स्वामी जी का स्मरण करने पर पीडा कम हो जाती थी। क्यों ऐसा हो रहा है... पूछने पर श्री स्वामी जी बताते थे कि उनके अनुसार ही

हम व्यवहार करते हैं। उनके विश्वास के अनुसार हम फल देते है। उनकी रक्षा करते है। और एक बार श्री स्वामी जी बताए थे कि मरने से क्या होगा? जीने से क्या होगा? मर कर धूल होने पर भी वापस आने की आज्ञा भगवान देने पर आना ही पडता है।

कभी-कभी श्री स्वामी जी रोशरेड्डी जी से पूछते थे कि गाँव जाकर किसी के पास से पुराने कपडे माँग कर ले आओ। इससे उनकी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं।

काम शुरू करने के पहले एक सेवक ने श्री स्वामी जी से पूछा कि किस वार काम शुरु करने के लिए अच्छा होता है?

स्वामी जी ने बताया कि मंदल मालूम होने से मंगलवार अच्छा होता है।

मंदल का मतलब है कि हम जो कुछ काम कर रहे है वह निष्कल्मष रूप से, गुरुसेवा के रूप में सद्भाव से करने से किसी भी दिन, किसी भी वार शुरू कर सकते है। बुरे भाव से शुरु करने से मंगल वार भी अशुभ दिन होगा।

भक्त – स्वामी आपके निरंतर घूमते रहने से नित्य आपके दर्शन पाना हमारे लिए बहुत मुश्किल हो रहा था।

स्वामी – जहाँ चाहते हो वहीं मैं रहता हूँ।

स्वामी जी की यह बात सत्य है। बहुत भक्तों ने इस सत्य का अनुभव किया था। एक समय श्री स्वामी जी ने बताया था कि अब क्या है, तीन साल के बाद में जब स्वामी छिप जाएगा तब आप को मेरी ताकत दिखाई देगी। यहाँ नेल्लूरु रंगनयुकुल स्वामी की गरुड सेवा जिस प्रकार होगी उसी प्रकार यहाँ भी होगी। पूरे विश्वास से यहाँ आकर जो माँगेंगे वह अवश्य संभव हो जाएगा।

ये वचन आज सत्य साबित हो रहे हैं।

श्री स्वामी जी ने बताया कि लोग जिस प्रकार रहते हैं उसी प्रकार हम भी रहेंगे। यह सत्य भी वक्कम्मा के विषय में सही निकला था।

एक दिन चलमनायुडु और वक्कम्मा श्री स्वामी जी के पास दर्शन करने केलिए नदी पार कर रहे थे। पहले जाने वाले चलमनायुडु के कमर तक पानी आ चुका था। उसके सभी कपडे भीग गए थे। लेकिन पीछे आने वाली निर्दोषी वक्केम्मा के घुटनों तक भी पानी नहीं आया था। उसके कपडों को पानी छुआ तक नहीं। यह तो स्वामी की लीला है।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 20

धर्माचरण

हर एक व्यक्ति सुख और शांति से अपना जीवन जीना चाहता है। लेकिन सुख, शांति और तृप्ति हमारे जीवन में जो धर्म का आचरण हम करते हैं उनके अनुसार 52
हमें प्राप्त होते हैं। यह सत्य अनेक शास्त्रों और अनेक महान् लोगों के द्वारा बताने पर भी आशा से भद्ध मानव ऐसे आचरणों से सदा दूर ही रह जा रहा है। श्री भगवद् गीता और अन्य ग्रंथ बताते हैं कि ऐसे सहजसिद्ध धर्माचरण केवल नित्य जीवन में महन् लोगों के सांगत्य से ही संभव हो सकता हैं। उनकी प्रत्यक्ष सान्निद्य मिलने पर उनके समक्ष महात्माओं के चरित का पारायण करने से महात्माओं के प्रत्यक्ष सान्निद्य मिलने का फल हमें मिलता है। अनेक भक्तों के अनुभवों को देखने से यह हमें मालूम होता है कि महात्माओं के चरित पारायण के द्वारा अनेक लोगों के हृदयों में परिवर्तन आ गया था। ऐसे धर्माचरण के बारे में श्री स्वामी जी कभी भी विवरण नहीं दिए थे या किसी को बताए थे। लेकिन श्री स्वामी जी के नित्य जीवन की घटनाओं से पता चलता है कि ऐसे धर्मबोध सुननेवालों के लिए हर क्षण ऐसे अमूल्य विषय सुनाई देते हैं।

कोर्रकूटि बुज्जय्या जी हर रोज श्री स्वामी जी के सन्निधि में बहुत समय बिताते थे। एक बार किसी कारण वश गाँव में रहकर भी दस दिन तक श्री स्वामी जी के दर्शन किए बिना गलियों में घूमते हुए पेडों के नीचे बैठकर गपशप करते हुए समय बिता रहे थे। ग्यारहवे दिन श्री स्वामी जी के पास जाने पर स्वामी जी उनकी ओर उँगली दिखाकर पूछे थे कि **घूमना पूरा हो गया। अपने व्यवहार के लिए बुज्जय्या ने पश्चात्ताप व्यक्त किया था। शास्त्रों के अनुसार गुरु को पक्ष, महीने या न्यूनतम छे महीने** 53
में एक बार मिलकर दर्शन करना चाहिए। यह शास्त्र का विषय उनके समाधि के बाद भी लागू होता है। रमणमहर्षि ने कहा कि सद्गुरु जनम या मरण से अतीत होने के कारण भक्तों से उनका संबंद उनकी समाधि स्थिति पाने के बाद में भी चलता रहेगा। श्री स्वामी जी ने भी बताया था कि सूर्य और चाँद जब तक रहेंगे तब तक मैं इस दुनिया में रहूँगा। श्री स्वामी जी के द्वारा दिया गये इस वादे के बाद में हर एक व्यक्ति को समाधि का दर्शन करके जितना समय बिता सकते हैं उतना अधिक समय समाधि के पास बिताने की कोशिश करना चाहिए। यह श्रेयस्कर भी है।

नागुलवेल्लटूरु के निवासी मंगम्मा ने एक दिन उपवास दीक्षा ली थी। उस दिन श्री स्वामी जी ने उससे कहा था कि सबको खाना खिलाकर तुम भी खाओ।

मंगम्मा ने कहा कि आज शिवरात्री है इसलिए ही मैं उपवास में हूँ। तब स्वामी जी ने कहा कि भोजन को देखते रहना और खाकर आना। इसका मतलब है भोजन खाने की इच्छा होती है और उसी प्रकार भूख भी लगती है। इसलिए खाना खाना उचित है। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार वह खाना खाकर आ गयी थी। भूख से तड़पते हुए दीक्षा में रहने पर भी भूख के कारण खाने पर ही मन जमता है। यह स्थिति में उपवास में रहने पर भी कोई फायदा नहीं होता है। उस स्थिति में भोजन नहीं खाने पर भी खाने के समान ही है। खाना खाने की इच्छा न होने से ही उपवास का फल हमें मिलता है। यही सत्य भगवद् गीता में भी बताया गया था। उसमें कहा गया था कि यह स्थिति मिध्याचार है। इसलिए ही मंगम्मा की मानसिक स्थिति जानने वाले श्री स्वामी जी ने उसे उपवास नहीं रखने के की सलाह दी थी। और कई लोगों को श्री स्वामी जी उपवास में रहने केलिए प्रेत्साहन देते थे। उदाहरण के लिए रोशरेड्डी जी को पाँच दिन तक निराहार रखते थे। उनके संस्कार के अनुसार वह सही है। इसलिए उनको प्रेत्साहन देते थे।

साधारणतहः श्री स्वामी जी किसी के घर में नहीं जाते थे। 1978 में श्री स्वामी जी कलिचेडु नरसारेड्डी जी के घर तीन रात तक रहकर घर में धुनि जलाकर घर के अंदर ही बैठे थे। चौथा दिन श्री स्वामी जी ने बताया कि हमें सिद्धलय्य कोड को जाना है। गाडी लाओ। गाडी आ गाई थी। सभी सामान गाडी में लादकर निकलने के लिए तैयार थे। तब श्री स्वामी जी ने कहा कि अब नहीं निकलेंगे। उस गाडी वाले को छे रूपए देकर भेज दो। एक बार नहीं चार बार वहीं वाक्य बताए थे। गाडी वाले को उतने पैसे क्यों देना चाहिए किसी को मालूम नहीं हो रहा था। गाडी वाला हर दिन खान में जाकर काम करके पैसा कमाता था। श्री स्वामी जी के लिए गाडी ले आने से उसकी उस रोज की कमाई रूक गयी थी। स्वामी जी का उद्देश्य था कि उसे उस दिन की कमाई हमें ही देना पड़ता है। यह श्री स्वामी जी का सोच - विचार था। साइनाथ भी कहते थे कि हमें किसीसे भी अनुचित सेवा नहीं लेनी चाहिए। किसी भी सेवा उदार रूप से हमें प्रतिफल देना चाहिए। श्री स्वामी जी इस धर्म का पालन बहुत अच्छी तरह कर रहे थे। गाडी मिलना बहुत मुश्किल है इसलिए सेवकों ने स्वामी जी से कहा कि वे आज ही शुरू हो जाए। लेकिन स्वामी जी की आज्ञा की महानता ऐसी है। गाडी से सभी सामान उतरवाकर उसे छे रूपए किराए देने तक स्वामी जी उनको बार – बार पूछते ही रहे थे। सेवक ने पैसे देते हुए गाडी वाले से कहा कि कल आकर श्री स्वामी जी को गाडी में उनके गाँव पहुँचाना है। लेकिन श्री स्वामी जी तब भी उनसे छः रूपए दिए बिना क्या चुपचाप रह सकते है क्या?

श्री स्वामी जी की बहिन मंगम्मा श्री स्वामी जी को बहुत प्यार से देखती थी। स्वामी जी गाँव में इधर – उधर घूमकर रात देर से आने पर भी उनके लिए भोजन रखकर उनका इंतजार करती रहती थी। स्वामी जी के भाइयों को बताए थे कि उसकी

सेवा के लिए अपनी संपत्ति को उसे ही देने की आज्ञा दे दी थी। ऐसे ही उन्होंने किया। कृतज्ञता का अर्थ सबको श्री स्वामी जी ने बताया था।

कोर्रकूटि बुज्जय्या को श्री स्वामी जी एक बार इस प्रकार बताए थे। जो लोग मेरी जिम्मेदीरी ले रहे है उनकी जिम्मेदारी तुझे लेनी है। इसलिए ही श्री स्वामी जी समाधि पाने के बाद में सभी सेवकों की जिम्मेदारी वे संभालते रहे थे। **सही सद्गुरू की सेवा सद्गुरू की महा समाधि के बाद में भी चलती रहती है। इसलिए ही हमारे प्राचीन शास्त्र बताते है कि जीवन भर ब्रह्मचर्य पालन करने वाले नैष्ठिक ब्रह्मचारी को सदा गुरू के पास ही रहना चाहिए। गुरू जी की मृत्यु हो जाने के बाद में भी उनके अग्निहोत्र को उनका प्रत्यक्ष रूप मानकर जीवन भर सेवा करते रहना चाहिए।** 54 श्री साई इसी नियम का पालन करते थे। श्री स्वामी जी भी ऐसा ही करते थे। श्री स्वामी जी साई को अपना भाई मानते थे। उसी प्रकार सच्चे शिष्य का अपने गुरु बंधुओं को, अपने सहचर शिष्यों के प्रति प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। यह उसका धर्म है।

श्री स्वामी जी बहुत बार बताते थे कि पेट भर खाने वाले को नहीं, जिसे भूख होता है उसे खिलाओ। 55

श्री स्वामी जी दो या तीन दिन उपवास रहते समय भी भोजन के समय में अपने शिष्यों को ही नहीं, **दर्शन करने आए हुए सभी लोगों की पहले भूख मिटाकर बाद में वे खाते थे। धर्मशास्त्र बताता है कि घरवाले सभी भोजन लोगों के खाने के बाद में ही मालिक को भोजन खाना चाहिए।** 56

श्री स्वामी जी भोजन में लाल मिर्च मिलाकर खाते थे। मट्ठा देने पर पीते थे, नहीं देने पर नहीं पीते थे। रुचि, विचक्षण, पका है या नहीं ये सब वे कभी भी नहीं देखते थे। एक बार एक सेवक ज्वार का माँड पका रहा था। वह आधा ही पका हुआ था। स्वामी जी ने आधा पका हुआ माँड को परोसने के लिए कहा था। उसमें खाने केलिए सब्जी भी नहीं थी। तब स्वामी जी ने लाल मिर्च डालने को कहा था। **सेवक ने नमक के बिना लाल मिर्च जो डाला उसे ही बहुत इष्ट से खा लिए थे। खाना केवल भूख मिटाने केलिए ही है, रूचि के लिए नहीं। यह वैद्य शास्त्र और साधन के लिए प्रधान सूत्र है।** 57

स्वामी जी नाई को दाडी बनाने के लिए दो रूपए देते थे। सभी लोग उसे केवल पचास पैसे ही देते थे। उसी प्रकार धोबी को भी सबसे अधिक पैसा देते थे। भक्तों से साई कहते थे कि जो भी सेवा हम किसीसे लेते है उसके लिए उदार रूप से हमें देना चाहिए। सभी महात्माओं के आचरण एक जैसे ही होते हैं।

वल्लपुरेड्डी आदिनारायण रेड्डी जी एक बार श्री स्वामी जी को अपने कार में पेनुमर्ती से अपने घर आने का निमंत्रण दिए थे। श्री स्वामी जी ने कहा कि ऊपर वाला नहीं मानता है। रेड्डी जी कुछ सोच कर बताए थे कि आपके सभी सेवकों को बस से

ले आता हूँ आप कार में आ जाइए। श्री स्वामी जी कार में और उनके शिष्य बस में पेनुमर्ती को ले गए थे।

रेड्डी जी से कार में स्वयं जाने पर वह धर्म विरुद्ध होगा। इसलिए ही मना किए थे। जब सबको बस पर ले आने की बात कहीं तब उन्होंने अपनी सहमती दे दी। श्री स्वामी जी को पैदल जाने की स्थिति होने पर सब एक साथ बस में ही गए थे।

एक दिन श्री स्वामी जी जिस केले के पत्ते में भोजन खा रहे थे उस पत्ते में एक कुत्ता अपना मुँह रखा था। बिना कुछ कहे वे उसे छोड कर आ गए थे। कुत्ता पूरा भोजन खाकर खुशी से चला गया था।

जिस प्रकार श्री स्वामी जी कुत्तों को खाना खिलाने पर वे अपने बीच के सभी भेद भावों को छोड़कर मिलजुल कर रहते थे। उसी प्रकार श्री स्वामी जी की सेविका तुलसम्मा भी कुत्तों और बिल्लियों को भोजन खिलाने पर वे साथ मिलकर खाते थे।

एक दिन श्री स्वामी जी ने सुबह जागते ही बताया कि सभी को मौन रहना चाहिए। स्वामो जी ऐसा क्यों कह रहे थे किसी को मालूम नहीं हुआ था। बाद में उनको मालूम हुआ था कि आश्रम में से पाँच अंगरखों से बना मंत्र के कपडे को कोई चोर ने ले गया था। इस विषय को जानने से उनके सेवकों की उसको गालियाँ देने की संभावना है। इसे जानकर श्री स्वामी जी ने सबको मौन रहने की आज्ञा दी थी।

और एक दिन आश्रम के गरम पानी के बडा बर्तन की किसी ने चोरी की। श्री स्वामी जी को बताने पर उन्होंने कहा कि जो उसे ले गया उसके पास वह चीज नहीं थी इसलिए ही उसे ले गया था। ले जाने दो। उसे कुछ भी नहीं डाँटना चाहिए। इसलिए ही श्री स्वामी जी धर्मप्रभू है। शास्त्र बताता है कि उदासीनोगतव्यधः

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 21

श्री स्वामी जी का दिव्य बोध।

श्री स्वामी जी के पास आकर अनेक लोग विनती करते थे कि हमें कुछ प्रबोध कीजिए। तब श्री स्वामी जी संक्षिप्त रूप से बताते थे कि दूसरों को देखकर सीखिए। 58
वे कभी भी बोध का प्रस्ताव नहीं लाए थे। फिर भी उनकी कहीं गई अनेक बातें और सुविचार सबके लिए दिव्य बोध के रूप में काम आए थे। अपने वाक्य के द्वारा नहीं नित्य सत्य प्रत्यक्ष उदाहरणों के द्वारा श्री स्वामी जी जो एक या दो शब्द बोलते थे वे वेदों के सार जैसे महत्व रखते थे। ऐसे कुछ दिव्य धर्म बोध के बारे में यहाँ जानकारी प्राप्त करेंगे।

हमारे जैसे अज्ञानी लोग हमारे बडों के द्वारा बताए गए विषयों को गलतफहिमियाँ मानकर उन्हें हम स्वीकार नहीं करते हैं। लेकिन इस संदर्भ में श्री स्वामी जी जैसे महान् लोगों के द्वारा बताए गई सभी बातें अनुकरणीय और शिरोधार्य है। 59

कारी रामस्वामी इस प्रकार बताते है।

पोदलकूरु में दो बैलों की गाडी खरीदने केलिए पैसा अग्रिम देकर श्री स्वामी जी को यह विषय बताने पर स्वामी जी ने बताया कि वह गाडी हमारे घर आने से अनेक अनर्थ होने की संभावना हैं। उसके चक्र के मूल में मुर्गियाँ लड़ रहे हैं। वह गाडी मत लो। चेर्लोपल्लि में और एक गाडी देखकर उसके बारे में पूछा था। स्वामी जी ने बताया कि उस गाडी के हमारे घर आने पर घर में स्त्रियों को बीमारियाँ आएगी। मत लो। बाद में तुरुमेल्ला में और एक गाडी देखकर आया था। उसके लिए स्वामी जी ने बताया उस गाडी को लेने से बच्चों को बीमारियाँ होगी। मत लो। एक हफ्ते के बाद श्री स्वामी जी के पास जाकर पूछना चाहा कि किस गाँव में जाकर मुझे गाडी खरीदकर ले आना है? मेरे पूछने के पहले ही श्री स्वामी जी ने बताया कि राजुपालेम् में चार सौ रूपयों में एक नई गाडी बेचने केलिए तैयार हैं जाकर खरीद लो। उस गाडी को जिस दिन मुझे ले आना है पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि सोमवार के सुबह सूर्योदय के पहले ही तुझे गाडी खरीदने वाले गाँव छोड़कर आ जाना है। तेरे गाँव के रामालयम के मंदिर के पास तीन रात बिताकर आपके परिवार के सभी बच्चों को गाडी पर बिठाकर पूरे गाँव में घुमाते हुए चना, पोहा, गुड, चीनी आदि बाँटते हुए गाडी को घर ले जाओ। मैंने स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार ही किया था। वह गाडी गत पच्चीस सालों से मेरे पास चली रही थी। कोई दुर्घटना नहीं घटी थी। वह गाडी हमारे

घर आने के बाद मेरी भूस्थिति भी बदल चुकी थी। आजकल भी उसे गुरुप्रसाद के रूप में मैं मान रहा हूँ।

गाडी के मूल में मुर्गियाँ लड़ना क्या है? लकडी से बनी गाडी घर आने पर घर की औरतों को बीमारियाँ क्यों आती है? और एक गाडी आने से बच्चों की तंदुरुस्ती क्यों बिगडती है?.. ये सब सुनने पर अज्ञान के कारण हमें ये सब गलतफहमियाँ लगते हैं। ऐसी स्थितियों में सर्वज्ञ श्री स्वामी जी की बात ही शिरोधार्य होना चाहिए।

श्री स्वामी जी के सेवकों में कोई दुर्व्यवहार करने पर या दुर्भाषा बोलने पर श्री स्वामी जी को उसके बारे में बताने पर श्री स्वामी जी विवरण देते थे कि उसमें अंदर की गुडिया ऊपर आ गई है, वह क्या करेगा? 60

उसी प्रकार एक बार बातों के बीच में बरिगेल नागय्या से श्री स्वामी जी ने बताया कि अंदर वाली गुडिया को नियंत्रण में रखने के लिए कैंची होनी चाहिए। हमारे अंदर के दुर्गुण ही गुडियाँ है। श्री स्वामी जी का अनुग्रह होने पर हमारे ऊपर कैंची का प्रयोग करके हमारे दुर्गुणों का निर्मूलन कर सकते हैं।

यदि श्री स्वामी जी को, किसी व्यक्ति से बहुत लोगों को खतरा उत्पन्न होता है या असुविधा होती है मालूम होने पर, बिना कोई बात या चेतावनी के अपने आप उसके पास जाकर उसके हृदय को प्रेरेपित करते थे। 61

उदाहरण के लिए एक सेवक ने सबको आज्ञा दी कि एक आधा घंटा देर होने पर भी श्री स्वामी जी की नित्य पूजा वह स्वयं आने तक किसीको नहीं करना चाहिए। पूजा को रोकना चाहिए। उसीको ही स्वयं श्री स्वामी जी की नित्य पूजा और समाधि पूजा करनी चाहिए। नित्य पूजा इस प्रकार देर से चलाने से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में उसने नहीं सोचा था।

उस सेवक के मन में श्री स्वामी जी किस प्रकार के परिवर्तन ले आए थे किसी को मालूम नहीं था। वह अपने आप नित्य पूजा से दूर रहने लगा और अंत में पूजा करना भी बंद कर दिया। **धर्माधर्म सोचे बिना व्यवहार करने से हम पर श्री स्वामी जी अपनी कैंची का प्रयोग करते हैं। यह सत्य हमें मालूम होना चाहिए।** 62

एक दिन स्वामी जी के दो सेवक आपस में लड़ रहे थे। एक ने अपने हाथ में कुल्हाडी लिया था। दूसरे ने उस कुल्हाडी को जबरदस्ती लेकर उसके गर्दन पर जोर से वार करके काट लिया था। रक्त श्राव होने से उसने जाकर गाँव वालों से शिकायत की। उन सबने जाकर श्री स्वामी जी से शिकायत की कि उसे आश्रम से बाहर भेज देना चाहिए। उनकी बात सुनकर **श्री स्वामी जी ने फैसला सुनाया कि लड़ने वालों में से एक को आश्रम से बाहर भेजना। यदि हमारे बाहर जाने से अच्छा होगा न। इस धर्म फैसले से सभी चुपचाप चले गए थे।** 63

1980 में श्री स्वामी जी को एक नई आदत आ गई थी। वे अपने हाथ और सिर बहुत बार ऊपर उठाते थे। सेवकों ने उनको इंजक्सन करवाने केलिए डॉक्टर को ले आए थे।

सेवक - स्वामी

स्वामी – आ गया है।

सेवक - इंजक्सन करेगा स्वामी।

स्वामी – किसको?

नागय्या – आपको ही स्वामी।

स्वामी – क्यों?

नागय्या - आपकी बीमारी कम करने के लिए।

स्वामी - क्या? इससे बीमारी कम हो जाएगी?

नागय्या - ठीक हो जाएगी स्वामी।

स्वामी - करने दो।

डॉक्टर ने इंजक्सन दिया था। श्री स्वामी जी किसी भी पीडा या बाधा को व्यक्त नहीं किए थे। तीन दिनों के बाद श्री स्वामी जी और फिर बताने लगे।

स्वामी - जी इंजक्सन किए थे न, क्या ठीक हो गया है?

नागय्या - ठीक नहीं हुआ था। आप ही कहने से ठीक हो जाएगा।

स्वामी - ऐसा कैसा ठीक हो जाएगा?

नागय्या - ठीक हो जाएगा, आप को ही कहना चाहिए।

स्वामी - तुम बहुत मजाक करते हो नागय्या।

साईनाथ की तरह श्री स्वामी जी भी अपनी बीमारियों को बिना दवाई खाए बहुत सहिष्णुता से सहन करते थे। **सेवकों से कहते थे जितनी बाधा सहे तो उतना अच्छा होता है।** कुछ समय उबले हुए लहसुन, धनिया आदि खाने की सलाह देते थे। कुछ बीमारियों केलिए कुछ पत्ते और मूल खाने के लिए देते थे। 64

रोशरेड्डी - स्वामी हर समय आप मौन में क्यों रहते है? मौन में रहने से हमको आपके मन का भाव कैसा मालूम होता है? अच्छाई और बुराई का परख हमें कौन बताते है?

स्वामी - तीन सौ देने से सादय्या बतादेगा।

स्वामी - (तीन दिन के बाद में) रोशरेड्डी तुम तो बडे व्यक्ति हो। किसी को कोई व्यवहार में कमी या कुछ होने पर बताओ।

स्वामी - सबको समदृष्टि से देखने पर भगवान दिखता है।

गुरवय्या - और एक दिन वहीं प्रश्न पूछा था।

स्वामी - वीरब्रह्मजी का चरित पढो, सब कुछ मालूम हो जाएगा।

यहाँ श्री स्वमी जी अपने भक्तों को अनेक महान् व्यक्तियों की जीवनियों को श्रद्धा से पढ़ने के लिए प्रोत्साहन देते थे। अपने को गुरु मानकर बहुत चाहने वाले भक्तों को दूसरे महान् व्यक्तियों के जीवनी पढ़ने केलिए क्यों कहते है? सभी अवधूतों में मूल पुरुष श्री दत्तात्रेय स्वामी जी ही है। वहीं श्री दत्तात्रेय जी स्वामी के रूप में हमको स्वीकार कर उन सांप्रदायों का अनुसरण करने की आज्ञा देते हैं।

गुरवय्या के कोई संदेश देने केलिए स्वामी जी से अनुरोध करने पर स्वामी जी संदेश दिए थे कि संपन्नता से साधारण जीवन बिताओ, साधारण व्यवहार को अपनाओ। सत्य और धर्म के साथ जीओ।

संपन्नता का मतलब है कि सत्वगुण से प्रधान दैवी संपदा से भरे लक्षण है। साधारण तत्व का मतलब है मेरे पास सभी संपन्न गुण है ऐसे गर्व के बिना अति साधारण मानव के रूप में जीवन में व्यवहार करना ही है। यह स्वामी की आज्ञा है। सच कहे तो ये दोनों गुणों को स्वामी जी स्वयं आचरण में दिखाकर हमें अवगत कराए थे।

क्रोध कैसे मिट जाता है?... स्वामी जी पूछने पर स्वामी जी कहते थे कि उदय होना, संध्या होना किस प्रकार अपने आप स्वाभाविक रूप से हो जाते है उसी प्रकार क्रोध भी अपने आप मिट जाता है। और किसी के वहीं प्रश्न पूछने पर स्वामी जी बताए थे कि सूर्य और चंद्र को विनती करने पर मिट जाता है।

एक दिन मोपूरु दशय्या जी गन्नेरु फूल तोड रहे थे। श्री स्वामी जी उसे बुलाकर कहने लगे कि एक ही फूल है न। उसके बाद में वे चुप रह गए थे। दशय्या को मालूम हो गया था कि स्वामी बता रहे थे कि मन रूपी एक फूल ही भगवान चाहता है। इतने फूल तोडने की क्या जूरुरत है? यह स्वामी जी की एक प्रकार की चेतावनी थी।

भक्त मन या हृदय को भगवान को या सद्गुरु को समर्पित करने पर उस प्रकार एक ही बार करना साध्य होता है। ऐसी स्थिति में एक फूल की जरूरत होती है। पूजा के लिए अधिक संख्या में फूलों को तोड़ने वाली तुलसी से श्री रमणमहर्षी जी ने बहुत चमत्कार पूर्वक बताया था। उसी प्रकार श्री साईबाबा भी और एक बार नमस्कार करने वाले भक्त को मना करते हुए बताए थे कि तुम्हारा हृदय पूर्वक रूप से करने वाला एक मात्र नमस्कार मुझे काफी है।

एक सेविका लोगों को अनाज देकर बाद में अधिक मात्रा में पैसा वसूल करके बहुत लाभ कमा रही थी। एक बार उसका घर जल गया था। उस दुर्घटना में अधिक मात्रा में अनाज भी जल गया था। अन्य लोगों की सहायता से कुछ अनाज

जलने से बचा सकी थी। फिर भी जो नुकसान उसे हुआ था उसे बार – बार याद करती हुई तडपने लगी थी। एक बार श्री स्वामी जी के पास आकर उनसे रोती हुई विनती की कि स्वामी मेरा घर जलने से मेरे पूरे अनाज जल गए थे और मुझे बहुत नुकसान हुआ था। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि तेरा लाभ ही तेरे हाथ से चल गया था। असली चीज का कोई नुकसान नहीं पहुँचा था। उस गाँव के लोग लगभग 8 बोरे अनाज को जलने से बचाए थे। बाकी अनाज और कुछ और चीजें जल गए थे। केवल अन्यायार्जित अनाज और चीजें ही जल गए थे। इसलिए ही स्वामी जी सलाह देते थे कि सूद लेते समय धर्म का पालन करना चाहिए।

कोडूरु वेंकम्मा के पति मरने से दुःख में डूबकर वह बीमार हो गई थी। पलंग पर पडकर रोती रही थी। श्री स्वामी जी ने उसे विचित्र रूप से तत्वबोध कराया था।

श्री स्वामी जी ने बताया कि एक आम के फल को कहीं कुछ धब्बा पडने पर वह धीरे – धीर सड जाता है। यदि वह फल धैर्य से रहे तो वह धब्बा उसे कुछ नहीं कर सकता है। मधुर रूचि से वह खाने योग्य बन जाता है। उसके बाद में उसकी गुठली और एक वृक्ष को जन्म भी देती है। ऐसे अनेक वृक्षों को पुनर्जन्म देने के बाद में मानव का जन्म होता है। अनेक मनुष्य के पुनर्जन्म लेने के बाद में बुद्धि जीव जन्म लेता है। बहुत बुद्धि जीव का पुनर्जन्म लेने के बाद भक्त जन्म लेता है। उसके बाद में धर्म का पालन करने वाला राजा बनता है। ऐसे अनेक राजाओं का पुनर्जन्म लेने के बाद में भगवान का सेवक बनता है। उस प्रकार के मुमुक्षु अनेक जन्म लेकर बाद में भगवान की सन्निधि में स्थान पाते हैं। उस समय भगवान अपने नेत्र को असंपूर्ण रूप से खोलकर उसे देखता है। उसके उंगली के नीचे के रस्सी को घुमाने या चलाने से पूरे विश्व के सभी गुडियों के खेल उसे दिखाई देते हैं। जो सही रास्ते पर चलता है उसे भगवान अपने पास रखता है और अपने पास रहने देता है। यह सुनकर वेंकम्मा ने बताया कि मैं अभी इस समय अनेक जन्म लेकर बहुत बाधाओं को भोग रही हूँ। मेरे लिए ये थोडी सी समस्याएँ कुछ भी नहीं बिगाड सकती है। मैं भी आम के फल के समान रहूँगी। यह सच्चाई को समझकर वेंकम्मा ने रोना भी बंद कर दिया था। बहुत खुशी से जीना शुरू कर दी थी।

बिना काम किए बैठे तो नौकरी को नुकसान होगा। काम किए बिना ही वेतन मिल सकता है। लेकिन वह कमाई काम नहीं आएगी। कष्ट उठाते रहना है या भगवान का ध्यान करते रहना चाहिए। रोग से तडपते रहना चाहिए। दरिद्र को भोगते हुए 65
जीना चाहिए। इन चारों दशाओं में मनुष्य को भगवान याद आएगा। इसलिए ही भगवान उन चारों अवस्थाओं का स्वागत किए थे। कष्ट भोगने से, रोग से पीडित होते रहने से, दरिद्र जीवन बिताने से हमारे कर्म फल खर्च होता रहता है। ध्यान करने से नया कर्म नहीं मिलता है।

एक सेवक ने समझा कि मुझे श्री स्वामी जी का आशीर्वाद है। इसलिए उसने अपने दफ्तर में काम करना बंद कर दिया था। वह अपने अफसर को भी नहीं सुनता था। एक बार श्री स्वामी जी ने उसके सपने में आकर डाँटा था कि **What do you mean by negligence of duty , bloody idiot (मंदबुद्धिवाला, आपने कर्तव्य को नहीं निभाना क्या समझ रहे हो?) उस भक्त ने पूछा था क्या स्वामी जी आपको अंग्रेजी भी आती है? तब स्वामी जी ने बताया अंग्रेजी ही नहीं विश्व की सभी भाषाएँ मुझे मालूम है। देखिए श्री स्वामी जी अपने भक्तों को पाप भार से कैसे बचाते हैं?** 66

निरंतर अपनी सेवा में रहने वाला गुरवय्या से श्री स्वामी जी ने बोला नीच जाती वालों को अपने पास आने मत दो। सत्य, धर्म, साधारणतत्व, सद्गुरु सेवा साधने केलिए कोशिश करो। इसका अर्थ है कि हमारे अंदर रहनेवाले हीन जाती वाले को बाहर भेजना है। यही संदेश श्री साई भी दिए थे।

एक बार स्वामी जी ने गुरवय्या से कहा था कि बुरा काम करने से तुझे कीडा लग जाते हैं। महार के परिवारों में जन्म लेते हो। (यह वर्णव्यवस्था से आने वाली जाती महार नहीं है। यह केवल नीच स्थिति का संबोधन में किया हुआ शब्द ही है।) बहुत जन्म लेने पर भी तुम मेरे पास नहीं आ सकते हो।

दशय्या - कैसे मुक्ति पाना है?

स्वामी - **आशा को त्यागने से सब कुछ मिट जाता है।** 67

माँ - स्वामी आपको कैसे मालूम?

स्वाम - माँ, भद्राचल जाकर मंदिर को खोलकर देखो। मालूम हो जाएगा।

लेकिन माँ ने ऐसा किया है या नहीं किसी को मालूम नहीं था। उसी प्रकार यही प्रश्न और एक संदर्भ में पूछने पर स्वामी जी ने चल्ला सुब्बम्मा से कोटि तीर्थ मंदिर का दर्शन करने की आज्ञा दी। **वहाँ उसे अनंत कांति दिखाई दी थी। पार्वती माता प्रकृति माता है। परब्रह्म स्वरूप का यह दृश्य जगत में प्रकटित हो रहा है। हर जगह हर चीज में मेरा अस्तित्व है। यही भावना उन्होंने सबको सिखाई थी।** 68

एक बार मोपूरु दशय्या जी ने स्वामी जी से पूछा था कि स्वामी जी किसी ऋषि ने जंगल में आपके जीभ पर बीजाक्षर को लिखा था, क्या यह सत्य है? तब स्वामी जी ने बताया कि **मैसूर महाराज रास्ते पर जाते वक्त उनको देखने पर हमें क्या मिलता है? जो कुछ हम करते है वही फल हमें मिलता है।** इसका अर्थ है कि जहाँ तक संभव है वहाँ तक हमें **जप, ध्यान, धर्म आचरण, सद्गुरु सेवा करते रहने से ही हमें महाराज जैसे महान् लोगों का अनुग्रह प्राप्त नहीं होता है। ऐसा साधन करके हमारे दृढ़ होने से ऐसे बुद्धि शालियों को महाराजा लोग बुलाकर अपने आस्थान में पंडितों** 69 70

के रूप में नियुक्त करते हैं। उसी तरह हमें सद्गुण होने से ऐसे महान लोग हमारी बुद्धि कुशलता को समझकर हमारा सत्कार और सम्मान करते हैं।

यदि राजा सर्वशक्तिमान और सर्वस्वतंत्र होने पर भी जो लोग परिश्रम करते है, प्रतिभा दिखाते है उनके बिना और किसी को अपने पास आने नहीं देते हैं। सत्कार भी नहीं करते हैं। जो निस्वार्थ भाव से कठोर सेवा करते है उनके प्रति ही श्री स्वामी जी कृपा दिखाते हैं।

वेंकय्या के द्वारा एक व्यक्ति ने श्री स्वामी जी के लिए लकडी गाडी से भेजने के लिए 4 रूपये लेकर वेंकय्या से खेत में काम मुफ्त में करवाया था। वह गाडी वाला जब स्वामी जी के पास आया था तब स्वामी जी ने कहा कि इस गाडी वाले के रू 150 बाकी है। इस अपराध के लिए उसे तिरुपती जाना पडेगा। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार वह तिरुपती जाकर आया था। वहाँ उसके पैसे किसीने चुरा लिया था। इसका कारण था कि गाडी वाले ने श्री स्वामी जी को धोखा दिया था। **श्री स्वामी जी के सेवक भगवान की संपत्ति है। उनका ऋण चुकाना ही चाहिए। उसे भगवान को या गुरूजी को या सेवक को चुकाना पड़ता है। नहीं चुकाने पर उस धन को किसी** 71
न किसी तरह नुकसान पहुँचता है।

शत वृद्ध रोशरेड्डी बहुत दिनों से श्री स्वामी जी की सेवा में था। एक बार किसीके कुछ अपमान करने पर उसने अपना घर वापस जाने का निर्णय कर लिया था। तब श्री स्वामी जी ने उसे कहा कि **फसल के खेत को छोड़कर घास इकट्ठा कर** 72
लेना चाहते हो क्या? स्वामी जी की बात सुनकर उसने घर वापस जाने की बात छोड दिया था। सद्गुरु का सान्निध्य फसल वाला खेत है। साधारण रूप से जीते हुए अन्य साधन करना घास को इकट्ठा करने के समान है। इसलिए ही रोशरेड्डी जीवन भर भिक्षाटन ले आने की सेवा को अपना कर अपने जीवन को धन्य बना दिया था।

01.रोशरेड्डी की निस्वार्थ गुरू सेवा के कारण, उसके प्रभाव से श्री स्वामी जी 73
ने रोशरेड्डी को अपने लोगों पर आशापाश, बंधुप्रीति और अपने शरीर पर ममकार भी मिटा दिए थे। साधक मानते हैं कि इस प्रकार के गुण स्वयंकृषि से पाना दुस्साध्य है।

02. हृदयांतरल में उतने प्रेम से गुरु की सेवा करने के कारण प्रारब्ध कर्म से संभव होने वाली बूढ़ी अवस्था में शारीरिक ऋग्मताओं को श्री स्वामी जी ने रोशरेड्डी को पहुँचने नहीं दिया था।

03. मुख्य विषयों के बारे में, व्यक्ति जिस प्रकार व्यवहार करेगा, कहाँ क्या हो रहा है? आदि विषयों के बारे में श्री स्वामी जी उनको दृश्य संकेतों से समझाते थे।

उदाहरण के लिए एक दिन रोशरेड्डी जी जब श्री स्वामी जी के सन्निधि में बैठे हुए थे तब उनको एक दृश्य दिखाई दिया कि वे अपने घर के पास तूफान में बहुत कष्ट सहते हुए पैसे की जरूरत होने से कच्चे नींबू के फलों को पेड से तोड़ कर इकट्ठा

कर रहे थे। तीसरे दिन रोशरेड्डी का बेटा आने पर मालूम हुआ कि उस दृश्य में दिखाई दिये सारे विषय सच ही है।

श्री भारद्वाज मास्टर को सभी लोग भगवान और गुरू मानकर पूजा करते थे। उनकी असली स्थिति क्या है?... इसके बारे सोचने वाले रोशरेड्डी जी को एक दृश्य दिखाई दिया था। मास्टर एक रेगिस्तान में खडे हुए थे। वे अपने हाथों में शंख और चक्र धारण करके महाविष्णु का अवतार ले लिए थे। उनके पैरों के चारों ओर हराभरा घास था। रोशरेड्डी एक भैंसा बनकर वह घास चर रहा था। उसी प्रकार और एक व्यक्ति के बारे में सोचते समय वह आदमी खराब हो गए तालों को ठीक करने वाले आदमी के रूप में दिखाई दिया था। श्री स्वामी जी के अनुसार वह आदमी सभी लोगों की समस्याओं को ठीक कर सकता है।

एक दिन रोशरेड्डी जी के दामाद और बेटा उनको अपने घर दस दिनों केलिए ले जाने केलिए श्री स्वामी जी के आश्रम आ रहे थे। रोशरेड्डी की दृष्टि में कमी के कारण वे अकेले कहीं नहीं जा रहे थे। लेकिन श्री स्वामी जी ने उसे आज्ञा दी कि सीधे रास्ते को पकड़ कर चले जाओ। गुरू की आज्ञा के अनुसार और श्री स्वामी जी के ऊपर होने वाले अपार विश्वास के कारण अपने आप रास्ता दिखाई नहीं देने पर भी अकेले नेल्लूर से चलते हुए आठ किलोमीटर दूर के गोलगामूडि श्री स्वामी जी के आश्रम पहुँच गए थे। दामाद और उनके बेटा बस पकड़कर गोलगामूडि पहुँचकर रोशरेड्डी के बारे में पूछताछ की। रोशरेड्डी पैदल आने से गोलगामूडि आश्रम उस समय में पहुँच नहीं सका था।

एक दूसरे से मिल नहीं पाने से वे रोशरेड्डी को पकड़ना मुश्किल समझकर वापस अपने घर चले गए थे। सर्वज्ञ श्री स्वामी जी यदि वह आदेश नहीं देते तो रोशरेड्डी अपने दामाद और बेटे के साथ घर जाकर संसार के जाल में फँसकर **खेत में घास इकट्टा करने जैसे काम में लग गया होता था। अब गुरु सेवा में अपना पूरा समय** 74
बिताकर आनंद पाने का मौका उसे मिला था। उसी प्रकार एक बार और एक भक्त ने श्री स्वामी जी से पूछा कि स्वामी हमें कैसे तरना है? तब श्री स्वामी जी ने बोला कि कुछ भी नहीं केवल अपने रास्ते को तय करके, सीधा जाने से मुक्ति मिल जाती है।

इस प्रकार गुरु के वचनों का पालन करना, उनपर अचल विस्वास रखना, गुरु सेवा को ही अपना परम कर्तव्य समझना आदि सद्कर्म करने के कारण ही रोशरेड्डी जी अपने अंतिम समय तक स्वस्थ रहकर किसी अन्य लोगों की सेवा नहीं लेकर भगवान के सान्निधि में पहुँच गए थे। **जब रोशरेड्डी अपना देह छोड दिए थे तब उसके**
मुँह पर पूरा तेज था और कांती थी। इससे अवगत होता है कि वे कैवल्य को प्राप्त कर 75
लिए थे। गुरुसेवा का उतना महत्व होता है।

एक दिन श्री स्वामी जी ने कहा कि हमें तुरंत अपना स्थान बदलना है। सेवकों ने कहा कि शाम को भोजन करने के बाद में जाएँगे। कुछ लोग और एक सलाह दे रहे थे। श्री स्वामी जी के पास बैठे हुए बरिगेल नागय्या ने सोचा कि ये सभी लोग स्वामी जी के पास क्यों आए थे? श्री स्वामी जी की बात नहीं मान रहे थे। स्वामी जी उनको मना क्यों नहीं कर रहे हैं? स्वामी जी या महान लोग केवल सलाह देते हैं लेकिन दिए हुए सलाह के आचरण के लिए दबाव नहीं डालते हैं। यदि नहीं सुनते तो वे हमें अपने कर्म पर छोड़ देते हैं। **बुरे काम करते हुए सब कुछ स्वामी जी देख लेंगे, ऐसा समझना अविवेक है। सच कहे तो श्री स्वामी जी सब कुछ देखते हैं। जो कुछ** 76
हम करते है उसके अनुसार वे बिना कोई पक्षपात के फल हमें देते हैं। अच्छे को अच्छा, बुरे को बुरा।

नेल्लूरु के ताल्लूरी श्रीनिवास नादस्वर बजानेवाला कलाकार था। श्री स्वामी जी महासमाधि प्राप्त करने के समय नादस्वर वादन कार्यक्रम के लिए गोलगामूडि आया था। ऑटो का किराया रू.25 था। लेकिन ऑटो ड्राइवर ने झूठ बोलकर रु 30 आश्रम वासियों से ले लिया था। यह विषय श्रीनिवास को मालूम हो गया था। वापस जाते समय ऑटो एक पर्लांग दूर जाकर रूक गया था। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह स्टार्ट नहीं हुआ था। तब श्रीनिवासुलु ने कहा कि तुम झूठ बोलकर पाँच रूपए अधिक लिया था। इसलिए ही ऐसा हो रहा था। तुमने अपने झूठ केलिए श्री स्वामी जी से माफी माँगो, ऑटो स्टार्ट हो जाएगा। आश्चर्य की बात ड्राइवर के माफी माँगते ही ऑटो स्टार्ट हो गया था।

श्री स्वामी जी अपने साथ रहकर सेवा करने वाले को, श्रद्धा रखने वाले भक्तों को जितना हो सके उतना लौकिक जनों से नहीं मिलने का संदेश देते थे। उदाहरण के लिए....

एक भक्त कुछ समय तक बहुत निकट रहकर श्री स्वामी जी की सेवा करके उसके बाद समय मिलने पर पामर जनों से मिलकर समय बिताने लगा। पहले पहल उसके हाथ का भोजन खाने वाले श्री स्वामी जी बाद वह भोजन देने पर उसे अस्वीकार करने लगे। वे अन्य सेवकों से कहते थे कि वह कुकर्म करने वाले लोगों के बीच में जा रहा है। उसे मेरे पास नहीं आने दो। तुम मुझे खाना खिलाओ। कहकर अन्य लोगों के हाथ से भोजन खाते थे। पहले बहुत निकट रहने वाला गुरुवय्या स्वामी जी की सन्निधि छोड़कर जाने पर स्वामी जी बताते थे कि तुम भी मनुष्यों के बीच जा रहे हो।

इसका अर्थ है कि मनुष्यों का सांगत्य मुमुक्षुओं के लिए नहीं जमता है। श्री 77
स्वामी जी के अनुसार अरिषडवर्गयुक्त, विषयवांछायुक्त मनुष्य परम लोकिक होगा।

दीक्षा के समय में, या अन्य समयों में श्री स्वामी जी को किस प्रकार उनकी सेवा करने से प्रीति पात्र बनेंगे हमें जानना होगा। दूसरों के बारे में दुर्विमर्श करना,

निकम्मे राजनीति संबंधी विषयों पर चर्चा करना, कहीं, कभी हो गए घटनाओं के बारे में याद करके पछताना.., ये सभी श्री स्वामी जी के अनुसार हमें जुड़नेवाले मलिन हैं। 78 **एक बार जुड़ने से जितने बार भी नहाने पर भी हमें वे मलिन नहीं छोडेंगे। यह सत्य आचरण में लाकर श्री स्वामी जी हमें दिखाए थे।**

पेनुबर्ती के मोपूरि दशय्या ने स्वामी जी से पूछा कि स्वामी आप तो पर्वतों और जंगलों में घूमते रहते हैं, आपके दर्शन करना चाहता हूँ। मुझे नहीं हो पा रहा है। क्या करें? तब स्वामी जी ने जवाब दिया था कि ये तो बहुत आसान ही है। पर्वत पर चढ़कर वहाँ एक पत्थर के पास एक दर्पण रखकर मुझे देखो। मेरे और तेरे के बीच बहुत कम दूरी दिखाई देगी।

पर्वत का अर्थ है शरीरे के ऊपरी भाग दिमाग, पत्थर के पास दर्पण को देखने का मतलब है लौकिक व्यावहारों से तड़पने वाले दिमाग को कुछ समय दर्पण के समान साफ और निश्चल स्थिति में रखकर देखने से श्री स्वामी जी को कहीं भी रहने पर उनके दर्शन अपने मनोनेत्रों से कर सकते हैं। हमारे शरीर में पत्थर जैसा अंग हमारे सिर का ऊपरी भाग है। उसके बीच में सहस्रार नामक योग केंद्र होता है। **शास्त्र के अनुसार उसमें सभी गुरुचरण होते हैं। इसलिए ही श्री स्वामी जी ने कहा कि मेरे और आपके बीच में केवल एक हाथ भर की दूरी है। वे अपने को सद्गुरु घोषणा किए थे।** 79

एक बार श्री स्वामी जी ने कहा कि **आपके हमें देखने से हम आपको देखते हैं।** 80 सद्गुरुओं पर भक्त कितने श्रद्धा और भक्ति दिखाते हैं उससे अधिक सद्गुरुओं की कृपा दृष्टि हम पर पड़ती है। इसलिए ही साई बाबा ने कहा कि तुम अपनी दृष्टि मुझ पर डालो मैं अपनी दृष्टि तेरे ऊपर डालता हूँ।

और एक बार श्री स्वामी जी ने कहा कि आप नीच जाती के हैं और मैं मोची जाती का हूँ।

श्री अक्कल कोटा स्वामी जी ने एक तरफ अपने को काश्यपश्य गोत्र के यजुर्वेद ब्राह्मण बताए थे दुसरी तरफ अपने को चमडे के काम करने वाले मोची की जाती का बताए थे। यह विवरण उनके चरित में हमें मिलता है। आजकल समाज में लोग अंधाधुंध मानने वाली वर्णव्यवस्था को अर्थरहित समझाने के लिए ऐसे कहे गए होंगे।

गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करके अपने आपमें झगड़ने वाले सेवकों को संबोधित करते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि निर्भाग्य, रंडे और बेवकूफ बनकर आज जीवन बिता रहे हैं। वे दूसरों से ऋण ले रहे हैं। एक पैसा भी नहीं कमा रहे हैं। **सकल श्रष्टि के लिए, हर एक जीव के लिए आधार और आत्मस्वरूप है सद्गुरु। ऐसे गुरु को भूलकर अन्य भावों को मन में स्थान देना रूपकालंकार के रूप में पातिव्रत्य भंग करने के समान है।** 81

एक बार श्री स्वामी जी ने एक चोरी के बारे में चर्चा करते समय बताया था कि पच्चीस पैसे केलिए दस रूपए चले जाते हैं। एक पैसा चोरी करने से चालीस पैसे चले जाते हैं। उतना नुकसान उनको भोगना पड़ता है। **भगवान को भक्ति से समर्पित एक पच्चीस पैसे से कितना फायदा आता है कहना भी मुश्किल है।** श्री स्वामी जी को समर्पित हर एक छोटी सी सेवा के लिए भी अनंत पुण्य मिलता है। इसका उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है। 82

एक किसान एक बैल को खेत में जोतने के लिए लाया था। वह उस काम में नया होने से बैल किसान का सहयोग नहीं दे रहा था। श्री स्वामी जी उसी रास्ते पर जाते हुए किसान से विनती की कि मुझे गाडी पर बिठाकर उस नदी को पार कराओ। तब किसान ने बताया कि यह नया बैल है। वह मुझे सहयोग नहीं दे रहा है। आपकी सहायता के लिए इस बैले के अलावा और एक बैल मेरे पास नहीं है। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि अब देख लो गाडी बैल को लगाओ। वह तेरा सहयोग देगा। **श्री स्वामी जी की विनती को मानकर उस बैल से गाडी खींचने का प्रयत्न करने पर वह बैल श्री स्वामी जी को बहुत आराम से नदी को पार कराया था। उसके बाद खेती का काम भी करने लगा।** 83

मंत्रोपदेश पूछने वाले एक भक्त को श्री स्वामी जी ने बताया कि मंत्र या तंत्र कोई नहीं है। हमें जागरूकता से आगे बढ़ना है। इसका अर्थ है कि ज्ञानसे पूर्ण कोई भी गुरू जी मंत्रोपदेश नहीं किए थे। उदाहरण के लिए श्री साईबाबा, रमणमहर्षि जी। **निरंतर सद्गुरु भक्ति साधना से अतीत है और अमर है।** 84

एक दिन श्री स्वामी जी ने गुरवय्या से कहा था कि हर जगह हर व्यक्ति को समान रुप से देखने से तुम भगवान बनते हो। **श्री स्वामी जी के अनुसार साधना के द्वारा हमारे अंदर के रागद्वेष, राजस, तामस गुणों का निर्मूलन करते हुए दैवी संपत्ति के लिए कोशिश करने पर किसी भी मंत्र से हम लाभ पा सकते हैं।** 85

श्री स्वामी जी समाधि स्थिति प्राप्त करने के छे महीने के पहले से ही सत्य, धर्म, संपन्नता, साधारणतत्व, सद्गुरु सेवा आदि के बारे में बहुत दिनों से चिल्ला रहे थे। यही उनका सांप्रदाय और अंतिम संदेश या चरमोपदेश जैसा हमें मानना पड़ता है। 86

आप जो देख रहे है क्या वह सब सच है क्या? नाम, रूप के भेदों को भूलकर सबमें भगवान के स्वरूप को देखने का संदेश श्री स्वामी जी देते थे। यह भक्तों के लिए एक चेतावनी है। 87

एक दिन नेल्लूरु से रेड्डी जी आए थे। वे बीमारी से तडप रहे थे। इलाज करवाने पर भी कोई उपशमन नहीं मिला था। डॉक्टरों से भी कुछ नहीं हो सका। श्री स्वामी जी भी कुछ नहीं बोले थे। रेड्डी जी ने अन्य सेवकों से कहा कि कोई उसकी बीमारी ठीक करें तो पैसा देने केलिए तैयार है। उसकी बात सुनकर श्री स्वामी जी ने

कहा **सबको हम दे रहे हैं। वह हमारे लिए क्या देगा? सच कहे तो भक्तों को क्या चाहिए वह भगवान को मालूम होता है और उन्हें प्रदान करता है।** 88

एक बार श्री स्वामी जी ने इस प्रकार कहा कि मैं और जयरामराजु मिलकर छे हलों से खेत जोत रहे थे। बीच में जयरामराजु का हल उदयगिरी से टक्कर लगकर रूक गया था। लेकिन मेरा हल चलता ही रहा था। उत्तर दिशा के समुद्र दक्षिण दिशा की ओर बह रहा था। स्वामी जी कहने का अर्थ है कि छे हल का अर्थ है अरिष्ड्वर्ग को रोकने वाला साधन, समुद्र एकत्रित होने का अर्थ है कि सबकुछ परब्रह्म है सत्य का अनुभव होना। **जयरामराजु का अपने साधन को रोककर लौकिक जीवन में फँस जाना उनका हल रोकने का संकेत है।** 89

श्री स्वामी जी भक्तों को दो भागों में बाँटते थे कि श्रद्धा और भक्ति दिखाने वाले और न दिखाने वाले। धनी और निर्धनी का भेद भाव वे कभी भी नहीं दिखाते थे। जहाँ भक्ति होती है वहाँ उनको बुलाने पर भी या नहीं बुलाने पर भी पहुँच जाते थे। गरीब के घर भी पहुँच जाते थे। धनमदांध होकर भक्ति के बिना सोने के खजाना देने पर भी वहाँ नहीं जाते थे। 90

श्री स्वामी जी की सेवा करने वाले चेले उनके बारे में इस प्रकार बताए थे।

श्री स्वामी जी की सेवा करते समय सेवकों में कोई बुरे सोच – विचार होने पर, बुरे अभिप्राय होने पर, अन्य चिंतन, परदूषण, क्रोध रहने पर उनकी सेवा को नहीं लेते थे। हर दिन तंबाकू भी स्वच्छ सेवी सेवकों से ही लेकर स्वीकारते थे। 91

हरदिन श्री स्वामी जी को माँड देने वाला सेवक एक दिन तालाब में जाकर स्नान करके आया था। स्नान करते समय उसके साथी सेवकों के कुछ दुर्विमर्शों को सुनकर आया था। वह श्री स्वामी जी को माँड देने केलिए सामने आया था। तब स्वामी जी ने कहा कि **तुम दुर्विमर्शों को सुनकर आए हो। तुझसे दिया गया माँड मुझे नहीं चाहिए। ऐसा कहकर माँड को इनकार कर दिए थे। इस घटना से हमें अवगत होता है कि श्री स्वामी जी अपनी समाधि के दर्शन के लिए भक्तों की सेवा सेवकों से कैसा करवाना चाहते हैं? वे सदा सेवकों को बुरी आदतों से दूर रखते थे।** 92

1975 तक भक्तों से समर्पित नए कपडों को श्री स्वामी जी कभी भी स्वीकार नहीं किए थे। पुराने फटे हुए कपडे, चादर ही स्वीकारते थे। अपने सेवकों को भी नहीं स्वीकारने देते थे।

एक समय एक धनी व्यक्ति जबरदस्त एक कीमती चादर लाकर श्री स्वामी जी के पास रखकर चला गया था। श्री स्वामी जी के सेवक उसे स्वीकार कर अपने पास रख दिए थे। सिद्धलकोंड से श्री स्वामी जी ने पूछा कि मुझे एक नया चादर चाहिए। **सेवकों ने नया चादर लाकर दिए थे। उस चादर को छोटे – छोटे टुकडों में** 93

काटवाने तक वे चुप नहीं रहे थे। बाद में सेवकों से कहा कि इन टुकडों को रोगियों को दीजिए। उनके रोग दूर हो जाएँगे।

बोरे, ताड पत्ते से बने टोकरियाँ. मटके, अलुमिनियम पात्र, दबरा आदि स्वामी जी इस्तेमाल करते थे। मूल्यवान चीजें अपने पास नहीं रखते थे। एक बार एक रईस आकर एक जिप वाली थैली को श्री स्वामी जी के पास छोड़कर चला गया था। **उसमें सेवक अपने कपडों को रखे थे। आधी रात के समय जब सभी सेवक सो रहे थे तब श्री स्वामी जी चुपके से जाकर उस थैली को कपडों के साथ धुनि में डाल दिए थे।** 94 **यह एक प्रकार का वैराग्य है।**

एक बार जोर से वर्षा हो रही थी। श्री स्वामी जी पेड के नीचे बैठ कर अग्नि को संभाल रहे थे। एक ओर से वर्षा का पानी अग्नि में पड़ने से वह मिट रहा था। दूसरे तरफ श्री स्वामी जी अग्नि में कुछ पत्ते डालकर उसे जला रहे थे। उनकी स्थिति देखकर सेवकों ने कहा कि आप आश्रम में बैठकर अंदर धुनि बना सकते है न? वर्षा में क्यों बैठकर समय व्यर्थ कर रहे है? तब स्वामी जी ने कहा कि अब बहुत बडा छिद्र होने वाला है। श्री स्वामी जी की बातों का सार उनको मालूम नहीं हुआ था। उनके अपने इस श्रम को भूलने से वह नियम का उल्लंघन ही होगा। स्वधर्म वाले मंदिर के छत को छिद्र पड़ने के समान है। निरंतर अग्नि के द्वारा प्रज्वलित अपनी धर्मनिष्ठा, वर्षा से अग्नि मिट जाने के समान ही है। उस समय वर्षा के पानी से अपनी अग्नि सेवन के लिए विषम परीक्षा के रूप में आना दैव निर्णय होने पर उस दिन वे अपना स्थान आश्रम में बदलने पर भी उसके छत को छिद्र होकर उससे वर्षा का पानी बरसेगा ही। **कार्यदीक्षा किस प्रकार होना है, दैव निर्णय पर हमारा विश्वास कैसा होना है श्री स्वामी** 95 **जी इस घटना के द्वारा समझाते हैं।**

एक बार श्री स्वामी जी के सेवक रास्ते से आ रहे थे। किसी ने उनको संबोधन करते हुए कहा कि ये सभी झूठे साधु हैं पेट भरनेवाले साधु है। उनकी बात सुनकर एक साधू एक व्यक्ति पर वार करने के लिए तैयार हो गया था। **तब स्वामी जी ने उस साधु को बुलाकर समझाए थे कि उनके दुर्भाषा बोलने पर भी सहने की शक्ति होने** 96 **पर ही हम साधु कहलवाएँगे।** तुझसे सहन शक्ति नहीं है। तुम सचमुच झूठे साधु ही हो। इस प्रकार मृद वचनों से और मीठी भाषा में उसे समझाए थे।

एक दिन दक्षिणा रमणय्या, पोलु मस्तानय्या श्री स्वामी जी के सन्निधि में थे। रमणय्या ने मस्तानय्या को अपने इधर आने को कहा था। वह चुपचाप खडा था। रमणय्या बहुत बार उसे वहीं स्वर से बुलाया था। एकवचन से बुलाने से वह उसकी ओर नहीं देखा था। बाद में उसे मन ही मन चेतावनी दी कि आश्रम के बाहर आने पर उसे इस एकवचन प्रयोग केलिए समाधान दूँगा। तब स्वामी जी ने पूछा कौन एकवचन से संभोधन किया था?

मस्तानय्या - रमनय्या ने किया था स्वामी।

स्वामी - उसके खाते में तीन सौ पाप लिखा था।

रमनय्या - स्वामी वह पाप कैसा मिटेगा?

स्वामी - तुझे भोगने से मिट जाएगा।

मुझे बिना मर्यादा के संभोधन करने का फल रमनय्या अवश्य भोगेगा। ऐसा समझकर मस्तानय्या चुपचाप शांत से रह गया था।

हम जिन तृटियों को छोटी समझते है वे सच कहे तो छोटी नहीं है। घास बहुत कमजोर होने पर भी घास के पत्तों से रस्सी बनाने पर वह हाथी को भी बाँध सकती है। उसी प्रकार कर्म बंद न को भी बनाता है। साई ने कहा था कि साथ रहने वालों की निंदा करना सुवर के द्वारा मल भक्षण करने के समान है। ईसा ने बताया कि **बुद्धिहीन कहकर साथ रहने वाले की निंदा करने पर भी नरक को जाना पडेगा। ऋषियों का कहना है कि हमें हमारे वाक् पर नियंत्रण रखना चाहिए। हमें बहुत जागरूकता से रहना चाहिए। सरल वाक् के साथ व्यवहार करना चाहिए। श्री साई के समकालीन श्रीताजुद्दिन बाबा ने कहा कि काबा को जला देने से जला दिया था। कुरान को जलाने से जला दिया था। शराब को पीने से पी लिया था। विग्रहाराधन होने वाले मंदिर में रहने से कोई परवाह नहीं लेकिन मनुष्य के हृदय को कभी भी घायल मत करो। कारण भगवान का सातवाँ स्वर्ग केवल हृदय में ही निवास करता है।** 97

एक समय श्री स्वामी जी को अतिसार हो गया था। इससे पंद्रह दिन तक बहुत कमजोर हो गए थे। एक सेवक ने कहा कि **स्वामी दवा खाइए। तब श्री स्वामी जी ने कहा कि जो कर्म मुझे भगवान ने दिया था उसे भोगना ही पडेगा।** 98

काव काव की कर्कस आवाज देते हुए कौए को एक सेवक गुरवय्या पत्थर से मार रहा था। तब श्री स्वामी जी ने उसे मारने से रोक दिया। गुरवय्या ने बताया कि श्री स्वामी जी के सामने ही कुत्ता है। उसे मारना नहीं चाहिए।

धर्मशास्त्र बताते हैं कि धर्मशास्त्रों में कहे गए धर्मसूक्ष्मों को सर्व धर्मज्ञ ब्रह्मवेत्ता महान लोगों से हमें सीखना है। वैसा नहीं करने के कारण हमारे समाज में वर्णव्यवस्था उल्टा होकर प्रजा श्रेय केलिए न काम करके देश के लिए दुर्भाग्य लानेवाला बन गयी है। माना जाता है कि हमारे समाज में वर्णव्यवस्था जन्म के अनुसार आती है। लेकिन भगवद्गीता के अनुसार वह गुणों के आधार पर आती है। (4 – 13) लेकिन कुछ पंडित उसका वक्र भाष्य से व्याख्या करके लोगों को गलत रास्ते पर ले गए हैं। अनेक ब्रह्मवेत्ताओं ने इसका पूरा विवरण दिए थे। 99A

उदाहरण के लिए शिर्डी साई बाबा बताते हैं कि हम सबमें एक अंत्युज होता है। उसे हमें भगाना है। अंत्युज का अर्थ है कि अरिषड्वर्गों को प्रेरित करने वाला अज्ञान, उसका प्रत्यक्ष रूप अहंकार है। यही विषय को और एक जगह उन्होंने बताया कि

वसति गृह के डाकुओं को हमें बंधी बनाना है। जन्म जन्मों में बदलने वाला शरीर ही वसति गृह या धर्मशाला है। वह किसी के लिए स्थिर आवास नहीं होना चाहिए।

उसी प्रकार उनके समकालिक, और एक अवतार श्री अक्कल् कोटस्वामी भी यही भाव को व्यक्त किए थे। उनके दर्शन केलिए आया हुआ एक ब्राह्मण, और कोई रास्ता नहीं होने के कारण एक हरिजन के घर में मटके के पानी से स्नान करके संध्या कर्म पूरा करके, स्वामी के दर्शन करके, ब्राह्मण पंक्ति में भोजन के लिए बैठा था। यह समझकर स्वामी जी का एक सेवक उस ब्राह्मण की निंदा की और पंक्ति से बाहर निकाल दिया था। इससे ब्राह्मण को अपमान सा लगा। उसके बाद में वह सेवक श्री स्वामी जी को भिक्षा देने आए तो श्री स्वामी जी उसे स्वीकार नहीं किए थे। सेवक ने श्री स्वामी जी से पूछा था कि मेरा क्या कसूर है? तब स्वामी जी ने उस हरिजन को बुलाकर, उसके माथे पर विभूदी लगाकर, जमीन पर सात रेखा खींचकर एक - एक रेखा को पार करवाए थे। पार करते हुए उस हरिजन ने बताया कि पूर्वजन्मों में विभिन्न जातियों में जन्म लेने का पूरा विवरण उसे मिला था। और बताया कि सात जन्म के पहले वह एक कर्मठ ब्राह्मण था। श्री स्वामी जी उसकी परीक्षा करने पर मालूम हुआ था कि वह वेद वेदांगों में निपुण था। श्री स्वामी जी ने पूछा कि वह क्यों इस जन्म में हरिजन बना? उसने बताया कि **जब वह ब्राह्मण था उस समय वह अन्य जातियों के लोगों को बहुत नीच दृष्टि से देखता था। उनका अपमान करता था। उनके जाने के रास्ते पर मंत्र जल छिड़क कर सुद्धि करने के बाद में ही जाता था। उस प्रकार के अनन्य चिंतन के कारण अब उसे यह जन्म मिला था। श्री स्वामी जी ने अपने सेवकों को बताया कि वर्णभेद जन्म से आती है ऐसे समझने वालों को और संकुचित असहन रखने वालों को जन्मांतर में आध्यात्मिक अज्ञान से भरे परिवारों में जन्म लेना पड़ता है। शास्त्रों का अर्थ महान् लोगों से नहीं जान या समझकर हम अज्ञानी जिस तरह समझते है उसीके अनुसार अर्थ निकालने से अनर्थ हो जाता है।**

99

उनका भाव और स्पष्ट करने केलिए श्री स्वामी जी अपने भक्तों से कहते थे कि अपने में निम्न जाति के लोगों को मत देखो। कुछ समय तक कोई अन्य वर्ण वाले दर्शन के लिए आने पर वे उनको ब्राह्मण कहकर पुकारते थे। उदाहरण के लिए जन्मतः मैं (लेखक) वेश्यु जाति का हूँ। मुझे वे ब्राह्मण कहते थे। उसी प्रकार अल्लु भास्कर नाम के रेड्डी जाति के व्यक्ति को दर्शन को आते देखकर कहते थे कि ब्राह्मण आ रहा है। श्री स्वामी जी के अनुसार महान् लोग सभी पूजनीय है। मोक्ष या ब्रह्म ज्ञान की इच्छा रखने वाले सभी ब्राह्मण ही है। इसी प्रकार वज्रसूचि उपनिषत् में भी ब्राह्मणत्व के बारे में इसी प्रकार निर्वचन दिया गया था। धर्म ग्रंथों के अनुसार जन्मतः जो ब्राह्मण होता है वह सही ब्राह्मणत्व को अपना कर जीवन बिताना है। नहीं तो वह शूद्र स्वभाव, चंडालतत्व प्राप्त करके धर्मबाह्य हो जाता है। मुमुक्षु के लिए आवश्यक गुणों

को अपना कर सही स्तर पर जीवन बितानेवाला ही ब्राह्मण है। ऐसे व्यक्ति के लिए ही ब्राह्मण संस्कार सभी सार्थक होते हैं।

ऐसे गुणों को ही दैवी संपदा, सत्वगुण आदि के नामों से भगवद्गीता में बताया गया था। भगवद्गीता के श्रद्धात्रय विभाग योग में स्पष्ट रूप से बताया गया था कि ऐसे लोगों से किए गए यज्ञ, दान, तप, कर्मों के द्वारा ही मोक्ष रूपी साफल्य प्राप्त कर सकते हैं। इसी विषय को श्री वेंकय्या स्वामी जी संपन्न तत्व, साधरणतत्व के साथ सद्गुरू की सेवा करने की सलाह देते थे। सपन्न तत्व का अर्थ ऊपर वाले सभी दैवी संपदा को अपनाना ही है।

साधारण तत्व का अर्थ है हमें समझना हैं कि वे सभी गुण हमारे अंदर है। मैं एक साधू या मुमुक्षु हूँ। मैं पवित्र हूँ ऐसा समझकर गर्व के साथ सामने वाले को हीन दृष्टि से नहीं देखना है। श्री स्वामी जी का जीवन ही इस सत्य का एक उदाहरण है। इसलिए ऐसे महान व्यक्तियों के आचरण, बोधनाओं को प्रमाण रूप में स्वीकार कर हमारे जीवन को सही रास्ते पर ले जाना है। यही विषय धर्मशास्त्र हमें बाताते हैं।

बौध, जैन, पार्सी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्म पवित्र आध्यात्मिक जीवन युक्त लोग और आध्यात्मिक जीवन को न अपनाने वाले लोग जैसे दो भागों में इस समाज को बाँट दिए थे।

एक बार श्री स्वामी जी ने रोशरेड्डी से कहा था कि कष्ट क्या है, सुख क्या है मुझे मालूम नहीं। इसका अर्थ है कि अपनी इच्छा या अनिच्छाओं को और स्वेच्छा से छोड देना चाहिए। 100

एक सेवक ने श्री स्वामी जी से पूछा कि साधना करते समय दैवकृपा कैसे मिलती है? तब स्वामी जी ने बताया कि **ऊपर वाली भवन निर्माण करने से मिलती है। अमर नारायण शतक में बताया गया कि आध्यात्मिक दैवी संपदा की साधना ही ऊपर का भवन निर्माण करना है।** 101

और एक भक्त ने पूछा कि स्वामी मुझे साधना करते हुए कहाँ ठहरना है? स्वामी जी ने बताया कि कहीं एक लकडी के लट्ठेवाले झोंपडी बनाकर रह सकते हो। किस गाँव में ठहरना है? किस आश्रम में ठहरना है? बार – बार भक्त प्रश्न पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि एक लकडी के लट्ठेवाले घर बनाकर रहो। घर का अर्थ शरीर है। इसका एक लकडी का लट्ठा आधार है। इसका अर्थ एक ही दैव की शरण लेकर सर्वस्व शरणागती की भावना से जीना है। मनुष्य धन, कनक, वस्तु और वाहन को ही जीवन के आधार मानते हैं। सच कहे तो वे सभी अशास्वत हैं। दैव को ही आधार मानकर जीवन बिताने से, वहीं लक्ष्य मानकर आगे बढ़ते रहने से, हर जगह साधना ही कर सकते है। साई का वाक्य सबका मालिक एक है। वहीं वाक्य को श्री स्वामी

जी ने आसान रूप से बताया था। सर्वशास्त्रों का सार श्री स्वामी जी की तरह सरल और स्पष्ट भाव से बताने वाले पंडित लोग हमें कहाँ मिलते हैं?

अपने आध्यात्मिक संपत्ति के बारे में श्री स्वामी जी ने बताया कि पर्वतों के समान अत्यधिक धन संपत्ति होने पर भी कोई भी एक भी पैसा नहीं माँग रहा है। पैसे नीचे लुडक रहे हैं।

और एक बार श्री स्वामी जी ने बताया कि सप्तगिरियाँ नीलामी के लिए तैयार है। कोई खरीदना चाहते तो खरीद सकते है। और एक बार बताए थे कि काले गिरियाँ नीलामी केलिए आए हैं चाहे तो खरीद सकते है। कोई खरीदनेवाला नहीं है। साईनाथ ने कहा कि ज्ञान धन रासी मेरे पास है। कोई माँगने वाला नहीं है। उसी प्रकार श्री स्वामी जी यहाँ बता रहे थे।

स्वामी जी ने सबको और एक बार बताया था कि दक्षिण की गिरि तैरते हुई आई है। कोई खीरदना चाहे तो खरीद सकते है।

एक बार श्री स्वामी जी ने बताया कि ब्राह्मणों में नीच जाती के लोग हैं। और नीच जाती के लोगों में भी ब्राह्मण हैं। वैस्य के जाति के लोगों में कम्मा जाति के लोग और कम्मा जाति में वैस्य लोग हैं। गोकुल की जाति में नीच जाती के लोग और नीच जाती के लोगों में गोकुल कुल के लोग हैं। पूरा समाज इस प्रकार ही है।

एक दिन श्री स्वामी जी ने कहा कि लाभ में कुछ भाग लेने से पाप में भाग लेना पडता है। 102

भक्त - स्वामी मानव मर जाने के बाद में क्या फिर जन्मेगा? अगले जन्म में मनुष्य के रूप में ही जन्म लेगा या पशु या पक्षी के रूप में जन्म लेगा।

स्वामी - मानव मरकर मानव का जन्म ही ले रहा है। दुर्लभ मानव जन्म तुझे मिला है। इसका सदुपयोग करना है। सद्गुरु का अन्वेषण करके सेवा करो।

मानव लक्षण को अपनाकर जीवन बिताने पर वह फिर मानव का जन्म लेगा। नहीं तो इंद्रियों की लोलुपता के कारण पशु लक्षणों को अपनाकर जीवन बिताने से हीन जन्म लेगा। इसलिए मानव जन्म को सार्थक बनाकर जीवन को बिताना चाहिए। यही उपदेश श्री स्वामी जी सबको दिए थे। 103

पुनर्जन्म के बारे में जानने वाले स्वामी जी अनेक भक्तों को उनके पूर्व जन्म के बारे में बताते थे। उनका जन्म कहाँ हुआ? क्या काम करते थे?... आदि का विवरण देते थे।

और एक भक्त के प्रश्न पूछने पर श्री स्वामी जी ने बताया कि हम किसी चीज पर मोह रखकर अंतिम दिन तक लड़ते रहते है, वहीं हमें मिलता है। जीवन भर किस चीज पर प्रीति रखकर मन पूरा भर लेते है, आखरी क्षणों में उसीका स्मरण करते हुए प्राण छोड़ देते है। जब हम पुनरजन्म लेते है तो वही स्मरण के अनुसार उस इच्छा को

पाने के लिए जन्म लेते हैं। भगवद्गीता में भी बताया गया कि अंत्य काल में जिसका स्मरण करते शरीर को छोड़ देते है, उसीके अनुसार हम जन्म लेते हैं। उसीके अनुसार श्री स्वामी जी ने भी पुनरजन्म के बारे में अपनी व्याख्या दी थी।

और एक भक्त ने मुक्ति मार्ग के बारे में पूछा। तब स्वामी जी ने बताया कि

उसे तीन लाख चुकाना है।

उतना पैसे नहीं है स्वामी।

छे लाख जमा करना है।

मेरे पास पैसे ही नहीं है स्वामी।

आठ लाख रूपए कम से कम चुकाने को कहो।

तीन लाख का अर्थ ईषण त्रयको छोड़ना है। छे लाख का अर्थ अरिषड्वर्ग को छोड़ना और आठ लाख अष्ठमदमों को छोड़ने का संकेत है। श्री स्वामी जी को सभी शास्त्रों का ज्ञान है। 104

एक बार पुलिस ने एक चोरी के विषय में श्री स्वामी जी के ऊपर इलजाम लगाकर कलुवाई पुलिस स्टेशन लाकर कमरे में बंद कर दिया था। शाम को गाँव वालों को मालूम होने पर स्टेशन पहुँचकर पुलिस दारोगे को श्री स्वामी जी के बारे में समझाकर उसे बाहर ले आने के लिए प्रयत्न किए थे। स्वामी जी के बारे में मालूम होने के बाद में दारोगे ने स्वामी जी से माफी माँगी। श्री स्वामी जी ने उन गाँव वालों से कहा कि यह स्थान मेरे लिए बहुत अच्छा है। यहीं और छे घंटा ठहरना चाहता हूँ। ऐसा कहकर छे घंटा वही स्टेषन पर बैठकर वापस आए थे। श्री स्वामी जी के लिए सुख हो या दुःख दोनों एक ही समान लगते हैं।

एक भक्त ने स्वामी जी से पूछा कि स्वामी हस्त कार्ती में जोवार का फसल खेत में लगाया था। स्वामी जी ने बताया कि गाँव के सभी जोवार तुम्हारा ही है। वह भक्त श्री स्वामी जी की बात को सही रूप में समझ नहीं सका था। उसने सोचा कि इस साल गाँव के सभी खेतों में फसल नहीं उगेगा। केवल उसके खेत में ही फसल निकलेगा। ऐसा समझकर कार्ती के मास में जोवार खेत में लगा लिया था। उस भक्त के खेत में एक बीज भी नहीं मिला था। पूरा फसल नष्ट हो गया था। बाकी सभी किसानों को अच्छा फसल निकला। उस साल वह भक्त ने उस गाँव के सभी किसानों से जोवर माँगकर खाया था। इस प्रकार गाँव के सभी जोवर उसके ही हो गए थे। स्वार्थ वश उसने सोचा था कि गाँव के सभी जोवर उसीको मिलेंगे। उसे सोचना था कि वह अपने खेत की फसल को सभी गाँव वालों को बाँट देगा। यह विवेक उसे नहीं होने से उसे नुकसान भोगना पडा था। स्वार्थ किस प्रकार के भावों को जगाता है, यहाँ हम देख सकते हैं। इस प्रकार की स्वार्थ भावना को त्यागने का संदेश श्री स्वामी जी अनेक बार देते थे।

नुतेटि के श्री रामुलु नायुडु अपने नींबू के खेत में श्री स्वामी जी के चित्र को रखकर पूजा करते थे। एक दिन निवेदन के लिए कुछ फल या चीज नहीं रहने से नींबू के दो टुकडे करके स्वामी जी के सामने रखे थे। लेकिन उसे वे प्रसाद के रूप में नहीं स्वीकारे थे। उस शाम को अपने घर से कुछ आटा लाए थे। रात को आटा श्री स्वामी जी को निवेदन दिए थे। पूजा के बाद में उस आटे को प्रसाद के रूप में मुँह में डाले थे। वह आटा नींबू के रस के समान बहुत कडुवा होना उसे आश्चर्य में डाल दिया था। निवेदन के रूप में रखा हुआ आटे को छोड़कर बाकी आटे की रूचि ठीक ही थी। केवल प्रसाद की रूची में ही यह फरक आया था। हम प्रीति से जिस चीज को खाते है वहीं चीज भगवान को प्रसाद के रूप में निवेदन चढाना है। **जिस चीज को हम खाना पसंद नहीं करते है उसे कभी भी प्रसाद के रुप में भगवान को समर्पण नहीं करना है। श्री स्वामी जी अपनी लीला के द्वारा यह सत्य उनको साबित किए थे। यह सत्य हम सबके लिए भी शिरोधार्य है।** 105

गाय के मूत्र को घर को पवित्र करने केलिए छिड़कते हैं। कुछ लोग आँखो को साफ करने के लिए आँखों में डालते है। एक दिन श्री रामुलनायुडु **गाय के मूत्र को अपनी झोंपडी में छिड़कते समय वह मूत्र दीवार पर लटकती श्री स्वामी जी के चित्र के ढाँचे पर पडा। उसने सोचा ऐसा पड़ाना शुभ सूचक है। उस रात जब वह बैठा हुआ था उस पर कुछ द्रव पदार्थ गिरा। उसने सोचा कि वह कोई छिपकली का मूत्र होगा।** 106 लेकिन उसे कोई छिपकली दिखाई नहीं दिया था। उसे सूँघने पर उसे लगा कि वह गाय का मूत्र है। उसे मूत्र से उसे बहुत चिडचिडा लगने लगा। तब उसने सोचा कि वह गाय का मूत्र कहाँ से किस प्रकार पडा था? बाद में श्री स्वामी जी ने उसे सपने में उपदेश दिया था कि मेरे ऊपर गाय का मूत्र, पंचितम छिड़कने से मुझे भी चिडचिडा लगता है। मेरे ऊपर के पंचतम को बिना साफ किए छोड़ दिया था। अब समझ में आ गया होगा। इस आत्मबोध से उसे मालूम हुआ था कि स्वामी जी चित्र के ढाँचे के द्वारा हो या असल में हो, एक समान प्रतिक्रिया देते है।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 22

श्री स्वामी जी की सूक्तियाँ

01. पेट भरा हुआ व्यक्ति को नहीं, भूख से तडपनेवाले व्यक्ति को ही खाना खिलाना है।
02. स्वामी कुछ लोग आपका स्मरण करने से ही रक्षा पा रहे हैं। कुछ लोगों के लिए आपकी रक्षा देर से मिल रही है। क्या कारण है? इस प्रश्न का समाधान श्री स्वामी जी ने इस प्रकार दिया कि उनके व्यवहार और रहन - सहन के अनुसार हमारी प्रतिक्रिया होती है। हमारे विश्वास के अनुसार श्री स्वामी जी की रक्षा मिलती है।
03. संपूर्ण विश्वास के साथ यहाँ आकर जो कुछ आप संकल्प करेंगे वह हो जाएगा।
04. हर एक जीव में वेंकय्या है, यह सत्य विश्वास के साथ लिख लो। यह सबके लिए हर एक क्षण याद रखने का विषय है। सद्गुरु विश्वरूप है। सर्वप्राणियों को वे ही परिवेष्टित करके रखे है। किसी भी प्राणी को सताने पर या आदर करने पर उसका श्रेय सद्गुरु को ही मिलता है। यह विषय हर पल याद करके जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए। तब ही हमें गुरुकृपा मिलती है।
05. मैसूर महाराज दिखने पर हमें क्या मिलता है? जो कुछ हम करते है वहीं हमें मिलता है। मैसूर महाराज जैसे सद्गुरु हमारे सामने प्रत्यक्ष होने पर भी हम साधना करके जो पाते है वही मिलता है। साधना के बिना गुरुकृपा से कुछ मिलने पर भी उसे हम हमारे साथ नहीं रख सकते हैं।
06. सबके लिए फसल दिलवाया था। उसे चोरों के हाथ नहीं जाने दीजिए। हमारे अंदर के दुर्गुण ही चोर है।
07. आपके मुझे छोड देने पर भी मैं तुम्हें नहीं छोडूँगा।
08. हजारों भेडों में हमारा भेडा होने पर भी उसे पहचानकर, पकड़कर ला सकते है।
09. सबको एक समान देखने से ही, भगवान हमें दिखाई देता है।
10. भूख नहीं है। मुझे खाना नहीं चाहिए।.., ऐसा कहने वाले भक्त को कुछ न कुछ खिलवाने के लिए कुछ लोग प्रयत्न कर रहे हैं। उनसे श्री स्वामी जी ने कहा कि मंद – बंद। मंद भूख से खाना खाने से वह परिग्रह बन जाता है। प्रकृति शक्तियों के रूप में हमें जो आहार प्रदान करती है उसके लिए भगवान को कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए।

11. वेंकय्या के नाम पर मुट्ठी भर खाना देने वालों को, खिलाने वालों की हम ही अपने आप उनकी देखरेख करेंगे। दुःख और सुखों में साथ रहेंगे।
12. हमें कुछ बोध कीजिए स्वामी। ऐसे पूछने वालों से श्री स्वामी जी कहते है कि हमें देख कर सीखिए। उनको देखकर क्या सीखना है?... इसका पूरा विवरण अवधूत बोधामृत में पूरी तरह देख सकते है।
13. मंत्रोपदेश कीजिए। ऐसा पूछने वाले भक्त से श्री स्वामी जी ने कहा कि मंत्र कहाँ है? तंत्र कहाँ है?... हमें समझकर आगे बढना है न। हमारे अंदर दुर्गुणों को प्रवेश करने से रोक कर सद्गुरू के द्वारा आचरण लाए हुए कर्मों को समझते हुए उनके दिखाए गए स्वच्छ रास्ते को अपनाकर उसी मार्ग में आगे बढ़ना ही हमारा कर्तव्य है।
14. सन्यासी धर्म के साथ रहने में कोई विशेष बात नहीं है। परिवार में रहनेवाला धर्म को निभाने में विशेषता है।
15. सूद के विषय में भी धर्म का आचरण करना है।
16. हमारे लिए कुछ संदेश दीजिए। ऐसा सेवक पूछने पर श्री स्वामी जी ने बताया कि सत्य, धर्म, संपन्नत्व, साधारणत्व, सद्गुरु सेवाओं का साधन कीजिए।
    संपन्नत्व का अर्थ है दैवी संपदा के लक्षण। साधरणत्व का अर्थ है सर्व प्रकार के गर्व, अहंकार के बिना अल्ला मालिक की भाव आचरण में रखकर उसे अपनाना है। सद्गुरु सेवा का अर्थ है सद्गुरु विश्वरूप है, किसी भी प्राणी को सताने से या आदर करने से वह गुरु के समक्ष चल जाता है। यह सत्य सबको मालूम होना चाहिए। ऐसे ज्ञान से हर क्षण जीवन जीना चाहिए। 107
17. नित्य अपने आप कोसने वाले सेवकों को बुलाकर एकांत में श्री स्वामी जी उनको बताते थे कि आप अपने मुँह को नहीं खोलना चाहिए।
18. मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। यहाँ दर्द है वहाँ दर्द है। ऐसा शिकायत करने वाले सेवकों से श्री स्वामी जी कहते थे कि आप अपनी पीडा को जितना सहते है उतना अच्छा होता है।
19. पच्चीस पैसा चोरी करने से दस रूपए का नुकसान होता है।
20. मनुष्य के रूप में मर जाए तो फिर मनुष्य के रूप में जन्म लेते हो।
21. गलत काम करने वाले सेवकों को स्वामी जी ने दण्ड नहीं दिए थे। ऐसे कहने वालों को स्वामी जी बताते थे कि जो लोग जाने केलिए तैयार है उन्हें जाने दीजिए।
22. आने वाले दिनों में छडी के बिना बनानेवाला खाना खाएँगे।
23. इच्छा से ही सब कुछ चला जाता है। यह सर्व शास्त्रों का सार है।
24. धागे को टूटने नहीं दीजिए। मैं आपके साथ ही रहूँगा।
25. किसीको चले जाओ।... कहने के अलावा हमें ही चले जाने से ठीक होगा।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 23

मानने वालों को संपत्ति, न मानने वालों को...

भगवान अनुगृहीत करने पर भी विश्वास रहित लोग कुछ भी नहीं पा सकते हैं। भगवान की बात, सद्गुरु की बातों पर संपूर्ण रूप से विश्वास रखकर, उनके कहने के अनुसार आचरण करने से ही हमें भगवान की कृपा मिलती है। जो लोग स्वामी जी की बातों का आचरण नहीं करते है उन्हें उनकी कृपा कभी भी नहीं मिलेगी। 108

अब तक श्री स्वामी जी की सूचनाओं पर विश्वास रखकर आचरण में लाकर सफल हुए भक्तों के अनुभवों को देख चुके थे। इसके विपरीत श्री स्वामी जी पर शंका दिखाने वालों के अनुभवों के बारे में भी अब देखेंगे।

गोलगामूडि के गोड्डुटि शेषय्या ने अस्वस्थ होकर स्वामी जी के पास आकर उनको अपनी स्थिति समझायी। श्री स्वामी जी ने उसे एक जंगल के पत्ते देकर बताए थे कि इससे रस निकाल कर पीओ। और उन पत्तों को गोली के रूप में खाने की सलाह भी दिए थे। शेषय्या उनको खाते समय संशय आया था कि इस प्रकार के पत्ते खाने से क्या वह स्वस्थ हो जाएगा? उसी शंका के साथ उसने पत्ते खा लिया था। बाद स्वामी जी के पास आया था। स्वामी जी ने बिना कहे उसके अंदर की शंका को पहचानकर बोले इन पत्तों से तुझे स्वस्थता नहीं मिलेगी। एक व्यक्ति आएगा उनसे तुम दवा ले लो। श्री स्वामी जी की बात सुनकर शेषय्या को आश्चर्य हुआ था।

नेल्लूर के वि. राममूर्ति के भाई का बेटे को तीन पुत्रियाँ पैदा हुई थीं। बाद में की चौथा संतान बेटा होने से अच्छा होगा समझकर श्री स्वामी जी के पास आकर उनसे विनती की कि कृपा करके हमें पुत्र पैदा होने का आशीर्वाद दे दे। स्वामी जी ने बताया कि आधे रात के समय किसी मंदिर में तीन दिन तीन प्रदक्षिणाएँ करने से बेटा पैदा होगा। आधी रात में प्रदक्षिणा करना मुश्किल समझकर, वह भी उस समय नौ महीने पूरा होने पर बच्चा या बच्ची का बदलाव कैसा संभव होगा?... समझकर वे श्री स्वामी जी की सूचना को पूरा किए बिना छोड़ दिए थे। **चौथा समय भी उन्हें लडकी ही पैदा हुई थी। इससे पता चलता है कि श्रद्धा नहीं होने से भगवान की करुणा होने पर भी फल नहीं मिलता है।** 109

इंदुकूरु पेटा के आत्मकूरु वेंकय्या इस प्रकार बता रहे थे।

एक दिन श्री स्वामी जी ने बताया कि आपके बैल को गाडी की ओर से दुर्घटना घटने की संभावना है। इसलिए बैल को बेचिए। बेचने केलिए कोशिश करने पर भी कम दाम आने के कारण उसे बेचने की बात छोड़ दिया था। एक दिन रात के समय वह बैल ने गाडी के चक्र के अंदर सिर रखकर बाहर निकालने की कोशिश किया था। उसके सींग चक्र में अटकने से बाहर निकालने के प्रयत्न में वह बैल मर गया था। यह घटना से वेंकय्या को श्री स्वामी जी की बात का महत्व समझमें आया था। 110

रापूरु तालूक पेनमर्ती गाँव के श्री रामुलु शेट्टी जी को कोढ़ था। पाँव और हाथों पर कुछ धब्बे थे और उभरे हुए थे। पैर की उँगली को घाँव था। शेट्टी जी आकर श्री स्वामी जी का आश्रय लिये थे। श्री स्वामी जी शेट्टी के शरीर पर तेल लगाते थे। शेट्टी के घर जाकर कभी – कभी उनका आतिथ्य भी स्वीकारते थे। श्री स्वामी जी कहीं भी रहने पर उनके दर्शन करते थे। कुछ दिनों के बाद में उनका कोढ़ दूर हो गया था। **लेकिन श्री शेट्टी जी स्वामी जी के सलाहों का पालन नहीं किए थे। श्री स्वामी जी ने बताया कि उनको स्त्री पत्य और नियमों का पालन करना है। लेकिन उनका पालन नहीं करने से और एक बार उनको कोढ़ लग गया था। श्री स्वामी जी के अनुसार हम बीमार को ठीक नहीं कर पाते है। रोगियों को देखकर असहन से, नाराजगी के बिना भिक्षा देने पर भी वह सेवा ही कहलाएगा।** 111

एक समय वेलूरु के सुब्रह्मण्यम श्री स्वामी जी के साथ तिरुवल्लुवर गए थे। श्री स्वामी जी एक जगह खडे होकर पर्वत के पत्थरों को जाँच कर रहे थे। कुछ देर के बाद में छोटी सी लकडी से जमीन पर गिरा एक रूपए को वहाँ से हटाते हुए सुब्रह्मण्यम को बुलाए थे। उन्होंने कहा कि इस रूपए से कपूर खरीद कर जलाकर स्वामी को आरती दो। श्री स्वामी जी कभी भी अपने पास पैसे नहीं रखते थे। लेकिन वह रूपया कैसे यहाँ आया सुब्रह्मण्यम को मालूम नहीं हो रहा था। सुब्रह्मण्यम ने हाँ कहकर उस काम को तुरंत नहीं कर पाया था। वह रूपए को अपनी जेब में डालकर मंदिर में गया था। वहाँ दस रूपये के नोट के लिए एक रूपए के सिक्का लाने केलिए तुलसम्मा कहने पर उसने अपने पास का वह रूपये का सिक्का उसे देकर, खर्च कर लीने की सलाह दी। श्री स्वामी जी के पास शाम को आने पर उन्होंने पूछा कि क्या मंदिर में कपूर को जलाया? सुब्रह्मण्यम ने झूठ बोल दिया कि उसने जलाया था। उसने सोचा था कि तुलसम्मा को जो एक रुपया दिया था वह भी भगवान की सेवा में ही जाएगा। तीन महीने बीत गए थे।

एक रात सुब्रह्मण्यम सो रहा था। उसे सपने में जलता हुआ एक बडा कपूर दिखाई दिया था। उसकी ज्वाला से वह भयभीत हो गया था। वह उठकर उसके बारे में सोचने लगा। उसे मालूम हो गया था कि पिछले दिनों में श्री स्वामी जी के द्वारा

बताया गया कपूर जलाने का काम उसने पूरा नहीं किया था उसका परिणाम ही यह सपना है। उसने तुरंत तिरुवल्लूर पहुँचकर, भगवान से माफी माँगकर कपूर जलाकर आरती देकर वापस आया था। **सद्गुरु कृपा दिखाने पर भी उनके सलाह पर पूर्ण विश्वास नहीं होने पर उसका फल नहीं पा सकते हैं। यह वेलूरु सुब्रह्मण्यम जी का अनुभव है।** 112

वेलूरु सुब्रह्मण्यम जी अपने अनुभवों को इस प्रकार बता रहे थे।

1970 में मैं अपनी पत्नी के साथ गोलगामूडि में श्री स्वामी जी का आशीर्वाद लेकर घर वापस जाने केलिए बस के पास खडा हुआ था। वे करुणासमुद्र हमारे पास आकर बताए थे कि आपको सोना जैसा समय आने वाला है। तुझे लिखकर चिट्ठी देने पर भी उसे पहचान नहीं सकते हो। तुझे वह स्थान मुझे दिखाना है। तलुपूरु में एक गाँव के घर के पश्चिम दिशा में वह स्थित है। उस घर पर मेरे कहने पर तेरा वश हो जाएगा। तुम वहीं घर में ठहरो। इस तरह श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार मैं अपने परिवार को उस घर में ले जाना नहीं चाहता था। लेकिन मैंने स्वामी जी से कहा कि एक बार आइए और उस स्थान को मुझे दिखाइए। लेकिन मन में सोचने लगा कि यह पागल वेंकय्या मेरे घर आने पर हमारे रिस्तेदार समझेंगे कि ये पागल वेंकय्या के साथ घूम रहा है। तलुपुलूरु के सभी मेरे रिस्तेदार मुझे देखकर खिल्ली उडाएँगे और हँसेंगे। उसी समय सर्वज्ञ मूर्ति मेरे मन की बात समझकर बोले, जी आप इस पागल वेंकय्या के ऊपर ही इलजाम रख दो। मुझे कोई परवाह नहीं है। बाद में स्वामी जी मेरे साथ बस में नेल्लूर आए थे। हम तलपूरु बस में बैठे हुए थे। कुछ ही क्षणों में मेरा मन बदल गया था। तलुपूरु जाकर मेरे रिस्तेदारों के सामने बेवकूफ बनना नहीं चाहा था। मैंने श्री स्वामी जी से कहा था कि जी आप मुदिगेडू चलिए। हम अपने रिस्तेदारों के घर जाकर आएँगे। मैं बस से उतर कर जा रहा था।

तुरंत मुझे देखकर श्री स्वामी जी का मुख लाखों रुपए खोने वाले जैसे कांतिविहीन हो गया था। तब स्वामी जी ने कहा कि मैं आपके लिए आ रहा था लेकिन आप मुझे छोड़कर जा रहे हैं। तुम मेरी बात को नहीं मान रहे हो। तुम तुझे खाना बनाने वाली के बाए पैर को घाँव आने दिया है। तुझे मद्रास अस्पताल जाना पड़ता है। तुम नेल्लुरु रंगनायकुल मंदिर में पच्चीस पैसे से प्रसाद खरीद कर तीनों पहर उसे खिलाओ। इससे उसका रोग कम होने की संभावना है। श्री स्वामी जी ने दो महीने के पहले ही आने वाले रोग के बारे में बताकर उसका निवारणोपाय भी बताए थे।

श्री स्वामी जी की बात पर श्रद्धा नहीं होने के कारण मैं अपने रसोइन को एक दिन खाना खिलाकर चला गया था। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार दो महीनों के बाद उसके जाँघ पर एक घाँव पैदा हुआ था। मद्रास जाकर ऑपरेशन करवाने से पाँच सौ रूपए खर्च हो गए थे। उस दिन श्री स्वामी जी की बात को नहीं मानने से

मुझे वह दण्ड मिला था। श्री स्वामी जी के कहने के अनुसार तलुपूरु को मेरे परिवार को बदलने से सारी संपत्ति के साथ सुखी जीवन मुझे मिल गया होता। लेकिन मैं उनकी बात नहीं माना था। इसलिए यह नुकसान मुझे भोगना पडा था।

एक दिन यहीं भक्त श्री स्वामी जी के पास जाकर पूछा कि खेत में जहाँ पानी पडेगा बताने से वहाँ कुआँ खुदवाएगा। श्री स्वामी जी खेत के चारों ओर घूमकर बताया था कि **इस खेत में पानी नहीं है। बगल वाले आधा बीघे खेत में चालीस बीघे खेत के लिए आवश्यक पानी है। उस आधे बीघे जमीन को खरीद कर कुआँ खुदवाओ। इस खेत में जो कुआँ खुदवाते है वे हमेशा छाया में ही रह सकते हैं।** कुआँ खुदवाने के लिए उस खेत में कुछ लाइन भी लगाए थे। स्वामी जी ने सलाह दी कि यह खेत किसी भी स्थिति में मत बेचना। लेकिन उनकी बात पर बिना विश्वास रखे मैंने उस जमीन को बेच दिया था। अब यहाँ जिसने कुआँ खुदवाया था वह लाखों रूपए कमाकर धनवान बन गया था। भविष्य निर्णय किसका है?, कैसा होता है?... यह निर्णय हमारे हाथ में नहीं है। जो खरीदता है वह जमीन उसकी हो जाती है। यह तो एक विचित्र विधि निर्णय है। 113

कल्लूरु पल्लि के काटमरेड्डी सुब्बारेड्डी इस प्रकार बता रहे थे। हमने 22 एकड जमीन को बेचना चाहा था। श्री स्वामी जी से इस विषय पर सलाह ली थी। स्वमी जी ने बताया कि आने वाले दिनों में इसका दाम लाखों गुना बढ़ जाएगा। कौन शनि तेरे इस जमीन को बेचवा रहा है? मैं अपने पिताजी को बताए बिना ही एकड रु 500 में बेच दिया था। अब उसका मूल्य एकड एक लाख से अधिक हो गया था।

और एक बार मेरे मागाणी जमीन को बदलने केलिए श्री स्वामी जी से सलाह लेना चाहा था। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि ये तो यह जमीन बेचने से बहुत कष्टों को भोगेगा। कहने पर भी वह सुन नहीं रहा था। कर्म फल बहुत अधिक है। हम क्या कर सकते है? श्री स्वामी जी की बात नहीं मानकर खेत को बदलने के बाद में तीन सालों तक बहुत नुकसान आया था। बीस हजार रूपए ऋण ले लिया था। जीवन में बहुत मानसिक तनाव भी भोगना पडा था। श्री स्वामी जी की कृपा से 10 हजार रूपए देकर मेरे खेत को और एक बार पहले जैसे बदलवाया था। उसके बाद में मेरी आर्थिक स्थिति बदल गई थी। मानसिक स्थिति में बहुत वृद्धि हुई थी। मेरे जमीन में बदलाव केवल श्री स्वामी जी की कृपा के कारण ही हुआ था। मेरी बुद्धि से नहीं। मेरे पिताजी के ऊपर श्री स्वामी जी को जो प्रेम था उसीके कारण मेरा खेत मुझे स्वमी जी ने वापस दिलवाए थे।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 24

स्वामी जी की अभेध स्थिति

परब्रह्म स्वरुप, सद्गुरु, निर्गुण निराकार ही नहीं सगुण, साकार वालों के रूप में भी उनका चैतन्य सदा काम करता रहेगा। इन दोनों स्थितियों को हरक्षण अनुभव करने वाले, दैव आदेश पानेवाले महान् लोग ही हर क्षण भक्तों की रक्षा कर सकते हैं। इस विषय में श्री स्वामी जी और श्री सिर डी साई के बीच में बहुत अच्छी समानता और सन्निहित संबंद भी है। यह उनके जीवन पद्धती ही नहीं उन दोनों के भक्तों देने वाले दिव्य अनुभवों के द्वारा प्रकटित होता है।

दोनों अस्खलित ब्रह्मचारी ही है। दोनों अनिकेत है। (अपने लिए निजी निवास नहीं है।) दोनों भिक्षा से जीवन चलाए थे। सिद्ध होकर दोनों आदर्शप्राय साधु के रूप में जीवन बिताए थे। दोनों निरताग्निहोत्र हैं। दोनों की लीलाएँ और बोध एक समान दिखते है।

साइनाथ भक्त रक्षा करने के बाद में बताते थे कि मैंने ही स्वयं रक्षण कार्य किया था। लेकिन श्री स्वामी जी जीवन भर अपने और अपने कार्यों के बारे में गोप्य रखे थे।

श्री स्वामी जी अपने भक्तों से एक बार स्वयं बताए थे कि उत्तर दिशा में मेरे भाई रहते थे। वे भी निरंतर अग्नि कुंड जलाते थे। दोनों अपनी परिभाषा में एक दूसरे से वार्तालाप करते थे। दोनों अपनी महासमाधि के बारे में पहले ही सबको बताए थे और बाद में भी शाश्वत रूप से अपने भक्तों को अनुगृहीत करते रहने का वादा किए थे। उसी प्रकार अपने अभय को अमल करते रहे थे। इन दोनों के भक्तों को प्रदान किए दिव्य अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्रख्यात साई भक्त आचार्य श्री एक्किराल भारद्वाज श्री स्वामी जी के अपने प्रथम दर्शन के बारे में इस प्रकार बताए थे।

1975 में शिवरात्री के प्रातःकाल में पूजा करने के बाद में गोलगामूडि श्री अवधूत वेंकय्या स्वामी का दर्शन करने का संकल्प मेरे मन में आया था। श्री स्वामी जी का भक्त और मेरा विद्यार्थी रामकृष्णा रेड्डी को मेरे साथ आने के लिए कहा था। रामकृष्ण ने कहा कि पहले हमें पता लगाना है कि श्री स्वामी जी गोलगामूडि में है या नहीं। क्योंकि वे अकसर निकटतम गाँवों को जाते रहते हैं। प्रातःकाल मैंने साई को अगरबत्ती जलाकर उनसे प्रार्थना की कि साई आप सकल साधु स्वरूप है। श्री वेंकय्या स्वामी के रूप में रहनेवाले आपके दर्शन के लिए मैं जा रहा हूँ। उनकी सन्निधि और

आशीर्वाद मुझे अवश्य मिलना है। लगभग सुबह दस बजे गोलगामूडि जाने वाली बस हमें दिखाई दी थी। हम सब बस में चढ़ गए थे। उस बस में श्री स्वामी जी के तंबूरा पकडा हुआ एक साधु को पहचान कर रामकृष्णा रेड्डी ने उससे विवरण पूछा था। उस साधु ने बताया कि श्री स्वामी जी चार दिन के पहले ही नेल्लूरु आकर दत्तात्रेय पीठम में बसे हुए थे। पहले उन्होंने बताया कि वहाँ दस दिन तक रूकेंगे। इसलिए ही सेवक अग्नि कुंड के लिए आवश्यक लकडी वहीं इंतजाम किए थे। लेकिन श्री स्वामी जी आज सुबह 8.30 को बताए थे कि उनको तुरंत गोलगामूडि आश्रम पहुँचना है। सेवक उनको घोडे की गाडी से गोलगामूडि भेजे थे। आधे घंटे के पहले ही वे गोलगामूडि पहुँच गए होंगे। हम कुछ ही समय में श्री स्वामी जी की सन्निधि पहुँच गए थे। श्री स्वामी जी अकस्मात् गोलगामूडि पहुँचने के कारण कोई भक्त उस दिन दर्शन के लिए वहाँ नहीं आए थे। मैं और रामकृष्णा रेड्डी दोनों लगभग छे घंटा सन्निधि में बिताए थे। हम दोनों को और गुरुवार के भजन बृंद को श्री स्वामी जी ने बहुत सम्मान करके आशीर्वाद दिए थे। मुझे पता चला कि श्री स्वामी जी भी साई का रूप ही है। उसके बाद मैं और मेरे सत्संग सदस्य बहुत बार श्री स्वामी जी के दर्शन करते रहे थे।

एक दिन श्री स्वामी जी कलिचेडू से अपना डेरा बदलने के लिए उनकी सामान गाडी में लादने का आदेश दिए थे। सभी सामान लादने के बाद श्री स्वामी जी को गाडी में बैठने केलिए कहने पर वे मना कर दिए थे। सभी सामान को गाडी से निकालवा कर गाडी वाले को छे रूपए देकर भेजने का आदेश दिए थे। क्यों श्री स्वामी जी अपनी यात्रा को रोक दिए थे?... किसीको मालूम नहीं हुआ था।

उस दिन सुबह 9 बजे भाई शेषाद्री विद्यानगर से श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए बस से आया था। श्री स्वामी जी अकस्मात् अपनी यात्रा को रोकने का कारण तभी सबको मालूम हुआ था। विद्यानगर से श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए निकलने के पहले ही शेषाद्री ने स्वामी जी से विनती की कि मुझे दर्शन दीजिए। उस विनती को स्वीकारते हुए वे अपनी यात्रा को रोक दिए थे। सकल साधु स्वरूप श्री साई और श्री स्वामी जी दोनों एक ही है।

1980 में आश्रम में समाधि का मंदिर बनाने केलिए ईट की लॉरी आयी थी। उस दिन श्री स्वामी जी ने सबको प्रस्तुत समाधि मंदिर में सोने की सलाह दी। श्री स्वामी जी ने कहा कि यहाँ पेंचल पर्वत के समान बडा मसजद का निर्माण होगा। उनके कहने के अनुसार उनकी समाधि मंदिर एक साल में पूरा हो गया था।

लेकिन श्री स्वामी जी अपने समाधि मंदिर को **मसजिद** क्यों कहे थे?... इसके बारे में हमें सोचना होगा। द्वारका मई नाम रखकर मसजिद में श्री साईनाथ रहते थे। वहाँ मतभेद के बिना सर्वमत वाले उनके धर्मों के अनुसार साई की आराधना करते हैं। मसजिद नाम से बुलाने वाले साई मंदिर में हिंदू देवालय की तरह भक्त घंटा बजाते

हैं, तुलसी दलों से पूजा करते हैं। यह विधि केवल श्री साई जी के मंदिर में ही देख सकते हैं। **सिरिडी की तरह गोलगामूडि में भी सर्वधर्म वाले श्री स्वामी जी की पूजा और आराधना करके कृपा पाते हैं।** इसलिए ही श्री स्वामी जी अपने और साई के बीच में कोई भेद नहीं मानते है।

1980 में श्री स्वामी जी तलपूरु में नारायणदास के आश्रम में ठहरे हुए थे। श्री स्वामी जी के सेवक गुरवय्या जी को मैंने श्री साई लीलामृत पढ़कर सुनाया था।। बाद वे उस ग्रंथ का पारायण कर रहे थे। एक दिन मैं और गुरवय्या दोनों श्री स्वामी जी की सन्निधि में अगल बगल में सो रहे थे। आधी रात के समय गुरवय्या चालीस गज दूर जाकर वापस आते हुए कहा कि नींद आने से तुरंत जाकर वापस नहीं आ पाया था। अभी साई बाबा आकर चले गए थे। वे आकर मेरे बगल में खडे हुए थे। मैं जागकर उनका पादाभिवंदन करने आगे बढ़ा पर वे तुरंत चले गए थे। मैं उनके पीछे फाटक तक गया था। बाद में साई अदृश्य हो गए थे। उनकी बातों को सुनने के बाद मुझे अवगत हुआ था कि श्री साई ने भौतिक रूप से दर्शन दिए थे। श्री स्वामी जी की सन्निधि में उनके प्रधान सेवक को भौतिक दर्शन देकर अनुगृहित करना, इससे श्री साई का और श्री स्वामी जी का संबंद हमें मालूम होता है।

वैद्युल सुधाकर की पत्नी की बहिन गीता भवानी इस प्रकार बता रही थी। मेरे माता – पिता मेरा विवाह मेरे मामा जी डॉक्टर सुरेश से करवाना चाहते थे। सुरेश मुझको पसंद नहीं करते थे। लेकिन मैं उनको चाहती हूँ। मैंने श्री स्वामी जी से प्रार्थना की कि यदि मेरा विवाह डॉ. सुरेश से हो जाए तो मैं अपने पति के साथ श्री स्वामी जी के दर्शन करके वहाँ आश्रम में एक रात ठहरूँगी। यह विषय कहे बिना मेरी बहिन ने श्री स्वामी जी के द्वारा दिया गया धागा मेरे मामा के हाथ को बाँध दिया था। उसने बताया कि श्री स्वामी जी के धागे को हाथ को बाँधने से शुभकाम होंगे। एक महीने के अंदर ही हम दोनों का विवाह मेरे मामा जी के आशीर्वाद से संपन्न हुआ था। हम दोनों गोलगामूडि आकर एक रात आश्रम में ठहरे थे। उस रात मेरे सपने में शिरिडी के साई ने प्रत्यक्ष होकर कहा कि तेरी शादी हो गई थी। अब मेरे लिए सत्यन्नारायण व्रत करवाओ। मैंने कहा कि मेरा घर तो बहुत छोटा है। बडा घर का निर्माण होने पर अवश्य करूँगी। इस धागे को तुम बाँध लो। कहकर एक धागा देकर साई अदृश्य हो गए थे। सुबह जागकर देखने पर मेरे पलंग पर साई के द्वारा दिया हुआ धागा पडा हुआ था।

बाबा अपने भक्तों को केवल विभूति ही देते थे। श्री वेंकय्या स्वामी अपने भक्तों को आशीर्वाद के साथ – साथ विभूति और धागा भी देते थे। श्री वेंकय्या स्वामी के आश्रम को जाने पर श्री साईनाथ जी उसे श्री वेंकय्या स्वामी जी का धागा प्रदान

करना यह अवगत कराता है कि श्री साईनाथ और श्री वेंकय्या स्वामी जी के बीच में कोई भेद भाव नहीं है।

गुंटूरु के निवासी जि. वी. रमणमूर्ति इस प्रकार लिख रहे है। शिरिडी साईनाथ के पारायण के द्वारा मुझे उनसे बहुत अनुभव हुए हैं। श्री शिरिडी साई और श्री वेंकय्या स्वामी जी के बीच में कोई भेद भाव नहीं हैं। मैं एक समस्या से फँस कर समाधान के लिए श्री वेंकय्या स्वामी जी के ग्रंथ का पठन किया था। उसमें मेरी समस्या का समाधान मिलने से उस ग्रंथ को समग्र रूप से पारायण किया था। उन दिनों में मेरे ग्रह बाधाओं के निवारण केलिए जोन्नवाडा कामाक्षम्मा की सन्निधि को पहुँचा था। उस रात कामाक्षम्मा और मल्लिखार्जुन स्वामी जी दोनों ने मेरे लिए मंत्रोपदेश करके संदेश दिए थे कि मेरे सभी समस्याएँ ठीक हो जाएगी। इतने में मेरी नींद खुल गई थी। लेकिन मैंने अपनी आँखों को बंद करके ही रखा था। मेरे लिए एक आवाज सुनाई दी कि तुम तीन दिन मेरे ही सन्निधि में रहो। समझ में आया कि ये बातें श्री वेंकय्या स्वामी जी की है। इसलिए मैं तुरंत गोलगामूडि पहुँच गया था। उस रात मैं नहीं सोया था। रात 10 बजे का समय था। बगल में भजन चल रहा था। मेरे पैरों के दोनों तरफ शिरिडी साई और श्री वेंकय्या स्वामी दोनों खडे हुए थे। आँख खोलकर स्पष्टता से उनको देख रहा था। तन्मयता के कारण मुझे उनसे बोलने की या उठकर खडे होने की इच्छा नहीं हुई थी। वे दोनों मेरी ही ओर देख रहे थे। बाद में उन्होंने कहा कि बाहर आ जाओ। मेरे अंदर से एक स्त्री हरे रंग की साडी पहनकर बाहर आई थी। ब्लौउज नहीं पहनी हुई थी। उसका आकार बहुत विकट था। वह बाहर खडी हुई थी। स्वामी जी उससे कह रहे थे कि यहाँ से बाहर चले जाओ। वह स्त्री बोल रही थी कि मैं इनके भरोसे से ही रहती हूँ। इनको छोड़कर मैं कहाँ अब जा सकती हूँ? और एक व्यक्ति को दिखाइए। मैं चली जाती हूँ। तुरंत श्री स्वामी जी ने शिरिडी बाबा के हाथ से सटका लेकर उस कुरुप स्त्री के गर्दन के ऊपर मारा था। इससे वह चीखती हुई भाग गई थी। उस दिन से मेरे सभी ग्रह बाधाएँ दूर हो गयी थीं। यदि हमारे बुलाने से आ जाते हैं स्वामी जी।

गुंटूरु में मैंने जो टी की दूकान को खोली थी उसे और किसी को बेचना चाहा। उस दिन रात मेरे सपने में आकर बाबा ने पूछा कि तुम दूकान को बेचकर क्या खाओगे? तेरे लिए और एक स्त्री और एक जगह दिखा रही है। बीच में ही मेरा सपना टूट गया था। मैं बाबा की बात को नहीं मान कर दूकान को बेच दिया था। उस दिन से अनेक कष्टों को भोगना पडा। खाने के लिए भी कुछ नहीं होता था। बहुत परेशान होने लगा था।

उसी प्रकार एक दिन बाबा सपने में आकर बताए थे कि तुझे मेरी जैसी पुत्री जन्म लेगी। लेकिन मैं बेटी नहीं चाहता था। इसलिए ही मैंने पत्नी को अबार्षन करवाया

था। फिर से कष्टों को सहना पडा। कुछ दिनों के बाद में मेरी पत्नी सात महीने की गर्भवती हो गयी थी। श्री वेंकय्या स्वामी मेरे सपने में आकर बताए थे कि मेरे पास आओ। तेरी इच्छा पूरी होगी। ठंड पडने की संभावना है। लेकिन मैं श्री स्वामी की बात पर उतना ध्यान नहीं दिया था। मेरी पत्नी के गर्भ में पिंड ठंड पड़ने से मर गया था। ऑपरेशन करके मृत शिशु को बाहर ले आए थे। मरने से मेरी पत्नी बच गई थी। बाद में बात समझकर श्री स्वामी जी से किए गए पार्थनाओं से मेरी पत्नी मरने से बच गई थी। उनका आशीर्वाद मुझे मिला था।

मेरे सपने में श्री स्वामी जी ने आकर मुझे गाँव के बाहर एक स्थल दिखाकर उसे खरीदने की सलाह दी। लेकिन वह जगह व्यापार के लिए अनुकूल नहीं था। इसलिए मैं सोच रहा था कि बाबा इस प्रकार का सलाह क्यों दिए थे? मैं बाबा और श्री स्वामी जी का प्रार्थना करने लगा। बाद श्री वेंकय्या स्वामी सपने में आकर पूछे थे कि क्या तुझे वह स्थल नहीं चाहिए? बाद में दोनों मिलकर स्वप्न में आकर गुंटूरु सेंटर के समीप के और एक स्थल दिखाकर उसे खरीदने की सलाह दी। उस स्थल को बेचने के लिए मालिक तैयार नहीं थे। पहले श्री स्वामी जी की सलाह को नहीं मानकर खरीदने से पीछे हट गया था। इस समय किसी न किसी तरह खर्च अधिक होने पर भी उस स्थल को खरीदने के लिए बहुत कोशिशें की थी। 40 हजार पहले देने से बाद में रिडिस्टर करने केलिए भी सहमत हो गया था। 40 हजार रूपए लाकर उसे दे दिया था। वह बेचने वाला बहुत बेईमान था। बहुत लोगों ने बताया कि उसके चाल में फँस गए हो। तुम्हारे पैसे चले गए हैं। लेकिन मैं श्री स्वामी जी के ऊपर भरोसा रखकर रह गया था। एक दिन वह स्वयं आकर रिडिस्ट्रेशन करवा दिया था। इस प्रकार साई बाबा और श्री वेंकय्या स्वामी दोनों मिलकर भक्तों की रक्षा कर रहे हैं। यह तो मेरा भाग्य है।

वल्लपुरेड्डी नारायणरेड्डी जी की माती जी को श्री स्वामी जी प्राणभिक्षा प्रदान किए थे। यह विषय सबको मालूम था। कालांतर में शिरिडी साई के चरित का पठन करके उनपर भक्ति और श्रद्धा पैदा कर लिए थे। बाबा के साथ – साथ श्री स्वामी जी का स्मरण भी करते थे। एक दिन विपत्कर परिस्थितियों में साई बाबा और श्री स्वामी जी दोनों को प्रार्थना करने पर उस दिन रात में श्री स्वामी जी स्पष्टता से बताए थे कि मेरा स्मरण करने पर भी या बाबा का स्मरण करने पर भी दोनों एक ही है।

एक बार श्री स्वामी जी के दिव्यत्व के बारे में सुनकर उनके दर्शन करने केलिए भक्ति और श्रद्धा के साथ श्री भारद्वाज मास्टर, उनकी मामी, बहनोई के साथ और कुछ लोग तलुपूरु आए थे। उसी समय श्री स्वामी जी और एक रास्ता पकड कर गाडी से बगल का गाँव कलिचेडु पहुँच गए थे। विषय मालूम होने पर कलिचेडु पहुँचने केलिए कोई बस नहीं होने के कारण वहाँ से सभी पैदल कलिचेडु की ओर धूप में

चलने लगे। मास्टर की मामी 56 उम्र में भी धूप की परवाह नहीं करके पैदल तीन मील दूर चलकर कलिचेडु पहुँच गयी थी। वहाँ पहुँचकर श्री स्वामी जी को नमस्कार किया। उस समय श्री स्वामी जी मौन में थे। किसी को उनको छूने नहीं दिए थे। कागजों पर उँगलियों की मुद्रा लगाकर दे रहे थे। उन कागजों को अपने उँगली के नीचे रखने केलिए कह रहे थे। इस प्रकार करते समय कुछ स्त्रियों के हाथ श्री स्वामी जी के हाथों से छू रहे थे। लेकिन श्री स्वामी जी किसीको नहीं मना किए थे। उनकी भक्ति और श्रदधाओं से वे प्रसन्न होकर उनको अनुगृहित किए थे।

श्री स्वामी जी के दर्शन, स्पर्श हमको श्री साईनाथ की कृपा से मिले हैं। उनको समझ में आ गया था कि साई नाथ और श्री स्वामी जी के बीच में कोई फरक नहीं है।

अपने अवसान दशा में एक साल तक पोबोलु सुब्बम्मा निरंतर श्री साइनाथ जी का नाम जप करती रहती थी। उनके अंतिम समय में श्री स्वामी जी ने अपने आशीर्वाद और पाद तीरथ उनको भेजे थे। श्री स्वामी जी के पाद तीरथ पाकर, स्वीकार करके वह अपनी अंतिम स्वास छोड दी थी। वह धन्य जीव बन गयी थी। साईनाथ का नाम जप करने पर भी श्री स्वामी जी का उसे पाद तीरथ भेजना एक विशेष बात ही है। इससे पता चलता है कि उन दोनों में कोई फरक नहीं है। **रुप नाम के अतीत होनेवाले ही महात्मा है। ऐसे लोग ही सर्वत्र फैले रहते हैं। हर जगह ऐसा ही तत्व भरा हुआ है। वे ही हमारे स्वामी जी है।**

स्वामी जी कभी भी नए गाँवों को या प्रांतों को नहीं जाते थे। वे अक्सर जाने वाले गाँवों और प्रदेशों में ही बार – बार बसते थे। श्री स्वामी जी को कभी भी भक्त लोग विनती करने पर भी किसी नया प्रदेश को जाने पर वहाँ एक दिन भी नहीं रुकते थे। श्री स्वामी जी तुरंत उस प्रांत को छोड़कर चले जाते थे। श्री स्वामी जी कभी भी नेल्लूरू जिले के विद्यानगर नहीं गए हुए थे। लेकिन एक दिन किसी के आह्वान केबिना ही अपने बृंद से विद्यानगर पहुँच गए थे। वहाँ बनाया हुआ शिरिडी साई के मंदिर में समाधि के मंच पर पवित्र अग्नि कुंड को पाँच दिन तक जलाकर, पूजा करके उस मंदिर को पावन बना दिए थे।

दूसरे दिन उनके सेवकों ने कहा कि दूसरे गाँव को जाएँगे। तब श्री स्वामी जी ने कहा कि जाने केलिए रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है। यहाँ बाईस करोड रूपए जमा करना पड़ता है। आचार्य भारद्वाज जी साइनाथ की पूजा करते हुए आसनम् समर्पयामी कहने पर श्री स्वामी जी उठ कर बैठ गए थे। नेवेद्य समर्पयामी कहने पर माँड पूछकर पीए थे। बाबा को भक्त लोग आरती देते समय बहुत श्रद्धा से हारती लिए थे। इस मंदिर में आपको कैसा लग रहा है?... पूछने पर श्री स्वमी जी ने बताया बहुत अच्छा है। इस प्रकार वे अपनी परिभाषा में मंदिर को आशीर्वाद दिए थे।

कभी भी किसी भी समय श्री स्वामी जी फूलों की माला नहीं स्वीकारते थे। भारद्वाज जी उनके पैरों पर फूल लगाकर नमस्कार किए थे। उसे बहुत खुशी से स्वीकार लिए थे। उस समय एक सेवक ने कहा कि श्री स्वामी जी फूल या फूलमाला स्वीकार नहीं करेंगे। उनको हटाने का प्रयत्न करने पर श्री स्वामी जी ने उसे रोककर उन्हें वहीं रखने की अनुमती दी थी। इस प्रकार श्री स्वामी जी साईनाथ के बीच की अभेद स्थिति का परिचय दिए थे।

पोदलकूरु के पि. पेंचलय्या इस प्रकार बता रहे थे।

श्री स्वामी जी उन दिनों में पैदल जाते थे। उस समय कुछ दिनों तक मैंने उनकी सेवा की थी। उस समय से मैं सदा श्री स्वामी जी के चित्र की पूजा करता रहा था। एक दिन 4 साल की मेरी बेटी पद्मा को साइकिल पर ले जा रहा था। अकस्मात दुर्घटना होकर उसका पैर टूट गया था। मैंने उस पैर पर पट्टी बाँध दिया था। मैंने श्री स्वामी जी से विनती की कि पैर को ठीक करने की जिम्मेदारी आपको ही लेना है। उस रात श्री स्वामी जी के स्थान पर सिर डी साई सपने में आकर आस्वासन दिए थे कि तुम चिंता मत करो। पैर ठीक हो जाएगा। उन्होंने उस पैर पर कुछ पत्ते का रस का लेपन करके उस पर पट्टी बाँध दिए थे। साईनाथ की महिमा से एक ही पट्टी से बेटी का पैर ठीक हो गया था और वह फिर अच्छी तरह चलने लगी थी। स्वप्न दर्शन के बाद सुबह नेल्लूर साई मंदिर जाकर बाबा की पूजा करके वहाँ से एक चित्र लाकर श्री स्वामी जी के बगल में रखकर दोनों की पूजा करने लगा। उन दोनों में कोई भेद नहीं है। केवल श्री स्वामी जी के बारे में ही मुझे मालूम है। लेकिन साई का सपने में आकर मेरी सहायता करने का रहस्य यही है कि वे दोनों एक ही है।

अगस्त 1986 में श्री स्वामी जी से भक्ति, श्रद्धा रखने वाली मुझसे प्यार दिखाने वाली मेरी पत्नी की बहन दुर्घटना ग्रस्त होकर मद्रास अस्पताल में भर्ती हो गई थी। तब मैंने श्री स्वामी जी से विनती की कि हे स्वामी, मेरी प्यारी को क्यों इतने कष्ट दे रहे हो? वह तेरी सेविका भी है। मैं अस्पताल जाते वक्त उसे देखा भी नहीं। आप कृपा करके उसे ठीक करके स्वस्थता दे दीजिए। मैं उसे अपनी आँखों से स्वस्थ देखना चाहता हूँ। उसी वक्त मेरी आँखों के सामने एक दृश्य दिखाई दिया था। साई ने मेरे पास आकर मुझे अपनी पत्नी की बहिन को दिखाने केलिए मद्रास ले जाकर उसके पलंग के पास खडे कर दिए थे। देखो, इसे कुछ ही दिनों में ठीक हो जाएगा। इंजक्सन दे रहा हूँ.. कहकर उसे इंजक्सन डाल दिए थे। मेरी नींद खुल गयी थी। मैंने मेरे अनुभव को बताया तो वह भी बता रही थी कि उसी समय उसे भी साई का दर्शन हुआ था और उन्होंने बताया कि इंजक्सन लेने से ठीक हो जाएगा। साई के आशीर्वाद से कुछ ही दिनों में वह स्वस्थ हो गयी थी। श्री स्वामी जी और साई नाथ दोनों अलग नहीं थे दोनों एक ही थे। नाम रूप से अतीत पूर्ण गुरुतत्व मात्र ही है।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 25

महासमाधि

श्री स्वामी जी अपनी समाधि के ढाई साल के पहले से ही अपना पर्यटन को बंद करके गोलगामूडि के पास बनी हुई झोंपडी में रहने लगे थे। रात और दिन अपनी भाषा में चिल्लाते हुए सेवक गुरवय्या से उन बातों को दोहरवाते थे। गुरवय्या बार-बार दोहराकर थक जाता था और चुप बैठता था। श्री स्वामी जी उसे जोर से बोलने को कहते थे। श्री स्वामी जी की बातों को दोहराते हुए रात और दिन गुरवय्या साथ ही रहता था। यदि वह खाने केलिए जाते तो और एक सेवक आकर दोहराता था।

महासमाधि के कुछ दिनों के पहले श्री स्वामी जी अपने चादर, कपडे सभी गुरवय्या को देकर उनको संभाल कर रखने के लिए कहते थे। **सत्य, धर्म, संपन्नतत्व, साधारणत्व, सद्गुरु सेवा आदि शब्दों को बार - बार दोहराते थे।**

महासमाधी के एक साल के पहले बार – बार चप्पल, चप्पल कहकर पुकारते थे। कोई स्लेट देने पर कहते थे कि यह नहीं मुझे चप्पल चाहिए। श्री स्वामी जी के लिए चंदन की लकडी से पादुकाएँ (चप्पल) बनाना चाहते थे। लेकिन उनको वे नहीं कर पाए थे। एक दिन रोशरेड्डी के बेटा ने पादुकाएँ बनाकर श्री स्वामी जी को देने के लिए ले आ रहा था। उसी समय श्री स्वामी जी आश्रम में बैठकर चप्पल, चप्पल चिल्ला रहे थे। उन पादुकाओँ को स्वामी जी को देने पर उनको अपनी छाती पर रखकर बहुत समय तक उनको वापस नहीं दिए थे। वे ही पादुकाएँ आज भी उस झोंपडी में प्रतिष्ठित किए गए थे।

उन दिनों में राम ने अपनी प्रतिनिधि के रूप में पादुकाओं को भरत को दिए थे। दत्तक्षेत्र गंधर्वपुर में भी, सरसोबाडी में भी नृसिंह सरस्वती जैसे महान् अपने प्रति रूप में अपने - अपने पादुकाओं को प्रतिष्ठित किए थे। अक्कल कोटा स्वामी जी भी अपने शिष्यों को अपनी पादुकाओँ को ही दिए थे।

महान साप्रदायों से जुडे श्री स्वामी वेंकय्या जी भी अपने दिव्य शक्ति को इन पादुकाओं में निक्षिप्त करके उनके प्रति रूप में हमें प्रदान किए थे। हमें उन पादुकाओं को श्रद्धा और भक्ति से पूजा करके श्री स्वामी जी के अनुग्रह को पाना चाहिए।

1982 में गुरवय्या को एक दृश्य स्पष्ट रूप से दिखाई दिया था कि श्री रामनवमी के दिन सीता राम लक्ष्मण आकर श्री स्वामी जी से कह रहे थे कि तेरा समय हो गया था। शरीर को त्याग कर आ जाओ।

श्री रामनवमी के दिन श्री स्वामी जी को बहुत अस्वस्थता हुई थी। भक्तों ने समझा कि उसी दिन वे अपना शरीर त्याग कर देंगे। शारीरक रूप में बहुत पीडा का अनुभव उन्होंने किया था। अगले दिन वे स्वस्थ हो गए थे।

महासमाधि के दो महीने के पहले श्री स्वामी जी दमा का शिकार हो गए थे। बहुत निर्बल हो गए थे। एक दिन उन्होंने एक चिट्ठी लिखवाए थे कि मैं जा रहा हूँ। बिना होश के कुछ घंटा पडे रहे थे। बहुत लोग समझे थे कि श्री स्वामी जी अपने शरीर को त्यागने वाले है। सभी लोग चिंता में डूबे हुए थे। कुछ समय के बाद में उठ कर बैठ गए और कहने लगे कि ऊपर वाला नहीं मान रहा था। बता रहा था कि और कुछ समय के बाद में आओ।

श्री स्वामी जी के महासमाधी के पहले एक सप्ताह से उनके मुख में तेजस और कांति चलता रहा था। श्री स्वामी जी के मुख में दिखने वाला आठ सिर वाला नागेंद्र महासमाधि के पहले के दिन गुरवय्या को नहीं दिखाई दिया था। वह श्री स्वामी जी के मुख से हट गया था। वह दिन 23-8-1982 का दिन था।

महासमाधि के चार दिन के पहले अगस्त 20, 1982 को एक दिव्य रथ आया था। स्वामी जी को उसमें बिठाया गया था। गुरवय्या भी बैठने की कोशिश करने पर उसे बैठने नहीं दिया था। तुम अभी नहीं, बाद में बैठ सकते हो कहकर उसे नीचे उतार दिए थे। श्री स्वामी जी को ही अकेले ले जाते हुए गुरवय्या ने सपने में देखा था।

महासमाधि के तीन दिन के पहले वहाँ बना हुआ समाधि मंदिर में रखा गया श्री स्वामी जी के चित्र का ढाँचा और उसके पीछे रहने वाले साई के चित्र का ढाँचा दोनों में कुछ चलन आकर कुछ दूर आगे आकर खडे होना गुरवय्या ने महसूस किया था। उस समय श्री स्वामी जी बहुत कमजोर हो गए थे। श्री स्वामी जी भी बाबा की तरह गायब होने वाले थे। गुरवय्या ने सोचा था कि उनके चित्र के ढाँचे को ही हमें भविष्य में पूजा पाट करना पड़ता है। वह सोच सच निकला था। तीन दिन के बाद में श्री स्वामी जी महासमाधि प्राप्त कर लिए थे।

महासमाधि के पहले बार - बार श्री स्वामी जी चिल्लाते थे कि सूर्यास्त होने वाला है। इसका भाव है कि एक तरफ अवतारलीला समाप्त होने वाली है तो दूसरी तरफ भक्त जनों का आयुष भी क्षीण होता जा रहा है। इसलिए सबको समय का सद्पयोग करना चाहिए। इस प्रकार श्री स्वामी जी की महासमाधि के पहले दिन रेशरेड्डी को दिन डूबता हुआ दृश्य दिखाई दिया था।

श्री स्वामी जी के महासमाधि के पहले रोज झोंपडी में लगे हुए सभी चित्र के ढाँचों को पूजा करना, श्री स्वामी जी को और अन्य सभी ढाँचों को आरती देना बुज्जय्या का काम था। अगस्त 24, 1982 मद्याह्न का समय था। श्री स्वामी जी एक

तरफ हटकर सोए हुए थे। बुज्जन्ना स्वामी जी को आरती देते समय उन्होंने अपने दाएँ हाथ से अभयहस्त दिखाकर सो गए थे। यही श्री स्वामी जी केलिए आखरी आरती है। उसके बाद में कुछ ही क्षणों के बाद उन्होंने महासमाधि की स्थिति प्राप्त कर ली थी। बहुत दिनों के पहले से गुरवय्या के द्वारा माधवदास चरित का अध्ययन किया जा रहा था। वह अध्ययन उसी दिन पूरा हो गया था। उस दिन के अध्याय में माधवदास को विमान आकर ऊर्ध्व लोकों को लेकर चला गया था। उसी तरह श्री स्वामी जी भी उसी दिन समाधि स्थिति पा चुके थे।

श्री स्वामी जी 24 अगस्त, 1982 में सामाधि स्थिति को प्राप्त किए थे। भक्तजन और सेवक दुःख सागर में डूब गए थे।। उन दिनों के प्रमुख दैनिक आंध्रज्योति, आंध्रपत्रिका आदि पत्रिकाओं में घोषणा किया गया था कि स्वामी जी के पार्थिव देह को पाँचवा दिन 28 अगस्त, 1982 को समाधि किया जाता है। भक्त जन आकर उनके दर्शन कर सकते है।

हर दिन हजारों लोग श्री स्वामी जी के पार्थिव शरीर के दर्शन करने आए थे। हरेराम, हरेराम, राम राम हरेराम, हरेकृष्ण हरेकृष्ण हरे हरे ... नाम जप से सेवकों के भजनों से वह पूरा प्रदेश गूँज उठा। रोते हुए सेवक भजन और कीर्तन में लग गए थे। श्री स्वामी जी योग निष्ठ में है, फिर एक बार जाग जाएँगे।... यही आशा से बहुत सेवक और भक्त इंतजार कर रहे थे। तीन दिन बीत गए थे। श्री स्वामी जी का शरीर उभार गया था। तीसरे दिन श्री स्वामी जी की अपार सेवा किया हुआ गुरवय्या को दिव्य आवेश आ गया था। वह स्वामी जी के पार्थीव शरीर को अपने हाथों में लेकर नया समाधि मंदिर की ओर भागते हुए कहा कि श्री स्वामी जी आज ही उनके शरीर को महासमाधी करवाने की आज्ञा दे रहे थे।

अपने कमीज और बनिएन निकालकर कृष्णारेड्डी ने महासमाधि में उतर कर श्री स्वामी जी के पार्थिव शरीर को अपने हाथों में लि लिए थे। समाधि के बाहर आते समय श्री स्वामी जी के शरीर के रक्त के धागे उसके शरीर की छाती पर दिखाई दिए थे। इसे देखकर सभी आश्चर्य में पड गए थे। उसकी छाती पर कोई घाँव नहीं था। सबको समझ में आया था कि श्री स्वामी जी के पार्थिव शरीर को गुरवय्या आवेश से हाथों में लेकर आश्रम से समाधि की ओर भागते समय श्री स्वामी जी के भुज पर कंटक लगने से वह रक्त बह रहा था।

तीन दिन के पहले समाधि स्थिति पाने वाले श्री स्वामी जी के शरीर से नया रक्त बहना सबको आश्चर्य में डाल दिया था। यह कृष्णा रेड्डी को जो संदेह हुआ उसका समाधान श्री स्वामी जी ने दिया था।

श्री स्वामी जी के स्वहस्तों से शुरु किया गया और आशीर्वाद से निर्मित समाधि मंदिर 4 फुट लंबा और 4 फुट चौडा था। छेः फुट गड्ढा खोदा गया था। गड्ढे के चारों

ओर सिमेंट से एक डिब्बा जैसा बनाकर उसमें श्री स्वामी जी के पार्थिव शरीर को पूरब दिशा की ओर सिर रखकर उस पर रेशम कपडा ओढ़ा गया था। शरीर के चारों ओर चंदन, कपूर, नमक, फूल की मालाओं से श्री स्वामी जी के कंठ तक भर दिया गया था। उसके ऊपर कुछ मिट्टी डाल कर उस पर अत्तर, पनीर और अन्य सुगंध द्रव्य डाले थे। इस स्थिति में श्री स्वामी जी का मुँह दिव्य कांति से चमक रहा था। बाद में सभी भक्त और सेवकों के समक्ष उस समाधि को पत्थरों से बंद कर दिए थे। उस समाधि पर श्री स्वामी जी के द्वारा इस्तेमाल किया गया चादर और मिट्टी का बरतन रखकर ईंटों से एक मकबरे का निर्माण करके उसके ऊपर संगमरमर के पत्थर लगवा कर उसे आकर्षक बनाए थे।

अन्नदान, भजन कार्यक्रम चालीसवाँ दिन मंडलाराधन तक निरंतर चलता रहा था। मंडलाराधन के लिए लगभग दस हजार लोग आकर श्री स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की थी। उन दिनों में अनेक गाँवों से हरिदास, भगवगीता प्रवचन करने वाले, भजन बृंद, पंडरी भजन कलाकार अपने आप आकर अपने कार्यक्रम श्री स्वामी जी के समक्ष करके अपनी भक्ति का प्रदर्शन किए थे। आए हुए सभी लोगों को श्री स्वामी जी की कृपा से षड्सोपेत अन्न संतर्पण निरंतर चलता ही रहा था। उसके बाद हर दिन प्रातः काल चार बजे से लेकर मध्याह्न 11 घंटे तक, शाम को 6.30 से पूजा और नेवैद्य, रात 9 बजे को भजन, पवलिंप सेवा बाद में आरती सभी निरंतर चलता ही रहा था। श्री स्वामी जी के द्वारा जलाया गया अग्नि कुंड निरंतर चलता ही रहा था। रोज दो बार अन्नदान भी आजतक चल रहा था।

महा अद्भुत श्री वेंकय्या स्वामी जी का भौतिक जीवन उस प्रकार समाप्त हो जाने पर भी उसके बाद में के अध्यायों में हम उस दिव्य पुरुष के लीलामय जीवन के बारे में, घटने वाली यथार्थ गाथाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे। श्री स्वामी जी ने बताया कि जब तक सूर्य चंद्र रहेंगे तब तक उनकी लीला चलती ही रहेगी। ऐसा संभवित होने के लिए उनका निजतत्व कितनी शक्तिशाली होना चाहिए। उसके बारे में जितना सोचने पर भी वह हमारे लिए भ्रम ही रह जाएगा। हमारी जानकारी के अनुसार हम अपना अंदाजा लगा सकते हैं। जो सोचते है वह सच होने की जरूरत नहीं है। इसलिए हम उनकी बातों के द्वारा उनके तत्व समझने की कोशिश करेंगे।

एक बार बालयोगी के बारे में चर्चा होने पर श्री स्वामी जी ने कहा कि बालयोगी अपना काम आप करते जा रहे हैं। वे लोगों के बारे में परवाह नहीं करते हैं। लेकिन हमें सबके खाते को ठीक करना होगा। इसी लक्ष्य साधन के लिए श्री स्वामी जी महासमाधि के पहले दो सालों से हर गाँव घूम – घूम कर भक्तों के लौकिक, पारलौकिक आवश्यकताओं को पूरे करने का प्रयत्न करते रहते थे। श्री स्वामी जी इस प्रयत्न में कितना शारीरक श्रम को भोगते थे देखने वालों को ही मालूम होता था।

जीवकारुण्य भाव से लोगों की बाधाओं को मिटाते हुए आगे बढ़ते थे। इसलिए ही आज भी आश्रम को जितने भी भक्त आने पर भी सबको अन्नसंतर्पण किया जाता है। इसका कारण भक्तों का प्रेम श्री स्वामी के प्रति हमेशा रहता है। लोगों के लिए अपनी तपोमहिमा से अनेक तरह - तरह की सेवाएँ श्री स्वामी जी ने किया था। अतिवृष्टि हो या अनावृष्टि श्री स्वामी जी ने अपनी महिमा से उनसे अनेक बार लोगों को बचाए थे।

श्री स्वामी जी अपने बारे में एक बार इस प्रकार बताए थे **कि रावण को मारने वाला दशरथ पुत्र राम नहीं थे। वह तीन मार से गिर गया था। पह्लाद का पात्र भी मैंने ही खेला था। सबको खा लेने वाला भी मैं ही हूँ।** 115 उन सबके रूप में लोक कल्याण की भावना से काम करने वाला परमात्मा तत्व मैं ही हूँ। यहीं स्वामी की भावना है। इसी भावना से श्री रामकृष्ण परम हंस जी ने विवेकानंद को बताया कि वह कौन है? राम कौन थे? कृष्ण वहीं रामकृष्ण। सकल साधु सद्पुरुष, देवी, देवता हम ही है। ऐसी भावना साई के भक्तों को समझने के पीछे यहीं भावना छिपी हुई है। दशरथ का बेटा राम, उसमें दिव्य अवतार तत्व नहीं होने से वह साधारण व्यक्ति रह जाता है। तब रावण संहार नहीं संभव हो पाता था। इसका अर्थ है कि राम का परमात्म तत्व ही रावण को मार दिया था। वह तत्व ही मैं हूँ। यहीं श्री स्वामी जी सबको बताए थे।

और एक बार स्वामी जी ने बताया कि सभी प्राणियों में वेंकय्या है। यह वाक्य चिट्ठी पर लिखवाए थे।

पालेटि चेंचम्मा बहुत दुःखी थी क्योंकि श्री स्वामी जी महासमाधि प्राप्त करने के समय वही श्री स्वामी जी के दर्शन नहीं कर पायी थी। उस रात श्री स्वामी जी सपने में आकर बताए थे कि मैं कहीं नहीं गया था। मैं तो यहीं हूँ। मुझे पाने केलिए बहुत समय लगेगा।

श्री स्वामी जी महासमाधि पाने के रात श्री नागय्या नागुलवेल्लटूरु में अपनी झोंपडी में स्वामी जी के चित्र के ढाँचे को पूजा कर रहा था। उस समय उसे अनुभव हुआ था कि श्री स्वामी जी बहुत बडे चमक के रूप में आकर उसकी झोपडी के चारों ओर घूमकर चले गए थे। उसके बाद में किसीने आकर श्री स्वामी जी की महासमाधि की बात बताया था।

एक बार स्वामी जी ने बताया कि हजारों भेडों में अपने भेडे के पैर पकडकर हम ले आ सकते हैं।

इसका अर्थ यह है कि साई की तरह श्री स्वामी जी भी अपने भक्त जहाँ भी रहने पर भी अपने निकट लाकर उनकी सहायता कर सकते हैं। 116

श्री स्वामी जी वेलूरु रामानायुडु से कहा कि क्या समझते हो तुम? क्या मैं सबके समान पिच्चम्मा और पेंचलनायुडु के पेट से पैदा हुआ हूँ? यह ज्ञान उनको है कि जन्म लेते समय ही उनकी आत्मा जन्म मरण रहित है। 117

चलमनायुडू ने श्री स्वामी जी से कहा था स्वामी राम, कृष्ण आदि को भी गुरू थे। लेकिन आप के लिए कोई गुरु नहीं थे। ऐसा क्यों हुआ था?

श्री स्वामी जी ने बातया कि चलमनायुडू तुम पागल हो। इसका रहस्य तुझे मालूम नहीं होगा। तुम जो कुछ चाहते हो माँगो। वे अपने आप आ जाते हैं। मेरे सिर पर अब गुरू की क्या जरुरत है?

उस रात चलमनायुडु की पत्नी को श्री स्वामी जी एक दिव्य दर्शन दिए थे। सोने का शरीर, सोने का आभारण से भरी एक स्त्री, एक साधारण स्त्री को दिखाती हुई बता रही थी कि यही है श्री स्वामी वेंकय्या जी। यह दृश्य सपने में देखकर चलमनायुडु की पत्नी ने नींद में ही दो बार बोली थी कि ये आयी है उसे नमस्कार कीजिए। चलमनायुडु उससे पूछने पर सपने का विषय बताई थी। नायुडु ने पश्चात्ताप से सबको स्वामी जी का भजन करने केलिए प्रोत्साहित किया था। **ऊपर से स्वामी जी मेरे सिर पर गुरु की जरूरत क्या है? उसका अर्थ यह नहीं है कि गुरु मेरे लिए नहीं है। प्रस्तुत समय में वे अद्वैत स्थिति में है। इस स्थिति में गुरु की जरुरत नहीं है।** 118 इस प्रकार कहने का कारण है कि एक समय पेंचलकोना में एक शिष्य ने श्री स्वामी जी से पूछा कि क्या कोई ऋषि ने आपके जीभ पर कुछ लिखा था? उस प्रश्न के लिए श्री स्वामी जी ने यह समाधान बताए थे कि मैसूर महाराज रास्ते पर जाते समय हम देखे तो हमें क्या मिलता है? जो कुछ हम करते है वहीं हमें मिलता है। इसका अर्थ यह है कि **आध्यात्मिक रूप से एक महान् व्यक्ति हमें मिला है। वे मौन रूप से इस सत्य को मान रहे थे। पूर्वजन्म का पुण्य या उत्तम पुर्वजन्म संस्कार रहने पर ही हम ऐसे महाराज के परिवार में जन्म लेते हैं। इस जन्म में सद्गुरु का अनुग्रह पाते हैं। नहीं तो यह असंभव ही होगा।** 119

पूरा भगवद्गीता 64 के ऊपर देखने वालों के लिए निरुपयोग है। उसके नीचे देखने वाले को ही सदुपयोग होगा।

एक समय पेंचलकोना के जंगलों में 3 दिन और रात बिताता था। संसार के बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं होता था। खाना और पीने के बारे भी मालूम नहीं होता था। लोक के बारे में जब मुझे मालूम होता था तब गोनुपल्ले को आकर किसी से कुछ माँगकर खाता था।

एक बार स्वामी जी ने सेवकों को बताया कि 19,20 साल की उम्र में एक साँप मेरे पाव पर डस कर मेरे सामने अपने फण पैलाकर खडा हुआ था। मैंने उसे कंटक की लकडी से मारने का प्रयत्न किया था। लेकिन इसके पहले ही वह मुझे डस

लिया था। अब मारने पर भी क्या फायदा होता है?... सोचकर मैं अपना घर चला गया था। लेकिन मेरे शरीर में विष नहीं भरा। मैं खाना खाकर सो गया था।

देखिए ये सभी ऋषि हैं। देखिए कितने लोग कैसे घूम रहे हैं? लेकिन हमें वे नहीं दिखाए देते हैं।

आने वाले भक्तों को श्री स्वामी जी चिट्ठियों पर कुछ लिखवाकर आशीर्वाद देकर देते थे। उदाहरण के लिए उनसे लिखे गए चिट्ठी इस प्रकार होते थे।

एक सेवक ने पूछा कि करोडों फण, मण, राशियाँ लिखवाकर दे रहे हैं। इसका अर्थ या आपकी भाषा हमें मालूम नहीं हो रहा है। तब स्वामी जी ने बताया कि सोलह भाषाओं के ऊपर की भाषा देवनागर भाषा है। यह भाषा कलियुग देवी और देवताओं को भी मालूम नहीं हो रहा है। आपको कैसा मालूम होगा? यह ऊपर लोक की भाषा है। कुछ लोगों के लिए दसवीं दृष्टि का व्यक्ति, दसवीं दृष्टि से लिखी गई चिट्ठी लिखकर देते थे। इसका अर्थ पूछने पर वे बताते थे कि वह देव दृष्टि है। समुद्रों पर उस दृष्टि के लिए कोई रोक नहीं होती है। और एक बार श्री स्वामी जी ने बताया कि कलियुग देवों की दृष्टि छे लाखों की है। इसका अर्थ उन्होंने बताया कि हम भी छे लाख दृष्टि तक काम कर सकते हैं। उन्होंने यह भी बताए थे कि श्री बालयोगी 4 लाख दृष्टि तक देख सकते हैं।

एक बार तलुपूरु चर्लोपल्लि में श्री स्वामी जी बसे हुए थे। उस समय नेल्लूरु से आए हुए रेड्डी जी को ऐसी ही चिट्ठी अपनी भाषा में लिखकर दिए थे। तब उसने स्वामी जी से कहा कि आप हमारी भाषा में उसका अर्थ बताइए। स्वामी जी ने बताया कि वह देव भाषा है। उसका अर्थ नहीं बता सकते है। फिर भी रेड्डी बहुत बार पूछा और कहा कि यदि आप चाहे तो मैं आपके लिए दक्षिण देने के लिए भी तैयार हूँ। तब स्वामी जी ने कहा कि चार लाख रूपए जमा करो तब तुझे समझाता हूँ। रेड्डी बिना कुछ कहें वहाँ से चला गया था। उसी प्रकार अनेक भक्तों ने स्वामी जी से अनेक बार पूछे थे। उन्होंने अनेक बार बताए थे कि यह देव भाषा है। इसका अर्थ बताना उतना आसान नहीं है। यह तो स्वामी जी का निचतत्व है।

उस काल के जमींदार वेंकटरामराजु यज्ञ करवाना चाहते थे। माधवदास जैसे मृदुल स्वभाव के, कम बोलने वाले, समर्थ लोगों के तलाश में थे। श्री स्वामी जी केबारे में सुनकर उनको ले आने केलिए कुछ लोगों को उनके पास भेजा था। वेंकटरामराजु के जन्मवृत्तांत और जन्मदिन आदि के बारे में विवरण देते हुए श्री स्वामी जी उनके साथ चिट्ठी लिखवाकर भेजे थे। उस विवरणों को देखकर श्री स्वामी जी की शक्ति देखकर उनका आह्वान करने के लिए पति पत्नी दोनों श्री स्वामी जी के पास आए थे। उस समय श्री स्वामी जी कीचड में रहकर अपने शरीर को कीचड लगाकर पागल जैसा बैठे हुए थे। राजु के दंपत्ति उसी कीचड में जाकर श्री स्वामी जी को

नमस्कार करके अपने यज्ञ में उपस्थित होने की प्रार्थना की थी। बाद उस यज्ञ में जाकर श्री स्वामी जी ने घंटा बजाए थे और यज्ञ को साकार किए थे।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 26

साधना

गुरुकृपा पानेवाली माताजी तुलसम्मा जैसी महिलाओं की जीवनियों का विश्लेषण करने से साधना का अर्थ हमें मालूम होता है। **शास्त्रों के अनुसार पहले पहल साधना से मिलनेवाला निष्कल्मष कर्म फलित होने पर ही मुवक्षुओं के द्वारा करने वाले जप, ध्यान, भजन, पूजा आदि सफल होते हैं।** यह विषय माताजी तुलसम्मा के प्रति सार्थक सिद्ध हुआ था। उस महान् स्त्री ने श्री स्वामी जी की सेवा में अंकित होने के बाद ऊपर बताए गए कोई जप आदि कभी भी नहीं किया था। श्री स्वामी जी चिट्ठी पर लिखकर, आशीर्वाद देते हुए उसे दिए थे कि माँ! भविष्य में तुझे मिलने वाली चीज और कोई नहीं है। तुलसम्मा जी को अपने बारे में सब कुछ मालूम था। इसलिए ही निर्याण के बाद माताजी तुलसम्मा तीन महीने के बाद अपनी बहु के सपने में आकर बताई थी कि मैं फिर जन्म नहीं लेती हूँ। श्री स्वामी जी फिर जन्म लेते है। उसका बेटा उसे पूछा कि क्या स्वामी फिर जन्म लेंगे? तब माताजी तुलसम्मा ने जवाब दिया कि अस्सी साल के बाद में स्वामी जी आकर कमियों को ठीक कर चले जाएँगे। माताजी को मालूम होने पर भी निगूढ़ता से ऐसा बतायी थी।

माताजी तुलसम्मा जी इस प्रकार जन्मराहित्य स्थिति पाने के लिए किन – किन साधनाओं को अपनाई थी?।

एक ही साधना थी। उसने सद्गुरु श्री स्वामी जी की सेवा त्रिकरण शुद्धि, अचंल विश्वास और दीक्षा के साथ की थी।

शरीरं इंद्रियं प्राणम् अर्थ स्वजन बांधवान्
आत्मदारिधिकं सर्वं सद्गुरु निवेदयेत्

इस गुरुगीता वाक्य का पालन उसने पूर्ण रूप से किया था।

श्री स्वामी जी को, उनके सेवकों को और दर्शन के लिए आए हुए भक्त लोगों को निरंतर खाना पकाकर प्रेम से खिलाना ही उसकी सेवा थी। अपने बेटे की मरणावस्था में उसने श्री स्वामी जी के पास जाकर बेटे को देखने केलिए अनुमती माँगी थी। क्या मैं जा सकती हूँ या नहीं? उतनी त्यागशील थी माताजी। श्री स्वामी जी ने कहा तुझे जाने की जरूरत नहीं है। तेरा बेटा स्वस्थ रहेगा। श्री स्वामी जी की बात सुनकर वह सन्नधि में ही रह गई थी। अपने ममता को छोड़ने के लिए उसने कोई भी ग्रंथ को नहीं पढ़ा था और किसी पुस्तक का मनन भी नहीं की थी। उसने अनन्य प्रीति के साथ श्री स्वामी जी की सेवा के लिए अपनी सभी इच्छाएँ छोड़ दी थी। श्री स्वामी

जी से एक क्षण का विरह भी नहीं सह पाती थी। एक क्षण स्वामी जी से दूर रहना अपने लिए प्राणहानी जैसे समझती थी। इसलिए ही श्री स्वामी जी की कृपा से ममता के बंद नों से मुक्ति पा सकी थी।

जन्म जन्मों से आर्जित त्याग संस्कार ही उसे श्री स्वामी जी के पास ले गए थे। लाखों संपत्ति रहने पर भी, हजारों साडियाँ पेटी में रहने पर भी पति को बताए बिना उनको निर्धनों को देकर केवल दो ही साडियों से वह अपना जीवन बिताती थी। ऐसी दानशीला थी वह माताजी।

श्री स्वामी जी की सेवा में रहकर एक दिन मानहीन से रहने वाले एक अनाथ को अपनी साडी में से आधा साडी उसे देकर आधा साडी से ही शरीर को छिपाकर रह गई थी यह वैराग्य मूर्ति।

घर से खेतों से एक बोरे भर मिर्चि मंगवाकर उसे खाली करके दूसरे दिन और एक बोरे भर मिर्चि मँगवाती थी। लाया गया मिर्च धोबियों को, नाइयों को, मजदूरों को, भिखारियों को, गरीबों को और बाकी आश्रम में चटनी बनाने के लिए खर्च करवाती थी। तीसरे दिन फिर मिर्च मँगवाती थी। सेवक उससे पूछते थे कि ऐसे करने से मिर्च कहाँ से लाएँगे? माताजी कहती थी कि हमारे साथ रहने वालों को मुट्ठी भर कुछ मिर्च देने से क्या हो जाएगा?

गरिमियों में तरकारियाँ की बहुत कमी होती थी। उस समय कोई चार लौकी ले आया था। चारों लौकियों से सब्जी बना दिया था। एक सेवक ने पूछा कि कल के लिए एक लौकि रख सकती हो न। माताजी ने बताया कि खाने दो। सभी लोग पेट भर खाते हैं। यह एक लौकी को रखने से लाने वाले उसे देखकर कल केलिए नहीं लाता है। यह कोई तरकारी नहीं होने पर कोई एक तरकारी लाकर देगा। नहीं होने पर श्री स्वामी जी ही किसी से कुछ न कुछ तरकारी मँगवाएँगे। माताजी की बातें सच निकलती थी। **सह जीवियों को तृप्त रखना ही उसका उद्धेश्य था। स्वामी जी ने भी** 121
कहा कि हर एक प्राणी में मैं हूँ।

माताजी तुलसम्मा जी का और एक मुख्य दैवी संपदा निष्कपट स्वभाव। श्री स्वामी जी के पास नए - नए आने वाले भक्त उनके निकट बैठने की, उनको स्पर्श करके आशीर्वाद लेने की इच्छा होती थी। लेकिन श्री स्वामी ऐसी इच्छाओं को इनकार करते थे। श्री स्वामी जी के स्वभाव को जानकर वह भक्तों को उनके पास नहीं जाने देती थी। उन पर चिल्लाती थी, कुछ समय डाँटती भी थी। क्या आप मनुष्य है? कितने बार बताना पडेगा? श्री स्वामी जी आप जैसे साधारण मनुष्य नहीं है। आइए। दूर जाइए। लोगों से लडती भी थी। दस मिनिट के बाद रसोई में उन भक्तों को देखकर उनसे स्वामी जी के दर्शन के समय जो बोली थी उसका विवरण देती थी। और उनको चाहने वाला भोजन प्रेम से परोसकर खिलाती थी। श्री स्वामी जी जिन गाँव में घूमते

थे वे छोटे – छोटे गाँव होने से आने वाले भक्तों के लिए चाय या काफी बनाने केलिए आवश्यक दूध, चीनी, काफी या चाय का पौडर अपने पास रखती थी।

आलसी लोगों को देखकर वह बहुत नाराज हो उठती थी। श्री स्वामी जी के कुछ सेवक काम करने में आलसत्व दिखाते थे। काम किए बिना छोड़ देते थे। माताजी उनसे कहती थी कि इस प्रकार निकम्मा बैठकर खाना अच्छा नहीं है। बिना काम किए खाने से श्री स्वामी जी को बाकी पड जाएँगे। वहीं आलसी सेवक भोजन के लिए आने पर बहुत प्रेम से उसे खिलाती थी। सेवक कहते थे कि काम नहीं करने पर डाँटने में या प्रेम से खिलाने में माताजी के सामने कोई खडी नहीं पाती। इसलिए ही माताजी को देखकर सभी दोनों हाथों से हृदयपूर्वक नमस्कार करते थे।

इन सभी सद्गुणों से निरंतर श्री स्वामी जी की सेवा ही अपना ध्येय समझकर रहने के कारण, किसी भी साधन करने के बिना ही माताजी के विषय में श्री स्वामी जी ने कहा कि माँ और फिर नहीं आएगी। पुनरजन्म नहीं लेगी। माताजी तुलसम्मा के जीवन की कहानी से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

अनेक वर्षों से श्री स्वामी जी की आराधना करने वाले नेल्लूर पत्तेखान पेटा के भागवतुल रघुरामय्या जी इस प्रकार बता रहे थे।

1985 में मैं आर्थिक समस्यओं को झेल रहा था। उसके साथ – साथ मेरी पत्नी अस्वस्थता के कारण दो महीनों से पलंग पर ही पडी हुई थी। 19-12-1985 को मेरी पत्नी ने श्री स्वामी जी के चित्र के ढाँचे के सामने बैठकर रोती हुई सहायता के लिए विनती की। श्री स्वामी जी सपने में दर्शन देकर बताए थे कि पूर्व जन्म का फल तुझे भोगना ही पडेगा। 26-12-1985 में और एक बार मेरी पत्नी के सपने में दर्शन देकर बताए थे कि तुम्हारा समय हो गया है। ऊपर वाला न्यायालय में फैसला सुनाया था। तब मेरी पत्नी ने पूछा कि मेरे लिए छोटे बच्चे है। यदि मैं मर जाती तो उनको कौन संभालेगा? स्वामी जी ने आश्वासन दिया था कि हम संभालेंगे। 28-12-1985 को मैं शनिवार को गोलगामूडी जाकर श्री स्वामी जी के दर्शन करके मद्हान् तीन बजे घर पहुँचा। उस दिन 12 बजे मेरी पत्नी को हृदय में दर्द और श्वास लेने में दिक्खत होने से अस्पताल ले जाने के प्रयत्न में थे। तुरंत डॉक्टर के घर ले गए थे। डॉक्टर उसे जाँच करके संशय से पूछे थे कि आप उसे घर ले जाना चाहते हैं या अस्पताल। मैंने बताया कि घर क्यों ले जाते है? अस्पताल ही ले जाते है। तब डॉक्टर ने कहा मैं उनको फोन करके बताता हूँ आप अस्पताल ले जाइए और भर्ती करवाइए। बाद में मैं आउँगा। नेल्लूरु कन्नेकल अस्पताल ले जाकर स्ट्रेक्चर पर सुलाने के पहले ही उसकी श्वास रूक गयी थी। डॉक्टर ने जाँच करने के बाद बताए थे कि कोई फायदा नहीं है उसे घर वापस ले जा सकते हैं। मैंने विनती की कि हम इतना दूर ले आए थे आप ऑक्सिजन रखकर एक बार प्रयत्न कीजिए। तब ऑक्सिन रखकर रक्त परीक्षा की थी। पूरा रक्त

काला बना हुआ था। इतने में आधा घंटे के बाद में वह फिर से श्वास लेना शुरू कर दी। इससे डॉक्टर को आश्चर्य हो गया था। तीन घंटे तक यदि इस प्रकार श्वास लेने से इंजक्सन के द्वारा रक्त का रंग बदल सकते है। पूरा दैव अनुग्रह ही था। डॉक्टर अपना प्रयत्न कर रहे थे। कुछ ही घंटों में उसकी स्थिति में बदलाव आया था। इतने में मेरे घर के डॉक्टर भी आकर इलाज करना शुरु कर दिए थे। मेरी पत्नी की स्थिति साधारण हो गई थी। डॉक्टरों ने कहा कि यह केवल दैव कृपा से ही संभव हो सका था। इसमें हमारा प्रयत्न कोई नहीं है। कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रभु की प्रार्थना कीजिए। 15 जनवरी 1986 तक अस्पताल में इलाज करवाए थे। तब से अभी तक आनंद से जीवन बिता रहे थे।

1985 में मेरी पत्नी के सपने में दर्शन देकर श्री स्वामी जी ने उसे L. Min. E एक स्लेट पर लिखकर दिखा रहे थे। मेरी पत्नी ने मेरे बेटे से पूछा था कि L. Min. E का अर्थ क्या है? मेरे बेटे ने बताया कि वह पोलटेक्निक में एक प्रकार का कोर्श है। तब मेरी पत्नी ने बताया कि स्वामी जी ने सपने में दर्शन देकर तुझे उस L. Min. E कोर्स पढावाने का संदेश दिए थे। इसलिए तुम उस कोर्स पढने का प्रयत्न करो। मेरा बेटा S.C.C में साधारण गणित और इंटर में गणित लेकर परीक्षा में अनुर्तीर्ण हुआ था। कोर्स में भर्ती होने के लिए आवश्यक परीक्षा भी वह नहीं लिख सकता है। इसलिए बेटे ने समझा कि वह सपना साकार नहीं हो पाता है। इसलिए माँ से कहा कि वह पागलों का सोच है। यह सपना संभव नहीं हो सकता है।

बाद में दोस्तों के प्रोत्साहन से पोलटेक्निक कोर्स के लिए परीक्षा लिखने पर उसे मैनिंग में ही सीट मिला था। वह आर्थिक समस्याओं के कारण वह उस इंजनीरिंग डिप्लमा में भर्ती नहीं हो पाया था। पैसा चुकाने का समय भी हो गया था।

उस समय मेरे बेटे के काका कडपा से फोन करके बताया था कि अब पैसे चुकाने केलिए और कुछ समय दिया गया था। सीट खो जाए तो और फिर नहीं मिलेगा। तुरंत भर्ती हो जाने की सलाह दी और बहुत बडा प्रोत्साहन भी दिया था। श्री स्वामी जी की कृपा से बेटे का नाना जी पढ़ाई के लिए पूरा खर्च अपनी ओर से खर्च करके कॉलेज में भर्ती करवाए थे।

यदि हम श्रद्धा और भक्ति से स्वामी जी का सेवन और सेवा करें तो हम श्री स्वामी जी से विनती नहीं करने पर भी आवश्यकता पड़ने पर हमें जो कुछ अच्छा होता है वह फल हमें प्रदान करते हैं। यह सत्य सबको याद रखना है। 122

हमारा पूरा परिवार श्री स्वामी जी को बहुत ऋणी है। श्री स्वामी जी ने हमें प्राण दान देकर हमारी रक्षा की थी। उनमें से एक घटना इस प्रकार है। 1986 में मेरी पत्नी हृदय दर्द और रक्त दाब से पीडित थी। नेल्लूरु में ठीक न होने से मद्रास अपोलो अस्पताल में भर्ती करवाए थे। बीस हजार खर्च करने पर भी स्वास्थ्य में कोई सुधार

नहीं आया था। पूरा शरीर में और नाडियों में उबाल आ गया था। रात दिन नहीं सो रही थी। मैं उसकी बाधा को देखकर श्री स्वामी जी को कोसने लगा था। उस दिन श्री स्वामी जी सपने में आकर बडे - बडे अक्षर लिखकर मुझे दिखाए थे। मुझे नींद खुल गयी थी। वह शब्द कागज पर लिखकर सुबह दवाखाने में दिखाने पर उन्होंने कहा कि यह दवा रक्त दाब के लिए दवा है। लेकिन वह दवा अब तक कोई डॉक्टर मेरी पत्नी केलिए इस्तेमाल नहीं किए थे। मैं डॉक्टर से पूछने पर मेरे ऊपर नाराज होने की शंका से कुछ दिन तक चुप रहा था।

बाद में डॉक्टर के पास जाकर मैंने कहा कि जी! नेप्रसाल् गोली खाने से हमारे रिस्तेदार को रक्त दाब कम हो गया था। हम आपको सलाह नहीं दे सकते हैं। आप इस गोली का नाम चिट्ठी पर लिखकर दीजिए। हमारे डॉक्टर के द्वारा दिखाकर इस गोली को खरीदेंगे। चाहे तो हम मद्रास जाकर वहाँ के डॉक्टर की सलाह भी ले लेंगे। डॉक्टर ने सहमत होकर गोली खरीदने की अनुमति दे दी। गोली लेने के बाद में मेरी पत्नी की सभी बाधाएँ ठीक हो गईं थीं। उसको अस्पताल से घर भेज दिए थे। हम खुशी से घर वापस पहुँच गए थे।

बाद में और एक बार श्री स्वामी जी मेरी पत्नी के सपने में आकर श्री स्वामी जी ने पाँच संतरे, पाँच पैसे दिए थे। संतरे का रस ही भविष्य में उसका मुख्य आहार बना और पैसे प्रदान करने से उसके बाद हमारी आर्थिक स्थिति में बहुत तरक्की हो गई थी।

उसकी सभी बाधाएँ ठीक हो जाने पर भी उसके शरीर में सूखापन का अनुभव होने लगा और बहुत कमजोरी का अनुभव करने लगी थी। बहुत समय तक इंतजार करने पर भी स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से स्वामी जी के ऊपर पूरा भार लगाकर गोलगामूडि में श्री स्वामी जी के सन्निधि में आश्रम में ठहरने का निर्णय लेकर वहाँ पहुँचकर अभिषेकजल का सेवन करना शुरु कर दी। कुछ ही दिनों में उसके शरीर में सूखापन और कमजोरी कम होने लगे और वह ठीक हो गई थी। यह केवल सद्गुरू की महिमा के कारण ही संभव हो पाया था। **श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन का** 123
प्रभाव उतना महिमान्वित होता है। यह हम सबको अवगत हो गया था। - भागवतुल रघुरामय्या

आर. टी. सी नेल्लूरु के पेनवर्ति के पोलुमस्तानय्या जी ने की श्री स्वामी जी पर किस प्रकार भक्ति भावना जागृत हुई इसका विवरण इस प्रकार दे रहे थे।

हजारों भेडों में अपने भेड को पैर पकडकर ला सकते है। यह श्री स्वामी जी की बात मेरे विषय में सच निकली थी। मैं नास्तिक था। नास्तिक सिद्धांतों से प्रभावित होकर भगवान पर विश्वास नहीं रखता था। स्वामी जी के नाम सुनते ही चिडचिड हो उठता था। 1981 में एक बार मेरे दो हजार वाले भेडे को बडी बीमारी आई थी। घर

की महिलाएँ घर में ही कुछ इलाज अपने आप कर रही थीं। भेड पानी या चारा नहीं ले रहा था। जब मैं घर पहुँचा तब उसकी स्थिति गंभीर हो गई थी। गाँव के पशु वैद्य भी उस समय गाँव में नहीं था। रात 10 बजे इसी सोच विचार में सो रहा था।

इतने में मेरे भाई का 8 साल का बेटे ने आकर बताया कि श्री वेंकय्या स्वामी जी की विभूदि भेडे को देंगे। मैंने कहा यदि तुझे विश्वास है तो दो। ऐसा कहकर बिना भोजन खाकर सो गया था। वह बेटा भेडे को कहाँ कितनी विभूदि रखा मुझे मालूम नहीं था, लेकिन रात में सोते हुए चिल्ला रहा था कि स्वामी जी आए थे, स्वामी जी आए थे। कुछ ही समय में भेडा घास चरना शुरु कर लिया था। मेरे घर वाले मुझे उठाकर बताए थे कि भेडा ठीक हो गया था। वह घास खा रहा था। वह यह भी बताए थे कि भाई का बेटा रात में सोते समय श्री स्वामी जी का नाम दुहरा रहा था। भेडे को स्वस्थ देखकर मैं भी खाना खाकर सो गया था।

तभी मुझे असली विषय मालूम हुआ था। मेरे अंदर के सभी नास्तिक भावनाएँ मिट गयी थी। श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए तुरंत तीन किलोमीटर पैदल गोलगामूडी पहुँचा। स्वामी जी का दर्शन किया था। मेरे कहने के पहले ही श्री स्वामी जी ने बताया कि तेरे सभी पशु स्वस्थ हो गए थे। श्री स्वामी जी की उस बात से मुझे मेरे अंदर की सभी शंकाएँ दूर हो गई थी। उस दिन से मैं दैव चिंतन की ओर मुढ़कर श्री स्वामी जी की सेवा में अपना समय बिताने लगा था। मेरे अनेक कष्टों से श्री स्वामी जी ने मेरी रक्षा की थी।

कोत्तूर के बरिगेल नागय्या जी बहुत दिनों तक समाधि के पास पूजा के कार्यक्रमों का निर्वहण करते थे। वह अठारह साल की उम्र में कलुवाई कपडे खरीदने केलिए गए थे। किसीने रास्ते पर जाते समय बताया था कि बद्वेलु के पास वेंकय्या स्वामी आए हुए थे। नागय्या भी इस बात को सुन लिए थे। वेंकय्या स्वामी नाम से उसका क्या संबंद है? मालूम नहीं, वे तुरंत अपना काम कपडों को खरीदना वहीं छोड़कर श्री स्वामी के दर्शन करने केलिए वहाँ पहुँच गए थे। वहाँ श्री स्वामी जी अग्नि कुंड को जला रहे थे। जयराम राजु स्वामी जी की सेवा कर रहे थे। श्री स्वामी जी अपनी पिरिभाषा में करोड, मणुगु, अद्भुत तीन पद लिखकर तीन आशीर्वाद चिट्ठी, उँगलियों के चिह्न लगाकर तीन कागजें, तीन ऊन के धागे के साथ अपने ही कपडे से मंत्र छांटकर दिए थे। और उनको अपने घर चले जाने को कहे थे। लेकिन नागय्या चाहता था कि वह उस रात स्वामी जी के सन्निधि में आश्रम में रहे। तब नागय्या की मन की बात को समझकर स्वामी जी ने आज्ञा दी कि तेरी इच्छा किसी भी समय सफल होती है। लेकिन अब तुरंत यहाँ से चले जाओ। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार वे अपने घर चले गए थे। बाद का अनुभव वे इस प्रकार बता रहे थे।

वहाँ से दस किलोमीटर दूर वाले मेरे गाँव में किस प्रकार चला मुझे मालूम नहीं था। मार्ग में मैं पूरे ऊनींदा से भर गया था। विचित्र बात है जब मैं स्वामी जी के आश्रम से निकला तब शाम होने केलिए चार घंटे का समय था। दस किलोमीटर दूर चलने पर भी शाम होने का समय चार घंटा बाकी था ऐसा लग रहा था। मेरे मन की बात समझने के साथ – साथ मुझे सही सडक पर चलाने में भी श्री स्वामी जी दिव्य शक्ति का प्रदर्शन किए थे। बाद में पच्चीस साल के बाद में मैं जब मैंका के कंपनी कलिचेडु में काम कर रहा था तब श्री स्वामी जी को अनेक बार मिलकर उनके दर्शन का भाग्य पाया था।

एक दिन मैं श्री स्वामी जी की सेवा में निरंतर बिताने की तीव्र इच्छा से उनकी अनुमती के लिए गया था। मैंनें दो रूपए दक्षिण समर्पित किया था। उन्होंने कुछ नहीं बोला था। और कुछ दक्षिण देने की इशारा किए थे। तब मैंने तीन रूपए रखा था। पाताल लोक में जगदर्ति के पास उनको एक भाग है। 56 करोडों का एक, 86 करोडों का और एक। दोनों रसीद मेरे पास पहुँच गए थे। एक सौ आठ में एक भाग और हमारे संपत्ति में एक भाग भी उनका है। इस प्रकार एक आशीर्वाद चिट्ठी लिखवाए थे। मैंने उनसे पूछा कि मैं आपकी सेवा में रहूँगा। तब उन्होंने बताया कि यदि छे महीने यहीं काम तुम करने पर छे करोड सौ रूपए संपत्ति तुझे मिलेगी। उसे कमाने के बाद तुम मेरे पास आ सकते हो। उस समय के बाद मुझे लगता था कि श्री स्वामी जी मेरे जाने वाले रास्ते पर आगे जा रहे थे। जहाँ भी बैठूँ, उठूँ श्री स्वामी जी मेरे साथ बैठते और उठते थे। हर जगह मेरे साथ श्री स्वामी जी आते रहते थे। तीन महीना बीतना बहुत मुश्किल हो उठा। बीच में और एक बार श्री स्वामी जी केपास जाकर मेरी सेवाओं को सदुपयोग करने की प्रार्थना की थी। पहले एक साल तक रूकने केलिए कहे थे। तब मैंने कहा स्वामी जी पहले आपने मुझे छे मास के बाद में आने के लिए कहे थे। अब तीन महीने हो गए थे। मैं अब एक दिन भी नहीं रह सकता हूँ। मुझे अपनी सेवा केलिए स्वीकारिए। तब स्वामी जी ने बताया कि तुम कुछ ही दिनों में या कल ही आते तो अच्छा होगा। इस प्रकार उन्होंने अपनी अनुमति दे दी थी। सुबह जाकर ऑफिस में बहुत अधिकारी, साथियों, मालिक और रिस्तेदार मनाने पर भी इस्तीफा देकर श्री स्वामी जी की सेवा केलिए आश्रम पहुँच गया था। उसके बाद में श्री स्वामी जी के अनुग्रह से घर भी नहीं जाकर श्री स्वामी जी की सेवा में निरंतर रहा। यह स्वामी जी की कृपा से ही संभव हुआ था। इसके लिए उस दयासागर को कितना भी करुँ कम ही रहेगा।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 27

श्री स्वामी जी के अतिप्रीति पात्र काम सभी करके मुक्ति पाइए।

असंख्या में रहनेवाले गुरुवों में सही सद्गुरु को पहचानना बहुत महत्व पूर्ण विषय है। पहचानने के बाद में उनकी स्थिति का पता लगाना. विश्लेषण करना सामान्य विषय नहीं है। उनकी स्थिति का अंदाजा लगाने के बाद उनकी बातों पर **अचल विश्वास रखकर पूर्ण रूप से आचरण करने के लिए हममें परिपूर्ण भक्ति, श्रद्धा होना चाहिए। नहीं तो हम आचरण नहीं कर पाते है। उनकी बातों का आचरण नहीं करने से हमको मिलने वाला फल शून्य ही होगा। उस प्रकार की भक्ति और श्रद्धा हमारे मन में पैदा होने के लिए उनकी सन्निधि – सेवा के द्वारा, उनके अनुग्रह के द्वारा ही ऐसे शुभ संस्कार संभव हो सकते हैं।** यदि प्रत्यक्ष सन्निधि नहीं मिलने पर उनके जीवन चरित का पारायण ही सन्निधि के समान होता है। इस प्रकार उनकी प्रत्यक्ष सन्निधि सेवाएँ या उनकी जीवन चरित पारायण करने की शक्ति हमें कहाँ से मिलती है। केवल पुण्य कर्मों का प्रभाव, पाप कर्मो के प्रभाव से अधिक होने पर ही नियम और निष्ठा के साथ अनन्य रूप से दैव का शरण ले सकते हैं। उस प्रकार के पुण्य कर्म कौन से हैं? देव, द्विज, गुरु, प्रज्ञा पूजन, भगवन्नामस्मरण।

दैव कृपा पाने के लिए पूजा और नामस्मरण के लिए बहुत महत्व पूर्ण स्थान है। इसलिए ही श्री वेंकय्या स्वामी भजन और नामसंकीर्तनाओं का प्रोत्साहन देते थे। ओ नारायण, आदिनारायण नाम स्मरण तंबूरा का वादन करते हुए घंटों तक श्रवणानंद रूप से गाते थे।

अपने दर्शन के लिए आनेवाले भक्तों को भजन करने केलिए प्रोत्साहन देते थे। भक्त जन भजन करते समय श्री स्वामी जी श्रद्धा से सुनते थे और उनकी भक्ति और श्रद्धा के अनुसार उनको अनुगृहीत करते थे।

कभी – कभी भक्त जन के द्वारा गाने वाले भजन, कीर्तनों को रोकवाकर ओं नारायण, आदिनारायण मंत्र को गंवाते थे।

हृदय पूर्वक प्रेम से भगवन्नाम स्मरण को गाना, भजन करना श्री स्वामी जी बहुत पसंद करते थे। ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेकर उनको बहुत श्रद्धा से सुनकर आशीर्वाद देते थे।

एक दिन बोंतराजु पालेम् में सभी भक्त पैरों को घुँघुरु बाँधकर लकडी के टुकडे हाथ में लेकर उत्साह से लयबद्द होकर इधर उधर घूमते हुए कुछ भंगिमाओं के साथ कोलाहल माचाते हुए भजन कर रहे थे। वहाँ के दर्शक भगवान का स्मरण भूलकर कौन, किस प्रकार अपना कदमों और भंगिमाओं को बदलते हुए, नाचते हुए अपनी कला का प्रदर्शन कर रहा है यही विषय पर दृष्टि डाल रहे थे। कलाकार तन्यमता से अपना कला प्रदर्शन दे रहे थे। उनकी पूरी दृष्टि दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करने पर ही थी।

कुछ देर बाद में श्री स्वामी जी ने उनको देखकर मासूम बच्चे की तरह हँसकर पूछा था कि वे लोग क्या कर रहे हैं? श्री स्वामी जी क्यों ऐसे पूछे थे सबको मालूम हो गया था। कहने का मतलब यह है कि हृदय स्पंदन और आर्ति से किया गया भजन, नामसंकीर्तन से ही स्वामी जी की कृपा का पात्र बन सकते हैं।

एक दिन एक भक्त स्वामी जी से अनुग्रह किया कि हम अपने गाँव में आपके लिए एक मंदिर बनाकर देंगे। आप वहीं रहकर सबको अनुगृहीत कर सकते हैं। श्री स्वामी जी ने कहा कि वेंकय्या का मंदिर अकेला तुम ही नहीं मेरे चले जाने के बाद में कई लोग अपने गाँवों में मंदिरों के निर्माण करवाएँगे।

इसलिए हर एक गाँव में कम से कम दो या तीन व्यक्ति के लिए पहले पहल श्री स्वामी जी के चित्र के ढाँचे को उस गाँव के मंदिर में रखकर अगरबत्ती जलाकर, श्री स्वामी जी के चरित के कम से कम चार लीलाओं को पढ़कर ओं नारायण, आदि नारायण मंत्र छांट कर उसके बाद भजन करना अत्यंत श्रेयस्कर होगा।

महात्माओं के चरित का पारायण हमारा उद्धार ही नहीं पूरे गाँव का उद्धार भी करेगा। श्री स्वामी जी का भरोसा उस गाँव और लोगों को पूरी तरह मिलेगा। अनावृष्टि और अरिष्टों के प्रभाव से रक्षा मिलेगी। सामूहिक बीमारियों से रक्षा मिलती है। पहले पहल एक या दो लोगों से शुरु करने पर भी श्री स्वामी जी की कृपा से भजन बृंद की संख्या बढ़कर हर एक सदस्य को श्री स्वामी जी की कृपा का अनुभव प्राप्त होता है। एक हफ्ते में मरने वाले परीक्षित को शुकयोगी ने महनियों की गाथा का श्रवण करवाया था। वहीं भागवत है।

पहले शुरू करने में ही दिक्कत होती है। श्रम की चिंता किए बिना हिचकिचाए एक या दो व्यक्ति पहले शुरु करने पर बाद में श्री स्वामी जी ही अपना कार्य स्वयं करवाते हैं।

इस प्रकार श्री स्वामी जी की कृपा से उस पुरे गाँव को लाभ पहुँचने के लिए जो काम करते है वहीं काम सच कहे तो निष्काम कर्म कहलाता है। हफ्ते में एक बार नहीं रोज यह कर्म करने से बहुत फायदा होगा। मानव जन्म को सफल बनाने के लिए एक मात्र पद्धति यहीं है। यह मेरा स्वानुभव है।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय — 28

मेरा स्वानुभव (लेखक)

आचार्य भारद्वाज के सलाह के अनुसार श्री स्वामी जी के दर्शन करके दिव्य अनुभव प्राप्त करके गत बारह सालों से श्री स्वामी जी की सेवा कर रहा हूँ। गत पंद्रह सालों से श्री सिर डी साई चरित पारायण और पूजा कर रहा हूँ। उसका फल ही है मुझे भगवान श्री वेंकय्या स्वामी के रूप में श्री साई नाथ ही मिले थे। साई लीलामृत पारायण के कारण श्री स्वामी जी ने गुरुपूर्णिमा के दिन मेरे घर आकर हमारे आतिध्य स्वीकार कर हमारा दोस्त टी. वी सेषगिरि राव के घर में अखंड नाम संकीर्तन करने वाले भजन बृंद को आशीर्वाद दिए थे। 20 साल से मुझे दमा था। बहुत बाधा होने पर भी श्री स्वामी जी की सन्निधि में बैठे तो बाधा पूरी तरह ठीक हो जाती थी। दो बार श्री स्वामी जी के दर्शन करने के बाद में मुझे घर वापस जाने की आज्ञा श्री स्वामी जी ने दी थी। बिना न कहे मैं घर चल गया होता तो मेरा दमा पूरी तरह ठीक हो गया होता था। मैंने अनकी आज्ञा का पालन नहीं किया था। आवश्यकता के अनुसार नियमों का भंग करता रहा था। इससे मेरी बीमारी और बढ़ गई थी। डॉक्टरों ने सलाह दी कि मुझे मद्रास जाकर इलाज करवाना चाहिए। श्री स्वामी जी समाधि का दर्शन करने के बाद मद्रास जाने का निर्णय लेकर गोलगामूडि जाने केलिए बस में बैठा था। आश्चर्य की बात बस में बैठते ही मेरी तबियत ठीक हो गयी थी। बाद में मैं स्वस्थ हो गया था। उसके बाद में श्री स्वामी जी के पास ही रहने लगा। ये सभी विषयों के बारे में सविस्तार से इस ग्रंथ में लिखा था। यहाँ श्री स्वामी जी के द्वारा लागू किया हुआ नियम उनके द्वारा किस प्रकार मेरे द्वारा आचरण में लाते थे बताने का प्रयत्न करता हूँ।

श्री स्वामी जी ने मुझे आज्ञा दी थी कि अपना खाना स्वयं खाना है। केवल मेरा कष्टार्जित पैसों से ही मुझे खाना है दूसरों से आर्जित धन से अपना भूखा नहीं मिटाना है। बिना तेल के चीजें खाने की आज्ञा भी दिए थे। उसका मतलब है कि तेल से उबले पदार्थों को खाना मना है। और श्री स्वामी जी नमक और खारा को छोड़ने की सलाह दी थी। इन सभी नियमों का मैं अनुसरण कर रहा था। लेकिन प्रसाद के नाम पर या दोस्तों के द्वारा जबरदस्त खिलवाने से कुछ समय मैं अपने नियमों का उल्लंघन कर देता था। जिससे स्वास्थ्य संबंधी रुग्मताओं को गत चार सालों से भोगना पड़ता था। इन स्वल्प नियम भंग को श्री स्वामी जी नहीं मानते थे। 1985 डिसंबर में किसी गृहप्रवेश कार्यक्रम में जाकर प्रसाद के रूप में केला खाया था। उस घर की

मालिकिन को संतुष्ट करने केलिए आधा केला वहीं खाकर आधा केला मेरी थैली में रख दिया था। तुरंत मेरे बाएँ आँख में चिडचिडा हो जाने से उसमें उबाल आ गया था। मैंने सोचा था कि केला खाने से ही यह आँख में यह बदलाव आया था। मैं ऐसे ही स्कूल पहुँचा। मद्याह्न के समय बहुत भूख लगने से थैली के अंदर के बाकी केले को भी खा लिया था।

आँख में दर्द अधिक हो गई थी। शराबी जैसा, उनींदी स्थिति में वहीं मेज पर सोने का प्रयत्न किया था। मैं 7.5 फुट ऊँचे वाले फाटक के सामने अपने दोनों पैरों को एक ही जगह रखकर खडे होकर अपने दोनों हाथों से उस दरवाजे को स्पर्श कर रहा था। कहीं न कहीं पकडे तो दरवाजा खुलेगा। उस दरवाजे को खोलने के प्रयत्न में मेरा दायाँ पैर को तीन अंगुल तक सरकाया था। तुरंत पीछे से सभा में बडे लोग अनफिट को निकाल दो कहकर चिल्ला रहे थे। मुझे पर वहाँ से प्रहार कर रहे थे। मैं उनसे पूछ रहा था कि कुछ दूर सरकने से क्या कोई गलती हो जाएगी, क्या। **छोटी गलती भी गलती ही है।** उन्होंने समाधान दी। मेरी नींद खुल गई थी। समय शाम का छे बजे हो गया समझकर घडी देखा था। 11 घंटा बजकर 10 मिनिट ही हुआ था। मैं सोचने लगा कि इस दस मिनिट में यह दृश्य क्यों दिखाई दिया था? मुझे मालूम हुआ था कि प्रसाद के रूप में नियम भंग करने पर आध्यात्मिक साधन में वह छोटी सी गलती भी बडी बन जाती है। इस सत्य को श्री स्वामी जी ने मुझे दृश्य के रूप में दिखाए थे। उस दिन से लेकर श्री स्वामी जी की कृपा से इसके पहले जो आचरण साध्य नियमों का पालन नहीं करता था उनका पालन बहुत आसान से करना शुरु करने लगा था।

आध्यात्मिक साधना दैवराज्य में जाने केलिए दरवाजा खुलने के प्रयत्न के रूप में काम आता है। इस प्रयत्न में छोटी सी गलती भी गलती बन जाएगी। वह गलती हमें उस साधन करने केलिए अयोग्य बना देती है। यही सत्य श्री स्वामी जी ने सबको प्रबोध किए थे।

उस दिन से आज तक मेरे अंदर से निग्रह न करने वाले अनेक बलहीनताएँ पूरी तरह गायब हो गई थी। बाकी बलहीनताएँ भी उसी प्रकार निकालने के लिए मैं निरंतर कोशिश कर रहा था। स्वामी जी अभय दिये थे कि तुम्हारे मुझे छोड़ देने पर भी मैं तुझे नहीं छोडूँगा। आशा करता हूँ श्री स्वामी जी उस अभय को पूरा करेंगे। हमारी तरफ से इच्छा से उनसे विनती करना, उनकी सूक्तियों को सुनना और आचरण में रखना हमारा कर्तव्य है। ऐसा आचरण हम सबको श्री स्वामी जी प्रदान करने केलिए प्रार्थना करेंगे।

श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार मैं 1989 में नवंबर तक समाधि के पास ही परिवार के साथ रहकर 50 किलो मीटर दूर तक जाकर नौकरी करके हर रात्रि

वापस आकर श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन करके मैंने उनकी सेवा की थी। 1989 नवंबर तीन तारीख को श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार नौकरी छोड़कर गोलगामूडि में रहकर श्री स्वामी जी की सेवा कर रहा था।

उन दिनों में मैं (लेखक) कलिचेडु को छोड़कर श्री स्वामि जी के साथ रहता था। मेरी दो समस्याओं का समाधान श्री स्वामी जी से पूछना चाहता था। लेकिन श्री साई और श्री स्वामी जी के साथ मेरे संबंद को ध्यान में रखकर श्री साई के समाधान के लिए इंतजार करता रहा था। श्री स्वामी जी संकेतों के द्वारा ही समझाते थे। लेकिन उनको समझना बहुत मुश्किल होता था। लेकिन साई बहुत आसान तरीके से अपनी बातों को समझाते थे। इसलिए मैंने स्वयं शिरिडि जाकर साई के सामने एक सप्ताह तक दीक्षा लिया था। श्री साई नाथ भी श्री स्वामी जी की तरह मेरी समस्या का समाधान संकेतों के द्वारा ही दिए थे। उन्होंने आत्मबोध देते हुए कहा कि पागल मेरे और स्वामी के बीच में कोई भेद नहीं है। तुम वहीं किसी भेद भाव के बिना श्री स्वामी जी की सेवा कर सकते हो। इसलिए ही मुझे मालूम हुआ था कि इन दोनों में कोई भेद भाव नहीं है। ये ही नहीं इन दोनों के बीच बहुत गाढ़े संबंद भी थें।

मैं समझता था कि श्री साई अपने को आश्रय लेने वाले के प्रति प्रेम से उनके व्यवहार संबंधी तृटियों को दिखाकर उनको ठीक करने का प्रयत्न करते थे। लेकिन श्री स्वामी जी हमेशा मौन में रहते थे। साई के समान हमारी गलतियों को नहीं दिखाते थे। श्री स्वामी जी शारीरक रूप में नहीं होने से हमारी गलतियों को दिखाकर हमें दण्ड देने की क्षमता नहीं है।

लेकिन 1988 मई महीने में पंद्रह दिन श्री स्वामी जी की समाधि के पास पूजा करने का सौभाग्य मुझे मिला था। उस समय में मैंने जान लिया कि श्री स्वामी जी सर्वकाल, सर्व अवस्थाओं में हमेशा हमारे साथ ही रहते हैं। हमारे दोषों को मुँह से कहे बिना आत्मबोध के द्वारा अवगत कराते रहते हैं। वे हमारे दोषों के लिए तुरंत दण्ड भी देते हैं। और मुझे अवगत हुआ था कि भूत और भविष्यत काल में ही नहीं वर्तमान में भी किसी भी तरह के मलिन वासनाएँ हमारे अंदर शुरु होने पर, परदूषण, असत्य बोलना, मन में अहंकार को व्यक्त करना आदि दुर्गुण पैदा होने पर तुरंत हमें चेतावनी देते हैं। ऐसे दुर्गुण पैदा होने पर सांब्राणी जलाने केलिए आवश्यक आग भी नहीं मिलता है। बहुत कोशिश करके आग लाने पर भी पूजा का समय हो जाता है। कुछ समय पूजा के अंत में धूप के लिए आवश्यक आग बुझ जाएगा। और एक बार पूजा की पद्धती में कुछ लोप दिखाई देगा। यदि हम स्वामी जी से पूछे कि पर ऐसा क्यों हुआ? तब स्वामी जी समाधान देते हैं कि यह तेरे अहंकार का फल है। ऐसे दुर्गुण को मिटाने के लिए सदा श्री स्वामी जी की प्रार्थना करता हूँ।

श्री शिरिडी साई का चरित पढ़ने के बाद में मेरे अंदर कुछ शंकाएँ पैदा हुई थी कि साई की तरह श्री स्वामी जी भी खंडयोग किए थे। इसके लिए कोई गवाही है या नहीं। करुणामय श्री स्वामी जी उन शंकाओं का समाधान मुझे आज दिए थे।

शेक रहमतुल्ला ओगूरु के पास के वाकमड गाँव में रहता था। ब्राह्मणपल्लि मंडल, कडपा जिला के कुछ लोग श्री स्वामी जी के साथ अपने अनुभवों को इस प्रकार बता रहे थे।

मेरे दाएँ घुटनों के नीचे से पैरों की हड्डियों में बहुत दर्द होता था। बुहत डॉक्टर और वैध्य लोगों से इलाज करवाने पर भी बहुत खर्च तो हुआ था लेकिन हालत में कोई फरक नहीं आया था। मेरा दर्द ऐसी ही रह गया था। मेरे दोस्तों से श्री स्वामी जी के बारे में मालूम होने से पेन्ना बद्रेलु तिप्प के पास आए हुए श्री स्वामी जी से मिलने केलिए गया था। श्री स्वामी जी अपने सुवर्ण हस्थों से मेरे पैरों पर ऊपर से नीचे तक छूकर स्पर्श किए थे। पहले दिन बहुत उपशमन मिला था। बीस दिन तक उसी तरह उन्होंने मेरी इलाज की थी। अंत में मेरा पूरा दर्द निकल गया था। मेरे लिए नया जीवन प्रदान करने वाले उन करुणामय को जितना भी कहूँ कम ही रहेगा।

उन दिनों में श्री स्वामी जी जहाँ घर में रहते थे उस घर में बिजली के बल्ब नहीं थे। रात मूत्रविसर्जन के लिए उठा था। उस समय मुझे अग्निकुंड बहुत बडी ज्वाला के साथ दिखाई दिया था। उसके द्वारा बहुत प्रकाश दिखाई दे रहा था। उसे देखकर मुझे बहुत डर लगा। श्री स्वामी जी के सभी अंग छोटे - छोटे टुकडों में कटे हुए थे। पैर एक जगह, हाथ एक जगह, सिर उसका शरीर और एक जगह इस प्रकार विभिन्न दिशाओं में उनके शरीर के अंग पडे हुए थे। उस दृश्य को देखकर डर कर सामने वाली झोंपडी में भागकर घुस गया था। उस झोंपडी में स्वामी जी नहीं थे। दस मिनिट के बाद वहीं अग्नि कुंड के पास बैठकर उन्होंने मुझे दर्शन दिए थे। आधा घंटे के बाद झोंपडी में मेरे पास आकर बता रहे थे कि हे रंतु साइबा! तुझे संसार दिखाया गया न। सुबह तुझे अपने गाँव को जाना चाहिए। यहाँ किसी भी स्थिति में ठहरना नहीं चाहिए। बार – बार कहकर मेरे जाने केलिए पैसा देकर चार दिन तक तुझे यहाँ नहीं रहना चाहिए कहते हुए मुझे अपना गाँव भेज दिए थे। मैंने जो कुछ खंड योग देखा था उसे किसी के सामने बताने से रोकने के लिए ही मुझे श्री स्वामी जी अपने गाँव को भेज दिए थे।

पाँचवा दिन श्री स्वामी जी के पास आश्रम में आकर रात बिताकर सोया था। सुबह स्वामी जी मुझसे कह रहे थे कि हे रंतु साइबा! तेरे भाई का हाथ टूट गया था। पट्टी बाँधे थे। कुछ भी चिंता की बात नहीं। ऐसा बताकर मुझे फिर अपना गाँव भेज दिए थे। मैं अपना गाँव जाकर पूछने पर जो स्वामी जी बताये थे वह सच निकला। मेरा भाई बकरियों के चारा काटने केलिए पेड चढ़कर नीचे गिरने से उसका हाथ टूट

गया था। हाथ पर पट्टी बंधी हुई थी। बाद में श्री स्वामी जी के आशीर्वाद से कुछ ही दिनों में वह ठीक हो गया था।

<u>अवधुत श्री वेंकय्या स्वामी जी में मुझसे दर्शाये गये कुछ सत्य इस प्रकार है।</u>

श्री स्वामी जी तलुपूरु में थे। जिस जगह वे ठहरे हुए थे उस घर में बिजली नहीं होने से बिजली के खंभे नहीं होने से एक लकडी को एक दीप का लांतर लटकाए थे। रात के दस बजे श्री स्वामी जी ने पूछा कि यह दिन है या रात। लांतर उस तरह अधिक प्रकाश दे रहा था। स्वामी जी क्यों ऐसा रात या दिन पूछ रहे हैं? इसका कारण नहीं समझने से वे सब हँस पडे थे।

और एक दिन श्री रामकृष्ण परमहंस जी भी पूछे थे कि आज अमावाश्या है या पौर्णमा? अवधूत की स्थिति नहीं समझने से अज्ञान लोग हँसते हैं।

एक बार एक सेवक ने पूछा कि क्रोध कैसा मिट जाता है? तब स्वामी जी ने बताया कि रात और दिन में भेद मिट जाने से क्रोध मिट जाएगा। रात और दिन का भेद मिट जाने के लिए क्या करना है? यह प्रश्न सेवक ने स्वामी जी से नहीं पूछा था।

वह गरमी का मौसम था। अप्रैल महीना था। श्री स्वामी जी तलुपूरु में मस्तानय्या के घर में बसे हुए थे। मस्तानय्या का घर गाँव के पूरब दिशा के अंत में था। उस घर के आँगन में कुछ छोटे - छोटे झाडियों के अलावा छाया देने वाले वृक्ष नहीं थे। श्री स्वामी जी वहीं अग्निकुंड जलाकर बैठे हुए थे। मद्याह्न दो पहर के समय मैं अपने मित्र श्री टी.वी शेषगिरि राव के साथ श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए गए थे। दस मिनिट धूप में ठहरने से मेरे पाँव के चप्पल से गरमी आने लगा। शेषगिरि राव दूर के नीम के पेड की छाया में जाकर खडे हुए थे। मैं अपने चप्पल के नीचे कुछ लकडी रखकर उन पर खडा हुआ था।

पूरब दिशा की ओर बैठकर अग्निकुंड में लकडी डालते हुए अग्नि को जलाते हुए स्वामी जी बैठे हुए थे। उनके शरीर पर छोटा सा अंगवस्त्र केबिना कोई कपडा नहीं था। पूरा शरीर पसीना से भरा हुआ था। शरीर के ऊपर धुआँ के कारण कालापन दिखाई दे रहा था। मुँह भी काला बन गया था। काले धुँआ बीच में सफेद विभूदी शरीर पर इधर – उधर दिखाई दे रहा था। उनके सिर पर बहुत कम बाल थे। श्री स्वामी जी आग के पास बैठे हुए थे। मैं दूर में खडा हुआ था। पैरो में चप्पल पहना हुआ था। चप्पल केनीचे लकडी के टहनियाँ थी। सिर पर एक कपडा और शरीर पर कपडे भी थे। मेरा शरीर गरमी को सहन नहीं पा रहा था। श्री स्वामी जी को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। श्री स्वामी जी किस तरह उतनी गरमी में आग के निकट बैठ सके। श्री स्वामी जी को ऐसी स्थिति में अनेक घंटों तक देखता रह गया था। बाद में ही मुझे मालूम हुआ था वह अवधूत की स्थिति है। उस तरह वे रह सकते हैं। यही उनकी महानता है। यह विषय मुझे मालूम नहीं था। बाद में ही मालूम हुआ था।

ॐ नारायण- आदि नारायण

अवधूत लीला

अध्याय 29

महासमाधि के बाद की लीलाएँ

श्री स्वामी जी ने अभय दिया था कि सूर्य चंद्र जब तक रहेंगे तब तक हम रहेंगे। उनसे दिया गया अभय अक्षर सत्य है। यह सत्य उनकी समाधि के बाद में होने वाली लीलाओं के द्वारा साबित हो गया है। **श्री स्वामी जी का पूर्ण रूप से आश्रय लेने से पूर्ण रूप से आत्मज्ञान पाने तक उनके साथ रहकर श्री स्वामी जी उनकी रक्षा करेंगे।**

जब वे भौतिक शरीर से रहते थे तब उनकी महिमाओं को छिपाकर रखते थे। महासमाधि पाने के बाद आज अपनी महिमाओं को दस दिशाओं में व्याप्त करके उनके बारे में जिनको मालूम नहीं है उनको भी स्वप्न दर्शन देकर गोलगामूडि आकर अपनी समाधि का दर्शन करने केलिए आदेश दे रहे हैं। उन दिनों की तुलना में आजकल श्री स्वामी जी भक्त गण को आसानी से उपलब्ध हो रहे है। एक समय में लोग कहते थे कि श्री स्वामी जी के पैरों को नहीं पकडने से दवा लेना पडता था। आज कह रहे हैं कि दवा लेने से हमारा काम रूक जाता है। वह काम क्या है? उन दिनों में किसी को मालूम नहीं होता था। आजकल मालूम हो रहा था कि दीन जन रक्षण ही उनके अवतार का काम है। जो समाधि के दर्शन करते है उनकी सभी बाधाएँ दूर हो जाती है। यहीं उसका अभिप्राय है।

अगस्त20, 1983 में श्री रामय्या अपनी झोंपडी में रहता था। श्री स्वामी जी अपने सिर पर एक तौलिया रखकर दर्शन दिए थे। वह व्यंग्य रूप से पूछ रहे थे कि वहाँ उतना काम हो रहा है। यहाँ बैठकर तंबूरा बजा रहे हो। सुबह होते ही उसने गोलगामूडि जाकर वहाँ होने वाली आराधना के कार्य में भाग ले लिया। दो महीने तक आश्रम में ही रह गया था।

अप्रेल 20,1984 में श्री रामय्या नागुलवेल्लटूरु से आश्रम को आया था। हर दिन अनिकेपल्लि से आश्रम को भिक्षाटन लाता था। जब वह दस दिन अपने गाँव गया था तो सुब्बरायुडु नाम के और एक भक्त भिक्षा के लिए गया था। बाद अपने काम के अनुसार अप्रेल 20 से श्री रामय्या को भिक्षा के लिए जाना था। लेकिन किसी कारण बताकर चार दिन तक सुब्बरायुडु ही भिक्षा के लिए जाएगा समझकर आश्रम में ही स्वामी की सेवा करते रह गया था। तुरंत श्री स्वामी जी अपने सिर पर तौलिये को घूँघट के समान रखकर रामय्या को दिखाते हुए, व्यग्य करते हुए मनोनेत्र को दिखाई दिए थे। उसे आत्मप्रबोध हुआ कि स्वामी जी बता रहे थे कि तुम भिक्षा केलिए

नहीं जा रहे हो। अपने सिर पर तौलिया डालकर एक कोने में बैठ जाओ। तुरंत वहाँ से उठकर भिक्षा के लिए जाने के लिए तैयार हो गया।

कन्नवरम राजय्या दिशंबर 1984 में एक सप्ताह तक ज्वर से पीडित था। कोई आहार नहीं ले रहा था। बहुत कमजोर हो गया था। उसे भय था कि वह मर जाएगा। उस रात अपनी बाधा श्री स्वामी जी के सामने बताकर सो गया था। सपने में श्री स्वामी जी तंबूरा को बजाते हुए दर्शन दिए थे। राजय्या जाकर श्री स्वामी जी के समक्ष बैठ गया था। तब स्वामी जी ने बताया था कि तेरी बाधा मेरे लिए भी बाधा ही है। लो इस तंबूरा को पकडो। कहते हुए अपने तंबूरे को दिए थे। उसकी नींद खुल गई थी। एक सप्ताह से 104 डिग्री जो ज्वर था वह ठीक होकर पूरा शरीर ठंडा पड गया था। बहुत भूख लगने लगी। तुरंत उसने दूध पी लिया था। सुबह होते ही खाना खाने लगा था।

पेनवर्ति के पोलु मस्तानय्या 1983 में श्री स्वामी जी के आराधना के लिए नेल्लुरु से तरकारी खरीद कर रिक्शा में लादकर कुछ दूर आने के बाद उसे याद आया था कि कुछ थैली वह भूल गया था। रिक्शा को रास्ते के किनारे रोक कर थैली के लिए जाकर जब वापस आया था तब वहाँ वह रिक्शा नहीं था। इधर उधर ढूँढने पर भी रिक्शा दिखाई नहीं दिया था। डेड घंटे के बाद में वह रिक्शा वाला वापस आया था। तुरंत उससे पूछने पर बताया कि मेरी बुद्धि पर साँप लेट गया था। आपको धोखा देना चाहता था। कुछ दूर जाने के बाद मेरी पूरी ताकत कम हो गई थी। मुझे कुछ नहीं दिखाई दिया। मैं बेहोश हो रहा था। बहुत प्रयत्न करने पर भी मैं आगे बढ़ नहीं सका था। मैं अपनी भूल समझकर भगवान से माफी माँगकर वापस आ गया था। मुझे क्षमा कीजिए। श्री स्वामी जी अब भी सजीव ही हैं।

मार्च 1983 में गोलगामूडि के रागय्या जी के बछडा कहीं खो गया था। एक महीने तक ढूँढने पर भी उसका पता नहीं मिला था। एक दिन स्वप्न में श्री स्वामी जी के पीछे - पीछे ये भी जा रहा था। दोनों मिलकर गोलगामूडि से सीधा पूरब दिशा के एक गाँव पहुँचे थे। उस गाँव के एक गायों के षेड में गए थे। उनका बछडा वहीं गायों के साथ खडा हुआ था। तुरंत उनकी नींद खुल गयी थी। सुबह पूरब दिशा के पेनवर्ति गाँव को गया था। वहीं स्थान पर गायों के साथ बछडे को देखकर उसे आश्चर्य हुआ था। उसने सपने में जो देखा था वह सच निकला था।

पेनवर्ति के गोनुपल्लि के रायि लक्ष्मी नरसारेड्डी के दोनों बैल 1983 में कहीं गुम गए थे। एक महीने तक ढूँढते रहे। लेकिन पता नहीं चला था। रेड्डी जी की पत्नी ने एक रात श्री स्वामी जी के चित्र के सामने रोती हुई विनती की थी कि हम खेतीबाडी किस प्रकार बैलों के बिना कर सकते हैं। हमारी सहायता कीजिए। हमारे बैलों की पता लगाकर हमें वापस दिलवाइए। उस रात उसके सपने में श्री स्वामी जी दिखाई

दिए थे। उनके घुटनों में कंटक लगने से रक्त बह रहा था। श्री स्वामी जी ने कहा देखो तेरे बैलों को ले आते वक्त मेरे घुटनों में रक्त बह रहा है। सुबह देखने पर उनके घर के आँगन में उनके दोनों बैल खडे हुए थे। उनके शरीर पर कंटक लगने से कुछ रक्त के छाप दिखाई दिए थे।

गोलगामूडि के पनबाक सुब्बरामय्या 1984 में दोस्तों को बताकर अपने दोस्तों से व्याज पर पैसा लेकर नेल्लूरु से दुक्कि आटा बोरा रू. 450 से खरीद कर रिक्सा में लाद कर बस स्टेशन ले आ रहा था। उस समय ही बस निकल रही थी। वह रिक्सा से उतर कर बस रोकने केलिए उसके सामने आ गया था। लेकिन बस चली गई थी। पीछे देखने पर रिक्सा भी कहीं चली गई थी। इधर – उधर ढूँढ कर रिक्सा नहीं मिलने पर स्वामी जी को याद करके रोते हुए उनसे विनती की थी। वह सोचने लगा कि बोरों को साथ नहीं लेकर जाने पर मालिक से अनेक अपमान उठाना पडेगा। इससे आत्महत्या कर लेना उत्तम है। इतने में एक सज्जन ने उसे रोककर कहा। क्यों इतने परेशान हो रहे हो? तनाव से रहे तो किसी वाहन के नीचे गिर जाओगे। तेरे बोरे कहीं नहीं जाएँगे। कुछ समय रूककर देखो। इतने में कुछ ही समय में रिक्सा वाले ने आकर उसके बोरे उसे सौंप दिया था।

भक्तवत्सल नगर के चेरुकूरि कृष्णय्या को 1983 में हृदय की धडकन से नेल्लूर के सरकारी अस्पताल में भर्ती किया गया था। एक दो बार पलंग से नीचे गिर पडा था। अस्पताल के कर्मचारी आंदोलन कर रहे थे। इसलिए वह घर आ गया था। एक दिन रात दस बजे श्री स्वामी जी के दर्शन करने की इच्छा जागने से दर्शन के लिए अकेला आ रहा था। कोंडय्यपालेम के फाटक के पास एक लाल धोवती और हाथ में एक लाठी रखने वाले ने उससे पूछा कहाँ जा रहे हो? उसने जवाब दिया कि गोलगामूडि वेंकय्या स्वामी जी के पास जा रहा हूँ। उसने कहा कि पानी भरकर मैं तेरे साथ आऊँगा। कृष्णय्या कुछ दूर जाकर पीछे देखा। वह आदमी वहाँ नहीं था। श्री स्वामी जी की समाधि के पास आने के बाद में और एक बार हृदय धडक आया था। आश्रम के आंगन में गिर पडा था। वहाँ भजन करने वाले भक्त उसको पहचान नहीं पाए थे। मुँह से सफेद झाग आ रहा था। उस समय एक आदमी आकर उसके पीट पर मारता हुआ कहा ठीक हो जाएगा। सुबह होते ही किसी भी दवा खाए बिना ही उसका हृदय धडकन ठीक हो गयी थी। हृदय की कमजोरी से आदमी का आठ किलोमीटर दूर अकेला पैदल चलते आना ही आश्चर्य की बात है।

ईदूरु के निवासी उप्पल वेंकय्या की पत्नी शेषम्मा 1981 से घुटनों से नीचे पैरों तक उभाल और दर्द से पीडित थी। दर्द के कारण उसे रात नींद नहीं आ रही थी। अनेक डॉक्टरों से इलाज करवाया था। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ था। एक फूल बेचने वाला उससे श्री स्वामी जी के बारे में बताकर उनके दर्शन करने की सलाह

दी थी। उसने 1983 में श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन करके विनती की। दर्शन के बाद में दर्द कम हो गया था। हफ्ते में एक बार आकर स्वामी जी के दर्शन करके जाने लगी। बाद में कुछ कारणों से दर्शन नहीं कर पाई थी। घर में ही श्री स्वामी जी का चित्र रखकर उसकी पूजा करने लगी। और फिर एक बार दर्द शुरु हो गया था। तब वह शेषम्मा ने श्री स्वामी जी से प्रार्थना की थी कि मैं आपके समाधि के दर्शन नहीं करने पर भी घर में बैठकर आपका स्मरण कर रही हूँ। क्यों और एक बार दर्द आ रहा है? आप कृपा कीजिए। उस रात सपने में श्री स्वामीजी दर्शन देकर बताए थे कि यह तो कोई सिर का भार नहीं है। नीचे उतारने के लिए। तीन सालों से यह दर्द है। यहीं रहकर मेरी प्रार्थना करने से क्या ठीक हो जाएगा? यह सुनकर सुबह उठकर उस दर्द के साथ श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए गोलगामूडी आयी थी। उसके बाद उसके दर्द गायब हो गए थे। शेषम्मा सोचने लगा थी कि मैंने स्वामी जी को एक बार भी नहीं देखा था। फिर भी उनको कैसे मालूम हुआ था कि मुझे तीन साल से दर्द था? यह आश्चर्य की बात थी। यह है सत्य भगवान सर्वव्यापी है। यह श्री स्वामी जी की अद्भुत लीला है।

उसकी बेटी को बहुत अधिक डिस्चार्ज होने से डॉक्टरों को दिखाए थे। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ था। तब शेषम्मा ने अपनी बेटी को श्री स्वामी जी की विभूदि देकर उसे नित्य स्वीकारने केलिए कहा। समस्या ठीक होने के बाद श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन करने का निश्चय किया। उसके बाद कुछ ही दिनों में उसकी समस्या ठीक हो गई थी।

कोर्रकूटि नरसिंहनायुडू जी के बैल को 1983 में बीमारी आने के कारण उसे आश्रम में लाकर रोज विभूदि मुँह में डालकर और कुछ विभूदि उसके शरीर पर छिडकते थे। स्वामी जी से उस बैल की स्वस्थता के लिए विनती भी की थी। बैल की बीमारी में उतार चढाव आते रहे। नायुडु जी एक निर्णय पर आ गए थे कि यह बैल नहीं जीएगा। उन्होंने सोचा कि मैंने स्वामी जी पर विश्वास रखा था लेकिन स्वामी जी मेरी विनती नहीं सुन रहे थे।

उस रात उन्होंने सपने में देखा कि श्री स्वामी जी एक सिंहासन पर विराजमान थे। कुछ लोग विंजामर चला रहे थे। नायुडु सभी भक्तों की तरह वहाँ खडे होकर देख रहे थे। श्री स्वामी जी ने उनको देखकर कहे थे कि तेरा बैल ठीक हो जाएगा। सुबह उठकर देखे तो बैल एक बकेट भर मूत्र विसर्जन किया था। चारा खाकर स्वस्थ हो गया था।

गोलगामूडि के तुपिलि वेंकय्या 1984 में एक बडा कपडे के पोटली सिर पर रखकर बस के ऊपर डालने केलिए चढ़ रहा था। उसे देखे बिना किसीने राइट कहने से बस आगे चली। इससे सीढी के साथ वेंकय्या एक ओर और पोटली और एक ओर

गिर गई थी। बस साठ फुट चलकर रूक गई थी। लोगों ने समझा कि वेंकय्या गिरने से सिर फट कर मर गया था। लेकिन उसे छोटा सा घाँव भी नहीं हुआ था। वह अपनी पोटली को फिर सिर पर रखकर बस के पास दौड़ने लगा। उसे देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड गए थे। सभी लोग कहने लगे कि यह परिणाम तेरी पत्नी के मांगल्य बल के कारण ही हुआ है। लेकिन उसकी पत्नी पिच्चम्मा को मालूम था कि यह केवल श्री स्वामी जी की कृपा के कारण ही हुआ था। इस घटना के तीन दिन के पहले पिच्चम्मा के सपने में श्री स्वामी जी के भक्त समाधि मंदिर के पूजारी आकर बताए थे कि वे उसे कुंकुम प्रदान करेंगे। उसने अपना हाथ आगे रखने पर उसमें कुंकुम रखे थे। यह सपना नहीं आए तो लोग समझेंगे कि वेंकय्या अपनी मृत्यु से साधारण रूप से बाहर निकल आ गया था।

सितंबर 1983 में समाधि मंदिर के सामने जमीन के ऊपर एक फुट गड्ढा खोदकर उसमें अग्निकुंड रखा गया था।

एक दिन यह वेंकय्या की बेटी, तीन साल की श्यामला और एक बच्ची खेलती हुई धुनि के चारों ओर घूम रही थीं। उस खेल में दूसरी बच्ची श्यामला को जलती अग्निकुंड में ढ़केल दी थी। जलती अग्निकुंड में श्यामला गिर गई थी। दोनों हाथ अग्नि के अंदर चले गए थे। वह लडकी मूत्र का विसर्जन करती हुई जोर से चिल्लाई। बीस फूट दूर से रामय्या ने उस लडकी को देखा था। तुरंत वह दौडते हुए पहुँचा और उसे अग्नि से बाहर निकाल दिया था। पिच्चम्मा भी दौडती हुई वहाँ आ पहुँची। उतनी बडी अग्नि कुंड में गिरने पर भी श्यामला को कुछ भी नहीं हुआ था। सिर के बालों को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

हम कुछ समयों में अपने वश में नहीं रहते हैं। ऐसे समयों में भी श्री स्वामी जी हमारी ही नहीं, अपने बच्चों की रक्षा भी स्वयं करते हैं। 127

वेंकय्या के नाम पर मुट्ठी भर खाना खिलाने वाले की, लाने वाले की अच्छी या बुरी सभी स्थितियों में सब कुछ श्री स्वामी जी ही स्वयं देखते हैं। हर दिन पकाने के बाद कुछ आहार एक पत्ते में या कागज में हमारे घर के बाहर रखकर उपलब्ध सभी अन्य जीवियों को खिलाकर सभी जीवियों में रहने वाले श्री स्वामी जी को समर्पयामि कहकर नमस्कार करने से हर दिन श्री स्वामी हमारे साथ रहेंगे।

अल्लिपुरम के चेमुडुगुंटा आदेय्या मार्चि 1984 में हाथ और पैर निकम्मे और निस्सार होने से पलंग पर ही पडा हुआ था। कोई सहायता करके बिठाने से बैठ पाता था। कोई पकडने से खडा हो जाता था। अच्छी आर्थिक स्थिति नहीं होने के कारण कोई इलाज एक महीने तक नहीं हो पाया था। एक दिन श्री स्वामी जी से प्रार्थना की कि यदि स्वास्थ्य ठीक हो जाए तो आपके दर्शन के लिए आऊँगा। एक दिन में वह खडे हो पाया था। तुरंत श्री स्वामी जी की सन्निधि पहुँचा। पहले लाठी की सहायता

से चलने लगा। तीसरे दिन श्री स्वामी जी सपने में दर्शन देकर बताए थे कि तुम लाठी के बिना चलो। मैं देखना चाहता हूँ। उस सुबह से वह बिना लाठी के चलने लगा।

इनकी पत्नी को पेट में कुछ घाँव के कारण दर्द होने लगा। खाना के पाचने की समस्या भी थी। श्री स्वामी जी के पास पहुँचने के बाद वह ठीक हो गई थी। अब पति पत्नी दोनों गोलगामूडि में परिवार रखकर श्री स्वामी जी की सेवा में लगे हुए थे।

अप्पय्य गेट के निवासी गोनुगुंट राममा अपने को सताने वाले भूत को स्वामी जी किस प्रकार भगाए थे यहाँ बता रही थी। खाना नहीं पसंद होती थी। बहुत कमजोरी थी। शरीर में बहुत दर्द होते थे। शरीर बहुत शुष्क हो गया था। बहुत डॉक्टरों को दिखाकर इलाज करवाने पर भी, दवा खाने पर भी स्वास्थ्य में कोई प्रगति नहीं हुई थी। दोस्तों की सलाह से उसने श्री स्वामी जी की समाधि का संदर्शन की थी। उस दिन सपने में एक व्यक्ति कह रहा था कि छी.. बेवकुफ यहाँ भी आया। चलो। सुबह उठते ही वह स्वस्थ हो गई थी। भूख लगने से खाने केलिए तैयार हो गई थी। एक ही हफ्ते में पूरी तरह स्वस्थ होकर घर वापस पहुँच गई थी।

1983 में गोनुगुंटा राममा जी भैंस के पेट में बच्चा उल्टा हो जाने से तीन दिन से बच्चे को जन्म देने में बहुत परेशान हो रही थी। पशु डॉक्टर को दिखाने से उसने कहा कि बच्चा तीन दिन पहले ही मर चुका था। उसे पेट से निकालने से भैंस बचेगी। भैंस को बचाने के लिए उसने मरे बछडे के बच्चे को पेट से निकाल कर बाहर फेंक दिया था। भैंसे को इंजक्शन करने केलिए वह पूरा प्रदेश साफ करने की आज्ञा दी। राममा जी डॉक्टर से कहने लगी कि श्री स्वामी जी मेरे लिए भैंस के साथ बछडे को भी देंगे। तीन घंटा देखूँगी। तब डॉक्टर ने कहा मरा बछडा कैसे जीएगा? उसने उसकी बातें नहीं सुनी थी। एक तौलिए को पानी में भिगोकर उस तौलिए को बछडे पर ओढ़कर श्री स्वामी जी से विनती की थी कि स्वामी यह बछडा जीवित रहे तो उसे तेरे आश्रम के लिए दे दूँगी। एक दिन दूध लाकर तुझे दूँगी। बाद में श्री स्वामी जी के स्मरण करती हुई वहीं बैठ गई थी। तीन घंटे के पहले ही बछडा अपनी आँखों को खोल दिया। डॉक्टर ने उसे देखकर कहा कि यह तो श्री स्वामी जी की महिमा ही है। बाद चार महीने बीत गए थे। लेकिन कहने के अनुसार राममा ने दूध श्री स्वामी जी को समर्पित नहीं किया था। एक दिन श्री स्वामी जी सपने में आकर पूछा कि तीन महीने हो गए। तुमने मुझे जो बताया वह नहीं दिया था। सुबह ही आश्रम में दूध देकर श्री स्वामी जी को बताई कि बछडा दूध पीना भूल जाने के बाद और एक बार दूध लाकर दूँगी। आर्थिक समस्याओं से भैंसे को बेच दी थी। बछडा का दाम पचास रूपया तय किया गया था। लेकिन वह पचास रूपये श्री स्वामी जी को नहीं दिया गया था। 18-1-85 को श्री स्वामी जी सपने में आकर बताए थे कि तुम मुझे एक सौ पैंतीस रूपए बाकी है। 19-12-85 के अंदर बाकी चुकाना है। तुम तुरंत आश्रम में आकर

चिट्ठी पर लिखवाकर अंगुली के निशान लगाकर जाओ। कागज पर अंगुली के निशान लगाकर चली गई। **तुरंत बाकी नहीं चुकाने से रु. 80 जुरमाना भी चुकाना पडा। श्री स्वामी जी के सामने कहे हुए वादे को हमें कभी भी ठुकराना नहीं चाहिए।** 128

अनपल पाडु के गुंडबोइन नरसय्या के पहली दो संतान जन्म लेते समय ही मर चुके थे। 1983 में तीसरे संतान के रूप में बच्ची जन्म ले ली थी। पाँचवा दिन से वह शिशु कुछ दूध या पानी नहीं पी रही थी। पिलाने की कोशिश करने पर बाहर थूक रही थी। शिशु का शरीर पूरा गरम हो गया था। दूसरे दिन शिशु बहुत कमजोर हो गई थी। हाथ और पैर कमजोर हो गए थे। बच्ची आँखों को बंद कर ली थी। शरीर ठंडा हो गया था। वहाँ बैठे हुए लोग सोच रहे थे कि पहले, दूसरे संतान की तरह यह तीसरी भी मर जाएगी। सभी लोग जोर जोर से रो रहे थे। सभी लोग वहाँ इकट्टे हुए थे। इतने में गोनुगुंटा राममा विषय जानकर बच्ची के पास आयी और बोली श्री स्वामी जी अवश्य इस बच्ची की रक्षा करेंगे। वह बहुत भरोसे के साथ कहने लगी। तुरंत वस को दूसरी माँ के दूध में मिलाकर बच्ची को पिलायी थी। बच्ची उसे पीकर ऐसे ही रह गयी। बाद श्री स्वामी जी की विभूधि बच्ची के शरीर पर और मुँह में डाली थी। उस बच्ची को स्वामी अवश्य बचाएँगे कहकर चली गई थी। एक घंटे के बाद बच्ची ने अपनी आँखों को खोली थी। सुबह माँ का दूध पीना शुरु कर दी थी। बाद में वह स्वस्थ हो गयी थी। श्री स्वामी जी की कृपा से ही वह बच गई थी। इसलिए ही उसे श्री स्वामी जी का नाम रखे थे।

पेनवर्ती के निवासी पंचाक्षरी मस्तानय्या जी बहुत दिनों से श्री स्वामी जी के भक्त थे। स्वप्न संदेशों से अनेक बार श्री स्वामी जी ने उनकी रक्षा करके बचाए थे।

7-7-84 तारीख को श्री स्वामी जी ने मस्तानय्या को स्वप्न दर्शन देकर बताए थे कि पाँच लाश एक बार निकलेंगे। इससे बचने की कोई उपाय नहीं है। बहुत कहने पर भी आप मेरी बातों को नहीं सुन रहे हैं। मस्तानय्या ने मन ही मन सोचा कि श्री स्वामी जी क्यों ऐसा कह रहे है। लेकिन यह स्वप्न वृत्तांत किसी को नहीं बताया था। उनको सुबह 8-7-84 तारीख को मडवनूरु से ट्राक्टर को लेकर पेनवर्ती को जाना था। जाने के लिए मन नहीं लग रहा था। मन में कुछ शंका उत्पन्न हुई थी।

उनके स्वप्न वृत्तांत उनके भाई को मालूम नहीं था। इसलिए उसने कहा अवश्य तुझे ट्राक्टर को लेकर जाना है। जाते वक्त मार्गमध्य में भी मस्तानय्या ने ट्राक्टर को रोक दिया था। लेकिन भाई के दबाव के कारण वह आगे बढ़ रहा था। मद्रास से गोलगामूडि जानेवाली कच्चा रास्ते की मोड में जाते वक्त एक खाद की लारी गलत रास्ते से आकर ट्राक्टर से टक्कर मारी थी। उस समय किसीने अंतरिक्ष से हाथ दिखाते हुए दिखाया दिया। ट्राक्टर हवा में ऊपर उडकर नीचे गिर गई थी। ट्राक्टर में केवल पाँच व्यक्ति बैठे हुए थे।

01. ड्राइवर मस्तानय्या को सिर पर चमडा निकलने से घाँव हुआ था। उससे रक्त बहने लगा। जाँघ में हड्डी नहीं टूटी थी। लेकिन कुछ माँस कट हो गया था।
02. ट्राक्टर का इंजन नीचे गिर गया था। पेट पर गिरने से दबाव के कारण वह मरने के अंतिम क्षण में था।
03. बाकी तीनों को छोटे से घायल होने से बच निकले थे।

रक्त में पडा हुआ मस्तानय्या होश में आकर मरने की आखरी क्षण में रहने वाले भाई को देखा था। श्री स्वामी जी की कृपा से बगले में पडी हुई जाकी को लेकर धैर्य के साथ जाकी को घुमाते हुए भाई पर गिरा ट्राक्टर को चार सेंटिमीटर ऊपर उठाया। इससे उसके भाई श्वास लेने लगा। इतने में वहाँ एक बस आयी थी। वे सभी लोगों की सहायता से उनको अस्पताल में भर्ती करवाए थे। मस्तानय्या के भाई को छोड़कर बाकी चार लोग मरने से बच गए थे। इंजन गिरने की स्थिति को देखने से लगता है कि उन सभी लोगों की हड्डी चूर - चूर हो गयीं होगी।

उस रात श्री स्वामी जी मस्तानय्या के सपने में आकर बता रहे थे कि मुझे ट्राक्टर को ऊपर फेंकना पडा था। पाँचों लोगों को मरना था लेकिन मेरी लीला से ही चार लोग बच निकले थे।

मस्तानय्या अस्पताल से डिस्चार्ज हो जाने के बाद फिर एक बार श्री स्वामी जी सपने में आए थे। उन्होंने बताया कि पहले गोलगालमूडि के आश्रम में जाकर रात सोकर बाद मद्रास जाकर भाई को देखना। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार उस दिन ट्राक्टर को नहीं निकालने से अच्छा हुआ होता। **श्री स्वामी जी कृपा दिखाने पर भी उसे पाने केलिए श्री स्वामी जी की बात पर विश्वास रखकर उनके आदेश के अनुसार हमें आचरण करना होगा।** 129

अगस्त 1982 में श्री स्वामी जी महासमाधि प्राप्त करने के बाद एक दिन मस्तानय्या के सपने में आकर चेतावनी दी कि ट्राक्टर चलाना आज बंद कर लो। सुबह ट्राक्टर को शुरु करने केलिए कोशिश करने पर चाबी दो बार नीचे गिर गयी थी। लेकिन आज खेत की सिंचाई नहीं करने से बाद में उसे पानी नहीं मिलेगा। इससे खेत के मालिक रेड्डी जी को बहुत नुकसान आने की संभावना है। और कोई रास्ता नहीं होने से श्री स्वामी जी को नमस्कार करके अपना पानी शुरु कर दिया था। खेत में एक जगह गड्ढा खोदने से ट्राक्टर का चक्र उसमें फँस गया था। चक्र को निकालने के प्रयत्न में ट्राक्टर उल्टा हो कर गिर गया था। मस्तानय्या स्टीरिंग के नीचे रहकर वहाँ के कीचड के अंदर घुस गया था। कैसे बाहर निकल आया उसे भी नहीं मालूम था। सभी कहने लगे इस तरह की दर्घटनाओं में ड्राइवर बचने की संभावना बहुत कम है। आज तुम्हारे इस दुर्घटना से बचने का एक मात्र कारण केवल श्री स्वामी जी की कृपा ही है।

एक बार आदिनारायणरेड्डी जी को अपने खेत में पानी के लिए चार स्थानों में पॉइंट लगाने पर भी पानी नहीं मिला था। उनके मालिक को बहुत खर्च हुआ था। इससे मस्तानय्या ने श्री स्वामी जी से विनती की कि जिस पाइँट में खोदने से पानी मिलेगा वह पॉइंट मुझे दिखाइए। उस रात सपने में रेड्डी जी के खेत में एक जगह कौए, लोमडी और सारस पानी पीते दिखाई दिए थे। उस स्थान में बोरिंग लगाने से पानी उपलब्ध हुआ था।

यदि आपके मेरी ओर देखने से हम भी आपकी ओर देखेंगे। उनके अनुसार 130
हम भी रहेंगे। यह संदेश श्री स्वामी जी ने बहुत बार दिया था।

ब्रह्मणपल्लि गाँव के बट्रेड्डि श्रीनिवासुलु रेड्डी की पत्नी मनोजम्मा का विवाह होकर चार साल हो गए थे। अब तक कोई संतान नहीं थी। श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन करके 1986 फरवरी में अपनी इच्छा श्री स्वामी जी के समक्ष रखी थी। श्री स्वामी जी सपने में आकर संतान प्राप्ती का आशीर्वाद देकर एक धागा प्रदान किए थे। सुबह उठते ही उसे अपने मंगलसूत्र केसाथ धागा दिखाई दिया था। सपने में दिया हुआ धागा उसको प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देना उसके लिए दूसरा अनुभव था।

इब्रहिमपट्टनम का निवासी पि. माधवराव एलक्ट्रिकल इंजनीर थे। अपने जीवन में अनेक कष्टों को सहकर ऊब गए थे। मनःशांति के लिए दैवचिंतन की ओर मुड गए थे। बेजवाडा कनक दुर्गा की आराधना करने लगे थे। दुर्गा देवी का साक्षात्कार उनको हुआ था। लेकिन मनः शांति उनको नहीं मिली थी। उस स्थिति में दुर्गा की कृपा से भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी के चरित का पारायण किए थे। तुरंत मानसिक वेदना दूर होकर मनः शांति उन्होंने पायी थी। तुरंत श्री स्वामी जी के सन्निधि के लिए हर महीना रू 50 दक्षिण भेजने लगे। श्री स्वामी जी के चरित का पारायण और पूजा शुरु कर दिए थे। श्री स्वामी जी के आराधनोत्सव के लिए परिवार के साथ आकर एक हफ्ता श्री स्वामी जी की सेवा किए थे। 24-8-85 में श्री स्वामी जी के संगमरमर मूर्ति के आविष्करण के दिन बहुत भीड होने से उस मूर्ति और समाधि के दर्शन नहीं कर पाए थे। दूर खडे हुए थे। उस समय श्री स्वामी जी ऊपर उठकर उनसे बोले यहाँ क्या देख रहे हो। सभी में मुझे देखो। बाद अदृश्य हो गए थे। उसके बाद अन्न संतर्पण में जाकर भाग लिए थे।

उन्होंने यह भी बताया था कि मुझे डेढ़ साल से हृदय में दर्द है। बहुत समय तक ध्यान में बैठ नहीं सकता हूँ। डॉक्टरों से दिये गये दवाएँ निष्फल निकले। मुझे प्राणापाय लगने से डर लगने लगा। मेरी बाधा को हराकर मेरा पूरे समय ध्यान में खर्च करने के लिए शक्ति प्रदान करने की विनती श्री स्वामी जी से की थी। समाधि के दर्शन करके मेरी विनती सुनाई और दुःख से आश्रम से बाहर निकल आया था। वहाँ से घर वापस आने के बाद 15 दिन रक्त अतिसार हो गया था। 16 दिनों के बाद

अतिसार से उपशमन पाया था। हृदय दर्द भी गायब हो गया था। लक्ष्मी नारायण का रुप सपने में दिखाई दिया। अब पूर्व से बहुत अच्छी तरह ध्यान स्थिति में बैठने की क्षमता आ गयी थी।

अगस्त मास में श्री साईनाथ सपने में आकर कमरे के अंदर साफ है लेकिन ऊपर छत पर कुछ गंदगी है। उसे साफ करने पर मैं अंदर आ सकता हूँ। वह मुझे श्री साईनाथ द्वारा किया गया आत्म प्रबोध के रूप में मानता हूँ।

सितंबर 85 से श्री स्वामी जी आध्यात्मिक प्रबोध करते हुए मुझे उसी रास्ते पर ले जा रहे थे। बहुत अच्छी तरह ज्ञान प्रबोध, हृदय स्पंदन, मनःशांति आदि मुझे दे रहे थे। आध्यात्मिक विषयों को बताते हुए, दृश्यों के द्वारा कर्म प्रक्षालन करवा रहे थे। श्री स्वामी जी के अखंड दिपाराधना करके उनकी महिमा और विश्वरूप का संदर्शन करके मैं आनंद पा रहा था। इस जन्म के लिए इससे बढ़कर और क्या चाहिए?

स्वामी जी यदि आप समाधि स्थिति पा लेते तो हमारी गति क्या होगी? पूछने पर स्वामी जी कहते थे कि सूर्य चंद्र जब तक रहते हैं तब तक हम भी रहेंगे। इसे सुनकर भक्तों को नहीं मालूम हुआ था उसका मतलब क्या है? कालांतर में श्री स्वामी जी के समाधि स्थिति पाने के बाद में समाधि से निकलने वाली अनेक संदेश और भक्तों की समस्याओं के समाधान लीलाओं के रूप में सबके सामने आ रही हैं। श्री स्वामी जी की का दर्शन नहीं करने पर भी, दूर से अपने घर में श्री स्वामी जी के चित्र के ढाँचे के सामने बैठकर करने वाली विनतियोँ को और कष्टों को भी श्री स्वामी जी सुन रहे है। उनकी समस्याओं को ठीक करके उनकी लीला का प्रदर्शन कर रहे हैं। यह स्वामी जी के भक्त रक्षणा परतंत्रता सबको आनद में डाल देती है।

नेल्लूरु के सरकारी अस्पताल में एम. एन. ओ. सी. वी. सुब्बय्या जी श्री स्वामी जी के साथ उनके अनुभव इस प्रकार बता रहे थे।

1977 में तुफान के कारण हमारा घर गिर गया था। घर के दो तरफ मिट्टी से, बाकी दो तरफ ईंट से दीवार बनाकर रहने लगे। 1978 में और एक बार तूफान आया था। तीन दिन भयंकर तूफान चला था। बिजली नहीं थी। तीव्र हवा से घर दीवारों सहित हिल रहा था। घर छोडकर कहीं जाने की स्थिति भी नहीं थी। इस परिस्थिति में श्री स्वामी से विनती की कि स्वामी हमरा घर पिछले तूफान में गिरने से बहुत कष्टों को झेले थे। अब और फिर एक बार वहीं स्थिति उत्पन्न होने वाली थी। हम इस स्थिति में घर छोड़कर नहीं जाना चाहते हैं। आपकी कृपा मेरे ऊपर प्रसार कीजिए। विनती करके रात सो गया था। नींद में एक सपना देखा था। श्री स्वामी जी के आने की सूचना मिली थी। दीप जलाकर देखा था। कोई नहीं थे। श्री स्वामी जी के चित्र को प्रणाम करके सो गया था। वह तूफान किस ओर चला गया मालूम नहीं था। हमारे गाँव में तूफान के कारण अनेक घर गिर गए थे। लेकिन मेरा घर वैसा ही

रह गया था। उनके दर्शन के भाग्य से मेरा घर सुरक्षित रह गया था। यह केवल श्री स्वामी जी की कृपा के कारण ही हुआ था।

श्री स्वामी जी शरीर के साथ रहते समय किसी को अपने पादों को छूकर नमस्कार करने की अनुमति नहीं देते थे। मैं उनके पाद पद्मों को पकडकर नमस्कार करने की मौका के लिए इंतजार कर रहा था। एक महान भक्त श्री स्वामी जी के पादों को छुए बिना ही महासमाधि पा चुके थे। श्री स्वामी जी के द्वारा उस प्रकार की मेरी इच्छा को पूरी करने केलिए मौके के लिए इंतजार करता रहा था।

अक्तूबर 85 में मैंने एक सपना देखा था। उस सपने में वेंकय्या स्वामी मेरे आगे से चल रहे थे। मैंने स्वामी जी के पाँव पकडकर उनको आगे नहीं चलने दिया था। श्री स्वामी जी अपने हाथ से सिर के बालों को संभालते हुए हँसते हुए वैसे ही खडे हुए थे। मैंने तो बहुत समय तक उनके पाद पद्मों को पकडकर नमस्कार किया था। इतने में मेरा सपना टूट गया था। सपने का वह दर्शन मेरे हृदय पर बहुत गहरा प्रभाव डाला था। उस दर्शन की घटना याद आने पर मैं आनंद विभोर हो उठता हूँ। मेरी तीव्र इच्छा को श्री स्वामी जी ने उस प्रकार पूरी कर दी थी। उसके बाद में भी श्री स्वामी जी ने अनेक संदर्भों में मेरे साथ रहकर मेरी सहायता की थी। 1983 की एक विचित्र लीला आपको बताना चाहता हूँ।

मेरे गोल्लकंदुकूरु में दो मील दूर पर खेत हैं। खेतों केलिए पानी की जरूरत होने से इंजन लगाकर कनुपूरु नाले से पानी ले रहा था। एक दिन इंजन के तेल का पाइप और ऑटोमैजरू को डाकुओं ने चुरा लिया। मेरे कामों की व्यस्थता के कारण हर दिन इंजन के लिए खेत में गस्ती करते रहने का काम मेरे लिए असंभव था। इस प्रकार चोर हर दिन आकर इंजन का सामान चुराते रहने से खेतीबाडी करना बहुत मुश्किल हो जाता है। हर सप्ताह में एक दिन गोलगामूडि जाकर श्री स्वामी जी का दर्शन करके आना मेरे लिए आदत बन गयी थी। गोलगामूडि जाकर मेरे खेत में हुई घटना के बारे में बताया था। वहाँ के पुजारी नागय्या जी स्वामी जी के धागे को देकर बताए थे कि इस धागे को विश्वास केसाथ इंजन को बाँध दो। चोर नहीं आएँगे। आने पर भी कुछ भी नहीं लेंगे। मैंने स्वामी जी से प्रार्थना की कि मेरे खेत और इंजन का भार आपका ही है। चोर आकर चोरी करने से मैं उस नुकसान को नहीं संभाल सकता हुँ। धागा लाकर इंजन को धागा बाँध दिया था।

बाद में कुछ दिनों मैं इंजन के पास ही नहीं गया था। दिसंबर 84 में मेरे साथी किसानों ने कहा कि दो दिन के पहले खेत के इंजन के सामान निकाल कर पडे हुए हैं। जाकर देखो। मैं डरते हुए खेत की ओर भागा। इंजन के सभी सामान निकाले हुए थे लेकिन एक सामान नहीं ले गया था। इससे क्या कह सकता हूँ। स्वामी जी ही मेरे रक्षक है।

श्री स्वामी जी ने हम जैसे भक्तों से माँगने वाली दक्षिणा केवल समय, मन ही है। उनको लौकिक व्यवहार में व्यर्थ न करके हमारे समय को श्री स्वामी जी के स्मरण में बिताने पर श्री स्वामी जी हमारी रक्षा अवश्य करते हैं। इसका उदाहरण यहाँ मैं देना चाहता हूँ।

मनुबोलु गाँव के नट्टेडि लक्ष्मम्मा को स्वप्न में एक दिन यमकिंकर दिखाई दिए थे। रात दिन उसे उनसे डर लगता था। साथ किसी आदमी को सदा रखती थी। श्री स्वामी जी की समाधि दर्शन करके सुबह 5 और शाम को 5 प्रदक्षिणा करके बाकी समय बातों से बिताती थी। 20 दिनों के बाद में भी कोई प्रयोजन नहीं निकला था। एक भक्त की सलाह से सुबह 108 और रात को 108 प्रदक्षिणा करके रोज बाकी समय में श्री स्वामी जी के स्मरण में बिताने लगी थी। तीसरा दिन मद्याह्न के समय श्री स्वामी जी के अग्नि कुंड के पास 12 साल का एक लडका सामने आकर उसके हाथ पर विभूधि रखा था। उस विभूधि को मुँह में डालते ही वह लडका वहाँ से अदृश्य हो गया था। उस क्षण से उसका पूरा भय निकल गया था। लडके के रूप में वह लडका आकर उसको अनुगृहीत किए थे। उसे बहुत दिन पेट में दर्द और कुछ समस्याएँ भी थीं। श्री स्वामी जी सपने में दर्शन देकर बताए थे कि उसे तीन महीने का समय है। विश्वास के साथ मेरा स्मरण करो। 8 स्वामी जी का स्मरण और मौन ही उसे समस्याओं से बाहर ले आए थे।

कोवूरु ऐ.ऐ.टी में काम करने वाले वैद्युल सुधाकर जी का अनुभव इस प्रकार है। 1983 जनवरी में मुझे 240/89 मेरा रक्त दाब था। उतना रक्त दाब होने से अनेक हृदय संबंधी या अन्य बीमारियाँ आने की संभावना है। लेकिन मुझे ऐसी बीमारियोँ की कोई सूचना नहीं होना डॉक्टर को भी आश्चर्य में डाल दिया था। डॉक्टर के सहायक ने बताया कि आपकी दृष्टि पर यह प्रभाव डालता है। आपकी दृष्टि का लोप होने की संभावना है। चिकित्सा करने पर भी ठीक नहीं होगा। मद्रास जाकर इलाज करवाया था। जीवन भर नमक और मसाले के बिना खाना खाना चाहिए। आवश्यक नियमों का पालन करना चाहिए।

ऐसी स्थिति में मैंने साईलीलामृत, गुरुचरित के साथ अवधूत लीला नामक श्री वेंकय्या स्वामी जी का चरित पढ़ना शुरू किया था। तुरंत गोलगामूडि जाकर श्री स्वामी जी के दर्शन किया था। उस रात सपना आया था कि मेरे मित्र के घर में एक साधु ने मुझे पवित्र जल पीन के लिए दिया था। सुबह चार बजे का समय था। श्री स्वामी जी की पूजा के लिए समाधि मंदिर के पूरब दिशा में में आकाश में गोल आकार में लाल रंग का एक बडा प्रकाश दिखाई दिया था। उस प्रकाश को मेरी पत्नी को भी दिखाया था। वह प्रकाश के बारे में बहुत सोचने पर भी हमें उसका पता नहीं चला था। पूजा के बाद आकर देखे थे। तो वह प्रकाश गायाब हो गया था। श्री स्वामी जी

उस प्रकाश के रूप में दर्शन दिए थे ऐसा सोचकर बहुत खुश हो गए थे। उस दिन के बाद मेरा रक्त दाब कम होता रहा। कुछ ही दिनों में मैं ठीक हो गया था। नमक और मसाल भी खाना शुरु किया था।

लेकिन डॉक्टर की सूचनाओं के अनुसार आहार और विहार संबंधी नियमों का पालन नहीं करने से 1985 दिसंबर में और एक बार फिर रक्त दाब बढ़ गया था। बहुत खतरनाक स्थिति में पहुँच गया था। डॉकटरों ने बताया कि 24 घंटे तक हम कुछ नहीं बता पाएँगे। बचने की आशंका नहीं है। मेरी पत्नी ने श्री स्वामी जी से प्रार्थना की थी। श्री स्वामी जी की कृपा से और एक बार स्वस्थ होकर मरने से बच गया था। नियमों का पालन करने केलिए निर्णय ले लिया था।

पोदलकूरु के चिरमन वेंकय्या 1984 में दिसंबर से दो महीनों से खाना नहीं खाने से बहुत कमजोर पड गया था। दो व्यक्ति पकडने से ही चल पा रहा था। खांसी, दामा के साथ थूकने से मुँह से रक्त पड रहा था। पोदलकूरु, बुच्चिरेड्डि पालेम के अनेक एम. बी. बी. एस डॉकटरों से इलाज करवाने पर भी कुछ फायदा नहीं हुआ था। कुछ रिस्तेदारों की सलाह से श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन किया था। दूसरे दिन धीरे धीरे अपने आप चलने लगा। 5 वाँ दिन रात श्री स्वामी जी सपने में उसके फेफडों से एक घाव को निकालने का प्रयत्न कर रहे थे। उस घाव से निकलनेवाला रक्त और पीव मुँह से बाहर निकल रहा था। तुरंत उसे नींद खुल गई थी। बहुत खाँसी आई थी। बडी मात्रा में कफ, रक्त और पीव बाहर आ गया था। 90 प्रतिशत स्वस्थ हो गया था। 8 वा रोज सपने में स्वामी जी ने उस घाव के अंदर के बुरे पदार्थों को निकालकर एक पत्ते पर रखकर दिखाए थे। सुबह होते ही वह ठीक हो गया था। बाद में चार दिनों में ही वह पूरी तरह स्वस्थ बन गया था। आज भी वह स्वामी जी की समाधि की सेवा करता है।

नेल्लूरु एस. पी. बंगला के बगल में रहने वाला श्री पटनम खादर मस्तान इस प्रकार बता रहे थे। फरवरी 1985 मों मुझे रक्त अतिसार आने के कारण बहुत कमजोर हो गया था। मद्रास के केंसर अस्पताल वालों ने मुझे कैंसर निर्धारण करके तुरंत शस्त्रचिकित्सा के द्वारा मल का आंत्र बाहर निकाल कर एक डिब्बे में उसे लटकाना पडता है। उस डिब्बे को रोज साफ करना पड़ता है। उस प्रकार करने के लिए दस महीने तक अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। ठीक होने की संभावना बहुत कम है। कुछ समय यह चिकित्सा प्राणांतक भी हो सकता है। तब मैंने सोचा था कि अस्पताल में मरने से घर वापस आना श्रेष्ठ है। इसलिए वापस आ गया था। बाद में ओंगोलु से भी कुछ दवा माँगकर खाया था। ठीक नहीं हुआ था। एक बार श्री स्वामी जी याद आए थे। उस रात श्री स्वामी जी के सामने सहायता के लिए रोने लगा।

उस रात श्री स्वामी जी मेरे सपने में आकर पलंग पर पडे मेरे शरीर को मखमल कपडे से पौंछ रहे थे। जागकर देखा था। श्री स्वामी जी मेरे पलंग से उठकर जा रहे थे। उस स्थिति में मैं स्वामी जी को जोर से पुकारना चाहा था। नहीं पुकार सका। मेरे पाँव भी आगे नहीं बढ़ पाए थे। सुबह होते ही मेरे शरीर से रक्त बहना बंद हो गया था। एक ही सप्ताह में मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गया था। श्री स्वामी जी का ऋण मैं कैसा चुका सकता हूँ।

निजी इच्छा से आँसू बहने वाले भक्तों के कष्ट जितने बडे होने पर भी श्री स्वामी जी उनको दूर करके उनके जीवन में शांति प्रदान करने के अनेक अनुभव हमारे सामने दिखाई देते हैं। श्री रामकृष्ण परम हंस जी बताए थे कि इच्छा से आँसू के बिना करने वाली प्रार्थनाएँ व्यर्थ है।

नेल्लूरु के चरुकूरु राजम्मा को एक समय अपेंडिसैटिस ऑपरेशन हुआ था। कुछ सालों के बाद में ट्यूबक्टेमी ऑपरेशन हुआ था। 1985 में पेट में दर्द, खाने से उल्टी होना, हमेशा सिर दर्द, पेट में एक गाँठ भी था। ऑपरेशन करवाना था। तीसरे बार पेट पर ऑपरेशन करवाने के लिए वह बहुत डर रही थी। कुछ मित्रों के सलाह लेकर श्री स्वामी जी के दर्शन केलिए आई थी। रोज 108 प्रदक्षिणा करके अपना समय लौकिक काम में नहीं बिताकर श्रद्धा से श्री स्वामी जी के आश्रम में सेवा के काम करती हुई बिता रही थी। खाना को देखते ही उल्टी आने वाली उसे समाधि दर्शन के बाद खाने में रुचि जागृत हुई थी। खाना खाना शुरु कर दी थी। पाँचवा दिन श्री स्वामी जी की सेविका स्वर्गीय तुलसम्मा जी सपने में आकर आल्वारु गड्डा खाने की सलाह दी थी। उसे भी खा ली थी। उसकी स्वास्थ्य सुधरने लगी थी। लेकिन श्री स्वामी जी ने उसे घर जाने केलिए नहीं कहा था। इसलिए वह आश्रम में ही रह गयी थी। एक बार स्वामी जी की समाधि के पुजारी नागय्या जी सपने में आकर बताए थे कि तुझे कोई रोग नहीं है। हमेशा स्वस्थ रहोगी। लेकिन उन्होंने भी उसे घर जाने केलिए नहीं कहा था। वहीं रह गयी थी। दो दिन के बाद और एक स्वामी का सेवक सपने में आकर तुझे कोई रोग नहीं है। यह पत्ता किसी को देने पर वह भी स्वस्थ हो जाएगा। कहकर एक पत्ता उसे दिया। उसके बाद वह अपना घर चली गई थी। तुरंत अंबेडकर संस्था में रु 500 के वेतन पर दर्जी की नौकरी भी मिल गई थी। श्री स्वामी जी स्वस्थता के साथ भुक्ति भी उसे प्रदान किए थे।

गोलगामूडि के निवासी गोट्टेटि शेषय्या इस प्रकार बता रहे थे। मेरे खेत में फसल उग गया था। खेत में चौकीदार नहीं होने के कारण रात के समय जंगली सुअर आकर खेत को बरबाद में कर रहे थे। खेत में सोने से मच्छर, ठंड और बारिश के कारण मेरा स्वास्थ्य खराब होकर मैं अस्वस्थ होने के भय से खेत में सोने का विषय को छोड दिया था। सीधा श्री स्वामी जी के पास जाकर उनसे प्रार्थना की थी कि मेरी

समस्या का समाधान आपके पास ही है। वे जंगली सुअर फसल खालेने से मैं आपको मनौती के अनुसार दो बोरे अनाज नहीं दे पाऊँगा। आप जो चाहते हैं वहीं कीजिए। बाद घर आकर सो गया था। तुरंत सपने में एक 20 साल का युवक जो खाकी पतलून, हरे रंग का बनियन और टोपी पहनकर श्री स्वामी जी की समाधि से निकलकर मेरी ओर तीव्र गति से आया था। मेरे हाथ से लाठी लेते हुए पूछा था कि वह सुअर कहाँ है? अब भी क्या आ रहा है? वह लाठी लेकर और रास्ते से चल गया। मैंने समझा कि वह खेत के चौकीदारी करने केलिए नहीं आया है। इसलिए मैने और एक रास्ते से उसके पीछे करते हुए खेत की ओर चला। वह युवक मेरे जाने के पहले ही खेत में पहुँच गया था। मुझे अवगत हो गया था कि वह मेरे खेत का देखबाल कर रहा था। इतने में मेरा सपना टूट गया था। उस दिन से मैं चौकीदारी के लिए खेत में नहीं गया था। खेत में सुअर भी नहीं आए थे।

सपने में मैंने मनौति के अनुसार कल सुबह दो बोरे अनाज जिनको मैं श्री स्वामी जी को देना चाहा था ले जाकर स्वामी जी की सन्निधि के पास रखा था। स्वामी जी के सेवक बुज्जय्या पूछ रहे थे कि कितने बोरे अनाज स्वामी जी को बाकी थे? कितने लाया था? तुरंत पूजा करने वाले पुजारी बरिगेल नागय्या ने बताया कि चार बोरे बाकी थे। दे देगा, लिख दो। सपना खुल गया था। मैंने समझा कि चौकीदारी केलिए दो बोरे स्वामी जी ने माँगे थे। इसलिए उनको चार बोरे अनाज दे दिया था।

सच भक्ति विश्वास, हृदयपूर्वक आँसू से की गयी प्रार्थना श्री स्वामी जी के हृदय को द्रवित करके हमें प्रसन्न कर देती है। यह अनुभव अक्षर ज्ञान नहीं होने वाली एक सेविका के द्वारा हमें अवगत होता है।

गोलगामूडि एरुकलपालेम के निवासी नलुबाइ सुब्बरामय्या की पत्नी सिद्दम्मा का विवाह होकर 8 साल हो जाने पर भी अब तक कोई संतान नहीं हुई थी। संतान केलिए बहुत वैद्य, देवी देवताओं की मनौति, डॉक्टरो से इलाज जितने करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ था। किसीने कहा था कि तरुणवायी के मस्तान ओलिया समाधि के दर्शन करके तीन साल तक वहाँ रहने से कुछ फायदा हो सकता है। ज्वर होने से उसे नेल्लुरु इंदिरम्मा डॉक्टर के पास ले गए थे। सात दिन बिताने पर भी एक डिग्री ज्वर भी कम नहीं हुआ था। आहार नहीं होने के कारण मरने के भय से घर वापस आ गई थी। श्री वेंकय्या स्वामी की याद आकर उनके पास जाने की अपनी इच्छा प्रकट की थी। घर वाले ने गरम पानी से स्नान करके जाने की सलाह दी। बहुत बार कोशिश करने पर भी भट्टी में आग नहीं जला। इससे वहाँ के तलाब में स्नान करके स्वामी जी के प्रदक्षिणा करके रात आंजनेय स्वामी के मंदिर में आकर सो गयी थी। सुबह होते ही उसका पूरा ज्वर कहीं चला गया था। खाना मंगवाकर पेट भर खाई थी।

इस घटना के बाद उसे स्वामी जी के ऊपर पूरा विश्वास जाग उठा था। श्री स्वामी जी संतान प्रदान करने तक यहीं रहकर उनकी सेवा करूँगी। ऐसा निश्चय करके वहीं आश्रम के पास ही रहने लगी। वहीं खाना पकाकर पेड के नीचे ही रहती हुई श्री स्वामी जी की सेवा करने लगी थी। मनुष्यों से नहीं मिलती थी। श्री स्वामी जी का स्मरण करती रहती थी। हर दिन 108 प्रदक्षिणा करती थी। एक दिन सपने में देखी थी कि खेत में सुअर पड़ने से उसे किसान मार रहे थे। मारने वाले किसानों को रोकती हुई उनसे विनती कर रही थी। तब श्री स्वामी जी सामने आकर बता रहे थे कि इसके द्वारा ही तुझे ये कष्ट आ गए थे। इसे जिंदा नहीं रखना है कहकर श्री स्वामी जी ही उस सुअर को पकड़

कर समुद्र में फेंक दिए थे। 35 दिन हो जाने पर भी श्री स्वामी जी संतान के विषय में उसे भरोसा नहीं दिये थे। इस कारण से हृदय से बहुत दुःखी होकर भोजन खाना या दूध पीना भी बंद कर दी थी। उस दिन सपने में श्री स्वामी जी का सेवक कोर्रपाटी बुज्जन्ना जी ने आकर उसे चूडियाँ प्रदान किए थे। लेकिन उसे दुःख हुआ था कि स्वामी जी स्वयं आकर उसकी इच्छा को पूरा करने का वादा नहीं दिए थे। वह सोच रही थी कि मैं इतने दिनों से जो सेवा कर रही थी वह व्यर्थ हो गयी थी। मेरा जन्म भी व्यर्थ हो गया था। इस तीव्र व्यथा से वह खाना भी छोड दी थी। उस रात श्री स्वामी जी सपने में आकर मुट्ठी भर सुपारी के फल उसके आंचल में डालते हुए प्रेम से कहा मैंने तेरे लिए संतान दे दिया था। अब तुम जाकर खाना खा सकती हो। वह तब से अपनी दीक्षा को समाप्त करके अपना घर चली गई थी। बाद में स्वामी जी के कहने के अनुसार संतान हुआ था। उस शिशु को स्वामी जी का नाम रखना चाहा। श्री स्वामी जी सपने में आकर बताए थे कि पहले संतान को अपनी देवता का नाम रखो। चाहे तो दूसरे संतान को मेरा नाम रख सकती हो। अभी भी उसे किसी बाधा होने पर श्री स्वामी जी की समाधि के पास रात सोकर स्वामी जी से प्रार्थना करने पर उसकी प्रार्थना को अवश्य स्वामी जी सुनते है। सपने में आकर उसकी इच्छा पूरी कर देते हैं। भक्तों के विश्वास को हम कैसा वर्णन कर सकते है?

1985 में वल्लपुरेड्डी आदिनारायण रेड्डी जी को सभी कष्ट एक ही बार आ गए थे। उनके ट्राक्टर को दो बार दुर्घटन घटी थी। पत्नी को ऑपरेशन हुआ था। फसल में बहुत नुकसान आया था। उस स्थिति में रेड्डी जी ने श्री स्वामी जी से विनती की कि स्वामी मेरे कष्टों का अंत नहीं है क्या। उस रात उन्हें एक विचित्र सपना आया था। उनके साथ और दो आदमी तीव्र गति से प्रवाहित एक नदी के किनारे पर खडे हुए थे। एक आदमी नदी में उतरकर वहाँ से नदी के प्रवाह में गिर कर जा रहा था। उसे बचाने के लिए दूसरा आदमी भी नदी में उतर गया था। दोनों नदी के प्रवाह में चले गए थे। रेड्डी जी वहीं खडे होकर सुरक्षित देख रहे थे।

कर्म फल नदी के प्रवाह के समान है। यदि उन आदमियों की तरह व्यवहार करे तो प्रवाह में चले जाने की और प्राण खो जाने की संभावना है। सहन शीलता के 131
साथ निरंतर नामस्मरण के द्वारा कर्म फल रूपी काल प्रवाह में फँस कर चले जाने तक, बुरे कर्म के प्रवाह कम होने तक सहन शीलता से रहे तो आसानी से परिवार रूपी नदी को पार कर सकते हैं। यह सत्य का आत्मबोध रेड्डी जी को इस घटना के द्वारा हुआ था।

इनकी पत्नी का नेल्लूरु में किया गया ऑपरेशन न काम आने से और फिर ऑपरेशन करवाने के लिए मद्रास ले गए थे। रेड्डी जी ने स्वामी जी से प्रार्थना की। उस रात सपने में उनके गाँव के एक छोटा सा मेकानिक आकर बताया कि मैं आपके लिए पंनपर्ती गया था। आप वहाँ नहीं थे। वहाँ से यहाँ आया था। शिबि चक्रवर्ती जैसे लोगों को विभूदि देकर तीन महीने के अंदर ठीक करना चाहा था। लेकिन सात महीन लगने की संभावना है। तब उसने कहा कि मेरी कृपा से तेरा कर्म प्रक्षालन करुँगा। लेकिन समय लगेगा। सहन शीलता के साथ रहो।

धन खर्च करने के संदर्भ में रोशरेड्डी से कहा गया था कि **एक रूपया कमाना बहुत मुश्किल है। इसलिए हमें उसे बहुत सावधान से उपयोग करना है।** यह एक ओर लौकिक धन और एक ओर पारमार्थिक धन का संकेत है। **श्री स्वामी जी ने चेतावनी दी कि बहुत परिश्रम करके पुण्य करने से ही सद्गुरु की सन्निधि मिलती है।** 132
उसे व्यर्थ किए बिना हमें व्यवहार करना चाहिए। इस सन्निधि है। ऐसी जागुरूकता के साथ निरंतर जीना चाहिए। यह सन्निधि को सार्थक बनाना चाहिए। धर्म और अधर्म के बारे में श्री स्वामी जी बहुत सुंदर तरीके से बताए थे। स्वामी जी के दो सेवक आपस में लडने लगे। एक का धर्म है दूसरे का अधर्म है। धर्मात्मा के पक्ष में रहकर रोशरेड्डी जी ने अधर्मवाले से धैर्य के साथ बोला कि तुझे इस प्रकार बोलना नहीं चाहिए था। हमें उनके मामले में क्यों घुसना है ऐसा सोचकर वे चुप नहीं रहे थे। उस दिन रोशरेड्डी से श्री स्वामी जी बोले कि तुझे इस दिन एक लोक का पुण्य मिला है।

इसका अर्थ यह है कि अधर्म का खंडन करके धर्म के साथ रहना हमारा कर्तव्य है। इस प्रकार हमारे कर्तव्य को निभाने से हमें अनंत पुण्य मिलता है। उसी 133
प्रकार अधर्म को यथाशक्ति विरोध किए बिना रह जाने से पाप मिलता है।

नेल्लूरु संत पेटा के कोणिदल नागेश्वर राव बहुत दिनों से श्री स्वामी जी की सेवा कर रहे थे। श्री स्वामी जी के विभिन कार्यक्रमों को अपनी लॉरी और ट्राक्टर थे, जाकर अपने आप चलाकर सेवा करते थे। वे अपने अनुभव इस प्रकार बता रहे थे। 1985 अगस्त 21 को श्री स्वामी जी के आराधनोत्सव के लिए आवश्यक मिट्टी, लकडी, षामियाना, पात्र, विभिन्न सामान रात दिन अपने वाहनों में ले आ रहे थे। 23 रात नेल्लूरु से फूलमालाएँ, केले के वृक्ष के साथ और कुछ सामान ट्राक्टर में रखकर

ले आ रहा था। गत दो दिन से नींद नहीं थी। रात 12 बज रहा था। कल्लरु पल्ली पुल पार करके बाद के रास्ते पर ट्राक्टर चला रहा था। अचानक मुझे नींद आ गयी थी। बाद में कुछ समय के बाद नींद खुलने पर मेरे सामने 20 गज दूर पर एक बडा गड्ढा दिखाई दिया था। वह गोलगामूडि के पुल पर पडा गड्ढा था। बहुत ताकत के साथ उस गड्ढे को पार कर दूसरी ओर पहुँचा। लगभग तीन किलोमीटर दूर संकरी रास्ता था। रास्ते में अनेक मोड थे। गोलगामूडि पुल तक सोते हुए किस प्रकार पहुँचा था सोचने पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था। नींद में मेरी रक्षा करके मेरे प्राण बचाने वाले मेरे हृदय निवासी करुणामय श्री वेंकय्या स्वामी जी के प्रति आजन्म ऋणी ही हूँ। **सच कहे तो हम अपने तन को श्री स्वामी जी को समर्पित करने पर उसकी रक्षा वे किस प्रकार करते है यह लीला के द्वारा हमें मालूम होता है।** 134

नेल्लूरु संतपेटा के ताल्लूरु श्रीनिवासुलु अपने को स्वामी जी किस प्रकार प्राण भिक्षा प्रदार किए थे यहाँ वर्णन कर रहे हैं।

1986 मई महीने में मेरे भवन के ऊपरी भाग में दो कमरे और एक बरामदे का निर्माण किए थे। नीचे के भवन से पुराने बिजली के तारों को ऊपर के दो नए कमरों में ले आकर दो बल्बों को रखे थे। बरामदे में बल्ब न लगाकर एक होल्डर रखे थे। मई 3 को शुभदिन होने से मुहर्त रखकर नए कमरों में दूध उबालने का कार्यक्रम रखे थे। मैं और मेरी पत्नी की बहिन दोनों कमरों को साफ कर रहे थे। मेरी पत्नी नल से पानी लाकर दे रही थी। मैं स्नन करके गीले कपडों से ऊपर कमरे में आया था। एक कमरे में बल्ब जल रहा था। बरामदे में जो होल्डर पर बल्ब नहीं था उसे बल्ब लगाने के लिए उसे पकडा था। वह बिजली का तार चूहा काटने से उससे बिजली आ रही थी। मैं उसे पकडते ही मुझे षाक लग गया था। मैं जोर से चिल्ला उठा। बिजली के तार को मेरे हाथ से निकालने का प्रयत्न विफल रहा था। मैं जमीन पर गिर कर हाथ पैरों को हिला रहा था। जमीन पर पानी रहने से बिजली का प्रभाव मेरे शरीर पर बहुत अधिक पडा था।

इतने में मेरी पत्नी की बहिन बरामदे पडा हुआ मुझे देखकर सहायता के लिए आई थी। उसे भी षाक लग गई थी। वह मेरी सहायता के लिए चिल्लाती हुई नीचे भाग गई थी। उसकी बात सुनकर मेरी पत्नी भी अन्य कमरों में सोने वालों को जगाकर वहीं वह बेहोश हो गयी थी। वहाँ के सभी उसे पलंग पर सुलवाए थे। इतने में किसीने प्लग से तारे निकाल दिए थे।

यह सब पाँच मिनिट के अंदर हो गया था। इतने में मेरी स्थिति का अंदाजा कोई नहीं लगा सके। मैं मरने केलिए तैयार था। लेकिन होश में ही था। तब मैंने श्री स्वामी जी से प्रार्थना की कि क्या आप मुझे इस प्रकार की मृत्यु को प्रदान करना चाहते हैं? इतने में कोई आकर मेरे हाथ के तार को निकाल दिया था। मैं उठकर इधर उधर

चलने की कोशिश की थी। तब बगल के कमरे का बल्ब रूक गया था। नीचे से कुछ लोग ऊपर बरामदे में आए थे।

विचित्र की बात है कि 1. तब तक मेरे हाथ से लटका हुआ बिजली का तार अपने आप निकल गया था।

2.उससे भी आश्चर्य की बात यह है कि इंसुलेषन चले जाने से कटे हुए तार में बिजली का प्रसार होने पर भी घर फर्श पर पूरा पानी होने पर भी पूरे घर में बिजली का षाक आ जाना था। लेकिन मैं उसी स्थिति में दो तीन पुट दूर चल सका। बाद में बल्ब जलना बंद हो गया था। किसीने प्लग से उस समय तार निकाल दिए थे।

बिजली का षाक से मेरा पूरा हाथ काले रंग में हो गया था। उसे देखकर डॉक्टर ने बताया कि इस प्रकार हाथ जलने से चमडे से पानी उबल आना था। ऐसा नहीं आने का अर्थ तुझे किसी दैवीय शक्ति ने बचा दिया है। तेरा हाथ तीन या छे महीने में साधारण स्थिति में आ जाएगा।

इंजक्सन देते हुए, हड्डी टूटने से पट्टी भी बांध दिए थे। गरमी के दिन होने से पट्टी को निकाल कर श्री स्वामी जी के ऊपर ही भार रख दिया था। 14 मई में गोलगामूडि श्री स्वामी जी के पास आकर बैठ गया था। उस दिन रात सपने में मेरे दोस्तों ने मेरे पैर की उँगली पर ऑपरेशन करके हरे रंग का गाढा पीव को निकाल दिए थे। डॉक्टरों के द्वारा दिया गया छे महीने समय के अंदर ही मेरा हाथ केवल एक महीने के अंदर ही ठीक हो गया था।

उस दुर्घटना से मुझे मर जाना था। लेकिन श्री स्वामी जी ने मुझे प्राण भिक्षा दिए थे। इसे साबित करने केलिए एक घटना है। इसका आधार है इसके पहले श्री स्वामी जी केद्वार दिया गया स्वप्न संदेश। एक जगह फिल्मी गायक मुहम्मद रफी का संगीत कार्यक्रम चल रहा था। मंच पर गांधी महात्मा भी बैठे हुए थे। उनका मुह श्री स्वामी जी के मुँह जैसा ही गोलाकार में था। उनके दोनों तरफ श्री राजेंद्रप्रसाद, नेहरु, लालबहदूर शास्त्री, राधाकृष्णन, टंगुटूरि प्रकाशम पंतुलु आदि सभी नेताएँ जो परलोग चले गए थे बैठे हुए थे। उनमें से एक भी अब जीवित नहीं थे। मैं वहाँ जाकर मन में ये ही श्री वेंकय्या स्वामी हैं मानकर गांधी जी को नमस्कार कर रहा था। वे मेरे पास आकर बोले थे कि यहाँ क्यों आये हो। यहाँ से चले जाओ। तब मैंने कहा कि मैं श्री वेंकय्या स्वामी जी का भक्त हूँ। गोलगामूडि जाकर आ रहा हूँ। उन्होंने कहा कि मुझे मालूम है। इसके पहले दो बार मैंने कहा था। यह ले लो। कहकर मेरे हाथ में पाँच शिरिडी साई के फोटो रखकर मुझे वहाँ से भेज दिए थे। मेरा सपना टूट गया था।

श्री स्वामी जी के द्वारा दिए गए पाँच फोटो मेरे पंचप्राणों का संकेत हैं। वे महानेता परलोग पहुँचे हुए थे। मुझे ही वहाँ पहुँचना था। लेकिन करुणामय मेरे

पंचप्राण मुझे वापस दिलावा दिए थे। और कुछ दिन यह संसार में रहने की मौका मुझे दिए थे। इसलिए ही मैं इस दुर्घटना से बच निकला था। मैं, मेरी पत्नी और बच्चे किस प्रकार उनका ऋण चुका सकते है।

नेल्लूरु तालूक विडंपल्लि गाँव के यामाल चेंचय्या की पत्नी वनम्मा उनकी बच्ची को किस प्रकार श्री स्वामी जी बचाए थे उसका विवरण यहाँ दे रही थी।

मेरी पाँचवी बच्ची को 3 महीने के समय से बाएँ कान के नीचे दर्द और उबाल आया था। डॉक्टर की दवाएँ, मंत्र, वैद्यों के द्वारा दिए गए झडी बूटी दवाएँ खाने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ था। वह उबाल धीरे - धीरे से नीचे उतर कर बाएँ जांघ के पास आकर फट गया और उससे रक्त और पीव बहन लगा। उस घाव से दो सेंटिमीटर लंबी हड्डी के छे टुकडे बाहर आए थे। पैर से दुर्गंध निकलने से कोई उसके पास खडे नहीं हो पा रहे थे। पि. सि शास्त्री डॉक्टर ने एक्सरे निकाल कर जांच करके सलाह दी कि पैर को काटना पडेगा। नहीं तो बच्ची मरने की संभावना है। उसके इलाज के लिए नेल्लूरु के रामचंद्रारेड्डी के अस्पताल या मद्रास जाने की सलाह दी। और तीन डॉक्टरों को दिखाने पर उन्होंने भी पैर निकाल देने की ही सलाहें दी थीं। दवाएँ खाने केलिए भी नहीं दिए थे।

अपनी बेटी को इस प्रकार रखना माता पिता को बहुत दुःख लगा था। वे चाह रहे थे इससे अच्छा है कि बच्ची मर जाए तो अच्छा है। पिता बेल्लमकोंड पुल्लय्या ऑपरेशन के लिए सहमत नहीं हुए थे।

19-4-1986 में एक दोस्त की सलाह लेकर गोलगामूडि श्री वेंकय्यास्वामी समाधि के दर्शन के लिए उसके पिता, बच्ची के साथ वनम्मा आई थी। वनम्मा ने श्री स्वामी जी से विनती की कि यदि उसकी बेटी का पैर ठीक होए तो आपकी कीर्ति तीन सप्ताह मैंक के द्वारा सबके पास पहुँचाऊँगी। यही नहीं मेरे पिता आपके लिए पोंगली समर्पित करेंगे। श्री स्वामी जी के अखंड दीप से तेल निकाल कर विभूति के साथ मिलाकर उसे पैर पर मलना शुरु कर दिया। सात दिनों में तीन रंध्र गायब हो गए थे। दो इंच का एक हड्डी का टूकडा घाव से बाहर आया हुआ था।

दूसरे सप्ताह बहुत भीड होने के कारण हमें तेल नहीं मिला था। पुराना तेल ही उपयोग किए थे। श्री स्वामी जी एक स्वप्न संदेश देकर हमें आशीर्वाद दिए थे। सपने में देखा था कि मेरी बेटी के पैर कटकर नीचे गिरा हुआ था। मैं उसे देखकर बहुत दुःख में डूबा हुआ था। इतने में एक बूढा आकर बता रहे थे कि क्या तुम पैर कट जाने से दुःखी हो। कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है। सूई और धागा ले आओ। मैं उसे सिला देता हूँ। उन्होंने कटे हुए पैर को मिलाकर उसे सिला दिये थे। इतने में सपना टूट गया था।

बाद में घाव के अंदर की टूटी हुई हड्डी अपने आप बाहर आ गयी थी। बिना कोई दवाएँ, डॉक्टर के बिना श्री स्वामी जी की कृपा से तेल और विभूति की सहायता से घाव पूरी तरह ठीक हो गया था। टूटी हुई हड्डी के स्थान में नई हड्डी भी आ गई थी। केवल श्री स्वामी जी की कृपा से ही मेरी बेटी स्वस्थ हो गई थी। मैं और मेरा परिवार श्री स्वामी जी के प्रति जन्मजन्मांतर तक ऋणि रहेंगे, कृतज्ञता ज्ञापित करेंगे।

नेल्लूरु जिला कोवूरु जड. पी हाइस्कूल में काम करने वाली एक अध्यापिका इस प्रकार अपना अनुभव बता रही थी।

मेरी माँ को 1982,1986 को बीच तीन बार रक्त दस्त आ गए थे। बहुत कमजोर हो गयी थी। किसी भी आहार पेट में लेने से रक्त दस्त होकर बहुत कमजोर हो जाती थी। पूरा शरीर में दर्द होता था। केवल द्रव आहार ही ले रही थी। नेल्लूरु अमेरिकन अस्पताल में इलाज करवाने पर भी कोई फरक नहीं पडा था। डॉक्टर जाँच करने केलिए स्वयं प्रयत्न किए थे। तीन दिन के बाद में मालूम हुआ था कि आंतर में बहुत बडा कैन्सर गाँठ थी। किसी ने किसी समय वह गाँठ फट जाने की संभावना है। यदि गाँठ फट जाए तो वह मरने की संभावना है। डॉक्टर ने यह कहकर उसे घर भेज दिए थे कि अंतिम क्षण उसे घर ले जाकर उसकी आखरी इच्छाओं को पूरी करने का प्रयत्न कीजिए। बहुत विनती करने पर भी उसे घर ही भेज दिए थे। हम उनसे पत्र लेकर चिकित्सा के लिए मद्रास ले जाने की तैयारी में लग गए थे।

हमारे घर की मालकिन ने कहा पैसा खर्च के बिना इलाज करने वाले को छोडकर मद्रास तक जाने की क्या जरूरत है। श्री वेंकय्या स्वामी जी पर विश्वास रखकर उनके पास जाइए।

उस समय में मैं यदि मद्रास नहीं जाकर तेरे पास आने पर मेरे पिता के साथ - साथ सभी मेरे ऊपर यही निंदा डालते है कि खर्च के कारण ही मैं मद्रास नहीं गया था। इसलिए मैं मद्रास के कैंसर अस्पताल को ही जाउँगा। यदि वहाँ मेरी माँ को कैसर नहीं है कहने पर तेरे चित्र के ढाँचे को रखकर पूजा करूँगा। बहुत दुःख के साथ मैं यह निर्णय ले रहा हूँ। रोते हुए मैंने श्री स्वामी जी से विनती की। हम रेल में जा रहे थे। बीच में माँ ने मुझे खाना खिलाओ पूछकर खाना खाई थी। आखरी क्षणों में दही का खाना खिलाने पर बहुत खुशी से खाई थी। उसके बाद फल और बिस्कुत भी खा ली थी। उसके बाद रक्त की छाया भी नहीं दिखाई दी। उसने कहा वह अब ठीक हो गयी थी। हम अस्पताल नहीं जाएँगे। घर वापस चलें जाएँगे। बाद में अडयार कैंसर अस्पताल में रु 1600 खर्च करके सभी परीक्षाएँ करवाए थे। सभी परीक्षाओं में कैंसर नहीं दिखाई दिया था। इस उम्र में भी उसके रक्त दाब, हृदय, गुर्दा सभी अवयव बहुत अच्छी तरह काम कर रहे थे। डॉक्टरों ने प्रमाणपत्र दिए थे। आजतक और कोई दवाओं का इस्तेमाल किए बिना पूर्ण स्वस्थता से जी रही है। श्री स्वामी जी से मेरा परिचय

अभी तक नहीं होने पर भी उनका स्मरण करते ही आकर मेरी बाधाओं को मिटा दिए थे। ऐसे करुणामय श्री स्वामी जी को सदा हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

श्री स्वामी पर जो केवल बातों से नहीं आत्मा में पूर्ण विश्वास रखते है उनकी रक्षा अवश्य करते हैं। इसका उदाहरण इस प्रकार है। गूडूरु तालूक ओजली के बाबु मुश्लिम 20 साल का युवक था। 1988 में जनवरी अकस्मात् पागल जैसा व्यवहार करने लगा। शरीर पर कोई कपडा नहीं रखता था। यदि कोई स्त्रि रास्ते पर दिखते तो उनके पीछे दौडता था। उसके हाथ और पाँव बाँधकर तरह - तरह के इलाज करवाए थे। मजदूर होने के कारण दो हजार रूपए व्याज पर लेकर इलाज करवाए थे। फिर भी कोई लाभ नहीं होने से श्री स्वामी जी की शरण ले लिए थे।

वह रात दिन नही सोता था। भयंकर आवाज से चिल्लाता था। हाथ और पैर को बाँधने पर भी उन रस्सियों को अपने दाँतों से काट देता था। बाद में पैर और हाथों को मुँह से दूर रखने केलिए एक लकडी दोनों के बीच रखते थे। देखने वालों के लिए यह भयंकर स्थिति जैसी होती थी।

श्री स्वामी जी की सन्निधि में रहने वाले कुछ लोग बताए थे कि उसे काकुपल्ले, पाल्चुरी को ले जाने से ठीक हो जाएगा। उसके भाई ने यही बताता था कि यदि वह मर जाए तो यहीं दफन कर दूँगा। **यदि वह ठीक हो जाए तो श्री स्वामी जी को एक नारियल का फल समर्पित करूँगा। उससे बढ़कर मेरे पास ताकत नहीं** 135
है। और कहीं मैं नहीं जा सकता हूँ। यह दृढ निश्चय के साथ वह वहीं रह गया था। पूर्णविश्वास से बढ़कर भक्ति नहीं होती है।

तीसरे दिन से उसके बंद नों को निकाल देने पर आराम से बैठने लगा। एक सप्ताह में वह साधारण व्यक्ति बन गया था। पंद्रह दिन के बाद में ...,और एक महीना के बाद देखने के बाद में अपना घर जाने की अनुमति माँगी। दो महीने के बाद श्री स्वामी जी की अनुमति पाकर अपना घर वापस चला गया था। बाद हर शनिवार आकर श्री स्वामी जी के दर्शन और सेवा करके जाते थे।

आत्मकूकरु तालूक के बोम्मवरं के पार्लपाल्लि वेंकटेश्वर्लु अपने अनुभव को इस प्रकार बता रहे थे।

1970 में हमारे बकरियाँ एक एक करके मर रही थी। तब श्री स्वामी जी के आशीर्वाद के लिए चिलकलमर्रि गाँव गया था। श्री स्वामी जी के चारों ओर बहुत भीड थी। दूर मैं अकेला खडा हुआ था। मन ही मन सोच रहा था कि यदि स्वामी मुझे बुलाए तो कितना अच्छा होता। इतने में श्री स्वामी जी के एक सेवक ने आकर बताया कि बोम्मारं से आया हुआ व्यक्ति को श्री स्वामी जी बुला रहे है। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। श्री स्वामी जी ने एक चिट्ठी पर लिखकर आशीर्वाद देते हुए कहा कि अब भविष्य में कोई जीव का नष्ट नहीं होगा। सभी जीव ठीक और सुरक्षित रहेगीं। उस दिन के

बाद एक भी बकरी नहीं मरी थी। श्री स्वामी जी सदा गाँव – गाँव घूमते रहते थे। इसलिए बाद उनसे मिलने केलिए नहीं गया था। लेकिन वे करुणामय स्वामी मेरी रक्षा निरंतर करते ही रहे। 1978 में तूफान आने से सभी बकरियों को पर्वत पर भेज दिए थे। हमें कोई आशा नहीं थी कि वे वापस आएँगी। उस रात श्री स्वामी जी सपने में आकर बताए थे कि हमारे सभी जीव सुरक्षित है। गाँव के अनेक जीव मर गए थे। लेकिन हमारी बकरी सभी सुरक्षित थीं।

मुझे 1984 में हृदय दडकन के कारण मुझे आत्मकूरु के डॉक्टर सुंदररामिरेड्डी जी के यहाँ भर्ती करवाए थे। दो दिन में दो हजार रूपए खर्च हुआ था। डॉक्टर ने कहा कि मैं मर गया था। मुझे कार में घर ले आए थे। सभी लोग रो रो कर वहीं सो गए थे। मेरे माता और पिता को श्री स्वामी जी स्वप्न दर्शन देकर बताए थे कि मेरे भक्त की रक्षा मैं स्वयं करुँगा। सुबह होते ही मैं अपनी आँख खोलकर बैठ गया था। बाद में दो महीने में ही पूर्ण स्वस्थता प्राप्त कर लिया था। यह लीला देखकर सभी ने श्री स्वामी जी की भूरि - भूरि प्रशंसा की थी।

1984 में श्री स्वामी जी की आराधना के लिए आये हुए थे। उस समय श्री स्वामी जी मुझे दूर रखे थे। यह बाधा मेरे मन में रह गयी थी। उस रात श्री स्वामी जी स्वप्न दर्शन दिए थे कि वे अग्नि कुंड में बैठे हुए थे। उस दिन ही श्री स्वामी जी के शरीर पर अनेक कपूर के टुकडे जलते दिखाई दिए थे। इससे मुझे अवगत हुआ कि श्री स्वामी जी बता रहे थे कि मैं सबकी तरह नहीं मर गया था। इस आग की तरह शाश्वत रूप से जलते हुए प्रकाश फैला रहा था।

मैं घर वापस जाने के बाद में रक्त दस्त से बहुत कमजोर हो गया था। सभी लोग बोलने लगे कि मना करने पर भी मैंने आराधना को जाकर यह रोग ले आया था। यह बहुत कम दिनों में ही मर जाएगा। मैंने निश्चय कर लिया था कि यदि स्वामी मेरे ऊपर कृपा दिखाए तो वे ही मेरी रक्षा करेंगे। नहीं तो मुझे अपने साथ ले जाएँगे। मैंने दवा लेना ही बंद कर दिया था। उस रात श्री स्वामी जी ढक्कन रहित समाधि में खडे होकर मुझे अभय देते हुए दर्शन दिए थे। सुबह होते ही मेरा साधारण रूप से चलते रहना देखकर सब आश्चर्य में पड गए थे। श्री स्वामी जी को पूर्ण रूप से विश्वास करना ही मैं जानता हूँ, मेरे जीवन के बाकी अंश सभी श्री स्वामी जी के हाथ में है।

सद्गुरु को भक्ति, मुक्ति प्रदाता के रूप में मानते हैं। महासमाधि के बाद में भी श्री स्वामी जी अपने भक्तों को किस प्रकार बचाते थे जानने पर हमें मालूम होगा कि वे नित्यसत्यवान है। 136

रापूरु तालूक मुदिगेडु गाँव के कोडूरु यानादि रेड्डी जी 16 साल से श्री स्वामी जी के भक्त थे। उनकी दमा की बीमारी को ठीक करके श्री स्वामी जी उनको भाग्यवान बना दिए थे। लेकिन ये धन कमाने में ही अपना पूरा समय खर्च करते थे। जब श्री

स्वामी जी उनके गाँव आते थे तभी उनका दर्शन करते थे। बाकी समय उनके बारे में कुछ भी नहीं सोचते थे।

1985 जून में बीमारी के कारण केवल एक गिलास काफी ही पीते थे। और किसी आहार को देखने पर वह विष जैसा उसे लगता था। दो महीने से बहुत इंजक्शन लेने पर भी, इलाज करवाने पर भी कोई स्वस्थता नहीं मिली थी। वे बहुत कमजोर हो गए थे। अगस्त महीने में रोज 30 बार दस्त होते थे। डॉक्टरों को बीमारी का पता नहीं चला था। वे अपने जीवन पर अपनी आशा छोड़ दिए थे।

अगस्त 22 को उनका मित्र अक्किम वेकटरामरेड्डी ने इनसे अनुरोध किया था कि वे गोलगामूडि के श्री स्वामी जी के आराधनोत्सव में भाग लेकर दर्शन करें। श्री स्वामी जी के दर्शन करने से उसकी बीमारी ठीक हो जाएगी। हाँ, कहने पर बैल गाडी पर बस तक ले जाकर वहाँ से बस से गोलगामूडि ले जाने के लिए आश्वासन दिए थे। दूसरे व्यक्ति की सहायता के बिना उठ नहीं पा रहे थे। इसलिए उन्होंने रेड्डी जी के साथ जाने केलिए सहमती दे दी थी। गाडी ले जाने केलिए वेंकडरामिरेड्डी अपने घर गए थे।

उसके बाद यानादि रेड्डी अपना अनुभव इस प्रकार बता रहे थे। जब मैंने श्री स्वामी जी के दर्शन करने केलिए सहमति दी थी तभी मेरे शरीर में कुछ शक्ति आ गयी थी। मेरे शरीर में बहुत बदलाव आया था। बिना किसी की सहायता से अपने आप घर के अंदर जाकर बोला कि भूख लग रही है, खाना खिलाओ। मेरी बातों से घरवालों को आश्चर्य हो गया था। उन्होंने सोचा कि यह मरने के पहले आने वाला बल है। ये कम समय में ही मरने वाला है। मैं अपने आप खाना खाकर, ठंडा पानी से नहा धोकर, साफ कपडे पहनकर गोलगामूडि जाने केलिए बैठा हुआ था। सभी मेरे व्यवहार में आया हुआ परिवर्तन देखकर आश्चर्य में पडे हुए थे। तब वेंकटरामिरेड्डी मुझे देखकर कहने लगे कि तुम इसके पहले मरने केलिए तैयार व्यक्ति जैसा लगते थे लेकिन अब नूतन वर के समान लग रहे हो। यह सब श्री स्वामी जी की महिमा ही है।

गाडी के बिना, दो महीने से भोजन किए बिना एक मील पैदल चलकर बस में चढ़कर गोलगामूडि पहुँचा। वहाँ पूरी तरह भोजन किया था। उसके बाद कोई दवा नहीं खाया था। पूरी तरह स्वस्थ रहा। इस स्थिति का किसी के द्वारा अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है। यह एक सुंदर अनुभूति है। श्री स्वामी जी की कृपा केलिए मैं योग्य नहीं हूँ। फिर भी श्री स्वामी जी करुणामय क्यों मेरी सहायता की थी, यह उनको ही मालूम है। यह मातृप्रेम के समान है।

बिट्रगुंट वेंकटरामिरेड्डी की पत्नी कौशल्यम्मा जी कापुवीधि, कोवूरु, नेल्लूरु जिला में रहती थी वह अपने अनुभव इस प्रकार बता रही थी। 1991 मई 1 को अकारण मेरी दाएँ आँख में बहुत दर्द हुआ था। कोवूरु में नेत्र डॉक्टर के न होने के

कारण आधी रात, नेल्लूरु दूर होने के कारण सोने केलिए कुछ इंजक्शन देकर सुलाए थे। सुबह नेल्लूरु जाकर डॉक्टर को दिखाने पर रायवेल्लूर जाने की सलाह दिए थे। प्रस्तुत आँख से कुछ दुर्गंध से भरे पीव और पानी निकल रहे थे। बहुत दर्द हो रहा था। रायवेलुरु में तीन दिन इलाज करवाने पर भी कोई फायदा नहीं होने के कारण चित्तूर के विशेषज्ञ को दिखाए थे। और फिर मद्रास जाकर मुद्दु कृष्णारेड्डी के अस्पताल में दस दिन रहकर इलाज करवाए थे। बाद में ओंगोलु के चीमकुर्ती के पास के डॉक्टर के पास जाकर चार दिन इलाज करवाए थे। फिर भी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। अब आँख कपाल के अंदर जाकर आँख नहीं दिखाई दे रही थी। मेरी बाधा को देखकर जहाँ भी विशेषज्ञ है, वहाँ मुझे कार में बिठाकर ले जा रहे थे। अंत में तिरुपती के डॉक्टर मंजुलम्मा को दिखाने पर उन्होंने कहा कि आँख बहुत खराब हो गई थी। दृष्टि चली गयी थी। कुछ दिनों के बाद में दूसरी आँख भी खराब हो जाएगी। चाहे तो आँख निकालकर कृत्रिम आँख लगाएँगे। एक ही आँख से काम निकालना पडेगा।

उस बात को सुनकर दुःख से रोती हुई सो गई थी। सपने में मेरे पिता, जो बहुत दिनों के पहले ही मर चुके थे आकर बोल रहे थे कि मत खेलो, मत खेलो, मत खेलो। मेरी नींद खुल गई थी। मैंने सोचा था कि मेरे पिताजी मर चुके थे इसलिए वे अपने पास आ जाने केलिए कह रहे थे। मेरे मरने का समय आ गया था। डॉक्टर के द्वारा कृत्रिम आँख रखने के प्रस्ताव को मैंने नहीं माना और घर वापस आ गयी थी।

मैंने अब तक श्री वेंकय्या स्वामी जी के बारे में सुना था। लेकिन उनको गोलगामुडि जाकर कभी भी नहीं देखा था। मेरी अंतरात्मा ने मुझे जल्दी से जल्दी गोलगामूडि जाने केलिए प्रोत्साहन दे रही थी। गोलगामूडि ले जाने के लिए मेरे परिवार वाले तैयार नहीं थे। मैं अपने आप रात के समय गोलगामूडि पहुँच गयी थी। समाधि मंदिर के दाँए तरफ के बरामदे में सोयी थी। मुँह पर कपडा ओढ़कर दुःख से तडपती हुई तीन दिन तक वहीं पडी रही थी। मेरी बाधा कुछ भी कम नहीं हुई थी। तीसरा दिन शनिवार था। बहुत भीड थी। अग्निकुंड से बहुत धुँआ आ रहा था। उस धुँए को सहन नहीं कर पा रही थी। तब श्री स्वामी जी से विनती की कि आप मुझे अपनी सन्निधि को क्यों ले आये थे? इस धुँए में मुझे क्यों बिठा दिये थे? मुझे क्यों इस प्रकार मार रहे है? क्या यह सब आप अपनी लीला दिखाने के लिए कर रहे हैं? इस प्रकार विभिन्न सोच विचार मन में आने से श्री स्वामी को कोसने लगी थी। बाद में कुछ ही समय में नींद आ गई थी। सोते वक्त एक अद्भुत सपना आया था। एक तश्तरी में पानी लेकर एक सफेद साढी पहनी हुई एक स्त्री और दवाओं की पेटी पकड कर काले कोट पहन कर एक डॉक्टर मेरी ओर आ गए थे। दोनों आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे। बाद में डॉक्टर ने पानी में रूई को रखकर उससे मेरी आँख को साफ करके अपने हाथ की उंगलियों से ही मेरी आँख को निकालकर तश्तरी में डाल दिया था। पानी भी उसपर छिड़का था। रूई को लाल दवा में रखकर उससे मेरी आँख को साफ

करके पट्टी बाँधकर दोनों वहाँ से चले गए थे। तुरंत मुझे नींद खुल गई थी। मैं जोर से चिल्लाने लगी कि मेरी आँख ठीक हो गयी थी। मुझे दिख रहा था। मैं वहीं उठकर बैठ गयी थी। मेरे बगल में जो सो रहे थे वे सब मेरी आँख ठीक हो जाने से बहुत प्रसन्नता से श्री स्वामी जी की लीला पर चर्चा करने लगे। मैंने भी श्री स्वामी जी की दिव्य महिमा की भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

मेरी पहली आँख बिना कोई दर्द के ठीक हो गयी थी। सालों से रही समस्या का समाधान श्री स्वामी जी ने कुछ ही घंटों में देकर उनकी लीला का परिचय सबको करा चुके थे। यह केवल श्री स्वामी जी को ही साध्य है। एक दिन स्वामी जी के शिष्य ने आकर बताया था कि यदि उम्र बढ़ने पर भी, तेरी दूसरी आँख में न दिखने पर भी तुझे कोई समस्या नहीं होगी। मुझसे दी गई आँख से काम चल जाएगा। कोई चिंता नहीं है। यह सब संदेश केवल अनंत करुणामय श्री स्वामी जी की दया और कृपा का निर्देशन है। इसमें मेरी साधना का कोई प्रभाव नहीं है।

इस विषय में पूर्व पुण्य, श्री स्वामी जी के साथ उसका ऋण संबंद , मुख्यतः स्वामी जी की कृपा के ही कारण हैं। यह हमें मालूम होना चाहिए। इसलिए हमारे लिए कोई समस्या नहीं होने पर भी निस्वार्थ मन से प्रेमपूर्वक श्री स्वामी जी का स्मरण और सेवा इस जन्म में करने से भविष्य में वे हीं श्री स्वामी जी की कृपा हमें आसान से मिलवाएँगे। 137

मैं कृतज्ञता से श्री स्वामी जी की सेवा छे महीने तक रोज करता रहा। मेरे बचपन के पांचवे साल से मुझे सताया इस्नोफीलिया पूरी तरह ठीक हो गया था। अब सरदी में सोने पर भी, ठंडा पानी से नहाने पर भी कोई समस्या उत्पन्न नहीं हो रही थी। दमा पूरी तरह नियंत्रण में आ गया था। बहुत दिनों से मुझे और मेरे परिवार को सतानेवाली अनेक समस्याओं से भी मुक्ति मिल गयी थी।

परम कारुण्य मूर्ति श्री स्वामी जी बहुत सुंदर ढंग से मुझे करुण रस से भिगो देने पर भी मानव प्रवृत्ति को मैं नहीं भूल पाया था। मेरी वक्रबुद्धि को श्री स्वामी जी किस प्रकार ठीक कर दिए थे अब देखिए।

सभी लोग श्री स्वामी जी को अपने सिर के बाल समर्पित कर रहे थे। मैं भी समर्पित करना चाहा। बाद में मैंने अपना निर्णय बदल दिया था। तुरंत मेरा सिर पूरा घावों से भर गया था। एक हफ्ते तक बहुत इंजक्शन लेता रहा था। लेकिन घाव ऐसे ही रह गए थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि यह अवश्य श्री स्वामी जी की महिमा ही होगी। तब स्वामी जी से प्रार्थना की कि यदि मेरे सिर के घाव ठीक हो जाए तो मैं अपने बाल समर्पित कर लेता हूँ। एक ही दिन में मेरे सिर के घाव ठीक हो गये थे। तुरंत मैंने सिर के बाल समर्पित कर लिया था। इसलिए ही लोग कहते है कि **दास का दण्ड मुंडन।**

नगरि श्री रामुलु आधोनी में तेलुगु पंडित थे। वे अपने अनुभव बता रहे थे।

1991 जुलाई तक श्री वेंकय्या स्वामी जी के बारे में मुझे कुछ भी नहीं मालूम था। श्री शिरिड साई के परम भक्ताग्रेसरों में से एक श्री एम. के. आनंद वेंकटेश्वरलु (स्पेशल असिस्टेंट कमर्षियल टैक्स अफसर, आधोनी) जी श्री वेंकय्या स्वामी जीवत चरित संबंधित अवधूत लीला के चार भागों वाली पुस्तक मुझे पढ़ने केलिए दिए थे। मैंने उसे 19-8-91 तक पूरे पुस्तक पढ़कर रात सोते समय श्री स्वामी जी से इस प्रकार विनती की थी कि स्वामी आप समाधि केबाद भी अनेक लोगों को प्रत्यक्ष और सपनदर्शन प्रदान करके अनेक शुभ आशीश दे चुके थे। अनेक दिव्य लीलाओं का प्रदर्शन भी किए थे। यदि वह सही है तो मुझे भी एक लीला दिखाकर आपकी समाधि के पास ले जाइए। मैं गहरी नींद में सो रहा था। अचानक मेरे लिए एक सपना आया था। उस सपने में एक अपरिचित व्यक्ति मेरे घर आकर मेरे विरुद्ध श्री स्वामी जी को लडाई केलिए प्रोत्साहन दे रहा था। श्री स्वामी जी महाबलशाली पहलवान जैसा दिखाई दे रहे थे। उनका पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। एक पहलवान दूसरे पहलवान से लड़ने केलिए आने के समान श्री स्वामी जी मेरी ओर आ रहे थे। श्री स्वामी जी को देखकर मुझे पहली बार डर लगा था। तब मैंने स्वामी जी से विनती की थी कि स्वामी मैं रक्तदाब, अतिमूत्र व्याधि से पीडित हूँ। मेरा हृदय भी कमजोर है। आपके एक मार मारने पर मैं मर जाऊँगा। कृपया मुझे मत मारिए। इतना कहने पर भी श्री स्वामी जी मेरी ओर पहलवान जैसा डराते हुए आने लगे। बाद मेरी नींद खुल गई थी। बाद में क्या हुआ था? मुझे नहीं मालूम हुआ।

दूसरे दिन 20-8-91 मैं मुझे श्री स्वामी जी अवधूत लीला किताब देने वाले श्री एम. के. आनंद वेंकटेश्वर्लु जी के पास जाकर मेरे सपने के बारे में बताया था। उन्होंने बताया कि ऐसा सपना आना बहुत अच्छा ही है। श्री स्वामी जी आप पर कृपा दिखाए थे। श्री स्वामी जी सपने में आपको नहीं, आपकी बीमारियों को डराए थे। तुरंत मैंने अस्पताल जाकर मूत्र, रक्त परीक्षा करवायी। आश्चर्य की बात मेरे रक्त दाब और रक्त में ग्लूकोस की मात्रा सब कुछ ठीक हो गया था। उन रोगों से संबंधित दवाएँ खाना भी बंद कर दिया था। गुड, घी के साथ रोटी खाना शुरु किया था। शहद लेना शुरु किया था। फल, मिठाई, चीनी, काफी, चावल आदि जो पहले नहीं खाता था वे सभी खाते हुए और एक बार परीक्षा करवाई थी। उस समय भी कोई रोग के चिह्न नहीं दिखाई दिये थे। एक महीने में 5, 6 बार परीक्षा करवाया था। श्री स्वामी जी की महिमा से वे सभी रोग मेरे शरीर से एकधम चले गए थे। अंत में आधोनी के बाहर कर्नूलु में 30-10-91 में एक मशहूर प्रयोगशाला में परीक्षाएँ करवाने से पता चला कि मेरे शरीर में ये सभी रोगों के कोई लक्षण नहीं थे। डॉक्टरों ने भी परीक्षा करवाकर यह तय कर लिए थे कि मैं रोगों से मुक्त हो गया था। यह स्वामी जी का पहला सपनवृत्तांत था।

श्री स्वामी जी का दूसरा सपनवृत्तांत इस प्रकार है।

20-9-91 के रात सपने में श्री स्वामी जी पालकी में आ रहे थे। पालकी के चारों ओर बहुत लोग इकट्ठे हुए थे। श्री स्वामी के दर्शन कर रहे थे। मैं दूर खडे होकर स्वामी से प्रार्थना की कि मैं इस भीड को चीरते हुए आपके निकट आकर आपके दर्शन नहीं कर पाऊँगा। मेरा नमस्कार यहीं से स्वीकारो। तुरंत श्री स्वामी उस भीड को चीरते हुए उनसे मेरा काम है, मुझे रास्ता दो कहते हुए मेरे पास पहुँच गए थे। पालकी के ऊपर श्री स्वामी जी थे और उनके बगले में, और एक स्वामी खडे हुए थे। श्री स्वामी बगल खडे हुए स्वामी से कुछ पैसा पूछ रहे थे। उस स्वामी पालकी पर गिरे एक सौ, दस रूपए के नोट और एक रूपया लेकर श्री स्वामी को दिए थे। श्री स्वामी जी उन रूपयों को लेकर मुझे देते हुए कह रहे थे कि ये ले लो एक सौ सोलह रूपए। मैंने श्री स्वामी जी से पूछा, जी ये पैसे मुझे क्यों दे रहे हैं? तब स्वामी जी ने उन रूपयों को मेरे दोनों हाथों में रखदिए थे। मैंने उन पैसों को अपनी जेब में रख दिया था।

अगले दिन 21-9-91 मैं और काम के लिए कर्नूल गया था। वहाँ के डॉ. सुदर्शन जी स्वामी कृपा नामक एक किताब देकर उसे पढ़ने की सलाह दी थी। मैंने उसे पढ़कर बाद में में मेरी बहिन को दिया था। बाद में 22-9-91 को आधोनी को आया था। 2-10-91 गांधी जयंती के दिन कर्नूलु सेइंट जोसफ कॉलेज के श्रीमती रोजम्मा विद्यालय में आयोजित अष्टावधान कार्यक्रम में पृच्छिक के रूप में भाग लेने का आह्वान मिला था। मैंने अपनी सहमती देकर उस कार्यक्रम में भाग लिया था। महा उदार स्वभाव वाली, सारस्वत संरक्षिका श्रीमती रोजम्मा जी ने तांबूल, फलहारदि चीजों केसाथ स्वच्छ ऊन के शाल ओढ़कर, नारिकेल फल, एक कवर, एक स्टाइनलेस थाली आदि देकर कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी को सम्मान की थी। बाद में में देखे तो कवर में रु100, रू10, रू5 और रु1 के नोट थे। कुल मिलाकर रु.116 थे। सपने में आकर श्री स्वामी जी ने जो रू 116 प्रदान किए थे वे अब 2-10-91 तारीख को मुझे मिले थे।

मैं 3-10-91 कर्नूल से आधोनी आकर मैंने श्री स्वामी जी से मिलकर कहा कि आप बहुत दिव्यलीलाओं को प्रदर्शित किए थे। वे सभी सत्य निकले थे। मैंने उनसे प्रार्थना की कि आप मुझे गोलगामूडि ले जाइए। उस यात्रा के लिए आवश्यक अनुकूल परिस्थितियाँ बनाइए। हमें 9-10-91 से दशहरा छुट्टी मिली थी। उस समय मुझे वेतन नहीं मिला था। गोलगामूडि जाने केलिए बिना टिकट के यात्रा के लिए आवश्यक इंतजाम और जाने केलिए आवश्यक खर्च केलिए रू 550 मेरे दोस्तों ने इतजाम किए थे। 12-10-91 मैं, मेरी माँ, तीन बेटियाँ, एक बेटा कुल 6 लोग गोलगामूडि श्री स्वामी जी के दर्शन केलिए गए थे। दर्शन के बाद बहुत आनंद उठाए थे। 16-10-91 रात 1 घंटे को आधोनी पहुँचकर विजयदशमी त्योहार मनाए थे। बाद

में में पूज्य गुरुजनों को मित्रों को शमी पत्र प्रदान करके उनके आशीर्वाद प्राप्त किए थे।

हम गोलगामूडि जा रहे थे तब 12-10-91 को श्री स्वामी जी मेरी पत्नी के सपने में आकर दर्शन दिए थे। उस दिन शनिवार था। श्री स्वामी जी के दिव्य क्षेत्र में होने वाले सभी कार्यक्रमों को सपने में ही दर्शन करवाए थे। यह विषय मेरी पत्नी श्रीमती नागलक्ष्मम्मा ने मेरे गोलगामूडि से घर वापस आने केबाद में बताई थी। तब मैंने कहा कि श्री स्वामी जी की कृपा तेरे ऊपर प्रसारित हो रही है। अगले दिन 18-10-91 को मेरी पत्नी, मेरा बडा बेटा चिरंजीवि राघवेंध्रा मेरे छोटा बेटा सीतारामानुजम को साथ लेकर उस दिन उचित यात्रा के साथ - साथ रात 10 बजे गोलगामूडि पहुँच गए थे।

मेरी पत्नी और बेटों के साथ गोलगामूडि पहुँचने के बाद में उस क्षेत्र को, उस क्षेत्र में मौजूद श्री स्वामी जी को, रसोई का कमरा. अन्न सत्रम, वहाँ आए हुए भक्त समुदाय को देखकर मेरी पत्नी आश्चर्य में पड गई थी। 12-10-91 में जो सपने में उसने देखा था उन सबको यथा तथा श्री स्वामी जी की कृपा से प्रत्यक्ष रूप से उसने देख लिया था।

कामशानी चेंद्रशेखर रेड्डी, सरोजनी देवी रोड, तिरुपति 5-1-75 बि (लकडी का डिपो) इस प्रकार बता रहे थे। 1991 में मेरे मुख पर बहतु घाव आ गए थे। उनसे पीव निकल रहा था। पहले पहल घाव बहुत छोटे थे। लेकिन पूरे मुँह पर आ गए थे। इनसे रात और दिन बहुत दर्द आ रहा था। दवाएँ खाया था। पीव उत्पन्न करने वाले पदार्थों को खाना बंद कर दिया था। फिर भी पीव आता ही रहा था। हाथ से साफ करके दवा या मरहम लगाने केलिए कोई मौका नहीं था। मद्रास जर्मनी अस्पतल, बेंगलूरु के एस प्रकाश डॉक्टर जी, रुया अस्पताल, तिरुपती, अनेक जगह और विशेषज्ञों के द्वारा इलाज के लिए लगभग दस हजार रूपए खर्च कर लिया था। इनके साथ – साथ भूतवैद्य, मंत्र - तंत्र और जड बूटी दवाएँ भी खाया था। लेकिन कुछ भी फायदा नहीं हुआ था। 1991 में ये बाधाएँ बहुत बढ़ गई थी। सोने की गोलियाँ खाने पर भी बहुत कुछ समय के लिए ही शमन मिलता था। रात नींद नहीं आती थी।

मेरे मित्रों को अपना मुँह दिखाना नहीं चाहता था। इसलिए रात के समय ही बाहर आता था। मेरा पूरा मुँह कुरूप बन गया था। मैं एक बार आत्महत्या करने केलिए भी तैयार हो गया था। उस विषम परिस्थिती में कृपासागर श्री स्वामी जी की शरण मैंने लिया था। उन्होंने मेरे ऊपर कृपा दिखाई थी।

मेरे घर के सामने रहने वाली सरेजम्मा जी श्री स्वामी जी की सेविका थी। उसकी माता ने मुझे श्री स्वामी जी का तेल देकर मुझे आपने मुँह पर लगाने की सलाह

दी थी। तीरथ पीकर और धागा कंठ में पहनने की सलाह दी थी। तेल लगाने से उस रात ही बहुत फायदा हुआ था। दर्द बहुत कम हो गया था। रात नींद आ गई थी। दो दिनों में ही बहुत शमन मिला था। तुरंत गोलगामूडि जाकर श्री स्वामी जी के दर्शन करने केलिए तैयार हो गया था। सरोजनम्मा जी ने मुझे कुछ दिनों तक आश्रम में ठहरने के लिए सिफारस चिट्ठी लिखकर दी थी। श्री स्वामी जी की कृपा से गोलगामूडि पहुँचते ही मेरे लिए नए भवनों के लिए पानी छिड़कने का काम तैयार था। श्री स्वामी जी के प्रसाद खाते हुए क्यूरिंग काम करते हुए कुछ दिन तक वहीं आश्रम में ही रहा। काम के कारण प्रदक्षिणा भी बहुत कम करता था। अब मेरे मुख के ऊपर के सभी घाव और उससे निकलने वाला पीव सब गायब हो गए थे। अब मेरा मुँह ठीक हो गया था। आत्महत्या करने केलिए तैयार मेरे जैसे व्यक्ति को अपनी समाधि के पास बुलाकर, मेरी सभी बाधाओं को दूर करके, मुझ पर कृपा दिखानेवाले श्री स्वामी जी को जितना भी कृतज्ञता दिखाने पर भी कम ही रहेगा। आजन्म उनके लिए ऋणि रहूँगा।

जो लोग जिसे माँगते है वह सब प्रदान करने वाला श्री स्वामी जी सच कहे तो कृपाकर ही हैं। श्री वी. बालकृष्णय्या असिस्टेंट ट्रेजरी अफसर (नेल्लूरु) जी की पत्नी विमलम्मा जी अपनी दिव्य अनुभवों को इस प्रकार बता रही थी।

श्री स्वामी जी के बारे में श्री भारद्वाज मास्टर से मुझे मालूम हुआ था। लिकिन मैं कभी भी गोलगामूडि नहीं आयी थी। 1989 में श्री स्वामी जी को मैं इस प्रकार विनती की थी कि स्वामी आपकी अवधूत लीला ग्रंथ का पारायण पूरी तरह तीन बार कर लूँगी। मेरी इच्छा है कि मेरे पारायण के बाद मेरे आंगन में फूल के पौधे के नीचे साफ सुधरे स्थल में बैठकर आप को मेरे पूछे बिना मेरा आतिध्य स्वीकारना है। वह अवश्य 12.30 से 1.30 के बीच ही संभवित होना चाहिए। इस प्रकार मन में विनती करके ग्रंथ का पारायण करके, खाना पकाकर स्वामी जी के इंतजार कर रही थी। 1 बज गया था। लेकिन श्री स्वामी जी का समाचार नहीं था। मुझे बहुत दुःख हुआ था। और फिर एक बार मैंने स्वामी जी से पूछा था कि क्या स्वामी, मेरा पूरा पारायण क्या व्यर्थ ही है? मेरा कसूर क्या है? मेरी बाधा को देखकर मेरी पडोसिन ने कहा कि मैं किसी भिखारी को बुला लाऊँगी। लेकिन मैं सहमत नहीं हुई थी। मैं तुरंत घर के श्री स्वामी जी के चित्र के सामने बैठने पर तुरंत अम्मा, एक आवाज बडी प्रेम से सुनाई दी थी। बाहर जाकर देखी थी। धोती और खाकी कमीज पहन कर और भुजाओं के ऊपर छोटी तौलिया रख कर, हाथ में एक लाठी और एक हाथ में एक अलुमिनियम पात्र रखकर एक व्यक्ति खडा हुआ था। उसने पूछा था कि क्या तुम कुछ चावल खाने केलिए दे सकती हो? मीठी आवाज से पूछने वाले उस स्वामी जी को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ था। मेरा शरीर मेरे वश में नहीं था। आइए स्वामी खाना खिलाएँगे। उनका स्वागत किया और अंदर ले गई थी। मैं आगे और स्वामी पीछे आ रहे थे। उस

आनंद में मुझे नहीं मालूम हो रहा था कि मैं जमीन पर चल रही हूँ या आकाश में। घर के अंदर जाकर पोंगली, चावल, सब्जी आदि ले आने के पहले ही श्री स्वामी जी और एक बार मुझे आश्चर्य में डाल दिए थे। श्री स्वामी जी जहाँ में फूल के वृक्ष के पास साफ करके रखी थी वहीं जाकर बैठे हुए थे। साधारण भिक्षुक ऐसा जगह नहीं बैठता। चावल अपने पात्र में रखने के लिए आगे बढाए थे। मेरी प्रार्थना से चावल केले के पत्ते में परोसने से सहमयी दी थी। हाथ में घी डालने से उसे चावल पर परोसते हुए पत्ते के चारों ओर उस चावल को रखकर बीच के चावल को बाहर निकाल कर तुरंत उठ खडे हो गए थे। जाते वक्त मेरी ओर मुढ़कर पूछा कि क्या कुछ दक्षिणा देना चाहती हो? तुरंत मैंने कुछ दक्षिणा देकर उनको नमस्कार किया था। तब उन्होंने मेरे सिर पर अपना हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिए थे। उस आशीर्वाद से मैं मुग्ध हो गई थी। आनंदानुभूति से बाह्य संसार को पूरी तरह उस क्षण भूल गई थी। मैं उनकी बिदाई देते हुए और तीन घरों तक साथ ले गई थी। उसके बाद में वे अदृश्य हो गए थे। वह आनंद क्षण बहुत दिनों तक साथ रहे थे। कुछ दिनों के बाद में साधारण स्थिति में आ गयी थी।

फूल के वृक्ष के नीचे बैठना. 12.30 से 1.30 समय में ही मेरे घर आना, ऐसी जो शर्तें मैंने रखी थी उनके अनुसार आए हुए स्वामी, सच में स्वामी है या स्वामी जैसे अन्य व्यक्ति है। यह अनुमान आना स्वाभाविक ही है। मेरी इच्छा को समझकर ही श्री स्वामी जी मेरे घर आए हुए थे। यह निरुपित करने केलिए वे मेरे सामने से अदृश्य हो गए थे। यह मेरा विश्वास हैं। दूसरा उनके द्वारा दिया गया आनंदानुभूति, बुलाते ही मेरे पास आकर मुझे अनुगृहीत करना.., ये सब मेरी बात सच है बताने केलिए आवश्यक सबूत है। इसलिए ही मैं श्री स्वामी जी को जन्म जन्मों तक ऋणि हूँ।

श्री स्वामी जी अकसर कहते थे कि सामनेवाले लोग जिस प्रकार होते हैं हम भी ऐसे ही होते हैं। समाधि के बाद में भी श्री स्वामी जी अपनी बात को अकसर सत्य साबित करते रहे हैं।

डॉ. सुभाषिणी, पांडिच्चेरी अपना अनुभव इस प्रकार बता रही थी।

श्री स्वामी जी की विभूधि, धागे की महिमा महात्माओं के बारे में कुछ किताबों में पढ़कर गोलगामूडि आकर दर्शन करके उनको अपने घर ले जाकर नित्य पूजा कर रही हूँ। श्री स्वामी जी स्वप्न में दर्शन देकर संदेश दिए थे कि बेटा पैदा होने पर मेरा नाम रखो।

मेरा नौ महीने पूरे हो गए थे। श्री स्वामी जी का एक चित्र भी मेरे पास नहीं था। हर दिन पूजा के बाद श्री स्वामी जी की विभूधि खाकर विनती करती थी कि मेरा पूरा भार आपके ऊपर ही है। दो दिनों के बाद प्रसव वेदना शुरू हो गयी थी। मेरे

अंदर आंदोलन और भय शुरू हो गये थे। मेरे पति और मैं दोनों डॉक्टर होने पर भी मेरे लिए पहला शिशु होने के कारण भय से पूरी रात रोती रही थी।

रात 3 घंटे के समय मुझे श्री स्वामी जी स्वप्न में दर्शन दिए थे। हमारे घर के स्वामी जी के चित्र के ढाँचे के नीचे अग्नि कुंड में श्री स्वामी जी देदीप्यमान रूप से बैठे हुए थे। वे मुझसे बता रहे थे कि तुम क्यों भयभीत हो रही हो? मैं तेरे साथ हूँ न। तब से मुझे बहुत धैर्य आ गया था। हर एक घंटे में एक बार श्री स्वामी जी की विभूधि पानी में डालकर पीने लगी। श्री स्वामी जी की कृपा से मुझे सुख प्रसव होकर बच्चा पैदा हुआ था। उसका नाम श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार हरित रखे थे। मेरे भाइयों को भी जब चाहे तब श्री स्वामी जी दर्शन देकर आवश्यक सूचनाएँ देते थे। जो श्री स्वामी जी को हृदय पूर्वक मानते है उनकी भलाई अवश्य श्री स्वामी जी करते हैं। श्री महाविष्णु ही भगवान श्री वेंकय्या स्वामी के रूप में अवतरित हुए थे।

रेल के नीचे गिराहुआ क्या बच सकता है।

श्री स्वामी जी ने निरुपित किए थे कि श्री स्वामी जी के भक्त के लिए यह साध्य होता है। श्री स्वामी जी के आशीर्वाद से रेल की नौकरी में भर्ती हुआ था उडता रमनय्या। वह बहुत कृतज्ञता, भक्ति, श्रद्धा के साथ श्री स्वामी जी का स्मरण करते हुए उनकी सेवा करता था। हाथ की उंगली को सदा श्री स्वामी जी की मूर्ति का अंगूठा पहनता था। वह अपने अनुभव को इस प्रकार बता रहा था।

16-6-92 मैं कीमेन के रूप में काम करता था। वेदायपालेम और वेंकटाचलम स्टेशन केबीच की पटरियों को जाँच कर रहा था। नेल्लूरु की ओर आ रहा था। उस समय मद्रास जाने वाली रेल गाडी को वापस लाने केलिए कहने पर उस ड्राइवर ने गाडी को उल्टे में पीछे की ओर चला रहा था। कोई गाडी पीछे आते वक्त केवल 15 किलो मीटर स्पीड से ही चलाना था। और बार – बार विजिल मारते हुए सबको सावधानी बरतनी भी चाहिए था। वह और किसी काम में व्यस्त होने से विजिल नहीं मारा था। पीछे आते हुए मुझे देखा भी नहीं था। उसी समय बगल की पटरी पर और गाडी जा रही थी। इसलिए मेरे पीछे आने वाली गाडी की आवाज मुझे सुनाई नहीं दी थी। 15 किलोमीटर गति से पीछे आती गाडी ने मुझे पीछे से टक्कर मारा था। गाडी टक्कर मारते ही मैं हे स्वामी, चिल्लाते हुए दोनों पटरियों के बीच गिर गया था। मेरा पीट ऊपर और पेट नीचे रह गया था। रेल मेरे ऊपर से जाने लगी। जाती रेल गाडी मेरे धोती, बनियन और कुरता भी ले गयी थी। मेरे मुँह और शरीर पर पत्थरों से छोटे – छोटे घाव हुए थे। मेरे दाएँ पैर के घुटन से कुछ माँस कट कर वहीं गिर गया था। मुझे रेलवे अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। ड्राइवर को गिरफ्तार किया गया था। दस दिन के बाद में मुझे अस्पताल से भेज दिए थे। बहुत परीक्षाएँ करने के बाद

में मुझे फिर नौकरी में ले लिए थे। यदि आराम लेना चाहते तो छुट्टी भी लेने केलिए सिफारिस किए थे। आराम लेने की सलाह भी दिए थे। लेकिन मैं स्वस्थ होने से नौकरी में भर्ती हो गया था। इस प्रकार श्री स्वामी जी ने स्वस्थता देने के बाद नौकरी में नहीं जाना मेरे लिए अधर्म लगा।

उस दुर्घटना से केवल श्री स्वामी जी ही बचाए थे। नहीं तो मैं मर गया होता था। नहीं तो विकलांग बन गया होता। रेल की इतिहास में इस प्रकार की दुर्घटना के बाद स्वस्थ होकर नौकरी में भर्ती होना अब तक कहीं नहीं हुआ था। यह एक रिकार्ड था। आजन्म तक मैं और मेरे परिवार के सदस्य श्री स्वामी जी के प्रति कृतज्ञता के पात्र होंगे।

श्री स्वामी जी के मुँह से निकलने वाली हर एक बात किसी न किसी समय एक सौ प्रतिशत सत्य साबित होगी। वह वेदवाक् के समान होगी। उनके आशीर्वाद बहुत अच्छे फल देते हैं। गोलगामूडि के श्री उडता रमणय्या जी अपने अनुभव इस प्रकार बता रहे हैं।

मुझे उन्नीस साल की उम्र में रोज रेल विभाग में गैंग के काम करने से रु 1.25 कूली मिलता था। चार साल काम करने के बाद में मुझे देखकर मेरी कूली के काम को देखकर मेरी ससुराइन ने मेरी अवहेलना किया। तब मैंने रेल के गैंग मेन का काम छोड़कर खेत में काम करना शुरू किया था। एक साल तक खेत में काम किया था। एक दिन मैं पानी ले आ रहा था। पानी लाते हुए श्री आंजनेय स्वामी जी के मंदिर के पास आया था। वहाँ श्री स्वामी जी थे। उनके पास आया था। मेरे पूछने के पहले ही श्री स्वामी जी ने कहा कि यदि तुम दस रूपये खर्च करा तो सौ रूपये मिलने की संभावना है। तुझे अवश्य सरकारी नौकरी मिलेगी। तेरे हाथ से अनेक लोगों को अन्न दान होने की संभावना है। तुझे अवश्य सरकारी नौकरी के लिए बुलाएँगे। तब मैंने स्वामी जी से कहा कि हे स्वामी आप तो पागल है। आप जो बता रहे है उस पर मुझे विश्वास नहीं है। मैंने तो रैल काम छोड़ कर मजदूर बन गया था। मुझे कैसा सरकारी नौकरी मिलेगी? मैंने बाद में श्री स्वामी जी की बात पर कोई विश्वास नहीं रखा था।

कुछ दिनों के बाद रैल्वे विभाग में सरकार कुछ आर्डर पास किए थे। 1960 के पहले छे महीने बिना कोई रूकावट के काम करने वाले को पहले अस्थाई नौकरी, बाद में स्थाई नौकरी देकर रू.170 वेतन देने की सिफारिश किया गया था। उस सिफारिश के अनुसार मुझे भी रू.170 वेतन पर नौकरी मिली थी। उस सूचि में मेरा नाम भी था। मेरे मित्रों ने मेरी माँ को बताकर मुझे नौकरी केलिए भेजे थे। मेरे इनस्पेक्टर भी अच्छे आदमी थे। वे भी मुझे प्रोत्साहन देकर मुझे नौकरी में ले लिए थे। रु. 5000 एरियर्स भी मिले थे। उससे 7 एकड जमीन भी खरीद लिया था। श्री

स्वामी जी के आश्रम के अन्नदान के लिए हर साल 4 बोरे अनाज दे रहा हूँ। पस्तुत में मुझे रु. 3000 वेतन मिल रहा है। भारत भर घूमने का पास भी मिलता है। पी. टी. ओ, रेल विभाग की सुविधाएँ भी मिलती है। पेंसन भी मिलने वाली है। श्री स्वामी जी की बातें सच ही निकलती है। उनके वाक् बह्मवाक् बन जाता है।

श्री गुद्देटि आंजनेयुलु जी विद्युत विभाग में कोव्वूरु में काम करते हैं। श्री स्वामी जी उनको प्राणभिक्षा किस प्रकार दिए थे उसके बारे में बता रहे है।

1985 में नवंबर महीने में मेरी पत्नी, मैं और कुछ लोग घोडे की गाडी में जा रहे थे। अनेक पल्लि से आने वाली एक बस पीछे से आकर गाडी से टक्कर मारी थी। गाडी में बैठे हुए सभी इधर – उधर तितर - बितर गिर गए थे। घोडे के साथ किसी को भी कोई घाव नहीं हुए थे। गाडी को बहुत नुकसान हुआ था। मेरी पीछे की रीड़ की हड्डी में क्या हो गया था मुझे मालूम नहीं कि बहुत दर्द आने लगा। सोने में दिक्कत हो रही थी। मद्रास, हैदराबाद में , गुंटूरु के सभी डॉक्टरों को दिखाया था। लगभग एक लाख रूपये खर्च किया था। कुछ भी फायदा नहीं हुआ था। दो साल बहुत पीडा से तडप रहा था। डॉक्टरों ने कहा कि जीना बहुत मुश्किल है। डर ने के भय से मैंने खाना बंद कर दिया था। मेरी स्थिति देखकर परिवार वाले भी खाना बंद कर दिए थे। उनके लिए खाना पसंद न होने पर भी थोडा खाना खाने के लिए कोशिश कर रहा था। मेरी शारीरक बाधा के साथ – साथ मानसिक बाधा भी हर क्षण मुझे सता रही थी। यह बाधा वर्णनातीत हो गयी थी। उस विपत्कर परिस्थितियों में परम कारुण्य मूर्ति श्री स्वामी जी मुझे अपने दोस्तों के द्वारा अपने तपो भूमि आने के लिए संदेश भेजे थे।

दोस्तों की सलाह से गोलगामूडि दिव्य क्षेत्र का संदर्शन किया था। महाद्भुत महिमान्वित श्री स्वामी जी का करुणा कटाक्ष वीक्षण इस दीन पर प्रसरित हुआ था। 75 प्रतिशत बाधा तुरंत दूर हो गई थी। यह पिरवर्तन किसी के सोचने के स्तर पर नहीं था। मृत्यु मुँह पर रहकर तडपने वाले मेरे जैसे व्यक्ति को वह करुणामय श्री स्वामी जी पुनरजीवन प्रदान किए थे। उनको किस प्रकार कृतज्ञता ज्ञापित करना है मुझे मालूम नहीं हो रहा था। उस दिन से हर हफ्ते में एक दिन आकर श्री स्वामी जी की सेवा कर रहा था। मेरी बाधा 95 प्रतिशत ठीक हो गया था। मैं बाकी बाधा माफी करने केलिए श्री स्वामी जी से इसलिए विनती नहीं की थी कि मेरे कर्म के अनुसार बाकी 5 प्रतिशत बाधा मुझे भोगने से अच्छा होगा।

श्री स्वामी जी की कृपा से अपने बेटे का स्वास्थ्य ठीक होने से श्री स्वामी जी बुलाने पर बोलनेवाले देव के समान उनको लगा था। श्री गुद्देटि आंजनेयलु जी अपने अनुभव इस प्रकार बता रहे थे।

1988 में नागार्जुन सागर में मेरा ड्यूटी पडी थी। जाने केलिए टिकट का आरक्षण भी हो गया था। मेरे जाने के पाँच दिन पहले मेरे छे साल के बेटे की तबियत खराब हो गयी थी। वह अकस्मात् अपने आप गिर रहा था। कुछ समय के बाद उठकर साधारण हो रहा था। रोज चार पाँच बार ऐसा हो रहा था। सागर जाने के पहले मेरे बेटे को स्वस्थता ले आने केलिए बहुत डॉक्टरों को दिखाया था और इलाज करवाया था। लेकिन स्वास्थ्य में कुछ भी प्रगति नहीं हुई थी। मैं शंका में पड गया था कि सागर जाऊँ या रूक जाऊँ। अंत में श्री स्वामी जी से विनती की कि स्वामी तेरी क्या आज्ञा है। मुझे क्या करना है? उस दिन रात के समय मुझे सपने में दर्शन देकर श्री स्वामी जी ने बोला था कि बेटा ठीक हो जाएगा। तुम ड्यूटि पर जाओ। सुब्बाराव को मत भेजो। श्री स्वामी जी की आज्ञा के अनुसार मैं ड्यूटी पर गया। वापस आते ही देखा कि मेरा बेटा स्वस्थ हो गया था। यदि स्वामी जी सपने में ऐसा नहीं कहे होते तो हम समझते कि बच्चा केवल दवा से ही ठीक हो गया था। यह समझाने के लिए ही श्री स्वामी जी स्वप्न दर्शन देकर बेटे को ठीक कर दिए थे। यह हमारी भक्ति और श्रद्धा स्वामी जी के प्रति बढाने केलिए एक लीला है।

मुझे अतिमूत्र बीमारी है। श्री स्वामी जी की सेवा करते हुए सभी दवाओं को खाना बंद कर दिया था। श्री स्वामी जी की कृपा से मेरी तबियत ठीक हो गयी थी। अब मेरा कोई शारीरिक बाधाएँ नहीं थी।

वनस्थली पुरम के श्रीमती सोभा जी का अपना अमोघ अनुभव इस प्रकार है।

मुझे 1992 में त्वचा की बीमारी आई थी। मेरा पूरा मुँह अचानक काला हो गया था। लग रहा था कि मुँह जल गया हो। मुँह पर खुजली आती थी। शरीर पर इधर – उधर कुछ धब्बे भी थे। बहुत दवाएँ खाई थी। बहुत इलाज करवायी थी। डॉक्टर के पास से जेल्ली ले आकर मुँह पर एक महीना मालिश की थी। वह बीमारी पूरा शरीर पर और बढ़ गई थी। मेरे दोनों भाई डॉक्टर थे। मेरी स्थिति को देखकर वे भी बहुत परेशान थे। मैं बहुत परेशान होकर सभी दवाओं को खाना बंद करके श्री स्वामी जी से प्रार्थना की थी कि हे स्वामी! मेरे पाप का फल कोई है तो उसे कम करके आप पर पूरा विश्वास रखने की ताकत मुझे दे दो। आपकी विभूदि एक हफ्ते तक मेरे मुँह पर लगाती हूँ। कहने के अनुसार मैंने विभूदि को मुँह और शरीर के अन्य घावों पर लगाया था। उस करुणामय ने मेरे सभी पापों को निकालकर मेरे शरीर के सभी घावों को ठीक कर दिया था। मेरा शरीर साधारण स्थिति में आ गया था। इस कलियुग के प्रत्यक्ष दैव श्री वेंकय्या स्वामी जी थे।

श्री पाबोलु पिच्चय्या जी ज्योती नगर, दूसरी गली, नेल्लूरु इस प्रकार बता रहे थे।

मुझे 1982 में दाएँ पैर पर और बाँह पर छोटा सा उबाल आया था। वह दिन पर दिन बडा होता रहा था। अब एक टेन्निस गेंद जैसा हो गया था। नेल्लुरु में दो बार ऑपरेसन करवाया था। फिर तीसरे बार आ निकला था। मुझे शंका था वह कैंसर होगा। तिरुपति में परीक्षा करवाया था। उन्होंने उसे कैंसर निर्धारण किए थे। मद्रास अडयार कैंसर अस्पताल में ऑपरेशन करवाया गया। विद्युत षाक भी दिलवाया गया था। रु. 30000 खर्च किया था। डॉक्टर ने कहा कि शरीर पर दूसरे बार ऐसा उबाल आए तो कोई इलाज नहीं कर पाते हैं। केवल मरना ही पड़ता है।

एक साल के बाद में वहीं पैर पर उँगलियो के बीच में और एक बार उबाल आने लगा था। वह उबाल बढ़ने लगा था। इससे चप्पल नहीं पहन पा रहा था। पूर्व में अडयार अस्पताल के डॉक्टरों के द्वारा बतायी गयी बात मुझे याद आ रही थी। मेरा मरना तो निश्चय हो गया था। इसलिए मेरी मानसिक बाधा बहुत बढ़ गई थी। मेरी दो लडकियों को विवाह अभी भी मुझे करना था। उस संकट परिस्थिति में मैं हर शनिवार गोलगामूडि जाकर श्री स्वामी जी के दर्शन करने लगा। एक दिन उस गाँव की मेरी बेटी की सलाह से एक मनौति करके श्री स्वामी जी से विनती की। आश्चर्य की बात अगले शनिवार को मेरे कोई नया इलाज नहीं करवाने पर भी मेरा कैंसर का उबाल मेरे शरीर से निकल गया था। यह केवल श्री स्वामी जी के अनंत करुणा का निदर्शन ही है। यह मैं हृदयपूर्वक मानता हूँ।

मैं उनके द्वारा बोध किए हुए धर्म मार्ग पर आगे चलते हुए मेरा शेष जीवन श्री स्वामी जी के पादपद्मों के पास बिताने का निश्चय किया था।

नेल्लूरु गांधीनगर के निवासी ऐता नारायण जी अनुभव और उनका विश्वास हम सबके लिए प्रेरणा दायक होंगे। साधरणतः एक मंडल दिन श्री स्वामी जी के सन्निधि में सेवा करने केलिए बहुत पछताने की मनःस्थिति बहुत लोगों के लिए होती है। महीनों भर अकुंठित विश्वास के साथ श्री स्वामी जी की सेवा करके उनकी दया के लिए इंतजार करने वाले की अद्भुत गाथा है यह। 1992 में एक शादी में जाकर वापस आने के बाद में मेरी पत्नी के कमर के दाएँ ओर बहुत दर्द आने लगा। बाद में में सौचालय में गिर गई थी। उसके बाद में पैर नहीं मोड पा रही थी। सीधा चलने में भी दिक्खत हो रही थी। कमर में दर्द भी था। नेल्लूरु सरकारी अस्पताल में दिखाए थे। और एक विशेषज्ञ को भी दिखाए थे। रीड की हड्डी में रहनेवाले द्रव का कुछ परीक्षा करके इलाज भी किए थे। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ था। इलाज के लिए बहुत खर्च किया था। और कुछ खर्च करने के लिए आवश्यक आर्थिक स्थिति मेरे पास नहीं थी। बाद में आयुर्वेद चिकित्सा भी करवाए थे। पैर में रक्त प्रसरण शुरू हुआ था। लेकिन पैर सीधा नहीं कर पा रही थी। दर्द कम नहीं हुआ था। शरीर में जलन था। आयुर्वेद चिकित्सक कुछ दिन इलाज करके बताया था कि यह केश मेरे वश में

नहीं है, आप इसे तिरुपति रूया अस्पताल ले जाइए। आर्थिक स्थिति खराब होने से इलाज के लिए मैं कहीं ले जाने का निर्णय छोड दिया था। मंत्र - तंत्रों का सहारा भी लिया था। इस निस्सहाय स्थिति में गोलगामूडि आए थे। गोलगामूडि आते समय वह अच्छी तरह चल नहीं पा रही थी। मैं पत्नी को छोटी बच्ची की तरह भुजाओं पर बिठाकर मंदिर का प्रदक्षिणा करवाया था। बहुत कमजोर हो गयी थी। पहले पहल अग्नि कुंड तक नहीं आ पाई थी। एक दो प्रदक्षिणा करने के बाद में अपने आप मूत्र विसर्जन केलिए जाने लगी। उस पवित्र क्षेत्र से उसे बाहर लाकर बिठाकर मैं अपने आप प्रदक्षिणा करता था। श्री स्वामी जी की सन्निधि में चालीस दिन सेवा करने केलिए तीन महीने लग गए थे। महीने में एक बार पहले ही घर से दूर रहती थी। श्री स्वामी जी की कृपा से तीन चार दिनों में ही शरीर का जलन समाप्त हो गया था। घर जाकर भी श्री स्वामी जी की सेवा कर सकता था। गोलगामूडि आकर जितने दिन हो सके उतने दिन सेवा करना, घर से दूर होते तो घर जाना..., इस प्रकार करते - करते एक साल बीत गया था। तब श्री स्वामी जी हम पर कृपा दिखाए थे। मेरी पत्नी अपने आप लकडी पकडकर चलना सीख ली थी। अब वह अपना काम आप कर रही थी। यही नहीं कुछ समय हमें भी पकाने में सहायता दे रही थी। कारुण्यमूर्ति के शक्ति सामर्थ्य, दया, प्रेम का वर्णन करना किसी के लिए साध्य नहीं है।

श्री स्वामी जी के प्रति हमारा विश्वास ही श्री स्वामी जी की कृपा हमारे ऊपर दिखाता है।

नेल्लूरु जिला कृष्णपट्टणम के चल्ला श्री रामुलु शेट्टी जी गत पंद्रह सालों से गोलगामूडि के श्री स्वामी जी की सेवा में रहकर अनिकेपल्लि से भिक्षाटन ले आ रहे थे। 2002 में उनको पक्षाघात होने से उनका मुँह बगल में चला गया था। हाथ और पैर निष्फल होने से चल नहीं पा रहे थे। स्पर्श भी चला गया था। उसकी बेटी और दामाद को बुलाए थे। उन्हें अपने घर ले जाने के लिए आए थे। लेकिन श्री शेट्टी जी स्वामी जी को छोड़कर जाने के लिए तैयार नहीं हुए थे। यहीं पुण्य भूमि में मरने केलिए वे तैयार थे। इसलिए गोलगामूडि में ही रह गये थे। किसी ने पक्षाघात केलिए कुछ पत्ते का रस दिए थे। पीने पर भी कुछ नहीं ठीक हुआ था। एक हफ्ते के अंदर ही सपने में किसी व्यक्ति आकर उनके सामने बैठकर पूछा था कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है न? ठीक हो जाएगा। ले लो यह चीनी। श्री श्रीरामुलु शेट्टी की थैली में उसे डाल दिया था। चीनी जमीन पर पडा है या थैली में पडा है उसे मालूम नहीं हुआ था। ऊपर सिर उठाकर देखे तो वह आदमी वहाँ से चला गया था। सुबह होते ही उनके पैर और हाथ फिर स्पर्श पाने लगे थे। मुँह भी सीधा आ गया था। बाद में अच्छी तरह चलने लगे और अपना काम आप करने लगे थे।

मई महीने में धूप और गरमी बहुत अधिक थे। इसलिए दस दिन तक भिक्षाटन के लिए अनिकेपल्लि नहीं जाकर आश्रम में आराम लेने की सलाह दिए थे। वे ऐसे ही आश्रम में आराम लेते रह गये थे। एक दिन सपने में देखा था कि वे अनिकेपल्ली में भिक्षा माँग रहे थे। उसने सोचा था कि यह मेरे लिए श्री स्वामी जी की आज्ञा है समझकर सुबह से तेज धूप और गरमी में ही भिक्षाटन के लिए अनिकेपल्ली जाने लगे।

श्री स्वामी जी ही उसे एक दुर्घटना से बचाने केलिए ही सपने में दर्शन दिए थे। पक्षाघात सुबह आने वाला था उस रात सपने में उन्होंने देखा था कि एक बडा विमान आकाश में आ रहा था। ताड के पेड जैसा लंबी लकडी को हाथ में लेकर श्री स्वामी जी खडे हुए थे। यह देखकर वह विमान चला गया था। इससे पता चलता है कि श्री स्वामी जी ही आनेवाली दुर्घटना से उसे बचाए थे। इस दुर्घटना से बचने का कारण उन्होंने बताया था कि मैं इस पुण्य भूमि से नहीं चलूँगा। विश्वास के साथ उनसे कही गयी यह बात ही मुख्य कारण था। विश्वास पहाडों को भी हटा देता है। यह सच है।

श्री स्वामी जी की बात का अर्थ कितना गंभीर होता है, कितना सूक्ष्म होता है पता लगाना सामान्य मनुष्यों के लिए बहुत असाध्य विषय है। दम्मपेटा के डि. नागेश्वर राव जी बताते है कि यदि श्री स्वामी जी एक बात हमसे कहने पर उसका अर्थ हमें मालूम नहीं होने पर उसका अर्थ मालूम करने केलिए हमें आँसुओं से श्री स्वामी जी से प्रार्थना करना पड़ता है। रोशरेड्डी जी श्री स्वामी जी से प्रार्थना करने का तरीका बताते हैं कि हे प्रभु! तेरी बात का अर्थ मुझे मालूम नहीं होने के कारण मैं प्रीति पूर्वक उस बात को आचरण में नहीं ले पा रहा हूँ। आप ही मुझे प्रेरणा देकर आप पर प्रीति लगाने के लिए और आपकी बातों को आचरण में लाने केलिए आवश्यक शक्ति प्रदान कीजिए। श्री स्वामी जी को हृदय पूर्वक आँसुओं से प्रार्थना करना है। श्री स्वामी जी बताते है कि यदि मेरी बात का अर्थ नहीं मालूम होने के कारण उसे छोड़ने से उसका नुकसान आपको ही होता है।

मेरे दोस्त को श्री स्वामी जी ने कहा कि तुम जिस घर में रहते हो उस घर को छोड़ने से तुझे बहुत कष्ट आ जाएँगे। यह बात कहने के दो साल के बाद में मेरा दोस्त वह घर छोड़कर नेल्लूरु चला गया था। तुरंत चार हजार वाला बैल मर गया था। श्री स्वामी जी की बात याद आकर फिर वह अपने पुराने घर वापस आ गया था। कुछ साल आनंद से रहा। अपने छोटे से मकान के स्थान पर बडा भवन के निर्माण करने केलिए और एक घर में चला गया था। तो उस घर में उसकी सहायता करने वाले व्यक्ति की मौत हो चुकी थी। उसके बाद में अनेक कष्टों में फँस गया था। श्री स्वामी जी ने बताया कि कष्ट आने पर भी उस पुराने घर के आंगन में रहने से उसे

कोई कष्ट नहीं आएँगे। यहीं बात श्री स्वामी जी बहुत बार उसे बताए थे। लेकिन वह आचरण में उसे नहीं रखा था। इसलिए ही उसे अनेक कष्टों को भोगना पडा था।

आश्रुओं से पिघलनेवाला स्वामी

हृदयपूर्वक इच्छा से कोई आँशु बहाने से मक्खन जैसे हृदय वाले स्वामी उसकी बाधाओं को मिटाते हैं।

सूल्लूरुपेटा के निकट गाँव उच्चूरु के निवासी श्री वै. शिवरामय्या जी को दोनों गुर्दे खराब होने से मद्रास के डॉक्टरों ने उसका इलाज करके से मना करके उसे छोड़ दिए थे। उस समय गोलगामूडि श्री स्वामी जी का आश्रय पाकर मंदिर में सभी लोगों को प्रदक्षिणा करते देखकर उन्होंने भी करने की कोशिश की थी। लेकिन उनका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने से आँसुओं से पार्थना की। उस रात ही श्री स्वामी उनके सपने में आकर बताए थे कि नमक के बिना एक दिन खाना खाओ। सब ठीक हो जाएगा। श्री स्वामी जी की सूचना के अनुसार करने से उनका स्वास्थ्य ठीक हो गया था।

ओंगोलु पद्मा जी को कमर में बहुत दर्द आता था। उसी दर्द से गोलगामूडि आकर आँसुओं से विनती करते ही, उसका दर्द दूर हो गया था। दम्मपेटा डि. नागेश्वर राव अश्रुओं से विनती की कि श्री स्वामी जी के द्वारा बताया गया संदेश मुझे समझ में नहीं आ रहा है। तुरंत श्री स्वामी जी सपने में दर्शन देकर स्पष्टता से और एक बार संदेश को पूरे विवरण के साथ बताए थे।

गोलगामूडि के निवासिनी अपने घुटनों के दर्द को सहन नहीं कर पा रही थी। आँसुओं से विनती की। तुरंत बिना किसी मनौति के श्री स्वामी जी सपने में दर्शन देकर पत्ते के रस से उस दर्द को मिटा दिए थे। गोलगामूडि एरुकलपालेम नलबोई सिद्दम्मा के आँसुवों से श्री स्वामी जी पिघल गए थे। उसे संतान देकर उसकी इच्छा पूरी की थी। **हृदय पूर्वक इच्छा और विश्वास ही श्री स्वामी जी के द्वारा हमसे मांगने वाली दक्षिण है।**

बोधयज्ञायनमः

अपनी दिव्य बोधनाओं को सबके सामने प्रस्तुत करने में श्री स्वामी जी अपने आप में माहिर थे। उन दिनों में पूजा पर मुझे सही सदअभिप्राय नहीं होता था। मुझे कुछ संदेह होते थे कि निर्गुण, निराकार श्री स्वामी जी हमारे प्रसाद और नैवेद्य क्या स्वीकार करेंगे? हम केवल हमारी तृप्ति के लिए ये सब कर रहे हैं। ऐसा समझकर मैं अपनी पूजा को यांत्रिक, लांचनप्राय रूप से चलाता था। मेरा मित्र गूडूरु के हरिबाबु श्राद्ध कर्म, वार्षिक कर्म, पूजाएँ आदि के बारे में अपने शंकाओं को दूर करने केलिए श्री भारद्वाज मास्टर से अनेक बार पूछने केलिए कोशिश की थी। लेकिन उनके पास जाकर पूछना भूल जाता था। एक बार शिरिडी जाकर श्री शिवनेशन स्वामी जी के दर्शन करके नमस्कार करके उनके सामने बैठा था। मेरे मित्र के मुँह खोलकर पूछने के पहले ही श्री शिवनेशन स्वामी जी ने बोला कि एक करोडपति को एक ही संतान थी। युक्त उम्र को आते ही वह बेटा मर गया था। अपने को श्राद्ध कर्मों पर विश्वास नहीं होने पर भी कर्म क्रतुवों को, चालीस दिन तक करने वाले सभी कार्य, एक वर्ष में करने वाले सभी कार्यक्रम करने लगा। एक बार दिन में ही यह पिता को मरा हुआ बेटा सामने आकर बता रहा था कि दूर नगर में रहने वाले अपने कारखाने के कौन - कौन, कितने - कितने रूपये खा लिए थे, उसे छिपाने केलिए किस प्रकार गलत रूप में अपने खर्च दिखा रहे हैं?..,ये सभी विवरण बता दिया था। उसे पिताजी नहीं सुने थे। बाद में दो तीन बार और कुछ बातें बताया था। मरा हुआ बेटा यह सब क्यों बताता है?.. सोचकर पिता चुप चाप रह गया था।

एक साल के बाद वार्षिक कार्यक्रमों में पिता सभी पदार्थों को रखकर निवेदन देते हुए नमस्कार कर रहा था। उसका मरा बेटा और फिर उसके सामने आकर बताया था कि देखो, इस पायासम में चीनी कम डाले थे। पिता ने पूछा, तुझे कैसा मालूम हुआ था? तब मरा लडके ने कहा कि हम सूक्ष्म रूप से आकर इन पदार्थों के सूक्ष्म तत्व को स्वीकारते हैं। बेटे के कहने के अनुसार पायासम में चीनी कम ही डाला गया था। बेटे की कही बात सच निकली थी। बाद में अपने खारखाने में बेटे के द्वारा बताये गये सभी विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। वे सभी विषय सच निकले थे। यह कहनी के द्वारा प्रश्न का समाधान स्वामी जी ने दिया था। इस प्रकार श्री शिवनेशन स्वामी जी के रूप में श्री स्वामी जी ने हरिबाहु के सभी संदेशों के समाधान दिए थे। यहीं नहीं यांत्रिक और लांचनप्राय रूप से चलाने वाली पूजा के लिए सही मार्ग दिखाए थे। श्री स्वामी जी यह विषय हरिबाबू के द्वारा मुझे बतवाकर मुझे सही मार्ग पर ले आए थे। इसिलए ही मास्टर जी सिद्ध पुरुषों को गुरु मानकर उनकी सेवा करके मुक्ति पाने का संदेश दिए थे।

मानव को निरंतर लगने वाला पाप

श्री वेंकय्या स्वामी जी बार - बार कहते थे कि तुम मनुष्यों के बीच जाकर आए हो। तेरे द्वारा दिया गया माँड मुझे नहीं चाहिए। चले जाओ। ऐसा कहकर दूसरे सेवक को बुलाकर उसके हाथ से माँड लेकर पीते थे। मनुष्यों के बीच में जाने का अर्थ यह नहीं है कि भौतिक रूप से मनुष्यों को छूकर आ गया था। वह सेवक किसी और को छूकर नहीं आया था। गोलगामूडि के तालाब के पास मछली पकडने वाले, राजनीति के बारे में बातचीत करने वाले, राजीव गांधी और इंदिरा गांधी के बारे में गपशप करने वाले लोगों के साथ यह सेवक भी शामिल हो गया था। श्री स्वामी जी के अनुसार उस प्रकार के आलोचना करने वालों के साथ इस सेवक का भी मिलकर बातचित करना पाप है।

पाप क्या है? पुण्य क्या है? महान लोगों का कहना है कि परपीडनम् पापं, परोपकारम् पुण्यम्। यह सेवक, यह भक्त. ये मछलियाँ पकडने वाला इंदिरा गांधी और राजीवगांधी को आलोचना करके उनकी ख्याति को धक्का पहुँच रहे हैं। यह इंदिरा गांधी केलिए इनके द्वारा किया जा रहा परपीडन है। वह पाप है। यह सभी मनुष्य को जानना चाहिए। नित्य अनुक्षण करने वाले पाप से हमें बचने पर ही श्री स्वामी जी का बोध हमें हृदयगत होता है। इसलिए पर लोगों की आलोचना करना हमें छोडना चाहिए। परम पवित्र श्री स्वामी जी की सन्निधि को आने के बाद में भी दूसरों की आलोचना करना पाप ही है। इस प्रकार का पाप करना कितना उचित है?..., हम सबको एक बार सोचना चाहिए। यह पाप बडा अपचार है।

पूजा

भारद्वाज मास्टर कहते है कि हमारे द्वारा की जा रही पूजाएँ यांत्रिक है। नियमबद्ध होती है। इसलिए वे तुरंत फल हमें नहीं दे रहीं है। हमें किस प्रकार हमारी पूजा करनी है, पूजा को यांत्रिक और नियमबद्ध होने से कैसे बचना है?.., पूरी तरह आचरण में उन्होंने हमें दिखाया था। श्री मास्टर की दिव्य स्मृतियाँ – पुस्तक में कोत्तूर प्रसाद जी मास्टर की पूजा की पद्धति का वर्णन करते है। एक एक नाम को अनेक बार उच्चारण करते थे। तब मानसिक रूप से वे क्या करते थे अनेक स्थानों में बातए थे। हम रोज जो पूजा करते है वह यांत्रिक पूजा है। नियमबद्ध न होकर हम सजीव रूप से पूजा कर सकते हैं। पूजा करते समय हर एक नाम का अर्थ समझकर उसके संबंद रखनेवाली सभी लीलाओं को मन में ले आना चाहिए। उदाहरण के लिए सर्वसमर्थ श्री स्वामी नाथायनमः कहने पर सर्वसमर्थ के रूप में श्री स्वामी जी के द्वारा की गई सभी लीलाओं को धीरे से स्मरण करना है। एक ही क्षण में एक व्यक्ति तीन

लोगों को मारा था। वह मारने वाला श्री स्वामी जी के शरण में आया था। उसकी रक्षा करने केलिए न्यायालय में रिकार्ड कमरे में उसकी फाइल को दीमक के रूप में आकर श्री स्वामी जी ने खा लिए थे। आप पूछ सकते है कि तीन व्यक्तियों को मारने वाले की रक्षा क्या श्री स्वामी जी कर सकते है? पूर्व जन्म में ये तीन मिलकर इस व्यक्ति को एक साथ मारे होंगे। वह सर्वज्ञ श्री स्वामी जी को मालूम होने से उन्होंने ऐसा किए थे। उसी प्रकार और कुछ लीलाओं का स्मरण करना है। प्राणलिंगस्वरूपायनमः हम कहते हैं। प्राण होने वालों के लिए, चलन एक लक्षण है। इसिलिए भूमि, ग्रह, नेब्युलस आदि नक्षत्र कूट निरंतर चलते रहते हैं। यहीं नहीं, इन सभी पदार्थों में हरक्षण एलक्ट्रान घूमते रहते हैं। इसलिए पूरा विश्व प्राणमय है।

स्मृति मात्र पसन्नायनमः। स्मरण करते ही किसी के कष्ट दूर नहीं हो जाते हैं। यह लीला बहुत समय तक मन में चक्कर काटती रहती होगी। स्मृति रहित प्रसन्नायनमः आप कहिए। रोशरेड्डी जी के बेटा आम के फल की गाडी से पर्वत से नदी में गिर जाते वक्त वे स्वामी जी को नहीं बुलाने पर भी श्री स्वामी जी ने आकर उसकी रक्षी की थी।

कस्तूरि अंकय्या का पोता कुएँ में गिरते समय कोई श्री स्वामी जी से प्रार्थना नहीं किए थे। फिर भी श्री स्वामी जी ने उसकी रक्षा की थी। तपिलि पिच्चम्मा की बेटी अग्नि कुंड में गिरते समय भी श्री स्वामी जी ने उसकी रक्षा की थी। इस प्रकार की लीलाओं का मनन हमें करना चाहिए।

उसी प्रकार हर एक नाम से संबंधित लीलाओं को मन में धीरे- धीरे से जागृत होते रहने से वह सजीव पूजा होती है। यह आचार्य भारद्वाज मास्टर के द्वारा किया गया, आचरण में लायी गयी पूजा पद्धति है। उसी प्रकार हमें भी पूजा करके तरना है।

हम जल्दबाजी में आधे घंटे में ही पूजा पूरी करना चाहे तो पूरा कर सकते हैं। लेकिन सभी नामों को नहीं पढ़ सका, ऐसी असंतृप्ति होने की जरूरत नहीं है। अंत में बाकी सभी नामों को पाँच मिनिटों में पढ़ सकते हैं। पूजा कम समय में करने पर भी यांत्रिक, नियमबद्ध से दूर सजीव पूजा हमें करना चाहिए। श्री स्वामी जी की महिमा को याद करते हुए तन्मयता पाना चाहिए।

काकबलि

श्री स्वामी जी अपने आचरण द्वारा बोध किये गये विषयों में मुख्य विषय है काकबलि। हमारे द्वारा खाया जा रहा आहार पूरी तरह भगवान का दिया हुआ है। एक अनाज का दाना यदि आप पाना चाहते तो अनेक जीवों को परिश्रम करना पड़ता है। खेत जोतने केलिए हल बनाने केलिए लोहे की जरूरत होती है। लोहे को खान से निकालकर खेत जोतने वाले ट्राक्टर बनाने केलिए बहुत लोगों को परिश्रम करना पड़ता

है। ट्राक्टर को चलाने वाले पेट्रोल धरती से निकालने केलिए बहुत लोगों को काम करना पड़ता है। उसी तरह कुँआ, बकेट, रस्सी, हमारे रसोई घर में काम आनेवाले पकाने के सामान, चूल्हा, गैंस, हमारे घर इन सबको बनाने केलिए अनेक जीवियों को काम करना पड़ता है। जगह जगह में होने वाले कूडे को सडाकर खाद बनाने केलिए अनेक सूक्ष्म जीवियों को काम करना पड़ता है। उसी प्रकार हमारे खाने के आहार में रहने वाले व्यर्थ पदार्थों को मल रूप में बदलने केलिए हमारे आंत्र के अनेक सूक्ष्म जीवियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसी प्रकार दूध, घी, दाल, तरकारियाँ हमारे कपडे इस सबको हमें दिलाने केलिए अनेक जीवों को काम करना पड़ता है। ये ही नहीं पंचभूतों का सहयोग भी हमें चाहिए। पंचभूत धरती, सूर्य, पानी, हवा, आकाश जीव के रूप में, पंचभूतों के रूप में वह परमात्मा ही काम करके हमारे लिए आहार, घर और कपडे उपलब्ध कर रहे हैं। इसके लिए कृतज्ञता पूर्वक उस परमात्मा को हमारे भारी प्रेम से समर्पित चीज ही काकबलि है। **हे प्रभु, असंख्याक जीवों के रूप में, पंचभूतों के रूप में हर क्षण प्रयत्न करके मुझे यह आहार उपलब्ध कराया था। मेरा आपको समर्पित यह आहार स्वीकार कर मुझे ऋणविमुक्त करो, हे परमपिता। इस प्रकार मनः पूर्वक कहकर प्रेम और कृतज्ञता से जो समर्पित करते है वही काकबलि है।** बुजुर्गो के अनुसार हमें उपलब्ध होने पर कुछ मुट्ठी भर खाना फेंकना मना है। बुजर्गु लोग मानते हैं कि काकबलि समर्पित करते समय हृदय में उल्लास से भरा कृतज्ञता भाव उभरना अत्यंत आवश्यक है। उसी प्रकार का आचरण करके दिखाए थे श्री स्वामी जी। अपने आचरण के द्वारा हमें भी प्रेरणा दिए थे। काकबलि के द्वारा हमें ऋण विमुक्ति पाने की सलाह देते है।

दान किए चीजों पर नाम लिखवाना

किसी भी स्थिति में सिद्ध पुरुषों की बातें हमें शिरोधार्य होती हैं। श्री ज्ञानेश्वर महाराज एक प्रशिद्ध शिद्ध पुरुष थे। खाना पकाने केलिए लकडी न मिलने से पडोसी के घर जाकर लकडी माँगने से लकडी नहीं देती है और वह पडोसिन उसे डाँटती है। इससे उसकी बहिन रोने लगी। रोती हुई उस बहिन को देखकर अपने योग शक्ति से अपने पीट को तवा के समान बदलकर उस पर दोसा बनवाते हैं। अपना दोस्त मरने से उसके सभी साथी दुःख में डूबे हुए थे। तब ज्ञानेश्वर महाराज वहाँ जाकर उस मृत जीव का हाथ पकडकर, आओ हम दोनों मिलकर खेलेंगे। कहने पर वह मृत बच्चा उठकर उनसे खेलने केलिए साथ गया था। महाराज हर समय बताते थे कि सबकुछ ब्रह्म है। एक ब्राह्मण ने पूछा था कि कि यदि सब कुछ ब्रह्म है तो तुझे वेद पारायण मालूम होना हैं न। वह भैंसा क्या वेद पारायण कर सकता है?। तब महाराज ने उस भैंसा को हाथ से छूकर वेद पारायण करने की आज्ञा दी थी। तुरंत वह भैंसा चार घंटे तक सुस्वर से वेद पारायण करके दिखाया था।

इस लीला के बाद में महाराज की ख्याति चारों दिशाओं में फैल गई थी। उस प्रांत में रहने वाला चांग भगवान बाघ को अपना वाहन बनाकर, विषैले नाग को कंठहार बनाकर बहुत नाम कमाया था। वह बाघ पर बैठकर श्री महाराज को देखने आ रहा था। पैठन गाँव के सभी लोग चाग भगवान का स्वागत करने केलिए गाँव के हद पर आए थे। उस समय श्री ज्ञानेश्वर महाराज और उनके दोस्त खेलते हुए वहीं गाँव में ठहरे हुए थे। सभी साथियों ने बताया कि हम भी चांग भगवान को देखने के लिए जाएँगे। श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने उन सभी दोस्तों को एक टूटी दीवार पर बिठाकर उस दीवार को आज्ञा दी कि चलो। घोडे जैसा वह टूटी दीवार उन दोस्तों को अपने ऊपर बिठाकर जाने लगी। उसे देखकर चांग भगवान अपनी शक्ति और सामर्थ्य की तुलना करके बहुत पछताए थे। उसे अपने गर्व पर शर्म होने लगा। जीवित बाघ को चलाने में कोई महत्व नहीं है। निर्जीव दीवार को चलाने में योगशक्ति की जरूरत है। ऐसी योगशक्ति से युक्त ज्ञानी ज्ञानेश्वर महाराज के पादों पर गिरकर माफी मांगे थे।

इस प्रकार के अनेक दिव्य लीलाएँ ज्ञानेश्वर महाराज के संबंद में हम देख सकते हैं। उस समय उनकी उम्र केवल बारह ही थी। यह महान् भगवद्गीता के लिए जो व्याख्या लिखे थे वह ज्ञानेश्वर भगवद्गीता के नाम से प्रशिद्ध है। सोलहवीं अध्याय में श्री ज्ञानेश्वर जी इस प्रकार बताए थे।

इस लोक में, परलोक में हमारे स्नेहपूर्ण धर्म – अभिमान से हम धर्माचरण करते है। हमारे ऐसा कहने पर हमें मोक्ष प्रदान करने वाला धर्म भी दोष प्रदान करता है। इसलिए हे अर्जुन! हम जो कुछ धर्म कार्य करते है उसे चारों ओर आंडबरता से प्रचार और प्रसार करना शुरू करने से वह धर्म भी अधर्म हो जाएगा। इसलिए विद्यानगर नेल्लूरु जिला में श्री भारद्वाज दी के नेतृत्व में नर्मित श्री शिर्डी साई मंदिर के वस्तुओं पर, मंदिर निर्माण में सहकार देने वाले व्यक्तियों के नाम नहीं लिखे गए थे। इसलिए ही हमारे बुजुर्ग लोग कहते थे गुप्त दान। दाँए हाथ से दान करने पर बाएँ हाथ को नहीं मालूम होना चाहिए।

आश्रम के बारे में दो शब्द

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी का समाधि मंदिर गोलगमूडि में है। यह गाँव आंध्र प्रदेश में नेल्लूर से पंद्रह किलोमीटर दूरी पर है। हर दिन कई सौ लोगों का समूह उनके दर्शन लेते हैं। शनिवार के दिन हज़ारों लोग यहाँ आकर श्री स्वामी जी को उनके श्रद्धा सुमन अर्पण करते हैं। सभी भक्तों को हर दिन दो बार भरपेट खाना खिलाया जाता है। शनिवार को दोपहर बारह बजे से शाम चार बजे तक सभी भक्तों के लिए भोजन सेवाएँ उपलब्ध रहती हैं। नेल्लूर आर. टी. सी. बस स्टैंड से गोलगमूडि के लिए बस सुविधा है ।

ये किताबें अपने मित्रों को वितरित करें और श्री स्वामी जी की कृपा से उनकी समस्याओं को सुलझाने में उनकी मदद करें।

पाठ नं	पृष्ठ सं
1	43
2	53
3	56
4	58
5	59
6	60
7	62
8	63
9	64
10	65
11	65
12	66
13	70
14	71
15	74
16	78
17	78
18	80
19	80
20	85
21	85
22	85
23	87
24	87
25	89
26	91
27	95

पाठ नं	पृष्ठ सं
28	104
29	107
30	108
31	112
32	116
33	117
34	119
35	126
36	127
37	127
38	127
39	133
40	133
41	136
42	142
43	142
44	142
45	144
46	144
47	148
48	149
49	150
50	150
51	150
52	152
54	154
55	154

पाठ नं	पृष्ठ सं
56	154
57	154
58	156
59	156
60	157
61	157
62	157
63	157
64	158
65	160
66	161
67	161
68	161
69	161
70	161
71	162
72	162
73	162
74	163
75	163
76	164
77	164
78	165
79	165
81	165
82	166
83	166

पाठ नं	पृष्ठ सं
84	166
85	166
86	166
87	166
88	167
89	167
90	167
91	167
92	167
93	167
94	168
95	168
96	168
97	169
98	169
99	169
100	171
101	171
102	172
103	172
104	173
105	174
106	174
108	177
109	177
110	178
111	178

पाठ नं	पृष्ठ सं
112	179
113	180
114	181
115	192
116	192
117	193
118	193
119	193
120	196
121	197
122	199
123	200
124	203
125	204
126	210
127	214
128	216
129	217
130	218
131	226
132	226
133	226
135	231
136	232
137	235

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी मंदिर कहाँ है?

यह आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के गोलागामुडी गाँव में स्थित है। वेंकय्या स्वामी आश्रम 30 एकड़ में फैला हुआ है, इसमें स्वामी समाधि मंदिर, भक्तों के लिए आवास भवन, ध्यान मंदिर, नित्य अन्नदान हॉल, बाल अर्पण या मुंडन के लिए स्थान, प्राथमिक विद्यालय और प्रशासनिक ब्लॉक आदि हैं।

सेवाओं या किसी भी जानकारी के लिए, कृपया भगवान श्री वेंकय्या स्वामी आश्रम से संपर्क करें

वेबसाइट: https://www.bsvsashram.com

ईमेल: eo@.bsvsashram.com

गोलागामुडी गाँव तक कैसे पहुँचें?

यह आंध्र प्रदेश के नेल्लोर शहर से 15 किलोमीटर दूर है। नेल्लोर एक बड़ा शहर है और यह राष्ट्रीय राजमार्गों (NH16, NH67) और चेन्नई, हैदराबाद, बैंगलोर, तिरुपति, विशाखापत्तनम, कोलकाता, दिल्ली जैसे प्रमुख शहरों के माध्यम से भारतीय रेल द्वारा भी जुड़ा हुआ है

चेन्नई - नेल्लोर : 175 किमी

तिरुपति - नेल्लोर : 247 किमी

बैंगलोर - नेल्लोर : 389 किमी

हैदराबाद - नेल्लोर : 457 किमी

विशाखापत्तनम - नेल्लोर : 623 किमी

नेल्लोर बस स्टेशन पर पहुँचने के बाद, अनिकेपल्ले गाँव की ओर जाने वाली APSRTC सरकार द्वारा प्रबंधित बस में सवार हों (जो हर 30 मिनट में चलती है)। इसके अलावा नेल्लोर रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन से ऑटो रिक्शा सेवाएँ (24x7) उपलब्ध हैं।

శ్రమతో
సేవతో కైవల్యం
శ్రీ పి.సుబ్బరామయ్య
STR

इस ग्रंथ के बारे में...

क्या स्वामी जी! आपके आश्रय में आने वाले भक्तों में कुछ लोगों के दुःख तुरंत ठीक हो जाते हैं, लेकिन कुछ के लिए समय लगता है। ऐसा क्यों होता है?

इस प्रश्न के लिए स्वामी जवाब देते है कि भक्तों के स्वभाव के अनुसार ही हमारी प्रतिक्रिया होती है। इससे पता चलता है कि श्री स्वमी जी हमसे हृदयपूर्वक प्रेम और विश्वस चाहते हैं। भक्ति के साथ स्वामी जी की सेवा करना ही वे हमसे चाहते है। श्री स्वामीजी के बारे में अच्छी जानकारी पाने के लिए, विभिन्न स्तर के भक्तों का उध्दार और रक्षा स्वमी जी किस प्रकार कर रहे है, उनसे किस प्रकार हम रक्षा पा सकते है आदि विषयों की जानकारी इस ग्रंथ के द्वारा हम पा सकते हैं। इस ग्रंथ के पठन से हमें अवगत होता है कि श्री स्वामी जी समर्थ सद्गुरु है। इस सृष्टि में उनके लिए असाध्य काम कोई नहीं होता है। ऐहिक और आध्यात्मिक श्रेय पाने के लिए इस ग्रंथ का पारायण हमें बहुत लाभदायक होगा।

- संपादक गण